

**DUE DATE SLIP**

**GOVT. COLLEGE, LIBRARY**

KOTA (Raj.)

Students can retain library books only for two weeks at the most.

BORROWER'S No.	DUE DTATE	SIGNATURE

# वंश भास्कर

( षष्ठम खण्ड )

[ बारहठ श्री कृष्णसिंह विरचित उदधि-मंथिनी टीका सहित ]

मूल लेखक :

सूर्य मत्त मिश्रण

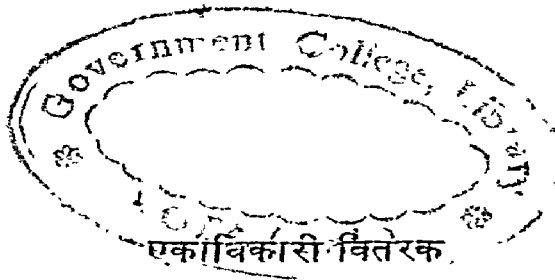
सम्पादक

स्वर्गीय पंडित रामकण आसोपा

भूतपूर्व प्राध्यापक

इतिहास विभाग

कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता



बाफना बुक डिपो

चौड़ा रास्ता, जयपुर-३

एकाधिकारी वितरक

**बाफना बुक डिपो**

चीड़ा रास्ता, जयपुर-३

॥ ओ३म् ॥

॥ भूमिका ॥

सूक्तं करोति वाचालं, पङ्गुं लघयते गिरीन् ॥

यत्कृपा तमहं वन्दे, परमानन्दमाधवम् ॥ १ ॥

क्या महिमा है उस जगदाधार, सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की कि जो अपनी कृपा से सूक्त (गूँगे) को वाचाल और पंगु (पांगले) को पर्वत लांघनेवाला कर देता है, उस परमात्मा को नमस्कार करता हूँ. अन्य विद्वान् इसके उदाहरण में "वाल्मीकि मुनि" और सूर्य के सारथि "अरुण" को मानते हैं, परन्तु इस स्थान पर मैं तो सुभ्रुही को उदाहरण रूप मानता हूँ कि जिसकी कृपा से पञ्चाशत जैसी असाध्य बीमारी आदि विघ्नों रूपी भ्रमियों को लांघकर, इस वंशभास्कर रूपी समुद्र के पार लगा चाहता हूँ, यह उसी सर्वशक्तिमान् दयालु परमेश्वर की दया का फल है कि मेरे जैसा अल्पज्ञ पुरुष ऐसे कठिनतम ग्रन्थ की टीका में पार लगसकै, इसीकारण उपरोक्त श्लोक में मैंने मेरे तर्ह उदाहरण माना है ॥

अभी इस ग्रन्थ के पांच चरित्र, जिनमें डेढ राशि पर टीका बनाना बाकी है, इस अवस्था में अपने को कृतकार्य मान लेना अनुचित है, परन्तु साढे छ-राशि पर टीका बन चुकी जिसमें अनेक विद्या विषय और अनेक भ्रमयुक्त गूढ इतिहास आचुके, जिनका यथार्थ विवरण और उचित समालोचना करके यथाशक्ति टीका कर दी गई, अब आगे के पांच चरित्रों में कोई कठिन विषय नहीं है, केवल रामसिंह चरित्र में वेदान्तादि कुछ विद्या विषय अवश्य हैं परन्तु वे अतिगहन नहीं हैं, और इतिहास में भी समीप का समय होने के कारण भ्रम नहीं है, इसकारण से आगे की डेढ राशि को विद्वान् लोग सुगमता से समझ सकते हैं, इसीकारण मैंने अपने को कृतकार्य माना है. इसमें इतना कथनीय अवश्य है कि आगे के पांच चरित्रों में "बुधसिंह चरित्र" और "उम्मेदसिंह चरित्र" इन दोनों में शब्दालंकार अधिक होने के कारण शब्दार्थ में कठिनता अवश्य है, इसी शब्दालंकार के कारण राजपूताना भर में ये दोनों चरित्र अधिक फैले हुए हैं, जिनके समझने की सब ही का उत्कंठा है, परन्तु अनेक भाषाओं के अनेक अप्रचलित शब्दों के प्रयोग होने से उनके अर्थ समझने में पाठक फलान्भूत नहीं होते, और शब्दों का यमक अत्युत्तम होने के कारण ओत्ररसज्ञ होकर छोड़ना भी नहीं चाहते, इसकारण से हमारा भी विचार है कि स्वास्थ्य ठीक रहा और कोई अन्य बड़ा विघ्न उपस्थित नहीं हुआ तो इस ग्रन्थ के अन्य भागों की अपेक्षा इन दो चरित्रों की टीका विस्तार पूर्वक रचेंगे कि जिसके कारण किसी पाठक को किसी प्रकार

की काठिनता या की नहीं रहे, और काव्यरसज्ञों को पूर्णानन्द मिलाने के कारण हम भी अपने परिश्रम को फलीभूत मानें ॥

यहाँ पर हम को थोड़ी सी टीका स्वयं ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) की रची हुई मिल गई है जिसमें किसी प्रकार का हस्ताक्षेप नहीं करके ज्यों का त्यों यहाँ पर लिख देने हैं, इसमें किसी किसी शब्द के अर्थ को ग्रन्थकर्ता ने सुगम समझकर छोड़ दिया है, जिनके अर्थ लिखने की आवश्यकता दिखाई देती है परन्तु जितने शब्द इसमें रह गये हैं उनके अर्थ ऊपर की टीका में आ चुके हैं अथवा फिर आगे की टीका में आ जावेंगे, इस कारण इस टीका में किसी प्रकार का हस्ताक्षेप नहीं करना ही उचित समझकर " मञ्जिकास्थाने सत्तिकां पातयतु " ही किया है. इस टीका के रचे जाने की कई किस्बदन्तियें प्रसिद्ध हैं, जिनमें प्रवल कथा यह मानी जाती है कि, जयपुर राज्य में पीपलिया नामक ग्राम के ठाकुर राजावत फूलसिंह ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) का अत्यन्त कृपापात्र था जिसने एक दिन ग्रन्थकर्ता से निवेदन किया कि, कनरसियापन से तो सुकको बुधसिंह चरित्र अत्यन्त प्यारा लगता है, परन्तु अर्थ में समझ नहीं पढ़ने के कारण आनन्द नहीं आता, इस कारण आप कृपा करके इस पर टीका बना दें, इसी कारण ग्रन्थकर्ता ने यह टीका बनाई है इस प्रसिद्धि का कुछ कारण भी मिलता है, अर्थात् जयपुर राज्य के हखूत्या नामक ग्राम के पालावत शाजा के चारखे वालापलम को यह टीका पीपलिया के ठाकुर फूलसिंह राजावत के घर से ही मिली है जो कि स्वयं ग्रन्थकर्ता के घर में भी नहीं है, इस टीका के अपूर्ण रहने का कारण भी यही प्रतीत होता है कि जब तक फूलसिंह की प्रेरणा रही तभी तक ग्रन्थकर्ता ने यह टीका बनाई, और जब फूलसिंह की प्रेरणा मिटी तभी टीका का बनना छूट गया, इसीसे थोड़े से ग्रन्थ पर टीका बनकर अपूर्ण रह गई, यहाँ पर इतना सन्देह अवश्य होता है कि यदि टीका केवल फूलसिंह के कारण से ही बनती थी तो शब्दों के जितने प्रमाण इसमें दिये गये हैं उनके देने की क्या आवश्यकता थी और संस्कृत श्लोकों के अर्थ संस्कृत भाषा में लिखे गये हैं तो क्यों लिखे जाते क्यों कि फूलसिंह संस्कृत पढा हुआ नहीं था सो हमारे इस सन्देह का समाधान अभी तक नहीं हुआ है उसके उपरान्त यदि संस्कृत में टीका बनाई भी गई थी तो उसके बीच फूलसिंह के समझने के लिये उसका भाषानुवाद भी कर देते सो नहीं है ॥

परन्तु हमने सन्देह नहीं कि यह टीका स्वयं ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) की बनाई हुई है. इस कारण सर्वथा माननीय है, इसी कारण इसमें किसी प्रकार का हस्ताक्षेप नहीं करके तनरी रची हुई टीका के बीच में इसको स्थान देने हैं, आगे जहाँ पर यह टीका समाप्त होवर्गी नहीं लिखा दिया जावेगा कि ग्रन्थकर्ता की रची

(३)

हुई टीका यहाँ पर समाप्त होती है, इस बुधसिंह चरित्र के मंगलाचरण के श्लोक की ग्रन्थकर्ता ने संस्कृत में टीका की है परन्तु फिर ग्रन्थकर्ता ने ही मूल श्लोक के शब्दों को बदलदिये इसकारण उक्त श्लोक की वह टीका छोड़कर इसका भाषानुवाद हमने किया है बाकी टीका ज्यों की त्यों लिखी जाती है यदि होसका तो संस्कृत श्लोकों की टीका संस्कृत में रची हुई है जिसका सुगम मतार्थ भाषानुवाद करदेवेंगे जिसको हस्ताक्षेप वहीं सम्पन्नना चाहिये यह टीका हमको हणुंत्या के पालावत चरण बालावल्लभ द्वारा मिली उस समय इस ग्रन्थ पर टीका करने का हमारा विचार नहीं था इसकारण उक्त टीका का पुस्तक देख कर पीछा बालावल्लभ के पास भेज दिया था परन्तु फिर आवश्यकता होने पर वही पुस्तक सीकरराज्य के चंदपुरा नामक ग्राम क रतनू शाखा के चरण रामनाथ द्वारा पुनः प्राप्त हुआ. इन दोनों महाशयों का अत्यन्त उपकार मानकर धन्यवाद के साथ इस टीका का लिखना प्रारम्भ करते हैं ॥  
विक्रमाब्द १९५८ द्वितीय आश्विन वदि २ शुक्रवार तारीख २ अगस्त सन् १९०१ ईसवी को प्रारम्भ किया ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ बुधसिंहचरित्रप्रारम्भः ॥

॥ गीर्वाणभाषाशालिनी ॥

वन्देऽथोहं साञ्जलिः प्रीतिपूर्वं चण्डीदानं स्वीयवप्टारमार्यम् ॥  
द्वैतारण्यप्रस्फुरद्दोरदावं तीव्राद्वैतं पण्डिताब्जद्युनाथम् ॥ १ ॥

प्रायोत्रजदेशीयप्राकृतमिश्रिता भाषा ॥

॥ दोहा ॥

युगल वान मुनि इन्दु १७५२मित, विक्रम अब्द विवेक ॥

जराभीरु १३तिथि पोस १० बदि २, बुधसिंह अभिसेक ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

तीरथ सलिल समस्त उचित निज मस्तक सिंचिय ॥

औषध बिहित उपेत निगम मंत्रन पवित्र क्रिय ॥

हवन वस्तु हविरसन मध्य आज्यादि उक्त हुत ॥

हुव सु गान गायकन विविध बंदिन विरुद रूत ॥

दिय दान द्विजन भूभर्मरमुख लाखि सु रीति सुरपति लाजिय ॥

बुंदिय वजंत प्रतिवादका खलनखंड खुशणाक बजिय ॥३॥

अब मैं हाथ जोड़कर प्रीति पूर्वक मेरे पिता आर्य चण्डीदान को नमस्कार करता हूँ, जो द्वैत मत रूपी (जीव और परमेश्वर में भेद माननेवाले) वन के प्रज्वलित घोर अग्नि और पंडित रूपी कमलों के सूर्य थे ॥ १ ॥

प्रायो त्रजदेशीयप्राकृतमिश्रिताभाषा ॥

युगलेति ॥ युगल द्वै २. वान पंच ५. मुनि सप्त ७. इन्दु १ एक. तन्मितासंग-  
तिस्रो १७५२ सत्रह सो वाचन में. विक्रमादित्य के अब्द वर्ष में. जराभीरु  
काम. "कामो जराभीरुरनंगो मन्मथः" इतिहेमचन्द्रसुरिः॥ ताकी तिथि त्रयो-  
दशी १३. बुदि कृष्ण पक्ष में ॥ २ ॥ तीरथेति ॥ उपेत युक्त. फेरि कैसो, निगम  
वेद मंत्र. नकार तृतीया के बहुवचन में है। हविरसन अग्नि. "धनंजयो हव्य-  
रुचिर्हमासनः" इतिहेमचन्द्रसुरिः॥ आज्य घृत. तदादि. बंदि बंदिजन. नकार  
पष्ठी के बहुवचन में है ॥ विरुद उत्साहवर्जनी स्तुति. रूत शब्द. भर्म सुवर्ण  
"तपनीयचामीकरचन्द्रभर्म" इतिहेमचन्द्रः ॥ मुख आदि. प्रतिवादका संगल  
यादन. खुशणाक सुरदा के साथ वजये को वादन. 'खुरणकं नृतया प्राया' मितिहेमः

## ॥ पञ्कटिका ॥

बुधसिंह १९७१ भूप किय पंचपव्याह, सुत खट्क सुता दुवर्ल-  
हिय लाह ॥

उम्मेदकुमारि १९७१ पहिली १ उमाहि, जयसिंहरान तनुजा विवाहि ४  
रानी द्वितीय २ जु अमरकुमारि १९७२, नृप कूर्म विष्णुधी दासु धारि  
बेधमपति अनुपमसिंह धीय, फुल्लकुमारि १९७३ चुंडा उति तृतीय ३ ५  
चंद्रकुमारि १९७४ चोथी ४ पुरभनाय, रठोर जगतनृपजा सुभाय ॥

आहाडी पंचम ५ गुनगरीय, अभिधा गुमानकुमरी १९७५ तदीय ॥ ६ ॥  
जो वंसवहालापुर पधारि, क्रम व्यूढ अजंबराउल कुमारि ॥

सुत देव १९८१ जोहि धौंकल १९८१ दुर्नाम, तिम भावतसिंह १९८१  
२ जु लाल १९८१ ताम ॥ ७ ॥

तीजो ३ जु भवानीसिंह १९८१ पूत, संदिग्ध जाहि भाखत अमृत ॥  
क्रम जेठे ए सुत त्रय ३ कहात, जे दूजी २ रानी जठर जात ॥ ८ ॥

उम्मेदसिंह १९८१ चोथो ४ कुमार, अरु दीपसिंह १९८१ छठो उदार ॥  
तिम दीपकुमारि २ दूजी २ कनी सु, तिय तीर्जनै ३ त्रितयी ३ जनी सु १ ९

सुत पंचम ५ चंद्र १९८१ जु पद्म १९८१ सोहि, क्रम पंचम ५ रानी जनित जोहि  
कन्या वडी १ जु सूरजकुमारि, चोथी ४ रानी भव जो विचारि ॥ १० ॥

व्याही जयसिंहहि जनक बुद्ध १९७१, आमैर अधीसहि सविधि सुद्ध  
दूजी २ कनी सु उम्मेद १९८१ ४ त्रात, मरुपति विजयहि द्विय महमचात

बुध १९७१ अनुज जोध १९७२ किय च्यार ४ व्याह, कन्या दुवर्ल-  
धिवस लाहिय लाह ॥

जयसिंहरानको अनुज भीम, जो भूप वनहडा द्रंग सीम ॥ १२ ॥  
कन्या तदीय जालमकुमारि, धव जोधसिंह १९७२ वामांग धारि ॥

अग्रजके संगहि दुलह आप, परन्याँ सु उदैपुर मह अमाप ॥ १३ ॥  
गजाउति जमुनाकुमारि १९७२ नाम, गजसिंहसुता दूजी २ ललाम ॥

तीजो ३ गनाउति गढप्रताप, उढाकिय अभिजनकुमारि १९७३ आप



चौथी ४ चंद्रा उति गमदंग, इम चंद्रकुमारि १९७४ परन्यौ अंग ॥  
 इन ४ में पहिली १ के इक १ सुताहि, उम्मेदकुमारि १ जग कहत जाहि १५  
 थूहनिके रनबिच बुद्धि एह, बुधसिंह १९७१ दयो जयसिंह गेह ॥  
 चौथी ४ तियके दूजी २ सुता सु, इह रूपकुमारि २ मृत सिसुहि आसु १६  
 इन चउ ४ न माँहि तीजी ३ निवारि, पतिसंग जरी पट्टु निखिल ३ नारि  
 अनुजा दुव २ दुव २ खिल अनुज उक्त, हुव जे चउ ४ बालहि कालभुक्त  
 ॥ दोहा ॥

अनुजा कुसलकुमारि १९७१ अरु, कल्याणादि कुमारि १९७२ ॥  
 अमर १९७३ बिजय १६७४ अंतिम नृप अनुज, चवे सिसुहि मृत च्यारि ४  
 भावी सानुज भूपकी, व्याह १ प्रजा २ दिकवत्त ॥  
 वर्तमान २ पहराम २०३१ ४ बिधि, अब जानहु अनुरत्त ॥ १९ ॥

॥ पद्धतिका ॥

इम लियउ बुद्ध पट्टाभिषेक, थपि राज्यअंग वासि हुकम एक ॥  
 सितरोमगुच्छं ढरि दुरदिस सीस, कनकातपत्र भूषित महीस २०  
 आवाप १ तंत्र २ चिंतन उपेत, सुभ बल १ विदग्ध २ धीसख ३ समेत ॥  
 पट्टुसंधि १ यान २ विग्रह ३ विलास, द्वैधा ४ ५ ५ सन ५ आश्रय ६ गुणप्रकास  
 प्रभु १ मंत्र २ शक्ति उत्साह ३ पूर, सम चतु ४ रूपायसामर्थ्य मूर ॥

इमलियउ इति ॥ बुद्ध बुधसिंह. राज्यअंग राज्य के अंग. सित श्वेत. रोमगु-  
 च्छ चामर ॥ “ चामरो रोमगुच्छप्रकीर्णक ” मितिहैमः ॥ द्विदिस दोऊ २ दि-  
 शा. भूषित शोभित. महीस मही पृथ्वी ताको ईश ॥२०॥ आवापतंत्रवृत्ति ॥  
 आवाप १ शंभु वश करिबे को चिन्तवन. तन्त्र २ अपने देश की वृद्धि को चिन्त-  
 वन ॥ “तन्त्रं स्वराष्ट्रचिन्ता स्यादावापस्त्वरिचिन्तन” मितिहैमः ॥ बल सेना.  
 तामें धीसख मंत्री. तिन सहित. संधि?, यान २, विग्रह ३, द्वैध ४, आसन ५, आ-  
 श्रय ६ ए छ गुण हैं । तिनके प्रकाश के विलास में पट्टु चतुर ॥२१॥ प्रभु इति ॥  
 प्रभुशक्ति, मंत्रशक्ति, उत्साहशक्ति इनमें पूर पूर्ण. सम सहित । चतुरूपाय-  
 साम?, दाम २, दंड ३, अद ४, ए च्यारि उपाय तिन करिके. लुप्त तृतीया है ॥  
 इन सहित. सामर्थ्य में मूर. सविचार विचार सहित. व्यसन सप्तदश-  
 सृगया १, स्त्रीसंग २, मद्यपान ३, वाक्पारुष्य ४, अर्थदृष्टि ५, दंडपारुष्य ६, वृत्त ७

सविचार व्यसन सप्तक७निषेधि, बानैत गान विन लेत वेधि २२  
 विधि च्यारि हेति कोविद विनोद, चतु४रंग चक्र साधन समोद ॥  
 जुत धर्म१नीति२श्रवसर जमाय, लोकानुराग नयरीति लाय २३  
 इत्यादि रागगुन जोर जग्गि, बुधसिंह बढिय जनु अनिल अग्गि  
 हुव बिदित कित्ति दिसदिसन हाक, अकिवकि अराति रुकि बढ-  
 न वाक ॥ २४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी  
 पतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहबुन्दीपट्टाधिवेशन १ बुधसिंहविवाहत  
 त्सन्ततिकथनं प्रथमो मयूखः ॥ १ ॥

आदित एकोनचत्वारिंशदुत्तरद्विशततमः ॥ २३९ ॥

॥ दोहा ॥

उदयनैर जयसिंह नृप, रानाँ अर्यमबंस ॥

तास बास तनुजा चतुर, भई इंदिरा अंस ॥ १ ॥

यह सप्त७॥ लुप्त द्वितीया कहता है। वान वाण, लुप्त तृतीया ता करिके। विन  
 पत्नी, तिनकों, द्वितीया बहुवचन में नकार ॥ या प्रकार सर्वत्र बोध्यम् ॥२२॥  
 विधि च्यारि हेति ॥ विधि च्यारि ४ च्यार विधि के शस्त्र, मुक्त चक्रादि १,  
 अमुक्त खड्गादि२, सुक्तामुक्त कुन्तादि३, यन्त्रमुक्त बाणादि४, ए च्यार वि-  
 धि के हेति शस्त्र ॥ "हेतिः प्रहरणं शस्त्र" मितिहैमः ॥ तिनके विनोद में कोवि-  
 द चतुर ॥ प्राकृत में प्राय अविभक्तिके शब्द प्रयोग होते हैं। तहां अन्वय योज-  
 नी विभक्ति सर्वत्र कर लेनी ॥ चतुरंग४-हस्ती१, हय२, रथ३, पदाति४, ए अंग ति-  
 नवारी, चक्र सेना ताको साधन है, नय न्याय ॥ २३ ॥ राग इति ॥ राज राज्य,  
 जग्गि चमत्कृति व्हैकै, जनु मानो, अनिल पवन ताकरि, अग्गि अग्नि, कित्ति  
 कीर्ति ॥

अराति शत्रु, "अरातिमारातिमथ" द्विरूपकोशे ॥ वाक वाणी ॥२४॥

श्रीवंशभास्कर-महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
 बुधसिंह के चरित्र में बुधसिंह का बुन्दी के सिंहासन पर बैठना १ बुधसिंह के  
 विवाह और सन्तानों के कथन का प्रथम १ मयूख सप्तम हुआ और आदि  
 से दो सौ उनचात्तीस २३९ मयूख हुए ॥

नैर नगर, अर्यम सूर्य के वंश में, तास ताके पास, गेह तनुज पुत्री इंदिरा ल-

हुव मंजु सुता रानाँ निकेत, उम्मेदकुमारि सुभ गुनउपेत ॥  
 बय रंच पंचहायन विधान, सौंदर्य रूप गुनगन समान ॥ २ ॥  
 लखि ताहि भूप जयसिंह आप, उद्वाह करणा चिंतामवाप ॥  
 लग्गिय वर बिकखन सब निहारि, विधिसहित कनी व्याहन विचारि  
 दिय दून देसदेसन पठाय, जंघाल चतुरमति चउउपाय ॥  
 मरु१मालव२डाहल३शाल्व४अंग५, कट६ केरल७कुंतल८मगध९  
 बंग१० ॥ ४ ॥  
 जालंधर११तर्जिक१२कासमीर१३, कर्णाट१४द्रविड१५मैथिल१६  
 सुवीर१७ ॥

इत्यादि विषय उत्तम अपार, तिनमाँहिँ रान पठये स्व चार ॥ ५ ॥  
 कहि हेरहु वर मम बच प्रमानि, जामातृ वर्यपद योग्य जानि ॥  
 भूपाल१तथा भूपतिकुमार२, इन सूर राजगुनजुत उदार ॥ ६ ॥  
 दस१०अब्द ताव बय१रूप२देखि, वर वरन खवारि आनहु बिसेखि ॥  
 अनिरुद्ध पट्ट बुंदिय सु थान, बुद्धहिँ सुनियत गुन रूपवान ॥ ७ ॥  
 तासाँहु रूप१गुन२अधिक भूप, कोउ होय ताहि हेरहु अनूप ॥  
 सुनि वानि चलिय दिसदिसन दूत, खोजिय असेस नृपकुल सपूता ॥  
 कथितादि देस लखि नृप कुमार, बुंदीपुरीहु चरन्नय चचार ॥

दूती ॥१॥ हुवहति ॥ मंजु सुन्दर. निकेत गेह. उपेत युक्त. रंच अल्प. हायन व-  
 र्प. सौन्दर्य सुन्दरता. गन समूह ॥२॥ लखिहति ॥ उद्वाह विवाह. करणा करि-  
 वेकी. चिंतां चिन्ता. अवाप पात भयो. यहां संधि कर दीनी है. लखन देखन.  
 वरहि वरकों. कनी कन्या ॥३॥ दिय दूतइति ॥ जंघाल वेगधान्. चउ उपाय  
 च्यार उपायों में चतुर ॥ ४ ॥ इत्यादि इति ॥ विषय देश. रान राना नें. स्व  
 अपने. चार दूत ॥ ५ ॥ कहि इति ॥ वच वचन. जामातृ जमाई तिनमें. वर्य  
 श्रेष्ठ. ताके पद के योग्य ॥ ६ ॥ दसेति ॥ अब्द वर्ष. ताव तावत् "तातावौ जा-  
 जावौ तावद्यावतौ" इति प्राकृतप्रकाशे ॥ विशेषि विशेष करिके ॥ ७ ॥ ता-  
 साँ इति ॥ सपूत पुत्रन सहिन ॥ ८ ॥ कथितेति ॥ कथित कहे. तदादि देश  
 देशन में. कुमार राजकुमार. चर दूत. चचार जात भये. प्रकृति राज्य के अ-  
 ङ्ग-रवासी १ अमात्य २ मंत्री ३ कोश ४ देश ५ दुर्ग ६ सेना ७ ए सप्त अंग,

लाखि प्रकृति सप्त७ अति सावधान, बुधसिंह राज्यपति वंसमान९  
 बुधधर्मरनिपुनश्चुरलीश्चिनोद, हय हत्थि चढन सह वह समोद॥  
 रनधीरश्दान उत्सव उदार२, लावशुय ललित मारावतार ॥ १० ॥  
 इम बुधसिंह लाखि वितार्जि बैर, सानंद गये चर उदयनैर ॥  
 सब कहि उदंत प्रतिदेस देस, बुधसिंह किति पुनि किय बिसेस११  
 कहि हमहु लाखिय जनपद अनेक, बुंदीस सम न अन्यत्र एक ॥  
 कुमरी वरत्र लायक स एव, तलैव रचहु संबंध देव ॥ १२ ॥  
 बुंदीद्र किति सबसों बिसेस, इग समुख श्रवन सुनि सुनि नरेस॥  
 संबंध चिंति तत्रहि बिचार, आत्मीय पुरोहित किय तयार ॥ १३ ॥  
 संतोखराम नामा सु विप्र, तिहिं कहिय तत्र गंतव्य छिप्र ॥  
 दिय संग भर्म लांगलि मढाय, सामज चतुष्क४हय सत१००सुभाय  
 वर बिबिध वस्त्र१रत्न२न समाज, मृगनाभि१चंद्र२सुसृष्टा३दि साज  
 इत्यादि तिलक मंगल असेस, द्विज संग जये लाखि काल १देस२  
 श्रीकृष्णनाम इक१गणकगज, समधीत त्रि३विधज्योतिष समाज  
 भान भानु (सूर्य) ॥ १ ॥ बुधेति ॥ खुरलो जाम्नाभ्यास. हन्थी हस्ती. लावश्य  
 सुन्दरता ताकारे. मार मदन. "मदनो मन्मथो मारः" इत्यमरः॥ ताको अचना-  
 म ॥ १० ॥ इमेति ॥ नैर नगर. उदयपुर गये यह अर्थ. उदंत वृत्तान्त ॥ ११ ॥  
 कहीति ॥ जनपद देश. लायक योग्य. स लो. एव ही. यहाँ संधी करी है. देव  
 संबोधन ॥ १२ ॥ बुन्दीन्द्रेति ॥ सुसुख सुख सहित. आत्मीय अपनों ॥ १३ ॥  
 संतोखेति ॥ सु सो (पुरोहित). तिहिं ता प्रति. गंतव्य जावता. छिप्र त्वरित "ल-  
 सु छिप्रमरं द्रुत" इत्यमरः॥ "सस्य च्छहाः" इति प्राकृतसूत्रेण स्कृताः छः॥ "सं-  
 योगादेर्जापः" इति प्राकृतसूत्रेण कलोपः॥ भर्म सुवर्ण ताभों. लांगली. नालि-  
 कोर. "नालिकोरस्तु लांगली" तिहेमचन्द्रः॥ यहाँ इकारकों धिवला बशसों जहश्च  
 कियो हे. सामज हस्ती. "हुंडालः सामजो नागः" इति धर्मजयः॥ चतुष्क च्या-  
 रि ४. सुभाय सु ४४. भाय आवनायारे ॥ १४ ॥ वरेति ॥ समाज समूह. मृ-  
 गनाभि कस्तूरी. "मृगनाभिमृगमदः" इति हैमः॥ चन्द्र कपूर. "वनसारः सि-  
 तामश्र चंद्रः" इति हैमः ॥ सुसृष्ट केसर. "कास्मीरजन्मा सुसृष्टः" इति हैमः ॥  
 साज सामग्री. तिलक मंगल तिलक संबंधी मंगल वस्तु. अजोप संपूर्ण ॥ १५ ॥  
 श्रीकृष्णानि ॥ गणक ज्यातिषी तिनमें. राज राजा. समधीत सं अधीत. सं स-

राणाका बुधसिंहके पास संबंधको पुरोहित भैजना] लक्ष्मणराशि-द्वितीयमयूख(२६०३)

दाधीचजनन भव जो द्विजेन, दिय सोहि पुरोहित संग तेन॥१६॥  
अरु कहिय उभयरतुम बुद्धिमान, बुंदीदैनिकट विरचहु प्रयान ॥  
मिलि भाखहु आसिखअस्मदीय, सबिनपउदंतपुनिकहिस्वकीय १७  
सब बस्तु सगजइयस्लाहि सुबेर५, करि तिलक निवेदहु नालिकेर  
स्वीकार करहिं जो तिलक विप्र, तो लखहु लग्न तत्रैव छिप्र१८  
जो लग्न प्रथम आगामि होइ, स्वीकार अत्र लिखिदेहु सोइ ॥  
यह सुनि द्विजबुंदिय आजगाम, जाहिरकिय आसिख पद ललाम१९  
सुनि सचिवद्विजागम सावधान, सनमानिय साधन खानपान ॥  
पुनि तदनु घस्य कतिपय बिहाय, बुंदीदर रचिय सद बुद्धराय॥२०॥  
संतोखराम लिय बुद्धि ताम, दाधीच बहुरि श्रीकृष्णाम ॥  
तिन पूछि अनामय दिय असीस, इन्ह बंदिय दोशु विप्र ईसा२१  
लाहि भिसल बैठि कहि सवन सार, बिधि सुनहु सभा सगपन बिचार  
चीतोर मोर जयसिंहसन, तिन गेह लेह तनया सुजान ॥ २२ ॥

म्यक्, पठ्या. होरा १, गणित २, संहिता ३ ऐसे तीन भेद की ज्योतिष को स-  
माज. जनन वंश. "अन्वयो जननं वंशः" इति हैमः॥ तामे. भव भये. जो वह.  
द्विजेन द्विजनमें इन स्वामी "स्वराणां स्वरे परे प्राकृतिलोपसंबंधः" इति प्रा-  
कृतसूत्रेण संधिः॥ तेन वा राजाने ॥ १६ ॥ अरु कहेति ॥ आशिख वैभव धृ-  
द्धि को वचन. अस्मदीय हमारो. सबिनय चिनय सहित. उदन्त वृत्तांत. स्व-  
कीय अपनों॥ १७ ॥ सगज गज सहित. स्वीकार अंगीकार. विप्र संबोधन.  
लखहु देखहु. तत्रैव तहांही. छिप्र त्वरित ॥ १८ ॥ जो लग्नेति ॥ आगामि  
घायवेवारो. अत्र यहां. सोय सोही. आजगाम आयो. ललाम सुंदर ॥ १९ ॥  
सुनेति ॥ तदनु तापीछे. घस्य दिन. कतिपय कितेक. बिहाय व्यतीत करि. स-  
द सभा. "आदागमालुस्वारलोपा व्यञ्जनस्ये" ति प्राकृतसूत्रेण सकारलोपः॥  
राय राजा. "क-ग-च-ज-त्-द-प-य-वां प्रायो लुगि" ति प्राकृतसूत्रेण जलोपः ॥  
तर्तः "अवर्षपरोद्धतस्वरो यत्वमेती" ति प्राकृतसूत्रेण यकारः ॥ २० ॥ संतो-  
खेति ॥ बुद्धि बुलाय. ताम तहां. अनामय कुशल. असीस आशिष. इन्ह इन  
ने ॥ २१ ॥ लहीति ॥ भिसल बैठयेको स्थान. सवन सवसों. सार तत्व. सगप-  
न संबंध. लेह लेख. तारकरि लुसवतीयाके. तनया पुत्री. सुजान सुजान ॥ २२ ॥

बुंदियनरेस कँहँ वह विवाहि, संबंध रचन सीसोद चाहि ॥  
 तुरकान सिंधु विच जे सरोज, तिन गेह उचित संबंध मोज ॥२३॥  
 भटसचिवसवन सुनि यह सुमंत, हिय हुलासि कहयो उचितहि  
 उदंत ॥

लवजनन वहै उज्वला लसात, ज्याँ जनन यहै चंडासि जात ॥२४॥  
 स्वीकार सबहि बुलिलय सुबानि, मानस अपुव्व आल्हाद मानि ॥  
 संतोखराम इम लाहि सुबेर, करि तिलक निवेदिय नालिकेर २५  
 बर बरिय वहुरि निज अनुज जोधर, राणाअनुज कन्यारकहि सुबोध  
 दुवबंधुन करि संबंध एम, देखयो सुहूर्त सुभ प्रथित प्रेम ॥ २६ ॥  
 संबत द्वि पंच ऋषि इंदु १७५२ मान, मेचक तपस्य नवमी विधान ॥  
 गणाकन विचारि सुभ लग्न तत्थ, इक १ मास अवधि अंतर समत्थ  
 करि सीख तबहि द्विजवर सुजान, कोटाप्रति सत्वर किय प्रयान ॥  
 चहुवान राम कोटाधि ईस, भुज भेटि वंदि तिन दिय असीस ॥२८॥  
 अरु कहि लघुपुत्री हेत रान, तुमरो सुत मान्यौ संपदान ॥  
 चहुवान राम यह सुनि सचाह, उपयम अपत्य कीनौ उछाह ॥२९॥

बुंदीति ॥ चाहि चाह्यो. सिंधु समुद्र. जे वे(राना).सरोज कमल. वा पानीसों अ-  
 लिप्त यह अर्थ. मोज रीक ताकरि ॥ २३ ॥ भेटेति ॥ सुमंत सुमंत्र. उदंत वृ-  
 त्तान्त. लवजनन लव को वंश. सूर्यवंश यह अर्थ. चंडासि चहुवाण. तज्जात  
 तासों भयो ॥ २४ ॥ स्वीकारेति ॥ अपुव्व अपूर्व. "परस्य द्वित्व" मितिप्राकृ-  
 तसूत्रेण रलोपः, वदित्वञ्च ॥ २५ ॥ बरेति ॥ निजचूपको अनुज लघुभ्राता. जो-  
 ध जोधसिंह नामक. राणाऽनुजकन्या राणा के अनुज की कन्याताको. दुव बं-  
 धुन दोऊ भाईनको. प्रथित प्रत्येक प्रसिद्धि ॥२६॥ संबतंति ॥ ऋषि ७. इंदु १.  
 सत्रहसे बावन १७५२. मान पराण. मेचक कुण्डलपत्न. तपस्य फाल्गुनमास, ता-  
 की. गणकन ज्योतिपीननं. तत्थतहां. समत्थ समर्थ. कुयोमादि दोष रहित य-  
 ह अर्थ ॥ २७ ॥ करीति ॥ सत्वर त्वरित. राम रामसिंह नामक. कोटाधिईस  
 कोटापुर का अधिईश स्वामी ताको. भुजभेटि भुजन करिके, भेटि मिलि. वं-  
 दि वंदित होयकें. तिन तिननं ॥ २८ ॥ अरुकहीति ॥ हेत अर्थ. रान रानानं.  
 संपदान दानपात्र. उपयमअपत्य अपत्य पुत्र, ताको उपयम विवाह तामें

इस बुंदिय कोटा बरि उमंग, संतोखराम गय उदयदंग॥  
 सब कहि उदंत सांगोपअंग, उपयम विधान निज कृत अमंग३०  
 बुधसिंह बिवोढा अति उदार, विक्रांत सुभग पट्टु सबप्रकार ॥  
 तिनसौं रचि उपयम नीतिबोध, दुवअनुज बरिय पुनि भीम जोध३१  
 अब रचहु व्याह विधि जो अजात, अहैं त्रिइरूच्य सुख साजि बरात  
 उत हुव विवाह उपकरण एम, इत सजि बरात परिकर सप्रेम३२  
 इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी  
 पतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहोदयपुरसंबन्धवर्णनं द्वितीयो मयूखः ॥२॥  
 आदितश्चत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४० ॥

॥ पट्टपात् ॥

धमधमंकि घुग्घरन वाजि चल्लिय मग अंपत ॥  
 धमधमंकि नउवात्ति बजत अतलादिन कंपत ॥  
 तमतमंकि गजराज सुंढि सुरपथ फटकारत ॥  
 क्लमभमंकि भूखनन रोचि रवि रोचि विगारत ॥  
 वानैत विहित शूरली रमत क्लमत बीर बिरुदन बलिय ॥

॥ २९ ॥ गय गया. उदयदंग उदयपुर. "सयुक्तपूर्वापि लघु क्वचित्स्थादि" तिवा-  
 खी। धृष्ट्यावचनात् सर्वत्र न छंदोअंगः॥ उदंत वृत्तान्त. सांगोपअंग सांगोपांग.  
 उपयम विवाह ॥ ३० ॥ बुधसिंहेति ॥ बिवोढा बर. लोकमें दुल्लह. विक्रांत सू-  
 रवीर. सुभग सुन्दर. उपयम विवाह. दुवअनुज बुधसिंह कं छोटे भाई. बरिय  
 बर. अंत के इकार-ईकार-एकार देशी प्राकृतमें हय होय. उकार-ऊकार-औ-  
 कार उव होय. भीम भीमसिंह. कोटा के राजा को पुत्र. जोधजोधसिंह. बुं-  
 दी कं राजा को पुत्र. ए दोऊ बुधसिंह कं अनुज अये ॥३१॥ अवेति ॥ अजा-  
 त नहींअये ऐसे. अहैं आय हैं. त्रि तीन ३. रूच्य दुल्लहा. "रूच्यो वरयिता ध-  
 वः" इतिहैमः ॥ उपकरण साजश्री. एम यों ॥ ३२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुन्दी के भूपति  
 बुधसिंह के चरित्र में बुधसिंह कं उदयपुर संबन्ध होने के वखान का दूसरा  
 मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से दो सौ चाबीस २४० मयूख हुए ॥  
 धमधमंकेति ॥ मग मार्ग. नउवात्ति भेरी. अनलादि अतल वितलादि लोक. ति-

बुधसिंह विदित बुंदिय नृपति सजि सानुज दुल्लह बलिय ॥१॥

॥ दोहा ॥

बुल्लि विदित कवि विबुध लिय, भूसुर चारन भट्ट ॥

अगुनहु त्याग उमंग धरि, अनाहूत बलि थट्ट ॥ २ ॥

सेवक जाति सिरोहिया, भाख्यो भट्ट प्रताप ॥

उदयनैर मम हेय नृप, लौ न चलहु सँग आप ॥ ३ ॥

॥ प्रट्टपात् ॥

कवि प्रताप यह कबहु पत्त कुल भट्ट उदैपुर ॥

राजसिंह १ जँहँ रान १ डीर १ दासहु धीसख २ धुर ॥

इक रानी अभिसाप पटक पट्टप १ कुमारपर ॥

तदनु मरायो ताहि कुमति बहिकाइ रान कर ॥

तस अनुज कुमर सरदार २ तिम मंतुबिनुहि लौ विप मग्ग्यो ॥

तिहिँ अघ प्रताप जावन तजि रु पुरहि उदैपुर परिहरयो ॥४॥

इकसमय यह भट्ट उदयपत्तन संपत्तो ॥

राजसिंह तिन दिनन रान राजत छक रत्तो ॥

पट्टप पुत्रहि रान रुडि मारन मन धारयो ॥

मैहु जनक हनि भूप रहौ यहँ हेतु विचारयो ॥

अनई न यहँ जान्यो जनक तब कुमार तत्काल भजि ॥

सरनागत भट्ट प्रतापके अथय मंगि हुव प्रनति सजि ॥५॥

नको. कंपत कंपात. सुरपथ आकाश. रोचि जांति. खुरली शस्त्राभ्यास "खुर-  
ली तु अमो योग्याभ्यासः" इति हैमः ॥ क्रमत चलत. विरुद विरुदवंदीजन के  
स्तुति करि ॥ १ ॥ बुल्लिइति ॥ भूसुर विप्र. भट्ट भाट. अनाहूत बिना बुलाये.  
॥ २ ॥ सेवकोति ॥ प्रताप प्रताप नायक. हेय छोरिबे योग्य. आप तुम ॥ ३ ॥  
कवेति ॥ पत्त प्राप्त. धीसख मंत्री. अभिलाष मिथ्यादोष. तदनु तापीछे. मंतु  
अपराध ॥ ४ ॥ इकैति ॥ भट्ट भाट. संपत्तो संप्राप्त भयो. रान रानाने. जनक  
पिता, ताको. हेतु कारण. मै पिता को हनि राजा बन्यो ज्यो यहँहु राजा बनै



रान जानि यह वत्त आय हुत भट्ट पटालय ॥

जचिय पुत्र तब भट्ट कहिय यह देहु अनासय ॥

अंगीकृत करि भट्ट कथित निज सुत लै आयउ ॥

अनय विरचि पुनि तनय अनागस मारि गिरायउ ॥

यह सुनि प्रताप अति सोक किय लिय संधा ताही छनक ॥

जो कबहु धरों सुख रानजल तो न भट्ट नामक जनक ॥ ६ ॥

( दोहा )

जलहु उदैपुरको तजन, बंदी जँहँ पन बंधि ॥

कहयो सत्य मम भट्ट कुल, सत्यवचन यह संधि ॥ ७ ॥

वह कथ चिंति प्रताप तँहँ, न चलन अरज उचारि ॥

नृपति कहयो हम लौ चलाहि, आपुन देसज वारि ॥ ८ ॥

हठ पूरव यह हुकम करि, लिय निज संग प्रताप ॥

भरि सकटन निज देस भव, रिरि करीरन आप ॥ ९ ॥

कोटाकीहु वरात बनि, मिलि मग संक्रमि संग ॥

पहुँचे दुल्लह उदयपुर, महसह उदित उमंग ॥ १० ॥

( पद्यतिः )

अतिमोद रान सनमुक्ख आई, विधिजुत जामाता लिय वधाइ ॥

दल उतरि द्रंग ढिग सर समीप, दुति बढिग आरती कलस दीप

पधराय समय महलन सप्रेम, तनि सुचित उचित उपहार तेम ॥

बुधसिंह १९७१ हिं व्याह्रिय शकिय रीति, बिंदा वय बाल्य सु प्रथित

यह अर्थ, अलई अन्याई ॥ ६ ॥ रानेति ॥ पटालय डेरा. यह याको. अनामय

कुशल. अनागस विना अपराध. संधा प्रतिज्ञा. नामक मेरो ॥ ६ ॥ जलेति ॥

बंदी भाट. संधि प्रतिज्ञा ॥ ७ ॥ बहेति ॥ कथ कथा. आपुन देसज अपने देश

को. वारि जल ॥ ८ ॥ हटेति ॥ रिरि पीतल. "रिरि च रीति;" इति हैमः ॥ ता-

क करीर कलस. "कुटः कुम्भः करीरश्च" ति हैमः ॥ तिनमें आप जल ॥ ९ ॥

कोटेति ॥ संक्रमि चलाकर. सह उत्सव ॥ १० ॥ अतिमोदेति ॥ जामाता लोके

जमाई. दल सेना. द्रंग नगर. सर तड़ाग. समीप निकट ॥ ११ ॥ पधरायइति ॥

प्रीति ॥ १२ ॥

परिनाइ सोदरहु जोधनाम, पुनि भीम पितृव्यक रामजाम ॥  
मुहुकम्मबंस भट बंधुवर्ग, परिनाइ नाम सालम कुसर्ग ॥ १३ ॥  
इत्यादि शान वर वरि अनेक, अठ्ठरू सत १०० व्याहे लग्न एक ॥  
बुंदीन्द्र संग विधि उचित साजि, दुल्लह सप्तोत्तरसत १०७ बिराजि १४

( दोहा )

छप्पनदेस नरेसकी, तनया व्याही शान ॥  
प्रेमरीति अंतरप्रिया, सोही रहिय सुजान ॥ १५ ॥  
ताके उर सुंदर सुता, हुव उम्मेदकुमारि ॥  
सो दुलहनि वामांग विधि, बुधसिंह अवधारि ॥ १६ ॥

( पट्टपात् )

कुमरी जठो कुमर नाम उम्मेदसिंह १९८ शिजिहिं ॥  
प्रिय शानिय सुत जानि शान लागि राजदेन तिहिं ॥

उपहार सामग्री. विंदा लोके बीद ॥ १२ ॥ परिनाइ इति ॥ सोदर अपनों स-  
होदर भाई. लोके सगो भाई. भीम भीम नायक. पितृव्यकरामजाम पितृव्य-  
क पिता को भाई लगतो होय ताहूँ काका वाया कहें है यातें हमनें कह्यो ऐ-  
सो कोन रामसिंह नामक कोटा को राजा. ताको जाम जायो. यह अर्थ. मुहु-  
कम्म कुमर जोपीनाथ को पुत्र, राव शत्रुशाल को भाई ताके वश में भयो ऐ-  
सो सालमसिंह नामक कुमर्ग कुत्तित है प्रजा जाके. ऐनो याके पुत्र वहेहैं जे  
स्वामी बुधसिंह को शत्रु वहेहैं यातें कुसर्ग कह्यो ॥ १३ ॥ इत्यादीति ॥ सप्तोत्तर  
सत १०७ एक सो सात और दुल्लह और एक बुंदी को इन्द्र ए एकसो आ-  
ठ भये. या लग्न पर शाना जयसिंह ने एक सो आठ १०८ कन्या अपनी अल  
बंधु वर्गन की इकट्ठी करके व्याही तहां तीन दुलहा तो बुंदीसों मये दोल भाई  
और एक सालमसिंह अठ एक कोटा सों ऐसे औरहु देशन के राजा तथा  
राजकुमार तथा उमराव वा लग्न पर एक सो आठ १०८ विवाहे इत्यर्थः  
॥ १४ ॥ छप्पनेति ॥ छप्पन वागड़ देश के समीप देश विशेष. ताको नरेस चहु-  
वान यह शेष. ताको तनया पुत्री अंतर मन. ताम ॥ १५ ॥ ताकति ॥ अवधारि  
धारी. ॥ १६ ॥ कुमरीति ॥ कुमरीजठो. कुमरीसों जठो. उंच वडो. यह अर्थ.

सत्रुसल्ल नंदिनिय नाम गंगा गुन गाई ॥

भावसिंह भगिनी सु पुब्ब रानहिं परिनाई ॥

अमरेस कुमर ताके उदर प्रथम भयो कुल पट्ट पति ॥

तुरकान तेज संगति प्रवल घरघर हिंदुन अनय रति १७ ॥

लाखि यह अमरकुमार राज लघुबंधव पावत ॥

कुप्पि अनय उप्फनिय जनक उप्पर भुव जावत ॥

हानि धरम हिंदून लाय घरघर इम लग्गो ॥

अशाकुके सम्मित अनय भिदुर गृह पब्बय भग्गो ॥

अमरेस उदित आहव रचन बल विसेस धनविबु कठिन ॥

यह सोचि आय मातुल निलय बुंदिय गढ तिहिं मंत्र खिन १८ ॥

यह भाऊ १९ ॥ १ अधिराज देत अनई न कपर्दन ॥

तीनलक्ख ३००००० तव दम्म पाय निठ्ठाहि मातुल सन ॥

अर कुमार अमरेस आय वेधमपुर ओसरि ॥

राउत अनुपमसिंह पग्घ पलाटि रु धीसख करि ॥

बखसीस च्यारि ४ चामर बिर्चि संगर उचित अनीक साजि ॥

यह क्रमरी सौ बहुत वर्ष पहिले भयो हो. जिह जाको तिह ताको. तव यह शेष. नंदिनिय पुत्री. पुब्ब पहिले ॥ १७ ॥ लखीति ॥ बंधव भाई. जनकउप्पर पिता उप्पर. भुव भू. अनय अन्याय. सोही भिदुर वज्र. ताकरिके "कुलिशं भिदुरं पवि" रित्यमरः ॥ गृहपब्बय गृह घर. सोही पब्बय पर्वत. भग्गो नष्ट होत. आहव युद्ध. बल सेना. मातुलनिलय मातुल मांमा. ताको निलय स्थान. तिह मंत्रखिन वा युद्ध करिवेके मंत्र के. खिन क्षण से ॥ १८ ॥ यह ति ॥ भाऊ भावसिंह. अनई अन्याई. याने पितासो लखिवेको मांगी यह अन्याय की याते. कपर्द लोके कोडी. न नहीं. दम्म दम्म लोके रूपय्या. सन सौ. अर शीघ्र. वेधम वेधम नामक नगर. ओसरि पीछो फिरके. राउत है अचक्र पद जाको ऐसो अनुपमसिंह अनोपसिंह नाम करि वेधम को पति ताको. सेवार के उमराव राउत बहुत बजे हैं. पग्घ शिरोपेष्टि लोके पाघ. ताको पलाटि बदालि. उनकी पाघ इनने यह अर्थ. मूढ लोक याको आधुनिक समय ने मित्रताको चिन्ह गिने हैं याते. रु अरु. धीसख मंत्री. अनीक सेना. "चक्रं चानीकमस्त्रिया" मित्यमरः ॥ पुरउदय उदयपुर. वृंहित गजशब्द. हेसा हयशब्द.

पुरउदय जाय घेरिय प्रबल वृद्धित हेषा निनद बजि ॥ १९ ॥

सु सुनि रांन जयसिंह पुत्र लधु सहित पलायो ॥

किल्ला कुंभिलमेरु बसि रु वह काल वितायो ॥

सुत हल्ला लखि सत्य मात गंगा सकोप मन ॥

खेटक खग्ग उचाय आय ठह्री गृह तोरन ॥

पठई कहि अनुपमसिंह पँहँ तुम भटवर धारत धरम ॥

समुझावहु कुतनय बिनयसन जो चौडाघर तुम जनम २०

यह सुनि अनुपमसिंह सुमिरि निज पुब्बपितामह ॥

प्रथम मिल्यो चलबुद्धि अब सु बदल्यो डर दुस्सह ॥

साजि अप्पनौ अत्थ समुख प्रतिभट व्है धायो ॥

चौसर चत्वर उदयनेर लुट्टन नहिँ पायो ॥

समुझाय कुमर अमरेसकहँ तुल्य सुभट एकत्र जुरि ॥

कुल धरम थंभि सुत जनककेँ सुनय साम किन्नाँ बहुरि २१

॥ दोहा ॥

रहँ तखत जयसिंह नृप, तोलौँ अमरहिँ अप्पि ॥

राजसमुद्र तडाग तट, राजनगर गढ थप्पि ॥ २२ ॥

इम गंगा पहिले समय, पुण्य पतिव्रत पाय ॥

भेदि सु अनुपमसिंह भट, लिय स्वपुत्र समुझाय ॥ २३ ॥

गंगासम गंगा कही, सुधरम सतिय सुजान ॥

भीखमसम कैसैँ कहाँ, अनई अमर अमान ॥ २४ ॥

निनद शब्द. ॥ १९ ॥ सुसुनेति ॥ सु सो. पुत्र उम्मेदसिंह नामक. सुत अपनों पु-  
त्र अमरसिंह नामक ताकों. मात माता. खेटक ढाल. तोरन बाहिर को द्वार.  
कुतनय कुपुत्र. पितासौँ लखि आयो यातं याकों. सन सौँ. हेतु में पंचमी. तुम  
तुमारी. हतो यह शेष ॥ २० ॥ यह इति ॥ पुब्ब पूर्व. ताकों चौडा कौं. यह अर्थ.  
समुख सामने. चौसर चार चार पंक्तिधारे चत्वर जामें ऐसो ॥ २१ ॥ रहे-  
ति ॥ अमरसिंह कुमार कौं पंच उमराचननें यह शेष. अप्पि देकैँ. थप्पि थापो.  
॥ २२ ॥ इमेति ॥ यह स्पष्ट ॥ २३ ॥ गंगाइति ॥ सतिय सती (पतिव्रता) यह

लाहि प्रसंग कछु यँहँ कहौं, चौडाकी नय वत्त ॥  
जाहि सुमिरि अनुपम भयो, गंगावच अनुरत्त ॥ २५ ॥

॥ षट्पात् ॥

इक्कसमय चीतोर रान लखपति खेतल सुत ॥

तरुन कुमर इक तास नाम चौडा नय जय जुत ॥

नृप रनमल रठोर गेह तनया मंडोवर ॥

चौडासौं संबंध करन आये तस कग्गर ॥

सुनि पत्र रानलखपति कहिय तरुननकाँ हेरत जगत ॥

यह जनक बैन सुनि सुनि कुमर किय मन तिहिँ व्याहन बिरतर २६

कहि चौडा करजोरि सुनहु मरुवर सुजाता ॥

व्याह पिताको रचहु वहै कन्या मम माता ॥

पहु सुनि मरुवासीन कहयो लिखिदेहु अप्प कर ॥

रठोरनको भागिनेय चीतोर पट्ट पर ॥

यह सुनत लिखित निजहत्थ करि मरुवासिन सौँप्यो कुमर

लखपतिहु रान वहै मंदमति व्याहलइय वह वृद्धवर ॥२७॥

तुच्छ दिननके अंत गरभ रठोरि ग्रहन किय ॥

समय अंत सुत जनम नाम मुक्कल विप्रन दिय ॥

लखपति अज तिनदिनन काल कंठीरव मारयो ॥

चौडासौं रठोरि रूठि पीहर बल धारयो ॥

बुलवाय तात रनमल्ल पुनि जोधभ्रात चीतोरगढ ॥

वृत्तान्त बहुत वर्ष पहिलैको यहाँ कहि दीनां है ॥२४॥ लाहि इति ॥ यँहँ यहाँ  
॥ २५ ॥ इक्कइति ॥ तास ताको, कग्गर पत्र, तिहँ ताको, व्याहन व्याहिवेकां  
विरत बिरत्त (उदासीन) ॥२६॥ कहि इति ॥ मरुवर मरुदेश के घर अष्ट, सु-  
चिवादि यह संवोधन, अप्पकर अपने करसौं, भागिनेय लोके भानेज, वह र-  
ठोर राजा रनमल्लकी कन्या, वृद्धवर वृद्धे वरनें ॥२७॥ तुच्छइति ॥ जनमि जन्मयो,  
मुक्कल मोक्कल, लोके मोक्कल, अज वकरा, काल मृत्यु, सोही कंठीरव सिंह ताने.

तिन हत्थ द्वार कुंचिय अरपि किल्ला करिय प्रपंच दह २८  
 नारिबुद्धि रठोरि समुक्तिनहिं परिग फलाफल ॥  
 तव सुख रनमल कहिय तजै चाँडा जब यह थल ॥  
 यह सुनि चाँडारान जुति निकस्यो भीसम धुर ॥  
 सुलक छोरि मेवार गयो मालव मंडूपुर ॥  
 भारवन दाव लाग्यो तबहि जोधा रनमल मंत्र जपि ॥  
 करि भागिनेय मुकल कदन थिरहि लैन चीतोर थपि २९  
 इकशरान अनुचरिय नेह मंडयो जोधासम ॥  
 इकशदिन आसवपान जोध बुल्लयो मतिविभ्रम ॥  
 मुकलकाँ अब मारि दुग्ग दल देस कोस हरि ॥  
 इकशमासके अंत तोहि भजिहै रानी करि ॥  
 यह वत डारि दासिय दई मुकलकी माता श्रवन ॥  
 सुनि सोचि तबहि रठोरिकाँ चाँडा आयउ चितमन ॥३०॥  
 पत्र मंडि प्रछन्न दूत मंडुव पठवायो ॥  
 सुनि चाँडा सजि सेन अह रजनी गढ आयो ॥  
 करि हल्ला चढि कोट धस्यो बीराधिबीर बल ॥  
 कुपर जाध भजि कटिग मारिलिन्नाँ नृप रनमल ॥

तात पिता. जोधभ्राता जोधसिंह नामक भाई. द्वारकुंचिय दरवाजेनकी कुं  
 ची. अरपि दैकै. दह दह ॥२८॥ नारिबुद्धिरिति ॥ परिग परयो. थल स्थल (स्थान).  
 रान राना. जुति लोके जुपिकै. भीसमधुर भीषमकी धुरकै. जा धुरकै भीषम  
 जुप्यो ताके यह अर्थ. मारवन मरुवासीनके. कदन नाश. थपिको अन्यय मंत्र  
 सों है ॥ २९ ॥ इकइति ॥ अनुचरिय दासी. तानै. लख यासों. दासिय दासी  
 नै. माताश्रवन माताके कान में ॥ ३० ॥ पत्रइति ॥ सेन सेना काँ. बल सेना.  
 मुकलहिं मुकल काँ. अरपि दैकै. तदर्थ भिन्न. हिंदवान हिंदुस्थान. यहाँ वर्णा-  
 श्रम धर्म वारे या कुमारिका क्षेत्र के वाली जन हैं तिनकाँ म्लेच्छ लोग तो  
 हिन्दू कहैहैं. यह हिन्दू शब्द या क्षेत्र में जवननको राज्य भये पीछे बहुत प्र-  
 कट वहाँकें देशीप्राकृत में गयो चातें देशीप्राकृत जानिकें हमने वर्तमान कार-  
 नतें कस्यो है. अन्यथा या शब्द को अर्थ तो पुरो ही होत हैं; क्योंकि म्लेच्छ

मुकुलहिं पट्टगहिय अरपि रहि तटस्थ जग जस लियउ ॥  
हिंदवान बत्त धारहु हृदय करहु जेम चौंठा कियउ ॥३१॥

दोहा—वह चौंठा कारि चिंतमन, अनुपम धरम विचारि ॥

कियो साम सुत जनककै, निज पुर लूट निवारि ॥३२॥

रान अनय मन ठानिकै, राज दैनलागि जाहि ॥

ताकी वर सोदर स्वसा, बुद्ध नरेशहिं व्याहि ॥ ३३ ॥

तीजीइरानीकी सुता, भीमहिं दइय विचारि ॥

भ्रात भीमकी नंदनी, जोधसिंह अवधारि ॥ ३४ ॥

सुहुकमहर सालम अरथ, सुभट सुता परिनाय ॥

बहुरि सीख डेरन दई, सबहिन मोद सुनाय ॥ ३५ ॥

दुल्लह डेरन आय किय, बिहित नित्य सुचि होय ॥

गोरन असन निमंतकाँ, रहे रान मग जोय ॥ ३६ ॥

रान कैफ मंडत बहुत, आतआत अलसाय ॥

गोरन दिवस अतीत व्है, समय निसीथ सु आयै ॥३७॥

॥ पट्टपात ॥

लोग तो इनकाँ अच्छे कहें नहीं तिन मतालुकूल उत्तम आर्य जनों को अपम करिके कहनाँ परत है कि तिन हिंदुनको स्थान है. तांके अलुस्वार काँ “अलु-स्वारो बहुलं” या प्राकृतलक्ष्मियों अलुनासिक कियो. जेम ज्यों ॥ ३१ ॥ वहइ-नि ॥ साम प्रथम उपाय. निजपुर रानाको पुर (उदयपुर) ताकी ॥ ३२ ॥ राने-ति ॥ स्वसा भगिनी. लोके यहिनि. “जाभिस्तु भगिनी स्वसे” तिहैमः ॥ यह यहिन भाईसों बहुत वर्ज पीछै भई. व्याहि व्याही ॥ ३३ ॥ तीजीइति ॥ भी-महिं कोटा के राजा को पुत्र भीमसिंह. ताकाँ. दइय दई. भ्रातकी राना जं-यसिंह को भाई भीमसिंह. ताकी. नांदिनी पुत्री. अवधारि धारी ॥ ३४ ॥ सु-हुकमेति ॥ हर देशीप्राकृत में वंश चारे काँ कहत हैं. तातें सुहुकम वंशी यह अर्थ भयो ॥ ३५ ॥ दुल्लहइति ॥ नित्य सन्ध्यादिक कर्म. सुचि पवित्र. गोरन विवाह के दूजे दिन काँ लोक में गोरन कहै. ताके. असन रोजन के. निमंत्र बुलावाको. रानमग राना के मार्ग काँ. जोय देखि. जोय को अन्वय रहे लों है ॥ ३६ ॥ रानइति ॥ कैफ नशा. निसीथ अर्धरात्रि ॥ ३७ ॥ सुपट्टइति ॥ लु

सु पहु रान जयसिंह मन्नि मादक सराग मन ॥  
 भंगि अरक भुजैँ सु प्रमित दुव बीस २२पहीसन ॥  
 प्रिय रानिय छप्पनिय भौन पगधारि नित्य भल ॥  
 असन अप्प अहरहिँ मेर खट्ठरितुहि अंबफल ॥  
 इम मत्त मातुलानिय अरक दसमी १०निस ससिके उदय ॥  
 चहुवान सिबिर सीसोद चलि मानुहारि गोरन समय ॥ ३८ ॥  
 मिलि उपेत सनमान राव रानाँ अनंद रजि ॥  
 चढि गयंद चहुवान स्वसुर महलन प्रयान सजि ॥  
 परिकर सह परि पंति असन किन्नाँ अधिराजन ॥  
 अति सुख डेरन आय सयन मंडिय प्रमोदसन ॥  
 जयसिंह रान तीजे ३दिवस जनक दोस मेटन जहर ॥  
 परताप भट्ट डेरानप्रति मुदित आय मंडिय महर ॥ ३९ ॥

( दाहा )

अगैँ रानाँ राजसाँ, रुट्टो भट्ट प्रताप ॥

अब जयसिंह प्रसन्न किय, आय पटालय आप ॥ ४० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दी  
पतिबुधसिंहचरित्रे सप्तोत्तरशतविन्दसहितबुधसिंहोदयपुरविवाह

सो. पहु प्रभु राजा. मन्नि मानिके. मादक नशे की वस्तु. तासों. सरागमनरा-  
ग प्रीति. तासहित मनकों. भंगि अंगा. ताको. अरक सार. भुजैँ खावै. सु  
सो. प्रमित प्रमान. भोन गेह. पगधारि जायकै. अंब आम्र. लोके आंवा. तिन  
के फलनसों रुचि बहुत ही यातै बारह मास राखते. मातुलानिय अंगा. ताके  
चहुवान बुधसिंह के. सिबिर रचना विशेषसोंफोज के डेरा. तिनप्रति. सीसो-  
द रानों ॥ ३८ ॥ मिलिहति ॥ उपेत. युक्त. राव बुदीनृप. राजि शोभित व्हैकै.  
सह सहित. असन भोजन. सन साँ. जहर विष. महर कृपा ॥ ३९ ॥ अगेति ॥  
राजसाँ राजसिंह नामकसाँ. पटालय डेरा ॥ ४० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
बुधसिंह के चरित्र में उदयपुर में एक सौ सात दुल्हों सहित बुधसिंह के वि-  
वाह के वर्णन का तीजा ३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ इकता-



वर्णानं तृतीयो मयूखः ॥ ३ ॥

आदित एकचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४१ ॥

षट्पात्—दिन चउत्थ४ दीवान बुद्धि रघुपतिय पुरोहित ॥

अरु चारन आनंद भट्ट परताप बुद्धबित ॥

च्यारिलकख४०००००निज चलन दम्म खज्जूर संगदिय ॥

हय बर इक्कहजार१०००दोयदस१२मत्ते दंतिय ॥

सिरुपाव उच्च द्वादस सहँस१२०००कति बिधि भूखन संग क्रिया ॥

मंगनन भाग धनपति मनहुँ दैन त्याग इम हुकमदिय ॥ १ ॥

दिन पंचम२दुव२नृपन सजिय चीतोर समागम ॥

पिकरुयो दुग्ग सु प्रथित समर जँहँ हुव अकवर सम ॥

पुण्णिमा१५दिन करि गोठि फाग कोतुक किल्लापर ॥

होरिय उच्छव ठानि बहुरि आये पत्तन बर ॥

अतित्याग उक्कल सुनिसुनि सुजस हरखिरान जयसिंह जिया ॥

बिधिउचित पुज्जि बरबरनि छवि रहि रस बुंदिय सिक्ख दिया २।

चलि बरात प्रतिपंथ भीम करजोरि भ्रात धुर ॥

लीस २४१ मयूख हुए ॥

दिनइति ॥ चउत्थ चतुर्थ. चौथे दिन यह अर्थ. दीवान बुधसिंह. बुद्धि बुलाय के. रघुपतिय रघुपति नामक. यहां स्वार्थ में क प्रत्यय आन्यों. ताके व्यंजनकों लोप करिके प्राकृत के मतसों यकार कियो. यह रीति सर्वल ऐसे प्रयोग आ-वें तहां जानलेनी. आनंद आनंदरास नामक. अपनी पोळि को चारण हरिखा नाम ग्राम को स्वामी हमारे पितामह बदनसिंह को प्रपितामह यह शेष. भट्ट भाट, बुद्धिबित बुद्धि परखये चारो. "विदुज्जाने"धातु है. ताको बित् भयो. ताके तकारकों प्राकृतसों सस्वर कियो. दम्म रूपैया. खज्जूर खर्जूर रूपा. ताके. क-ति कितेक. धनपति कुवेर. त्याग दान. विवाह में मंगननकों दान होत ताकों त्याग कहै हैं ॥ १ ॥ दिनइति ॥ पिकरुयो देख्यो. दुग्ग दुर्ग. किल्ला. सु सो. (चित्तोर). हुव भयो. समा सों. पुण्यम पूर्णिमा. ताके दिन. गोठ रीति विशेष-सों भाजन. पर ऊपर. होरिय यहां हुतासनि की. जाकों अग्नि में जारिये सो लेनी ॥ पत्तन नगर. तिनमें बर श्रेष्ठ ॥ उदयपुर यह अर्थ भी होत है ॥२॥

कोटाप्रति क्रिय सिक्ख अप्प आयउ बुन्दीपुर ॥  
 दिय मिलान सब सैन जेतसागर तड़ाग तट ॥  
 दइवजोग निस समय अग्गि लग्गिय डेरन पट ॥  
 सर सेतु मध्य गृह पिहित इकःभजि रु तत्थ वर वरनि रहि ॥  
 हुव छार हसम डेरन सहित मनुज तुरंगहु कलुक दहि ॥ ३ ॥  
 इहिं दारुन उतपात दान सत दोय२०० सविधि दिय ॥  
 सुद्ध समय निज नगर द्वार उत्तर प्रवेस क्रिय ॥  
 पुरजन मंगलपुब्ब त्रिविध उच्छाह बधारे ॥  
 हट्टा चत्वर चोक सउध प्राकार सिंगारे ॥  
 विधि निगम साधि वर वरनि इम नीराजित गृह गमन क्रिया ॥  
 कलुदिनन अंत जवनेसके चरन आय फरमान दिय ॥ ४ ॥  
 दिल्लियपति अवरंग४०३तपत इकःछत्र तीन३दिस ॥  
 दक्खिन दब्बनकाज चट्टिग अतिबल अतीव रिस ॥  
 पहिलैं रेवापार नाम निज नगर वसायो ॥  
 बहुत बरस रहि तत्थ कलुक अरि अमल उठायो ॥

खलिति॥भीम कोटानुपपुत्र.आतथुर भाइनमें मुख्य.सरसेतु तड़ागकी तट. लोके  
 पाळि. पिहित गुप्त. तत्थ तहां. छार भस्म. हसम वैभव. यह हसम शब्द देशी प्रा  
 कृतमें है. ताको उदाहरण. "हसम ह्य गाय देश अति"॥ यह दोहाको चरन पृ  
 थ्वीराजरासेमें महब्बा खंडमें है. अरु और ठोरहु रासे में बहुत प्रयोग हैं अरु  
 सुसलमान कहै हैं कि हमारे वैभवको नाम हसमत् है ताको यह भयो है, पर  
 न्तु मायें तकार नहीं है यातें देशी प्राकृत ही मान्यों. मनुज मनुष्य. दहे ज  
 रे ॥३॥ इहिं इति ॥ दारुन भयंकर. सविधि विधि सहित. उत्तर उत्तर दिशाके.  
 दृष्टा पनिकन के विक्रयको स्थान. चत्वर चुहंट. चोक याजार. सउध देशी  
 प्राकृतमें सउध, सौध. लोके महल ॥ "सौधोऽक्षीराजसदन" मित्यमरः ॥ प्रा  
 कार लोके कोट. निगम वेद ताकी. नीराजित आरती उतारे अये. चरन दूत  
 क. फरमान लिख्यो हुकम ॥ ४ ॥ दिल्लियपति इति ॥ रिस रोससां. मेकलजा  
 नर्मदा "रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यके" त्यमरः॥ नामनिज अपने ना  
 मको. तुरक सुसलमाननमें. रुठ शब्द देशी प्राकृत है ॥ तहांके वासी ही तुरक

हाजरि समस्त हिंदुव तुरक जोन अवर दिस मुकल्यो॥  
 तुरकान तहर जालम जहर लोपिलहर काहुन कल्यो॥५॥

॥ दोहा ॥

काबल सूबा काल वस, सुनि अनिरुद्ध जरूर ॥  
 अब सेवन अंतर समुक्ति, बुलिलय बुद्ध १९७१३हजूर ॥६॥  
 अहदी तब अवरंग ४०।३के, अतिजव बुंदिय आय ॥  
 सिरधरि साहन बंदगी, चलहु कहयो हित चाय ॥ ७ ॥  
 जाय समुख फरमानके, करि सलाम लिय झेलि ॥  
 उपज्यो चलन प्रपंच अब, देत हुकम को पेलि ॥ ८ ॥  
 सुनि कग्गर परिकर सबहि, मिलि इककत किय मंत ॥  
 स्वामि बाल सेवा कठिन, आलोचहु मतिअंत ॥ ९ ॥  
 इहि अंतर अवरंग ४०।३सुत, जैठो आलमसाह ४०।३ ॥  
 बंदीगृहते कहिचल्यो, चिति आगरा चाह ॥ १० ॥

( पञ्चाटिका )

हुव पुत्र पंचअवरंग धाम, सुलतानमुहुम्मद ४१।१प्रथम जाम ॥  
 सुत दूजो आलमसाह ४१।२ एह, सुत तीजो आजम ४०।३ पितु  
 सनेह ॥ ११ ॥  
 सुत चौथो अकबर ४१।४ नामधार, हुव कामबखस ४१।५ पंचम  
 कुमार ॥

जेठेसुत द्वैरसनकरि उदास, बंदीगृह डारे विसम बास ॥१२॥

थजत हैं ते यहां नहीं लैनें ॥ तहर मताप. जालम जुलम करिवेवारो. यह या-  
 धनीभाषा के शब्द हैं. लहर वा जहरके असर को झोला. काहु काहुसों ॥५॥  
 काबलसूवेति ॥ जरूर त्वरित. अंतर विच्छेप. बुध बुधसिंह ॥ ६ ॥ अहदीति ॥  
 साहन पातशाहनकी ॥ ७ ॥ जायहति ॥ पेलि टारि ॥ = ॥ सुनिहति ॥ इककत  
 एकत्र. आलोचहु विचारहु. अतिअंत बुद्धिपर्यंत ॥ ६ ॥ ईहिहति ॥ चाह इ-  
 च्छा ॥१०॥ हुवहति ॥ जाम जन्म. एह यह. जो आगराको चल्यो सो ॥ पितुस-  
 नेह पिताके स्नेहवारो ॥ ११ ॥ सुतहति ॥ यह स्पष्ट ॥ १२ ॥ सुलतानहति ॥

सुलतानमुहुम्मद४१।१मरियततथ, आलमबच्योसु४।१२आयुहिसमतथ  
याकैहुं पुत्र हुव प्रथम च्यारि४, आयै बय जुब्बन कैद डारि ॥१३॥  
कैदहिमें पाये पलित केस, अपमानित दीनहुसों बिसेस ॥

बरसावधि पावै दगल इक्क१, परि दुसह दहै जूका रु लिक्क १४  
नहिं वपनन्हान नहिं असन इष्ट, जूकान जनित सहियत अरिष्ट ॥

इकसमय दुक्ख अरजी कराय, जो महर नयो मिलि दगल जाय १५  
अवरंग४०।३हुकम पठयो अनेह, उलटा करि धारहु दगल एह ॥

इक समय मिल्यो सरदा विसारि, तिहिं छेदन छुरिकाहित उचारि १६  
पुनि कहिय साह भरि कोप भार, सिरसै दै फोरहु नहिं हथ्यार ॥

इम कुपित साह सुत सीस आहि, इक समय सभासों कहिय चाहि १७  
जो मिलहिं हमारे हुकम आज, तो पावहि आजम४०।३साह राज ॥

जो मिलहिं खुदाके हुकम पाय, लहिहैं तो आलम साह आय १८  
सुनतहि इम आजम कहिय एहु, बंदीगृह बासी सोहि देहु ॥

यह सुनत साहहिय बढि बिखाद, कोपारुन आजम प्रति जगाद १९  
सुत जेष्ट ममायस धरत सीस, वह कैदी अरु तुम तखत ईस ॥

यह कहि बुलाय आलम उदास, निकरयो तजिकारागृह निवास २०  
करि गुसल वपन मंजुल कराय, अति दिव्य वसन धरि आम आय ॥

लखि साह छिप्र हियसों लपेटि, भुज दुवर्गहिलीनों भुजन भेटि २१  
तथ तहां (कारागृहमेंही) डारि डारयो ॥ १३ ॥ कैदहिमेंइति ॥ पलित

जरासूं स्वेत. जूका यूका. लोके जाँ. रु अरु. लिख लिखा. लोके लीक ॥ १४ ॥  
नहिंइति ॥ वपन जौरकर्म. इष्ट चाह्यो. महर कृपा होयतो ॥ १५ ॥ अवरं-  
गेति ॥ अनेह बिना स्नेहसों. सरदा उदणकालमें फल विशेष. विसरि भूलि-

कै. जानिकैं तो वाकौ कौन देतो एसो पिताको कोप हो. छेदन फारिकेकौं. उ-  
चारि कही ॥ १६ ॥ पुनिइति ॥ हथ्यार शस्त्र. नहीं है ॥ १७ ॥ जोइति ॥ यह  
स्पष्ट ॥ १८ ॥ सुनितेति ॥ एह यह. बिखाद खेद. जगाद कहतभयो. यह सं-

स्कृत शुरु क्रियापद है ॥ १९ ॥ सुतजेष्टेति ॥ ममायस मेरो हुकम ॥ २० ॥ क-  
रीति ॥ गुसल स्नान. यह यावनी शब्द है. आम जामैं सय पहुंचै ऐसी बढी

घिरकाल कंठ गदगद बढात, हुवघाँ हुव अश्रुन अधिक पात ॥  
 तँहँ दियउ रीभि अवरंगसाह, अकबरपुर सूबा जुत उछाह ॥ २२ ॥  
 बारहहजार १२००० मनसुब लिखाय, दिय सीख आगरा हित बढाय  
 लहि सीख चलन मन करि विचार, द्रुत चढिग साह आलम कुमार  
 रेवा उलंघि अतिदल अमान, पुर आय अवंती दिय मिलान ॥  
 अगँ अवंति सूबा पधारि, कछुकाम पीर अर्चन उचारि ॥ २४ ॥  
 द्रुत कैद जोग वह रहिय सेस, अब करिय आय पूरन सुदेस ॥  
 खैरात बंदि बसु बिबिध नाम, क्रमि मग्ग अगगरापुर जगाम ॥ २५ ॥  
 नृप विष्णुसिंह आमैर नाथ, निज बंस सुभट हरिसिंह साथ ॥  
 अवरंग हुकम जो लहि जरूर, हुव आय साह आलम हजूर ॥ २६ ॥  
 ॥ दोहा ॥

अगँ इक अवरंगको, सोम समीप विचारि ॥  
 विष्णुसिंह नृपसौ हुकम, हुव मारन जटवारि ॥ २७ ॥  
 विष्णुसिंह नृप सुभट निज, लिय हरिसिंह बुलाय ॥  
 कियउ बिदा जटवारि पर, संगर सेन पठाय ॥ २८ ॥

॥ षट्पात् ॥

हरियसिंह कछवाह जाय जटवारि बिटिलिय ॥  
 बहु जट्टन सिर कट्टि खनित खड्डन प्रविष्ट किय ॥  
 वह लंबापुर नाथ बंस खंगार संग साजि ॥  
 सेवन आलमसाह आय क्रूरम नरेस रजि ॥  
 दै दल मिलान जमुना पुलिन संचरि आम-सलाम करि ॥

समा तामै. यहहु यावनी शब्द है ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ रेवाइति ॥ रेवा नर्म-  
 दा ताको. पधारि पधारे हे तव ॥ २४ ॥ द्रुतकैदइति ॥ सुदेश वाही देशमें. खै-  
 रात पुण्यदान. यावनी. बसु द्रव्य. क्रमि चलि. अगगर आगरा. जगाम जाव-  
 तमयो ॥ २५ ॥ नृपइति ॥ स्पष्ट ॥ २६ ॥ अगँइति ॥ हुकम पदको अन्वय अ-  
 वरंग पदसौ है. जटवार जाटनको देश ॥ २७ ॥ २८ ॥ हरीति ॥ खनित खोदे-

हरिसिंह सहित ठहरे मिसल रचि अंजलि आदाव धरि २९।  
॥ दोहा ॥

हरिसिंहहिं आलम दये, रीझि खिलत १ हयराय २ ॥

कूरम पतिके कथन करि, जट्ट कदन हित लाय ॥ ३० ॥

इम आलम कठि कैदसन, अकबरपुर द्रुत आय ॥

कूरम निज ताबीन करि, वासर कछुक विहाय ॥ ३१ ॥

यह उदंत भट सचिव सुनि, नृपहिं अलप वध जानि ॥

अरु दक्खिन अवरंगको, सेवन दूर प्रमानि ॥ ३२ ॥

आलमप्रति पुरआगरा, पठई अरज लिखाय ॥

लेहु हमहिं कहि साहसौं, निजसेवन मन लाय ॥ ३३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-  
पतिबुधसिंहचरित्रे प्रतोदयपुरदानबुधसिंहबुन्द्यागमन १, बुधसिंहा-  
वहानावरंगालसदुर्जनप्रेषण २, अवरंगपुत्रपञ्चकालमशाहकारानि-  
वसन ३, कारामुक्तालमशाहकबरपुराधिकारप्रापण ४, यवनेन्द्र-  
सूनुनिदेशामैरराजविष्णुसिंहजट्टजनपदविजयनं चतुर्थो मयूखः ॥४॥

आदितो द्विचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४२ ॥

हुए. खड्डन खाहनमें. पुलिन तट ॥ २९ ॥ हरिसिंहेति ॥ आलम आलम शाह-  
जादानें. खिलत सिरुपाव ॥ ३० ॥ इमइति ॥ वासर दिन ॥ ३१ ॥ यहइति ॥  
उदंत वृत्तान्त ॥ ३२ ॥ आलमइति ॥ निजसेवन तुन्हारे सेवनमें ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
बुधसिंह का उदयपुर में त्याग देकर बुन्दी में आना ? बुधसिंह के बुलाने को  
अहदी भेजना २ औरंगजेब के पांच पुत्रों का और आलमशाह के कैद में र-  
हने का वर्णन ३ आलमशाह का कैद से छूटकर आगरे के सूबे पर जाना ४  
शाहजादे की आज्ञानुसार आमैर के राजा विष्णुसिंह का जाटों के देश को  
विजय करने का चौथा ४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ बियाली-  
स २४२ मयूख हुए ॥

॥ सुक्तादाम ॥

यहै विनती सुनि आलम तत्त, पिताप्रति दै अरजी लिखि पत्त ॥  
 इहाँ नृप क्रूरम ज्यो भटभाव, रहै मम संगहि बुंदिय राव ॥ १ ॥  
 यहै सुनि साह पठाय निदेश, रहौ तुम संगहि बुद्धनरेस ॥  
 दयो तब आलम पत्त पठाय, स्वसंग बलापति बुद्ध बुलाय ॥२॥  
 भयो दल बंघि समस्तन मोद, बहयो लखि लग्न प्रयान विनोद ॥  
 दये बहु दान विधानन रीति, प्रवासिन हेय तजे नय रीति ॥३॥  
 मनी कुलदेविय पूजन मोद, नमे हरि पायन लौ चरनोद ॥  
 क्रिये सबिधान प्रवासिक कर्म, लखे सुभ साकुन लग्न सधर्मा॥४॥  
 किते भट मंत्रिन आयस अप्पि, इहाँ गृह राज निवाहन थप्पि ॥  
 दये तिन्ह ग्राम पटा गज बाजि, दयो भुजभार विचार विराजि ॥५॥  
 सजी तब बुद्ध बलापति सेन, दिपै भट, तारक अप्प द्विजेन ॥  
 रहे निज आलय सोदर जोध, चंल्यो दल होत प्रभजन रोध ॥ ६ ॥  
 खुले उडि कुंभिन कंध निसान, तिरोहित व्है रविरेणुबितान ॥  
 हरोलन हाक नकीबन छोह, बडे गज अँचत लंगर लोह ॥ ७ ॥  
 रही झुकि पीत पताकन पंति, मरातब माहिय भासिग अंति ॥

सुक्तादाम ॥ यहैइति ॥ तत्त तहाँ. पत्त पत्र ॥ १ ॥ यहैइति ॥ निदेश हुकम. स्व-  
 संग अपने संग. बलापति बुद्धा को पर्वत. जो पारियात्र अचल ताको लोकमें  
 बला कहै हैं ॥ २ ॥ अयोइति ॥ दल पत्र. बंघि पहिकै. प्रवासिनहेय प्रवासी  
 जो प्रस्थान करिबेवारे तिनके छोरिबे योग्य तीनरात्रि पहिले जौरकर्म. रात्रि  
 पहिले हुग्य. पंचे हेय त्याज्य होत ॥३॥ मनीइति ॥ मनी मनाई. चरनोद चर-  
 नको उद जल ॥ ४ ॥ कितेइति ॥ आयस हुकम. अप्पि दैकै. तिन तिनको.  
 विराजि शोभिन व्हैतै ॥ ५ ॥ सजीइति ॥ तारक नक्षत्र. द्विजेन द्विजनको इ-  
 न स्वामी चंद्र. निजआलय अपने घर. प्रभजन पदन ताको. रोध जकनों ॥६॥  
 खुलेइति ॥ कुंभिन कुंभी हस्ती. तिनके. तिरोहित शुभ ॥७॥ रहीइति ॥ मराति-  
 व माहिय, ए दोऊ बादशाहनें अपनी कृपा जनायबेकों दीनें ऐसे चिन्ह विशे-  
 षातिनमें मरातिव छोटे गडवाके आकार. अरु माही मत्सी के आकार. अकव्व-

अकव्वरपुत्र दयो लहि काज, बज्यो वह राजत हुंहुभिराज ॥८॥

मलंगत फाँद तुरंगन जूह, चले उडि नोवति नादं दुरुह ॥

चलयो दरकुंचन यों चहुवान, दये मथुरापुर जाय मिलान ॥ ९ ॥

दई सतइक सअष्टक १०८ आय, समानहि हाटक हून १०८ मिलाय ॥

विधीरित यों बहुधा करि दत्त, अकव्वरपत्तन आय प्रपत्त ॥ १० ॥

मिले क्रम आलम साह हजूर, कियो सनमान कहयो द्वित पूर ॥

हन्यो हम कृष्ण अवंतिय जेन, रहयो तुमरो हममें हकं तेन ॥ ११ ॥

करे पलाटा हमहू तंसमात, लहो हमको भाजि रिद्धिन वात ॥

करी सुनि थों अरजी नरनाह, भली करिहै सब ज्यानपनाह ॥ १२ ॥

रनाह १ पनाह २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

परपर प्रीति उभैरसनमान, रहे इम कूरम ओ चहुवान ॥

उहाँ दिन वित्तत के अवरंग, सुनी सुत आलम किति अभंग १३

इते विच सोर सुन्यो मुलतान, बडे सिख लुप्यत साहन आन ॥

तवै सुत आलमको जवनेस, दई सुलतान सम्हारि सु पेस ॥ १४ ॥

यहै सुनि आयस आलम साह, सजे दल हिंदुव भिच्छ सिपाह ॥

भयो विधिसे चतुरंग प्रयान, भये दरकुंच धरा मुलतान ॥ १५ ॥

कुविग्रह मेदि रचयो नय राज, भजे सिख तित्तिरि ज्यों डर बाज ॥

दफेकरि देस प्रजा दुख दंद, रहैं इम आलम तत्त अनंद ॥ १६ ॥

जहें दुवभूपनसों अति प्रीति, सबै दलकों सुख आदर नीति ॥

र लक्ष नृगया कर्तता है. पुष्य पहिले राष सुजैन को दये हे. राजत रजत

रुपा तत्संबंधी ॥८॥ ९ ॥ समान वायन के प्रमानहि. विधीरित विधिमें कथ्यो:

दत्त दान. प्रपत्त प्राप्तभयो ॥ १० ॥ मिलेइति ॥ कृष्ण कृष्णसिंह कूसर तुम्हा-

रो पिनामह. अवंतिय उर्जानमें. जन जाकारनकों ॥ ११ ॥ करेइति ॥ ज्ञात म-

सह. पनाह रजक. यावधी ॥ १२ ॥ परस्परति ॥ उभै उभय. केक कितेका ॥ १३ ॥

रनेइति ॥ मुलतान प्रजायको देश नाको. सिख यों देश के जभीदार. सु गो.

पेस अर्थान ॥ १४ ॥ यदइति ॥ भिच्छ स्तेच्छ. उयो वे इनको हिंदू कहैं न्यों म-

याथे उनको स्तेच्छ कहैं ॥ १५ ॥ कुविग्रहति ॥ दफे नाश. यावधी ॥ १६ ॥ र-



करैं दिन इक नदी जल कोलि, चले चढि नाव प्रवाहन पोलि १७  
 राजु हुवरभूपति सेवन तार, सजैं जलकुकुट बेधि सिकार ॥  
 कही तैंहें कूरमसों सुतसाह, करो हमसों दुहिता निज व्याह १८  
 कही तव कूरम यों करजोरि, वनें दुहिता जब होय बहोरि ॥  
 सुता इक आहि सु तो करि नेम, दई बुधसिंहहिं पुव्वक प्रेम १९  
 कही बुधसिंहहिं आलम तत्त, करी तुमसों इन व्याहन वत्त ॥  
 कही तव बुन्दिय राव सहांस, कही इन जो सु भई कथ तास २०  
 यहें सुनि जंपिग आलमसाह, ततो हमही करिहैं तव व्याह ॥  
 करी सुनि यों बुधसिंह सत्ताम, कछो निज आयस हे सिरकाम २१  
 यहें सक चोवन सत्रह १७५४ साल, नई कथ व्याह बनीवसि काल  
 भई वय द्वादस दायन १२ बुद्ध, सजैं खुरली नय साधन सुहा २२  
 दयो लखि बुद्धहिं वीर सिपाह, परगन टोंक सु आलमसाह ॥  
 कही तव यों करि बुद्ध सत्ताम, लहयो पुर टोंक बढयो मम नाम २३  
 परंतु कहयो हमरो इक सेस, ततो करिये पुरपट्टनि पेस ॥  
 गई यह पट्टनि पूरवकाल, बढयो जब जहन वर कमल ॥ २४ ॥  
 सुनी अवरंगहें खून पुकार, कियो सुत आजमको सुत त्यार ॥  
 लपे रंग बुन्दियतें अनिरुद्ध, वन्यां समयो गुनगोरि प्रबुद्ध ॥ २५ ॥  
 रहे निहिनंकारन हेदिन गेह, न काबलपें पहुँचे तियनेह ॥

हैशमिता यो लि कंवि ॥ १७ ॥ राजुहोत ॥ राजु अनुसुक्त. नावनी शब्द. दुहिता पु-  
 ली. निज अपनीतो ॥ १८ ॥ कहीनि ॥ ग्राहि है. सु सां. नेम नियम. पुव्वक प्रे-  
 म प्रेम पूर्वक ॥ १९ ॥ कहीनि ॥ तथा तथा. गहान्त हाव सादिन. गान्म वा रि-  
 धालनी ॥ २० ॥ गईइनि ॥ जंपिग कती ॥ २१ ॥ गईइनि ॥ परट्ट ॥ २२ ॥ दयो-  
 इति ॥ टोंक टोंक नाम नगरको ॥ २३ ॥ परंतुहोत ॥ पेस अर्थात्. यावनी ॥ २४ ॥  
 सुनीइनि ॥ सुत आलम नूनभयार अरवीं टाटो इत एतजम मानन तातो न-  
 गार अरवीं हुन. सुनयोनि कैर जल सुनीया. अयुक्त नयनत जायो. यो यो नगर  
 पुन को. ॥ २५ ॥ गईइनि ॥ निहिनंकारन तासुं अरि है. काबल सुनीया काल. वा

भई तुरसी इहिं कारन आय, समा सरवेद रु सत्रह १७४५ पाय २६  
 लई तत्र पट्टनि साह उतागि, दई नृप रामहिं काम बिचारि ॥  
 छुटी तवकी अब सेवन पाय, दई इन आयसे साह मँगाया २७।  
 जस्यो निज टाँक परंगन राज, बच्यो मँहँदीपुर इक १ अकाज  
 लरे मँहँदीपुरके कछवाह, तजी सुरतान पिनातिन राह ॥२८॥  
 भई मँहँदीपुर तोपन मार, लये सब जीति कियो गढ छार ॥  
 रजू इम टाँक जिला करवाय, रहै मुलतान सु बुंदिघराया २९।  
 ॥ दोहा ॥

दुव भूपनको वरस इक १, गयो रहत मुलतान ॥

सेवत आजमसाहको, इम कूरम बहुवान ॥ ३० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महास्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप-  
 तिबुधसिंहचरित्रे यवनेन्द्रकुमारालमसेवाबुधसिंहगमन १ औरंगजे-  
 वाज्ञानुसृतिकुमारालममुलतानशिकखविजयन २ आलमशाहस्य टाँ  
 कपट्टनिप्रान्तद्वयबुधसिंहप्रदानवर्णनं पञ्चमो मयूखः ॥५॥

आदितस्त्रिचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४३ ॥

वनी. सम वर्ष. "हायनोऽस्त्री समाध्दे" त्यमरः ॥ सर ५ पंच. वेद ४ च्यार. रु  
 अर. सत्रह १७ सप्तदश. लत्रहसै पैतालीस १७४५ यह अर्थ ॥ २६ ॥ लईइति ॥  
 रामसिंह कोटा के राजाको. इन आलमशाहने. आयस आदेश. यावनी मै.  
 जस्योइति ॥ महँदीपुर महँदवास नामक नगर. सुरतानपिनातिन सुरतानके पि  
 नाती वंश के सुरतानोत कछवाहे तिनने. राह रीति ॥ २८ ॥ अईइति ॥ रजू  
 अभीन. यावनी ॥ २९ ॥ दुव इति ॥ दुव बुंदी १ आमैर २ के दोज ॥ ३० ॥

श्रीवंशभास्कर महास्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बु-  
 धसिंह के चरित्र में बुधसिंह का शाहजादे आलम की सेवा में जाना १ औरंगजे-  
 वकी आज्ञा के अनुसार शाहजादे आलम का मुलतान के शिकखों को  
 विजय करना २ आलमशाह का बुधसिंह को टाँक और पाटण दिलाने के व-  
 र्णन का पाँचवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥ ५ ॥ और आदि से दो सौ तियालीस  
 अयुक्त हुए ॥ २४३ ॥

॥ दोहा ॥

इक़ानबाव अमीरखाँ, अग़मैँ कहि अवरंग ॥

थप्यो दै भुजभार निज, सूबा काबल संग ॥ १ ॥

॥ तोटकसू ॥

इतनेँ वह खान अमीर मरघो, अवरंग यहै सुनि सोक परघो ॥

कहि साह उमीर रहयो जितनेँ, हम भोग लहे अब दुख घनैँ २

लाहि काबल साह यहै समयो, उत दिल्ली राज सु दबि लयो

तब साह हिये तस त्रान बसी, धरकाबल आलमकाँ बखसी ३

इनहू सुलतान जमाय जिला, लिय काबल काम कमान चिला

ऋतु सारद बारद नष्ट भये, सरिता समि पद्धति पंक गये ॥४॥

सर बान तुरंगम इक़ानबाव, सुत साह चढयो इसमास अमा

अति आरव भेरिनके गरजैँ, पविपात कि पव्वय दै दरजैँ ॥५॥

खुलि दंड पताकन पंति लसी, रसना जनु कालियकी निकसी

बहि कोसन फोज हरोल चली, बहु जंग उछाह सिपाह बली ६

चहुवान रु कूरम संग चलैँ, बरबीर पठान गुमान अलैँ ॥

मनमैँ बल मोद रजूरनमैँ, उरआत सदागति सेलनमैँ ॥ ७ ॥

धनु पट्टिस खेटक खरग कसैँ, अपुदान हिये तनमान बसैँ ॥

इम हिंदुव मिच्छ चले रनकाँ, छबि निंदत भदवके घनकाँ ॥८॥

दोहा ॥ इक़ानइति ॥ अग़मैँ पहिले समयमें ॥ १ ॥ इतनेँ इति ॥ इतनेँ

इतने अंतरमें. कहि कहयो ॥२॥ लाहिइति ॥ त्रान रक्षा. धर धरा. आलम आ-

लमशाह (अपनों बडो पुत्र) ताकाँ. बखसी दई ॥ ३ ॥ इनइति ॥ काम कार्य.

सोही कमान धनुष. ताकाँ चिल्ला लोके पिनच. बारद मेध. यहाँ बार शब्द

हलंत है ताकाँ प्राकृतसों लस्वर कियो. सभि ससों सामित भई. पद्धति मार्ग.

तिनके ॥ "सरणी पद्धती पथे"त्यस्मरः ॥ ४ ॥ सरइति सर५. बान६. तुरंग७. स-

मा वर्ष. इसमास लोके आसोज मास. अम अमावास्या. आरव शब्द. पवि व-

ज्र. ताके पात परिवेसाँ, कि किधों. दरजैँ दाराँ ॥ ५ ॥ खुलि इति ॥ यहस्पष्ट

॥ ६ ॥ चहुवानेति ॥ गुमान गर्व. सदागति पवन ॥ ७ ॥ धनुइति ॥ पट्टिस कटा-

सननंकिय प्रोथन वात वैहँ, हननंकिय हींस दिगीस दहँ ॥  
 रननंकिय कोच करी करके, फननंकिय नाग फटा लारके ॥१॥  
 गननंकिय गैन धरा धमके, छननंकिय नेउर हँछमके ॥  
 कननंकिय पक्खर भार भिरँ, खननंकिय नालन अग्गि खिरँ १०  
 ठननंकिय कुंभिन घंट घसेँ, भननंकिय भेरिय हूर हसेँ ॥

वजि आरव आरव कूह चली, बहुभाँति अगीक रमँ खुरली ११  
 भट केके त्रिभागन दाव अरँ, कमनैत विहंगन वेध करँ ॥  
 भूपटांय तुरंगन वाह वचँ, असि मग्ग उदग्ग कितेविरचँ १२  
 भट केके वँदूकन लच्छय लहँ, बहुवार कटार गदा निवहँ ॥  
 करटीन नवीन घटा बहुधा, बरछीन अनीन अकास मुधा १३  
 खुरतालन खेह वितान जुग्घो, नद तालन पंकिल नीर घुरथो  
 हुलसे इम कावलकी धरपँ, दल आलमके जय संगरपँ १४  
 ॥ पट्पात् ॥

अटक सरित उल्लंघि कटक आलम बहि धायो ॥  
 कावलपति प्रति पत्र प्रथम लिखवाय पठायो ॥  
 मरतहिँ खान उमीर छिद्र तुम तकत निहारयो ॥

र. खेदक डाल. हान त्याग ॥ ८ ॥ सननंकियइति ॥ सननंकिय यह घोर के रवा-  
 सको अनुकरण है ॥ ऐमे आरहू लिंगे ते अपनें अपनें शब्दन के अनुकरण जा-  
 नों. प्रोध हयनामा. तिनमें. चान पवन. हींस हयशब्द दिगीम दिग्गाल. को  
 च कषष. तिनकी. फटा फन ॥ ६ ॥ गननंकिय इति ॥ गैन गगन. है हय तिन  
 के. नाल खुरताल. तिनकरि ॥ १० ॥ ठननंकियइति ॥ आरव वायविशेष. आरव  
 शब्द. नाकी. कूह फोलाहलता ॥ ११ ॥ भटइति ॥ केके कितेक. त्रिभागे भा-  
 शे. तिनकरि. दाव शस्त्रके पार. तिनमें. असि लहू नाके. उदरग उदग्र. उल्लं-  
 कने है अश्रमान जिनमें ऐमे. यह भागीको विशेषन है ॥ १२ ॥ भटइति ॥ ल  
 लवा लक्ष्य. करटी इम्ती. तिनकी घटा रसुदाय. अकास आकाश. मुधा धृधा.  
 भयो यह शेष ॥ १३ ॥ खुरतालइति ॥ पंकिल पंकवारी. दल कटक. संगर यु-  
 व. नापि ॥ १४ ॥ पट्पादी ॥ अटकइति ॥ अटक अटक नामक. पहुनी पृथ्वी. ल-

दिल्लिय थानाँ खंडि अमल अप्पन उषचार्यो ॥

अब छोरि पहुमि अवरगको करन जोरि लगगहु चरन ॥

दिल्लीस सेन जानहु दुसह इक इक लकखन तरन ॥ १५ ॥

काबलपति दल बंचि समय बलवान सोधि मति ॥

रहि अप्पन निज गेह सेन पठयो आलम प्रति ॥

आय सेन अति वेग भिरन तुरकन मन बहे ॥

लटाबंध अभिधान अद्रि घाँटा रुकि ठहे ॥

इत उमगि साह आलम चम्पू सीमा संगर सीम हुव ॥

तिन दिनन भाल दिल्लीसके विधि मंडयो जयपत्त धुव ॥ १६ ॥

इत तोपन जुरि पंति इक शतोपन उत रक्खै ॥

इत परिमित आहार इकक शककर उत चक्खै ॥

इत लाखन बहुरंग उत सु अयुत १०००० हि इकरंगी ॥

इत बल बुद्धि अपार उत सु बपुजोर अभंगी ॥

दिल्लिय सुहाग इत भार परि उत गर लगगी गज्जनिय ॥

दुवदलन जुद्ध जालम जुरिग परिग रोर पात कि पविय १७ ॥

गिरिन चूर हंयखुरन मग्ग उव्वट धर पद्धर ॥

खुंदि कमठ खुप्परिय उरग फनमाल थरत्थर ॥

दिकपालन उर संक कंक गिद्धन पर वज्जै ॥

गहकि चिल्ल गोमाथु भार भीरुन गन भज्जै ॥

रन लरिवेवारे ॥ १५ ॥ काबलइति ॥ दल पत्त. अभिधान नाम. अद्रि पर्वत ताको. सीमा अपनी अमलदारी की. तहां. संगर युद्ध. ताको. भाल ललाट तापै. पत्त पत्र. धुव धुव निश्चय ॥ १६ ॥ इतइति ॥ इत दिल्लीकी सेनाकी तरफ. उत काबल की सेना की तरफ. परिमित अल्प. अयुत १०००० दशहजार. सुहाग सौभाग्य. गजनविद्य यह पहले वा देशकी राजधानीको नगर. जालम जुलम करिवेवारी. यावनी शब्द. पात परिवेसों. कि क्रियां. पवि वज्र. ताके पविको अन्वय पात शब्दसों है ॥ १७ ॥ गिरन इति ॥ उव्वट विना मार्ग की. धर धरा तापै. पद्धर सीधे. यह मार्ग को विशेषन है. खुंदि मर्दित भई. उरग सर्प. वहां सामान्य नीम नामक कछां. परन्तु फनमाल के योग से शेषही ले

दुव दलन बीर बत्थन विलाशि मनहु मित्र चिरकाल मिलि ॥

विधि च्यारि४हेति उद्धत विसम धारन धार प्रहार भिलि १८

वाजि आयुध रन रीठ फूटि हड्डन पत्त छुट्टै ॥

कवच खंड अशि करकि तरकि अंत्रावलि तुट्टै ॥

सरन सोक समनंकि परत झरि डंड पताकन ॥

भुकत बीर घनघाय मनहुँ पामर मद छाकन ॥

इम विरचि मुक्त आयुध कलह अब असुक्त गहि छोरि हय ॥

करि हल्ल दुदल गिरिसिर चढिग जुनि जुनि जंपत जयति जय १९

॥ दाहा ॥

बुंदिय पति आमैर पति, ठहे हय असवार ॥

आलम गज आरुहि रहयो, उत्तरि अवर अपार ॥२०॥

उत इततै नहिँ बढिसके, इत उततै नहिँ कम्म ॥

इक१पहर वह गिरि रहयो, वाजीगरको दम्म ॥ २१ ॥

॥ पट्टपात् ॥

तव दुव२दिस तजि हयन चढिग गिरि सिखर महाभट ॥

कहि करीम रव तुरक होत हरि हर हिन्दुन रट ॥

बुद्ध नृपतिकों बंधु राजसिंहह कुल जायो ॥

नाम सु अनुपमसिंह तवहि मधुसुवन चलायो ॥

दससहस१००००सेन निज संग करि नृप पिल्लयो गिरि बिकट पर ॥

मिलि वत्थ लुन्धि कटि कटि परत मनहुँ विशबंधव बंढि घर ॥२२॥

नां. धरन्धर यह धूजिवेको अनुकरण है. कंक पत्नी विशेष लोके करगस. चिल्ल लोके चील्ह. गोमायु लोके स्याल. भीरु कातर तिनके. वन समूह. विधिच्यारि च्यार ४ विधिके. हेति शस्त्र ॥ १८ ॥ धजेति ॥ रीठ घने जोरको लगवो. सोक शब्द विशेष. कलह युद्ध. दुदल दोऊ दल ॥ १९ ॥ २० ॥ उतइति ॥ दम्म दम्म. लोके रुपय्या ॥ २१ ॥ पट्टपदी ॥ तवेति ॥ करीम और रव ए दोऊ यावनीमें परमेस्वर के नाम हैं. बंधुवर्ग लोके भाई कुटुंबी. राजसिंह राजसिंह. कुसर गोपीनाथ को पुत्र ताके हकार प्राकृतमें सर्व विभक्ति के स्थान में होत है. यहां प

॥ दोहा ॥

बुंदिय दल आमैर दल, पब्बय चढिग रिसाय ॥

कलह भिरे भट काबली, उततैं बढि अतिकाय ॥ २३ ॥

॥ षट्पात् ॥

पहर इक्कशदिन सेस बहुरि आलस दल पिल्लयो ॥

दुदिस छोह छकि लोह बीर बत्थन बल ठिल्लयो ॥

उडत फुट्टि नागोद जंत जावक सम लोहित ॥

धापि धावत विनु मत्थ होत अच्छरिगन मोहित ॥

बाहुल सिरस्क कंकट कटत फटत मुंह भेजन भरकि ॥

खेलखिलत मिलत जुगिगनि जटिय किलकिलात कालिय करकि

घटिय दोयशदिन रहत जोर दिल्लिय दल जित्तयो ॥

कटयो कटक काबलिय विसम प्रलयानल वित्तयो ॥

श्री के अर्थमें जानिये ॥ २२ ॥ दोहा ॥ बुंदियइति॥ यह स्पष्ट ॥ २३ ॥ षट्पात्॥ पहरइति ॥ बल सेना. नागोद उदर की सिलह "नागोदमुदरत्राण" सितिहैमः॥ लोहित रुधिर. लोके लोही. बाहुल हाथकी सिलह. लोके दस्ताना "बाहुत्राणं बाहुलं स्या" हैमः ॥ सिरस्क मस्तक की सिलह. लोके टोप. "शिरस्कं शीर्षकं च त" हैमः ॥ कंकट कवच "सन्नाहो वर्म कंकटः" इतिहैमः॥ जटीय जटी(शि-  
ज) ॥ २४ ॥ घटिय दोय इति ॥ काबलिय काबल संबंधी. यहां काबली प्रयोग होय तो षट्पदी को लच्छन बनें नहीं क्योंकि षट्पदी के पूर्व में चार चरन हैं तिनमें एक एक चरन प्रति पहिले एक एक षट्कलगन. पीछे ४ चतुष्कलगन. पीछे एक द्विकलगन. ऐसे छै ६ गन होत हैं. तिनमें छठी सप्तमी दशमी ग्यारही बारहीं चौदवीं पंद्रवीं अठारवीं उनीसवीं बाईसवीं तेईसवीं मात्रा मिलकर दीर्घ होय नहीं ऐसे चौबीस २४ मात्रा के मिलकर दीर्घ होय नहीं. ऐसे चौबीस मात्रा के च्यारि४ चरन होय. पीछे सामान्य अठारईस मात्रा के दो-  
ग चरन उल्लास्य के होय तिनमें गन का नियम नहीं. तथाहि "षट्कलमादौ तदनु चतुस्तुरगं परिरन्तनु ॥ शेषे द्विकलं कलय. चतुष्पदमेवं संचिनु॥ छन्दः षट्पदनाम भवति फणिनायकगीतं ॥ रुद्रे ?? विरतिमुपैति नृपतिसुखकरमु-  
पनीतम्॥ उल्लास्युगलमन्ते भवेदष्टाविंशतिकलमितं॥ शृणु पंचदशे विरतिस्थि-  
तं पठिते पंडितजनहितम् ॥" इति नागराजानुगवाणीशृणुयो. यह यहां लि-  
खिदीनों से सर्वत्र जानिये. प्राकृत के प्राचीन कवियोंने ऐसे षट्पदी, दोहा-

गोपीनाथ वतंस परयो अनुपम मधुनंदन ॥

माधवहर गुम्मान दोय रहहे हनि दुज्जन ॥

इत्यादि बहुत आलम चमू पब्बपर कटि कटि परिय ॥

करि तत्थ बहुरि अप्पन अमल कावल दल हनि विजय कियर ५

इम आलम लहि विजय सीम कावल करि पदर ॥

विष्णुसिंह बुधसिंह सहित रहि तँहँ बहु बच्छर ॥

सुनि सुतको जय सुजस साह अवरंग सुख किन्नो ॥

नाम बहादुरसाह रीभि आलमकँहँ दिन्नो ॥

इम जीति बहादुरसाह वह रमि कावल सूबा रहयो ॥

दिक छंदन के लच्छन किये ते बोध विनबनायेतँ अशुद्ध जानिये ॥ तथाहि "अंग-  
द जिमअकुरयो ॥" तथाहि "सूर मरन मंगली ॥" तथाहि "सुतसोभेश्वर बडो" इत्या-  
दि पृथ्वीराजरासे में बहुत हैं ॥ तथा "बचै न बडी सवीलहू ॥" तथा "लोयन बडी  
बलाय" तथा "गाँठै भरी मिठांस" इत्यादि विहारीसतसई में. ऐसे बहु ग्रंथन  
में है ॥ अरु षट्पदी दोहा को शुद्ध लच्छन यह है सो जानिये ॥

SSS. S. S. I. S. SSS. S. ॥ आदि में षट्कल ताके तेरह १३ भेद ॥ पुनि  
द्विकल ताके दोय २ भेद. पुनि त्रिकल ताके तीन ३ भेद. पुनि त्रिकल ताके  
तीन ३ भेद. पुनि द्वि २ कल ताके दोय २ भेद. पुनि षट् ६ कल ताके तेरह  
१३ भेद. पुनि द्विकल ताके दोय भेद. ऐसे एक १ चरनके भेद भये. शेष तीन  
चरन भी याही प्रकार गिनिये ॥ अरु अंत में उल्लास्य छंद के द्वै चरन होवै

S. SSS. S. S. I. S. SSS. S. S. I. S. ॥ ऐसे षट्पदी छंद को शुद्ध लच्छ-  
न जानिये ॥ दोहा यथा ॥ SSS. S. S. I. S. SSS. S. S. I. आ-

दि षट्कल. पुनि द्विकल. पुनि द्विकल. पुनि लहनेमिक. पुनि द्विकल. षट्क-  
ल. पुनि द्विकल. पुनि गुरु. लहनेमिक ॥ ऐसे दोहा के एक चरन को कम ॥ तदानु-  
कारही द्वितीय २ चरन को जानिये ॥ प्रलयानल प्रलय को सो अनल अग्नि.  
वा युद्धमें भयो हो सो. गोपीनाथवतंस गोपीनाथ के वंश को वतंस शिरको  
भूषण विशेष ॥ "वतंसः शिरसः सजी" तिहैम ॥ माधवहर माधववंशी. माधव  
सिंह कुमार गोपीनाथ को छोटी भाई. ताके वंश को गुमान नामक. अनुपम  
सिंह अरु गुम्मानसिंह ए द्वै हाके चणुवानवा लराईमें. दुज्जन शत्रुओंको. इ-  
नि मारिके परे. इत्यादि इनको आदि लेके अवरहु यह अर्थ ॥२४॥ घटियइति ॥  
यह स्पष्ट ॥ २५ ॥ इमहति ॥ लहि पाय. बच्छर बत्सर वर्ष. आलम आलम



जयसिंह और बुधसिंह का कावलमें रहना ] सप्तमराशि-षष्ठमयुद्ध (२६३१)

चहुवान बहुरि कूरम दुहूँ प्रेम परस्पर निब्वहयो ॥ २६ ॥

खट रू पंच हय इक्के १७५६ साल आगम सक विक्रम ॥

भुकि जुब्वन कछु भलक बुद्ध भूपति वय उत्तम ॥

भुंदियतें बुलवाय अप्प अंतहपुर लिन्नाँ ॥

साहबहादुर संग जंग जित्तन जस किन्नाँ ॥

मुलतान सुता सगपन भयो तबतें नृप आमैरपति ॥

बुधसिंह हितु मंडत विनय गिनतसिद्ध जामात गति ॥ २७ ॥

( दोहा )

खरव कबंध सुताहु यह, व्याहयो पूरव काल ॥

संतति त्रिक ३ ताके भयो, हुंढाहर धरपाल ॥ २८ ॥

पुब्ब प्रसव पुत्रिय प्रकटि, नाम सु अमरकुमारि ॥

जयसिंह २ सु दूजे २ प्रसव, तीजे विजय ३ विचारि ॥ २९ ॥

कन्या अरु पट्टप कुमर, अंतर हायन तीन ३ ॥

नृप आयस दोऊ २ रहत, पुर आमैर प्रवीन ॥ ३० ॥

विजयसिंह लघुपुत्र अरु, कछु पातरिगन संग ॥

इह कावल आमैरपति, रहत बुद्ध रस रंग ॥ ३१ ॥

शाहको. ॥ २६ ॥ खटइति ॥ हय ७ सप्त. खटइमै छप्पन १७५६ के सालके सक विक्रम राज के सकमें ॥ या ग्रंथमें सर्वत्र स्थल विक्रमादित्यको ही शक रा हयो है शालिवाहनको शक नहीं राख्यो ॥ अप्प अपने. अंतहपुर जनाना. सगप न संबंध. हितु सों. सिद्धजामाता अवहि अपनी पुत्री बुधसिंह को विवाही नाहीं तथापि जैसे विवाह किये पीछे गिनै तैसैं ॥ २७ ॥ दोहा ॥ खरव इति ॥ संतति संतान ताको. त्रिक ३ त्रय हुंढाहर अपनों देश ताकी. धर धरा. ताके पाल पालक. वे संतान. अथवा हुंढाहर धरा को पालक राजा विष्णुसिंह ता सों भये यह अर्थ करिये ॥ २८ ॥ पुब्ब प्रसव इति ॥ पुब्ब पहिलै. प्रसव प्रसूति काल में. विजय विजयसिंह नामक ॥ २९ ॥ कन्याइति ॥ कन्या के अरु पट्टप लोके पाटवी. बडो कुमर जयसिंह ताके. हायन वर्ष. लुपन पट्टीक. कन्या सों तीन वर्ष पीछे जयसिंह भयो यह अर्थ. नृप अपनों पिता. ताके. आयस हुकम सों. दोऊ कन्या और बडो कुमर ॥ ३० ॥ विजयसिंह इति ॥ बुद्ध बुधसिंह सों. रसरंग अनुकूल ॥ ३१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दी  
पतिबुधसिंहचरित्रे कावलाधिकारकुमारालमायतीभवन १, काव  
लामारिसेनाविजयनदत्तालमशाहार्थयवनेन्द्रप्रसादबहादुरशाहनामप्रा  
पणां षष्ठो मयूखः ॥ ६ ॥

आदितश्चतुश्चत्वारिंशोत्तरद्विशततमः॥ २४४ ॥

( पट्पात् )

प्रीति स्वसुर जामात साल जामिप मंडत अति॥

गृहविधि दुव अवनीस जात आवत डेरन प्रति॥

कूरम पतिके संग पान आसव नृप लग्गो॥

नञ्चन वादन गान मान तानन मन पग्गो॥

जिनदिनन पातसाहन सभा जात न सायुध इक्कजन ॥

लौजात सवहि केवल फलक बिनु बुंदिय हिंदुव जवन १

अग्गै अकवर वेर राव सुरजन यह रक्खी ॥

कसि कटार इहिहेतु रहै बुधसिंह समक्खी ॥

वसु सायक हय इंदु१०५८जेठ ग्रीखम रन रत्तो ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
बुधसिंह के चरित्र में कावल का सूबा शाहजादे आलम के आधीन होना ?  
कावल के जमीर की नेना से विजय पाने के कारण आलमशाह को बादशा  
ह की ओर से बहादुरशाह नाम पाने का छटा ९ मयूख समाप्त हुआ और  
अग्गै से दो सौ चवालीस २४४ मयूख हुए ॥

पट्पात् ॥ प्रीतिइति ॥ स्वसुर विष्णुसिंह, जामात बुधसिंह, साल  
जालक, लोके साला, ( विजयसिंह ), जामिप जामि भगिनी ताको  
पति बुधसिंह, लोके पहिनाई, "जामिस्तु भगिनी स्वसे" तिहैमः ॥ पग्गो  
आमना भयो, सायुध आयुध सहित, फलक डाल "फलकोस्त्री फलं चर्मत्पमरः  
बिनुबुंदिय यहां लच्छन लच्छनासों बुन्दी के राजा बिना यह अर्थ करनो ॥१॥  
अग्गै, इति ॥ वेर समय, यह एक आयुध जावे की, हेतु कारण, नाकरि, मम  
कयी समज, यावनी में रुवसु, वसु ८ अष्ट, सायक ९ पंच, हय ७ राप्प, इन्दु  
१ एक, मयूख से अष्टावन १०५८के साल, जेठ ज्येष्ठमास, ग्रीखम अग्गै ३३

साह बहादुर धाम आम अवसर नृप पत्तो ॥

जवनिका द्वार लंघे जुगलरतीजे द्वार समीप भुव ॥

पहुँचत नरेस बुधसिंहप्रति जवन इक्कभटभर हुव ॥ २ ॥

वहै जवन अति दर्प साहआलमको किंकर ॥

सहसा भिरन प्रसंग बक्यो अप्रिय कुवाद पर ॥

सुनि कुबैन संभरिय कुप्पि मारिय कट्टारिय ॥

कालखंज हिय चक्खि अधप पहुँची अनियारिय ॥

रीठक विदारि निकसी चुवत मनहुँ विज्जु मानिक बमत ॥

कौ तिय सहीय परकीयको बातायन कर जावरत ॥ ३ ॥

पट बेणुक प्राकार अयुत १०००० हत्थन चतुरायत ॥

सात फेर संपुटित चित्र तोरन बनि चायत ॥

कृत विच्छाति कुंकुमिय नीर जलजंत्रन नच्चै ॥

उडि उसीर आमोद राग गायक बहु रच्चै ॥

तुमैं, धाम स्थान, आम बडो दरिखानां ताके, अवसर समय, नृप बुधसिंह, पत्तो प्राप्तभयो, जवनिका लोके कनात, तथा सिरायचा, ताके, युगलरतीजे ॥ २ ॥ वहै हति ॥ दर्प अभिमान, सहसा अचानक, कुवाद खोटे वाद मै, पर तत्पर, संभरिय संभरी बुधसिंह तानै, राजा माणिक्यराज १३४ चहुवाननें बहूत वर्ष पाहिले संभर नामक नगर जहां लोन की खान है तहां राज्य कियो हो यातैं वाके वंश के चहुवान संभर तथा संभरी तथा संभरीक कहे जाते हैं, कालखंज कलेजा, हिय हृदय, अधप चिना धापी (भूखी) यह अर्थ, रीठक पृष्टिवंश, लोके वांसे को हाड ताको "रीठकः पृष्टिवंशः स्या"दिति है मः ॥ विज्जु विजुरी, बमत बमत कर ते उगलने यह अर्थ, कै अथवा, तिय स्त्री, सुहीय सुहृदया, चतुर ऐसी, परकीय परकीया नायिका को, बातायन गवाज, लोके भरांखा तामैं, कर हाथ, जाव जावक, ताकरिकैं रत्ता रक्त, लोके लाल, जैसे रजश्चला परकीया अपनें जारकों अपनी दशा दिखायकैं संकेतसैं वाको जावनां वरजिब को चुवते जावक को हाथ बातायनमैं निकालैं तैमैं यह अर्थ, इहां चेटा जन्य ध्वनि है ॥ ३ ॥ पटवेणुहति ॥ वेणु वंश, लोके वांस, स्वार्थे कः ॥ तिनमय, प्राकार कांठ, बाहिर भंवास में राजनके कनात को ही कोट रहतो हो सो कांठह कैलो, अयुतहत्थ दण्डजार हाथ को, चतुरायत चोतरफ विस्तारित, तब एक दिशा को कोट ॥ अढाई ह-

मोहत गुलाव मल्लिय महाकि इंद्र विभव सोहत अजब ॥  
 दिल्लीस सुवन जहँ थित मुदित तहँ नृप यह डारिय गजवा ॥  
 जहँ जमीन जोजनन सेन संकुलि, नाहि सुजभत ॥  
 तीन सहँस ३००० तुक्खार परिधिचोकिय बढि बुजभत ॥  
 सहँस १००० तोप सावात जाल चहुँदिस जंजीरित ॥  
 भंडन केतु भूपेट पौन क्रंदत पथ पीरित ॥  
 असवार अहोनि स पंचसत ५०० प्रति तोरन जामिक रहिग ॥  
 बुंदिय नरेस बुधसिंहकी तहँ प्रकुप्पि पट्टिस बहिग ॥ ५ ॥  
 चूक चूक चहुँकोद कूक कहुत कटार परि ॥  
 वहत भीरु चलविचल गिरत तुरकान गरव गरि ॥  
 मारि जवन इम राव चुवत पट्टिस ढकि ठहो ॥  
 साहबहादुर संक गंजि चाहत रन गहो ॥

जार हाथ को भयो सो एक कोस के पोहशांश १६ सहित एक कोस के चतु-  
 र्थांश ४ प्रमान भयो. यथा—“यचोदरैरंगुलमष्टसंख्यैर्हस्तोऽद्भुतैः पद्भुगुणितै-  
 श्चतुर्भिः॥ हस्तैश्चतुर्भिर्भवतीह दंडः क्रोशः सहस्राद्यितयेन तेषाम् ॥” इति भा-  
 स्कराचार्यः ॥ चोह केसो सात केर संपुटित ऐसे प्राकारके सात गिरद लगे  
 तहां यह कायो ना प्रकारको कोट बाहर ही बाहरको जानिये. ताके गिरदके  
 माकि उचित अंतराग यों है ६ प्राकार और जानिये ऐसे सात भये तब सात  
 ती० दार जानिये. तोरन बाहिर को दार ॥ “बाहिरारं तु तोरणा” मितिहैमः॥  
 पायत नाथ(मोद). ताके बहायधेवारे. कुंकुमिय कुंकुम करंगका. उसीर लोके  
 गन ताके. “उशीरं धारणीमृन्” मितिहैमः ॥ आलोद अति मनोहर गंध.  
 “आलोदः सोऽतिनिर्हारी” त्यमः॥ मल्लिय मल्ली. लोके मोगरा. अजब अहु-  
 त ॥ ४ ॥ जहँइति ॥ जमान पृथ्वी. यावनीजन्द. तुक्खार, घोर. यहां उ टा-  
 त लकठनारं घोरन के असवार जानिये. परिधिचोकी सेना की परिधि की चो-  
 की के पाहपाय. लोके छपीनां. सायान बाहद ताके जालवारी. जंजीरिन  
 तीनपेसों जंजीरन मल्लिय. भंडन भंडाध्वजा). निनकी क्रम पताका. निनकी  
 कपेटसों. पौन पवन. क्रंदन क्रन्दकरन. अहोनि स दिनराधि. प्रति तोरन तारन  
 तारन प्रति. जामिक पहायत पट्टिस कटारी ॥ ५ ॥  
 बुधसिंहइति ॥ पट्टन पट्टार के चहुँ. भीरु कानर. गिरत वा जवन के गिरने.

सुत साह हितु भाखी सबन आनि अरज उप्पर अरज ॥

कुणपहि सदोस आलम कहयो गुनह अप्पि हेरिय गरज ६

( दोहा )

कहि आलम सागस हन्यौ, नहि बुंदियपति दोस ॥

खलक इलाही कुबच सुनि, को नहि रंगत रोस ॥ ७ ॥

( गीर्वाणभाषा )

( इन्द्रवज्रा )

औरङ्गिरेवम्प्रविचार्य कृत्यं बुन्दीन्द्रमाहूय समक्षमाशु ॥

आश्वास्य नीचाऽनुजतो जिगीषुर्दिल्लीभरम्भूपभुजे बबन्धात् ॥

( शालिनी )

भोजाचारं रत्नसेवान्तथैव दिल्लीशत्रं शत्रुशल्यञ्च भावसू ॥

संक भय ताकों. गोजि अनादर करिकें. सुतसाहहितु साह बादशाह औरंगजेव ताके सुत आलमशाहसों. कुणप मृतक. "कुणपःशयमस्त्रिया"मित्यमरः॥ स-  
दोस दोष सहित. गुनाह अपराध. यावनी शब्द ॥ ६ ॥ दोहा॥ कहीति॥ साग-  
स आगस अपराध ता सहित. खलक संसार.इलाही परमेश्वर.यावनी ताकोहं.  
कुबच छोटे वचन. को कौन ॥७॥ गीर्वाणभाषा ॥ इन्द्रवज्रा ॥ औरंगि औरंग  
पुत्रः"अत इत्" इतीत् ॥ अित्वा इत् ॥ कृत्यम् निरपराधत्वात्प्रतिष्ठाकरणरूप-  
समक्षं प्रत्यक्षं. आशु शीघ्रं. आश्वास्य विश्वास्य. नीचाऽनुजतः नीचो यः पि-  
तुः प्रेष्टत्वाद्वाज्यलिप्सुः स्वीयोऽनुजः आजममाहनामातं द्वितीयाथं तसिः। भर  
भारं बुधसिंहभुजे बंध बंधितवान् ॥ ८ ॥ शालिनी ॥ भोजाचाराति ॥  
भोजः अकबरसाहसमये योऽभूत्स सुजनपुत्रस्तस्याचरणं सुरतिपुगाधिगजमा  
रणार्थतःकरणनाकबरशाहसेवनम् । रत्नसेवा तद्भोजपुत्रा यो रत्नसिंहःतत्कृता  
कबरशाहपुत्रजहांगीरशाहसेवनम् । दिल्लीशत्रं दिल्लीशो जहांगीरशाहसूनुःशा

॥ भाषानुवाद ॥

इन्द्रवज्रा ॥ नीच छोटे भाई को जीतने की इच्छावाले औरंगजेव के पुत्र (बहा  
दुरशाह) ने इसप्रकार कार्य का विचार कर बुन्दी के इन्द्र (बुधसिंह) को शीघ्र  
स्वरूप बुलाकर विश्वास देकर दिल्ली का भार राजा के सुजां में बाँधा ॥ ८ ॥  
शालिनी ॥ राय भोज का आचार, इसीप्रकार रत्नसिंह की सेवा, दिल्लीज की  
रक्षा करनेवाले अनुजाल और भावसिंह, कुणसिंह को उज्जीन से छलघात  
से मारने का स्मरण करके औरंगजेव के पुत्र (बहादुरशाह) ने बुद्ध्यावधारण किया

कृष्णं कृष्णाऽवन्तिकाप्राप्तमृत्युं स्मृतवौरङ्गिः शुद्धभावनन्दधार९  
( प्रायःप्राकृती मिश्रितभाषा )

( दोहा )

यह उदंत दिसदिस उडिग, जस बुंदियपति जग्गि ॥  
इम काबल सूवा अवनि, लगन स्वामि भट लागि ॥ १० ॥  
कूरम पतिको लघु कुमर, विजयसिंह रुचि रंग ॥  
जावत अवसर आमके, स्वजनक जामिप संग ॥ ११ ॥  
बालबेस कोतुक बिरचि, लागि छोनिय कछु लाह ॥  
प्रथक पाय हिंडोनिपुर, सेवत आलमसाह ॥ १२ ॥  
कूरमपति तत्थहि मरिय, लघुसुत रहिय समीप ॥  
पट्ट लहिय जयसिंह नृप, पुर आमैर प्रदीप ॥

( हरिगीतम् )

लाहि पट्ट नृप जयसिंह यौं बय अब्द द्वादस १२मँ तहाँ ॥  
भट मंत्रि बर्म बुलायकँ कहि. कौन मंत्र अबँ यहाँ ॥  
करिकँ समस्तन मंत्र भाखिय काल देस प्रमानिये ॥  
अवरंग साह समीप सेवनमँ सबँ सुख जानिये ॥ १४ ॥  
यह थपिकँ जयसिंह लौ दल देस दक्खिनकौं गयो ॥  
दरगाह साह सलाम कै मिल थाव अप्पनपै ठयो ॥

इज्यहांनामा तद्रत्नकमेतादृशं रत्नसिंहपौत्रं शत्रुशल्यनमानं च पुनः भावम्  
त्रौरंगशाहनिदेशेन खजुवानगरादियुद्धविजेतारं शत्रुशल्यपुत्रं भावसिंहनामा  
नम्। कृष्णं कृष्णसिंहं भावसिंहप्रातृभीमसिंहपुत्रं। आत्मनैवात्मशाहेन कृष्ण-  
ना कपटन अवन्तिकापूर्वां प्राप्तां मृत्युर्येन तं तादृशं शुद्धभावं चित्तशुद्धि कपट-  
राहित्यामिति ज्ञानम्। द्वार धारयतिस्म ॥ ९ ॥ प्रा०दृ०प्रा०मि०॥ दोहा॥ यह  
इति ॥ उदंत दृशांत. लगन प्रीति. स्वामी बहादुरशाह के. अरु भट उमराव  
बुधसिंह ताके ॥ १० ॥ कूरमनि ॥ आम बडी सभा ताको. स्व अपने. जनक वि-  
ष्णुसिंह. जामिप बुधसिंह. तिनके ॥ ११ ॥ बालबेसेति ॥ वेस अघस्था तामे  
प्रथक जुदो. हिंडोनिपुर हिंडोनि नाम नगर ॥ १२ ॥ कूरमपतिरिति ॥ तत्थ त-  
हां. काबल के सूवा मे. प्रदीप दीपक ॥ १३ ॥ हरिगीत ॥ लाहिइति ॥ अब्द वर्ष-

बुलवाय साह समीप ओ दुवदहत्य अंजलि संग्रहयो ॥  
 करिहै कड़ा अब जेर तू इम व्याज कोपित व्है कहयो १५  
 जयसिंह यह सुनि उच्चरयो मम भाग आज उदोतहैं ॥  
 कर इक्क थंभत साह जो नर सर्व उप्पर होतहैं ॥  
 अवरंग यह सुनि मोद मनि रू छोरि आयस अप्पयो ॥  
 नृप मानके कुल मानसो जयसिंह भूपतिहू भयो ॥१६॥  
 बय बाल अरु बच बृद्ध तो नृप मानसोहू सिवायहै ॥  
 यह सिवाइजयसिंह नृप अब नाम एह कहायहै ॥  
 यह बत्त अंक रू वान सप्त रू इक्क १७५९ संवतमें भई ॥  
 पहुमी न इक्कहिँ रत्त अब कछु होत जात नई नई ॥ १७ ॥

( दोहा )

हिंदुनकी पहुमी प्रिया, भोगी तुरकन आय ॥  
 ज्यहाँगीर जारहि मरत, रतिरस अब न अघाय ॥ १८ ॥  
 कछु अवरंगहु तरुनपन, भोगी सकति निहारि ॥  
 अब यह जरठ जईफ वो, नित्यनई यह नारि ॥ १९ ॥

( षट्पात् )

सर ससि हय इक १७१५ साल भ्रात दारा हनि जिहो ॥

यहइति॥ यहधप्पि यह संत्र करिकैं. धानअप्पनपैं अपनैं खरो रहिये केस्थानपैं.  
 ठयो रयो. साह. आरंगजेवनैं. ओ अरु. दुवदहत्यअंजलि दोऊ हाथनतैं अंजलि  
 करि राख्यो सो. व्याजकोपित झूठैं ही कोप करिकैं ॥ १५ ॥ जयसिंह इति ॥  
 या वृद्ध के दूजे चरख के वाच्यार्थ सों भये दोऊ हाथ गहे हैं, यातैं सैं सबनतैं  
 विशेष बहिणैं यह व्यंग्यार्थ पायो. आयस हुकम. अप्पयो दीनों ॥ १६ ॥ यय  
 भालइति ॥ यय अदस्था. बच बचन तासैं. वृद्ध बडो. अंक नव ९. वान पंच ५.  
 सत्रह के शुभलाटि १७५९ के संवत् सैं. इक्कहिँ एकसों. रत्त आसकत ॥ १७ ॥  
 दोहा ॥ हिंदुनकीइति ॥ ज्यहाँगीरजारहि जहाँगीरशाह अकबरशाहको  
 पुत्र राजनीतिमें झुगल हो ताके ॥ १८ ॥ कछुइति॥ जरठ वृद्ध. जईफ वृद्ध. या  
 बनी. वृद्धपदको प्रयोग है पर कियो यातैं अतिवृद्ध जानिये ॥ १९ ॥ षट्पात्॥  
 सरइति ॥ सर पंच५. ससि एक १. हय सप्त ७. सत्रह सैं पंद्रहके साल १७१५

जिति धोलपुर समर तखत अवरंग बइठो ॥

बसु रू वेद ४८ मित बरस पातसाही निरबाही ॥

गुन खट हय ससि १७६३ साल आय अब समय इलाही ॥

इकदिन बुलाय सुत आजमहिं कारि रहस्य अवरंग कहि ॥

जंपत निमाज ममासिर अलग करहु पुल तरवारि गहि २०

॥ दोहा ॥

भुगि जरा बय साह अब, लयो मृत्यु निज जोय ॥

जान्यौं दिला खमै रहैं, जो निमाज बध होय ॥ २१ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि आजम यह सकुचि बत्त मन सोधि विचारिय ॥

इहिं उद्यम संधान होत संदेह जियन हिय ॥

कहत साह कछु ओर करत कछु ओर दुरासय ॥

यह दृढ करि उच्चरिय होय मोसौं न यहै नय ॥

जो बहत अप्प ममसुख जनक तो यह हुकम अलीक करि ॥

दिल्लिय समेत अकबरनगर सूबा अप्पहु महर धरि ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

सुनत साह अवरंग इम, प्रिय सुत आजम बैन ॥

अकबरपुर दिल्लिय अरपि, सूबा सुनसुब सैन ॥ २३ ॥

॥ षट्पात् ॥

बरस. यावनी. दारा दाराशाह नामक. जिह्वा ज्येष्ठ. (पडो). बसु अष्ट. अरु वेद च्यार ४. ऐसे ४८ अठतालीस तिनके. मिन प्रमानवारे. गुन तीन ३. खट ६. हय ७ सप्त. ससि १ एक. ऐसे सत्रह सै अस्त १७६३ के साल वर्ष. यावनी. तामै. रहस्य एकांत मंत्र. जंपत पढत. निमाज यावनी धर्मपुस्तक. अलग भिन्न ॥ २० ॥ दोहा ॥ भुगिजिति ॥ भुगि भोगिकै. जोय देखि. दिला मन. यावनी. ख परमेश्वर. यावनी. मैं तामै ॥ २१ ॥ षट्पात् ॥ सुनिइति ॥ नंधान युक्त करिथो. तासौं. दुरासय दुर्गम है आशय हृदय विचार जाको ये मो. नय न्याय. अलीक मिथ्या. अप्पहु देहु. महर कृपा. यावनी ॥ २२ ॥ दोहा ॥ सुनत इति ॥ अरपि दयें. सैन सेना ॥ २३ ॥ षट्पात् ॥ कियइति ॥ संगर युद्ध



क्रिय आजम यह मंत्र साह मरिहै अब जीरन ॥

मैं दिल्लीपुर जाय बैठि गहिय प्रपंचपन ॥

साहबहादुर सुत अजीम संजुत हनि संगर ॥

कामबखस पुनि अनुज मारि इकछत्र तपो धर ॥

यह सोचि सीख दिल्ली लई आजम उचित अनीक सजि

चाहि चलिय चाहि गहिय गरज तब अवरंगाबाद तजि २४

साहबहादुर सुत अजीम अभिधान नेक नर ॥

पूरव पुर पटनाँ सु रहत हुकम अवरंग बर ॥

कछुक काज तिन दिनन साह बुल्लयो अजीम वह ॥

बंछि पितामह पत्र चल्यो दक्खिन दरकुंचह ॥

खटमिजल रक्खि अकबर नगर मैंनपुरी सु अजीम रहि ॥

उत समय पाय आजम चल्यो दिल्लीय आयस साह लहि २५

प्रथम साहकै पुत्र भयो सुरतान मुहुम्मद ॥

कारागृह संकटिय मरयो दुखपाय मितंबद ॥

दूजो आलमसाह २ सोहु कारागृह डारयो ॥

जब आजम जच्चयो सु तबहि द्रुत साह निकारयो ॥

आजम ३ यहै सु तीजो तनय ताहि साह हित करि चहै ॥

सुत कामबखस ४ चोथो सु पै साह हुकम अति निब्वहै २६

तुरकनकै नहिँ बरन अवाधि चंडाल इक लव ॥

तामैं. अनुज छोटी भाई ताकों. दिल्ली दिल्लीकी. अनीक सेना. गरज सुख इच्छा. देशीप्राकृत ॥ २४ ॥ साहबहादुरइति॥ अजीमअभिधान अजीम नामक. नेक धर्मिष्ठ. यावनी. पूरवपुरपटना पूरव दिशाको सूबा पटना. वा पुर को नाम. तहां. सु सो (अजीम). हुकम आज्ञा. यावनी. बुल्लयो बुल्लायो. दरकुंच नित्यही कुंच करिकै. हकार यहां तृतीयाके पदवचनमैं है. अकबरनगर आगरा. मैंनपुरी चहुवाननको नगर विशेष ॥ २५ ॥ प्रथमेति ॥ साहकै अवरंगजेबकै. संकटिय संकटवान होचकै. मितंबद थोरो बोलियेवारो. कारागृह बंदीगाने. जच्चयो मांग्यो. सु सो ( आलमशाह ), तनय पुत्र ॥ २६ ॥ तुरकनकैइति ॥ अरन ब्रह्म चत्रियादि अवाधि चंडाल पर्यंत. लव अंश. गणिका बेइया. ताफें. पिचह उदर

काम बखस यह कुमर भयो गणिका पिचंड भव ॥  
 याहि साह करि रीक धरा दक्खिन सूबा धुर ॥  
 भागनगर अप्यो रु बहुरि दिन्नो बीजापुर ॥  
 पंचमो पुत्र अकबर प्रकटि अति जुब्बन उद्धत बहयो ॥  
 परघरन तक्कि मंडत अनय कुप्पि साह बध्यहि कहयो २७  
 ॥ दोहा ॥

अकबर, मारक जनक सुनि, भजि मारवधर आय ॥  
 रठोरन ठाकि रक्खयउ, पुनि भय गयउ पलाय ॥२८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचस्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप  
 तिबुधसिंहचरित्रे आलमसाहप्रकोष्ठदुर्वचनभाषियवनबुधसिंह  
 नन १ आमैराधीशविष्णुसिंहकनिष्ठसूनुविजयसिंहहिण्डोनपुर  
 प्रापण २ आमैराधीशविष्णुसिंहस्वर्गवासपट्टपुत्रजयसिंहपट्टासा  
 दनसमसवाईपदाधिगम ३ पितृवधास्वीकारिकुमाराजमार्थय-  
 वनेन्द्रौरंगजेवदिल्लंपकंबरपुराधिकारद्वयवितरण ४ औरंगजेवसूनु  
 पंचककनिष्ठाकबरस्य तातविरोधितया पलायनवर्णनं सप्तमो  
 मयूखः ॥७॥ आदितः पञ्चचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४५ ॥

में “ पिचंडो जठरोदरे ” इतिहैसः ॥ भव भयो, ऐसो याही कामबखसको।  
 साह अवरंगजेबने, धुर मुख, अप्यो दयो, उद्धत निसंक्र, बध्य मारिवेयोग्य,  
 ॥ दोहा ॥ अकबरइति ॥ मारवधर मारवारि धरामें, ठकि छिपाय ॥२८॥

श्रीवंशभास्कर महाचस्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के रूपति  
 बुधसिंह के चरित्र में आलमशाह की डयोही पर बुधसिंह का दुर्वचन कहने-  
 वाले एक यवन को मारणा १ आमैर के राजा विष्णुसिंह के छोटे पुत्र विज-  
 यसिंह को हिंडोनपुर मिलना २ आमैर के राजा विष्णुसिंह का देहांत होने  
 पर पाटवी पुत्र जयसिंह का गद्दी बैठकर सवाई पद पाना ३ पिता को मारने  
 का अस्वीकार करनेवाले शाहजादे आजम को बादशाह औरंगजेब का दि-  
 ल्ली और आगरे के दो सूबों का देना ४ औरंगजेब के पांच पुत्रों में लघु पुत्र  
 अकबर का पिता के विरुद्ध होकर भाग जाने के वर्णन का सातवां मयूख स  
 ज्ञात हुआ ॥ ७ ॥ और आदि से दो सौ पैंतालीस मयूख हुए ॥ २४५ ॥

औरंगजेब कोत्र अकबरकामारवाड में जाना] सप्तमराशि--अष्टमस्युत्र (२९, ४१)

( गीर्वाणभाषा )

अनुष्टुप्पुग्मविपुला ॥

सिंहायलोकिनी गाथा प्रबन्धपुप्रबध्यते ॥

योजनीयोऽन्वयो वाक्यमहावाक्याऽवसानयोः ॥ १ ॥

द्वुतविलम्बितम् ॥

अथ तथा कथयामि न कोप्यऽभूज्जगति शाहनिदेशपराङ्मुख ॥

स्वशरणां सविचार्य यथा मनागकवरो गतवानपि धन्वनि ॥२॥

प्रायःप्राकृती मिश्रितभाषा ॥पञ्कटिका

अगौ नरेस जसवंत नाम, उजैन जंग तजि भजिग धाम ॥

द्वुव जनक रुद्धि अवरंग साह, तव जाय मंद मंग्यो गुनाह ॥ ३ ॥

गीर्वाणभाषा ॥ अनुष्टुप्पुग्मविपुला ॥ सिंहायलोकिनी ॥ सिंहायलोकिनी

भूत्या पुनगवणिष्टृत्तान्त वक्तुं प्रवर्तनी गाथा वाग्विशेषः। वाक्यं एकतिङ्

महावाक्यं वाक्य सप्तः। तयोरेवसानपारतयो रित्यत्रे तरेतरयोः गो द्वन्द्वः।

द्वन्द्वान्तं, श्रूयमाणं पदं प्रत्येकं संबध्यते इति संबन्धः ॥ १ ॥ द्वुतविलम्बि

तम् ॥ अथ इति ॥ अथ शब्दो वक्ष्यमाणवृत्तान्तप्रारंभ चोत्कः। तथा तेन प्रका

रेण कथयामि पश्यामि तथा कथं यथा, शाहनिदेशपराङ्मुखः शाह औरं

गजेव स्वदाज्ञाविमुक्तः कोपि नाश्रूत्, कश्चिदपि नासीत्। तथा च मनाक ई

षत्, स्वशरणां सविचार्य, ज्ञात्वा स शाहस्य पंचमपुत्रोऽकबरनामापि धन्वनि

मन्देशे "ममानौ सन्धन्याना" विलम्बः॥ गतवान् जगाम। धन्वनीत्यधिकरण

विचाराणां सप्तः। कथिधातोरेतद्वाक्यार्थकर्मकत्वं ज्ञेयम् ॥ २ ॥ पञ्कटिका ॥

खजुवापुर संगर साह कीन, सूजा भजाय निज भ्रात दीन ॥  
 तत्थहु कबंध तजि स्वामि प्रीति, अवरंग हमम लुट्टिय अनीति ४  
 धन कोम जनानन लूट ठानि, मरुधर भाजि आयउ ताम मानि  
 तब साह मरुस्थल लियउतारि, जसवंत निमज्जिग विपति वारि  
 बहु अब्द मरुस्थल बिनु बिहाय, पुनि दुखित आय लागि साहपाय  
 सकुटुंब रचिय दिल्ली निवास, बहुकाल खंचि सेवा बिसास ॥ ६ ॥  
 दै साह बहुरि धर धन्व राज, काबलधर पठयो तान कांज ॥  
 नाहि साहु सधी सूजा सन्हागि, बहुकाल रहयो उद्यम विसारि ॥ ७ ॥  
 दिस बिदिस परन दब्बी जमीन, सुनि अलस कोप पुनि साह कीन  
 रनवास हुतो दिल्ली सु साह, अटकयो जरि फोजन इहि गुनाह ॥ ८ ॥  
 इक रानी धारत गर्भ आस, हुव अजितसिंह जनि जठर जास ॥  
 इल साह हवेली फिगि दुरंत, अंतहपुर घेरयो न दुख अंत ॥ ९ ॥  
 रानिन पँहँ पठयो हुकम साह, सुत जन्म सुन्यो नृपकै उछाह ॥  
 सो देहु सौंपे जो मुलक चाह, लैहँ बिसासि अब वाहिँ साह १०  
 जसवंत जोधपुर जोग्य नाहि, सुत देहु भयो जो अत्र आहि ॥  
 रनवास सबहि सुनि यह निदेश, उमराव बुलाये निज असेस ११  
 आहूत सबहि रहार आय, करि मंत्र तत्व रानिन कहाय ॥

वनी ॥ ३ ॥ खजुवापुर इति ॥ खजुवा नामक नगर को युद्ध साह आरंगजेबनें.  
 सूजा भुजाशाह नामक. निज अपनों. तत्थ तहां. कबंध रहार राजा जसवंत  
 सिंहनें. स्वामि जो आरंगजेब तासों. हमम वैभव. देशीप्राकृत ॥ ४ ॥ धनको  
 सईति ॥ कीन अंडार. जनानन जनानेनकी. निमऽजग बूझ्यो. वारि जल तामें.  
 बहुअब्दइति ॥ अब्द वर्ष. बिहाय बिताय. खंचि कहि ॥ ६ ॥ दैसाहइति ॥ ध  
 न्व अलस. अान रजा. सधी वनी ॥ ७ ॥ दिमदिसइति ॥ परन शत्रुन. अल-  
 स आलाय. या जसवंतसिंहको यह शेष. हुतो हो. सु सो. जरिफोजन जरि-  
 के योगसों फोजन के जंजीर रूप; वा कटक रूप जानिये ॥ ८ ॥ इकरानीइति  
 जनि जन्म "जनिरूपतिरुद्भवः" इत्यमरः ॥ जठर उदर जासों. जास वाके  
 रानिनइति ॥ सो पुत्र. चाह चाहहै तो ॥ १० ॥ जसवंतइति ॥ अत्र यहां. आ  
 हिँ हैं. निदेश हुकम. असेस सब ॥ ११ ॥ आहूतइति ॥ आहूत बुलाये. तत्व

पठये नृप काबल दै स्वधाम, सोपै न सुधारत साह काम ॥१२॥  
 सुत जो भयो सु नहि गुप्त अत्थ, अब ताहि साह मंगत समत्थ ॥  
 भाखत इहिँ दैहौ धन्वराज, अरु कोप लखत दरसत अकाज १३  
 तत उचित नाहि तुरकन बिसास, छल होन लगे बहु आसपास ॥  
 अब काढि कुमर जिहिँ तिहिँ उपाय, कछु वृत्ति जिवावहु धन्वजाय  
 प्रछन्न जन्यो अप्पन अपत्य, तसमान कहहु भो यह असत्य ॥  
 तँहँ भट्टिय भट गोइंददास, कापालिक बनि लिय कुमर पास १५  
 भट्टिय रघुनाथ सु पति लवेर, सजि दुर्गदास रडोर फर ॥  
 ए बान सहाय दुवभट अमान, कुमरगह निकसि गय इष्ट थान १६  
 किय जंग अवर सुभटन अछेह, लरि हड्डो रानिय तजिय देह ॥  
 इम भावसिंह भगिनी सुभाय, निरबाहि पतिव्रत स्वर्ग पाय ॥१७॥  
 जसवंत कुमर कसि कंठदेस, लहि काल कढे वे बदलि बंस ॥  
 तिन छत्र साहसौँ धन्व जाय, इक बिप्रगेह रक्खयो छिपाय ॥१८॥  
 मरुधर रहयो न रडोर राज, द्विजगेह कुमर बसि दुख दराज ॥  
 दिल्लीसौँ साहन हुकम पाय, मरुधर रनवासहु अवर आय ॥१९॥  
 नहिँ मिलत मात सुत बिपाति बास, तप उग्र सहत अवरंग त्रास ॥  
 इहिँ अंतर नृप जसवंत अंत, बसि काल भयो काबल बसंत ॥२०॥  
 जसवंत सुवन तबहु बुलाय, इन कुपित जान रक्खयो दुगाय ॥  
 नृप अजितसिंह जसवंत जाम, प्रछन्न रहे इम बिप्र धाम ॥२१॥  
 गजसिंह जनन पैहँ नास होत, भट दुर्गदास रक्खयो उदोत्त ॥

सिद्धांत. स्वधाम जोधपुर ॥ १२ ॥ सुतजोइति ॥ अत्थ यहाँ. लागत देखतै ॥ १३ ॥  
 ततउचितेति ॥ तत ताकरनसौँ. कछुवृत्ति कांज जीविकासौँ. ध्वन्व मरुदेश  
 ॥ १४ ॥ प्रछन्नइति ॥ अपत्य पुत्र. भट्टिय भाटी जातिको जत्रिय. कापालिक  
 व्यालशाहक ॥ १५ ॥ भट्टियइति ॥ लवेर लवेरा नामक प्रायका. इष्ट प्रिय  
 धान स्थान ॥ १६ ॥ कियइति ॥ स्पष्ट ॥ १७ ॥ जनवंतइति ॥ वे दोऊ भाटी और  
 रडोर तीनों ही ॥ १८ ॥ मरुधरइति ॥ दराज दडा. माहन बादशाहको. अवर  
 हाडी रानी चिना ॥ १९ ॥ नहीति ॥ बसिकाल ॥ कालवास ॥ २० ॥ जसवंतइ-  
 ति ॥ जाम जन्मवारो ॥ २१ ॥ गजसिंहइति ॥ जनन वंश. सुन ३ तीन. सत्र-

नव गुन रु सप्त इक १७३९ अर्द्ध मान, जसवंत भूप किय देह हान  
 तिन दिनन यहै अकबर कुमार, मरुदेस गयो भूप साह भार ॥  
 रटोर नहिंन ऐसे खमत्थ, अवरंग खूनि रक्खै सु अत्थ ॥ २३ ॥  
 तब तिनहु दयो अकबर निकारि, ईगन गयो वह बल विचारि ॥  
 अकबर सु मरयोपुर इस्पहान, सुतज्येष्ठ मरयो प्रथमहि सयान ॥  
 अवरंग पुत्र अथ जियत तीनउ, धर कावल पट्टपके अधीन ॥  
 हुव कामवखस दक्खिन नरस, पुर दिल्ली आजम लिन्न पेस ॥

॥ दोहा ॥

साहबहादुरके प्रथम, सोजदीन हुव पुत ॥

अनय अस आलस निलय, जवनी जठर प्रसुत ॥ २६ ॥

रूप नगर रटोर नृप, तनया ताके गेह ॥

साह बहादुरको प्रथम, व्याही अवनि सनेह ॥ २७ ॥

ताके उदर अजीम भो, दूजो सुवन सिपाह ॥

पूरवधर पुर पट्टनां सूबा जिहिं दिय साह ॥ २८ ॥

सुत रफील आदिक कदर, यह तृतीय अभिधान ॥

अखतर आदि बुलंद पुनि, यहै चतुर्थ अमान ॥ २९ ॥

आलमके च्यागिठ सुत, तिनमें चतुर अजीम ॥

सोजदीन सबसों बडो, दिल्ली तरुका दीम ॥ ३० ॥

तीन पुत्र निज जनक तट, पुर पट्टनां सु अजीम ॥

सो आवत हुत साह डिग, कछु विभेम लय नीम ॥ ३१ ॥

इस से गुननालात १७३९ के. लान प्रमान के. अर्द्ध वर्ष में. हान त्याग ॥ २२ ॥

निर्नादेसके ॥ रटोर खूनी. यादवी. अत्थ यदां. (या खमत्थमें) ॥ २३ ॥ तबति

नर्हति ॥ निज रटोर. जेष्ठ बडो. सुरतान मुहम्मद नामक ॥ २४ ॥ २५ ॥ दो

हा ॥ साहति ॥ अजीम अजीमजाह नामक. साह पितामह औरंगजेबनें

॥ २८ ॥ सुतडायि ॥ रफीलके आदि कदर यह अर्थ. अखतरके आदि बिलंद

अखतरबिलंद नामक ॥ २९ ॥ आलमके इति ॥ दीम लोकें उदेई. (दीयलिं)

॥ ३० ॥ तीनपुत्रइति ॥ निज अपनों. जनक पिता आलमशाह ताके. तट काब

आजमकै इक सुत भयो, बखस अंत दीदार ॥

जो हाजरि निज जनक जुत, साह निकट गिनि सार ॥३१॥

आजम पुब्ब लिखी सु करि, दिहिय लोभ चलाय ॥

पुर अवरंगावावतैं, पंचकोसं परि आय ॥ ३३ ॥

इहिं अंतरं अब देखिये, करतं मही नवरंग ॥

सक गुन खट ६३ कागुन असित, तजिग देह अवरंग ॥३४॥

॥ पट्पात ॥

सत्रुसल्ल नृप समय साह अवरंग उपजिय ॥

हनि अग्रज पितु तरजि छिन्निलिन्नी निज गहिया ॥

मरहहन सुनि फैल गयो दक्खिनधर दब्बन ॥

बहुत बरस रहि तत्थ रच्यो निज नामक पत्तन ॥

गुन खट तुरंग ससि १७६३ साल बनि बिक्रम सक फगुन असित ॥

अवरंग मरिग दक्खिन अवनि अब मरहहन दिन उदित ॥३५॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचन्द्रके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप-

तिबुधसिंहचरित्रे तातवासमरुगतोरंगजेवपञ्चमपुत्राकबरप्रसंगयो-

धपुरभूपयशवन्तसिंहपूर्वादन्तस्मारणा १, वहादुरशाहपुत्रचतुष्कग-

णानान्तगौरंगजेवनिधनवर्णनपटमो मयूखः ॥ ८ ॥

लके लुवा. नीम मूल ताका ॥ ३१ ॥ आजमकैइति ॥ बखसअंतदीदार दीदार

बखस नामक ॥ ३२ ॥ आजमति ॥ पुब्ब पहिले ॥ ३३ ॥ इहिंइति ॥ कुल ३ती-

न. खट ६ छै. ताके ६३ जेसठि भये तहां सत्रह अनुवृत्तिसौ सत्रह से जेसठि

१७६३ के साल यह अर्थ करिये. असित कृष्णपक्ष ॥ ३४ ॥ पट्पात ॥ सत्रुस-

ल्लति ॥ अग्रज बडे भाई. पितु पिता ताकां. तरजि तरजनां करिके. लोके दर्प-

दायके. पत्तन नगर. गुन ३ तीन. खट ६ छै. तुरंग ७ सप्त. ससि १ एक. यातैं

वही सत्रहसे जेसठि १७६३ को साल आयो. तामैं ॥ ३५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचन्द्र के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के राजा

बुधसिंह के चरित्र में आरंगजेव के पांचवें पुत्र अकबर का पिता के आस से

मारवाड़ में जाने के प्रसंग से जोधपुर के राजा जशवंतसिंह की पूर्वकथा का

स्मरण कराना? वहादुरशाह के चार पुत्रों की गणना के अनंतर आरंगजेव के

मरने के वर्णन का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ और आदिसे दो सौ छि-

आदितः षट्चत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४६ ॥

॥ दोहा ॥

साह मरत आजम सज्यो, यह सुनि बत्त अजीम ॥  
 मैनपुरीसौ आगरा, आयो ठहै भट भीम ॥ १ ॥  
 आय कटकजुत आगरा, किल्ला सजिग. सम्हारि ॥  
 जनकहुसौ पहिलै रहयो, आजमपै हक धारि ॥ २ ॥  
 उत आजम बुल्लयो उमंगि, साह मरन सुनि बत्त ॥  
 दिल्लीपर दावा रचन, मन्नि फिरयो मयमत्त ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

साह मरन सुनि सजव फिरयो आजम सुत संजुत ॥  
 पुर अवरंगाबाद जाय किन्नौ प्रपंच उत ॥  
 सब घर हसम सम्हारि खरच धन कोसं खुलाये ॥  
 नृप नवाव रवि आम विहित इतमाम बुलाये ॥  
 कहि इम पठाय सहस्रन पदग रेवा तट रुक्कहु सकल ॥  
 पहुँचै न बहादुरसाह प्रति साह मरन अब मंत्र बल ॥ ४ ॥  
 प्रतना इम पिछी रु सबहि रुक्के रेवा मग ॥  
 नृप नवाव बिसवासि कह्यो मंडहु प्रपंच पग ॥  
 अब दिल्लीय अप्पनिय इनहु रन साहबहादुर ॥  
 पाय पटा द्वियुनत रु अस मंडहु रस आतुर ॥

सुनि यहहि मिच्छ हिंदुन सबन धरिग लुब्धि गणिका धरमा ॥

यालीस २४६ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ २ ॥ उतइति ॥ मय मद. ॥ ३ ॥ षट्पात् ॥ साहेति ॥ सुत दीदारबखस. उ  
 वा तरफ वा पितकर्म. हसम वैभव. देगीप्राकृत. आम बडी सभा. विहित य  
 ग्य. इतमाम। ] पदग पैदल सिपाह. रेवा नर्मदा. साहमरन साह के म  
 ने की चरि ॥ ४ ॥ प्रतनाइति ॥ प्रतना सेना. "प्रतनानीकिनी चसु?" इत्य  
 रः ॥ पिछी बेगी. मग भागी. अस आराम. लुब्धि लोभ पायक. गणिका  
 इया ताकां. भुग्गवै भांगै. जाहि वा चेरयाकां. स्वर्पच चांडाल. सधन धन :



भुग्गवै जाहि स्वपचहु सधन कुल न जास सुकृत न सरम ॥५॥

॥ दोहा ॥

कोटापति नृप रामसाँ, कहि आजम कथ सुद्ध ॥

पुर पट्टन तुमसाँ लयो, आलमके बल बुद्ध ॥ ६ ॥

अब तुमकाँ बुंदिय दई, रचहु जंग नृपराम ॥

सुनि यह हुकम किसोरसुत, किय करजोरि सलाम ॥७॥

बिनु बुंदिय अरु जोधपुर, लिय सब सेन सम्हारि ॥

इतर भूप हाजरि अखिल, इक उदैपुर टारि ॥ ८ ॥

॥ पद्धतिका ॥

आमैर भूप जयसिंह पेस, चहुवान राम कोटा नरेस ॥

दतिया पति दलपात नाम सजिज, नरउर नरेस गजसिंह गज्जि ॥९॥

सोपुर महीप गोडावतंस, सीसोद रामपुर चन्द्र वंस ॥

चहुवान सिरोही पति सु चंड, औडिच्छ आदि बुंदेल खंड ॥१०॥

हाजरि हुव बीकानेर राय, मालव नरेस रठोर आय ॥

इम भट्टिय जैसलमेर ईस, इत ईडर छप्पन भुव अधीस ॥ ११ ॥

खिच्चिय भदोर जद्व बघेल, इत्यादि बहुत सजि मंत्र मेल ॥

निज भट समस्त हाजरि नवाब, हुव विविध फोज गणना हिसाब १२

सजि कटक लख सप्तक ७००००० सम्हारि, हुव लख २०००००

बाजि पक्षर प्रसारि ॥

सजिसहँसपंच ५००० मत्ते मतंग, पादातिलख पंचक ५००००० प्रसंग

हित. जास जा चांडाल के. सरम लज्जा ॥ ५ ॥ दोहा ॥ कोटाति ॥ मुद्ध सूढ.

पट्टनि वा पुर को नाम जो बुधसिंहनै आलय दयो हो ॥ ६ ॥ ७ ॥ बिनु बुंदि-

य इति ॥ इहां बुंदी जोधपुर काँ लच्छन लच्छना सँ करिकँ दोऊनके राजा.

ऐसँ सर्वत्र जानिये ॥ ८ ॥ ९ ॥ सोपुरइति ॥ चंद्रवंश चंद्रसिंह सीसोदिये के

वंशके चंद्रावत सूर्यवंशी. औडिच्छ नाम नगर तदादिक दतियासाँ इतर औ-

रहु बुंदेल जानिये ॥ १० ॥ हाजरि इति ॥ राय राज ॥ ११ ॥ खिच्चियइति ॥

छप्पन देश. ईडर नगर. गणना गिनती ॥ १२ ॥ सजिइति ॥ पादाति पयादे

दुवसहस्र २००० तोप जंगी दुरूह, सहस्रान निसान फहरत समूह ॥  
फाटि असिन बाढ भरि सान फूल, दल रंगरंग वानां दुकूल ॥१४॥

॥ सुकतादाय ॥

सजी अब आजम संगर फोज, पटा गज बाजि करी हित मोज ॥  
खरे खुरसानन चुवत खग्ग, चिरैफाटि धारन बाढ उदग्ग ॥१५॥  
ग्रहग्रह तंतनि सिंधुव सोर, घुरे भजि भोगिन भद्व घोर ॥  
दये बहु आयुध आजम बंदि, समग्तन बंदि लये सिर सटि ॥१६॥  
कसै बहु बाहुल कंकट टोप, कसीसत कंद कमानन रोप ॥  
उदायुध केक घसै सिर गँन, नचै रनपै कहँ आरुन नैन ॥१७॥  
सनंकत सान अहो निस लोह, परै भरि फूल हुतासम छोह ॥  
तपै असिधावक पावक ताव, मनौ तरु तिंदु चिनांगिय दाव ॥१८॥  
करै बहु घोर विधानन दान, मनौ रन इष्ट बधावन धान ॥  
भई रजसौ तमसौ मिलि संधि, रहयो कहँ सत्व विसैसन बांधि ॥१९॥  
करै रन आगम वीर उछाह, मनौ नर नायकवेस विबाह ॥  
रचै प्रति वासर आजम आम, रहँ इक आहव आहव नाम ॥२०॥  
बन्यौ दल द्वादसकोस १२विथार, जमी पहुमी नर बाजिन भार ॥  
धरै उर अच्छरि संग उमंग, करै भट के भट कुंकुम रंग ॥ २१ ॥  
बन्यौ नर आकर दक्खिन भाग, मनौ सुर दच्छ प्रजापति जाग ॥  
शिपाही ॥ १३ ॥ दुवइत ॥ ऊह तक नामे न आवे निसान पताका. असि  
खड्ग तिनको. सान खुरसान तिनतै. फूल लोके चिनगी. दुकूल वल्ल ॥ १४ ॥  
सुकतादाम ॥ सजीइति ॥ पटा आजमके. मोज रीझ ॥ १५ ॥ ग्रहग्रहइति ॥ यह  
बाजे को अनुकरण. सिंधुव रागविशेष. भद्वके भेषकी घोर. बंदी बंदन करि  
॥ १६ ॥ कसेति ॥ बाहुल दस्ताना. कंकट बकतर. रोप वान. "पत्री रोप इपुईयो"  
इत्यमरः ॥ ऊचे क्रिये हैं आयुध जिननै. ऐसे सुभट ॥१७॥ सनंकेति ॥ असिधा-  
वक सिकलीगर "अस्यासक्तोऽसिधावकः" इतिहैमः ॥ तिंदु वृक्षविशेष. ताकी  
दाव वनमें अग्नि लागै तामै "दवा दावो वन्यवन्निह" रितिहैमः ॥१८॥ करैइति ॥  
मान सत्कार. वासर दिन. आहव युद्ध. रज रजोशुन. तम तमोशुन. तिनसौ दोउ  
यह अर्थ. कहँ कोऊक ठोर. सत्व सत्व शुन रह्यो ॥१९॥ करैइति ॥ नायकवेस जो  
वन अवस्था ॥ २० ॥ २१ ॥ बन्योइति ॥ आकर खानि. जाग याग (यज्ञ) "यज्ञ

गये रुकि मेकलजा नदि मग्ग, चलयो अब आजम जंग उदग्ग २२  
 मही फटि नालन देत दरार, देवै भर भोगिय भोग हजार ॥  
 प्रकंपत चिक्करि दिग्गज अड्ड, मन्कन घुम्मत कोल कमड्ड ॥२३॥  
 मच्यो रव कल्प प्रमंजन मान, मनो पयसागर फेर मथान ॥  
 चली चलि संग चरकखन तोप, लगै विरचै गढ पब्वय लोप ॥२४॥  
 किती लुक सिंहे सुखी बिकराल, करी अहि नक्र सुखी अरिकाल  
 रजै लिपि नागज आनन रत्त, करै सिर छाँहँ पताकन छत्त ॥२५॥  
 जुते वृष अँचत के करि हल्ल, बडे गज पिठि लगावत टल्ल ॥  
 गिल्ले अयपिंड घटा दुव घास, चरारत चक्र चरकखन चास ॥२६॥  
 रहै प्रतिइक बतीस ३२ जवान, परै लागि गोलक कोस प्रमान ॥

ध्वरो सवो घागः" इत्यमरः ॥ मेकलजा नर्मदा. "मेकलकन्यके" त्यम-  
 रः ॥ २२ ॥ महीफटिइति ॥ भोगिय भोगी (सर्प). "उरगःपत्तगो भोगी" त्यम-  
 रः ॥ भोग फन. कोल पराह ॥ २३ ॥ मच्योइति ॥ रव शब्द. कल्प-प्रलयकाल  
 के. प्रमंजन पवन के. मान प्रमान. पय दुग्ध. चरकख शकटविशेष. देशी प्रा-  
 कृत ॥ २४ ॥ कितीइति ॥ लुक वनकुत्ता "कोकस्तर्षाहायुको सुगः" इति हेमसू-  
 रिः ॥ नक्र मकर विशेष. रजै सोहँ. लिपि चित्र रचना विशेष. नागज सिंदूर.  
 "सिंदूर नागजं नागरक्तं" इति हेमः ॥ आनन सुन्न. रत्त लाल. छाँह छाया. छ-  
 त्त छत्र ॥ २५ ॥ जुतेइति ॥ जुते जुपेहृये. वृष वृषभ. लोके बल. अँचत  
 खँचत. केकेते ही. पिठु पृष्टि. टल्ल टला. लोके धक्का. अयपिंड लोह के पिंड.  
 गोला यह अर्थ. धटी तोलविशेष. छै ६ गुजाको एक १ मासक. अष्टादश १८  
 मासकको एक १ पईसा. चालीस पईसा को एक १ सेर. पंच ५ सेर की  
 १ एक धटी. तैसी दुव २ दोय धटीको. चरारत यह चक्रके शब्दको अनुकरण है.  
 चक्र लोके पहियः. चरकख तोप के आधार शकट विशेष. चात्त खबरि. चर-  
 कखन के चक्र के शब्द हीं सों खबरि परै कि यह तोपन को ही शब्द है ऐसी  
 ॥ २६ ॥ रहै इति ॥ प्रतिइक एक तोप प्रति. जवान चौवनवारै. ३२. यहां ज-  
 वान सामान्य अवस्था वाचक है परन्तु तोपन के योत्सवों पुरुष ही जानिये.  
 गोलक गोला. लल्लखन चरकखन के चक्र द्वारा ललकार करत. लार संग. इ-  
 ली चली. डाकिनि तोप. यहां साध्वनसानानों आरोप विषय तोप तिनकी  
 निगरण करिके आरोपमाण डाकिनि शब्द को प्रयोग कियो याने डाकिनि  
 नके फहे तोप जानिये. यहांहु तोप डाकिनि दोऊ शब्दनर्म प्रथमा के जस

ललकृत आजमके दल लार, हली इम डाकिनि दोय हजार २०००  
 चली गज पंचसहस्र ५००० न पति, भयंकर कज्जल पव्वयभंति  
 लगेँ मग निट्टि करेणुन लोभ, डगेँ डग डाकन छकत छोभ ॥२८॥  
 मरोरत साखिन जुत्थप मत्त, परोरत व्याल रिसावन रत्त ॥  
 वडे वपु भद्र सृगादिक वंस, सज गुड साजन अंतक अंस ॥२९॥  
 वहेँ फटकारत सुंडिन व्योभ, प्रभा परि पव्वक जुव्वन जोम ॥  
 अहारत इच्छित पे न अघात, जनैँ जलपीवनकोँ घटजात ॥३०॥  
 उडेँ जिम कंदुक अंदुक पाय, जरे त्रिपदीन खुले सम जाय ॥  
 घुमावत जे सिर बीतन घाव, पयप्रति मंडत अंगद पाव ॥३१॥  
 कसे मखतूल कपालक कंध, बरत्तन नद्ध हवहन बंध ॥  
 जरी कुथ जेवर जोति चमक्क, उयो असिताचलपेँ मनु अक्क ३२  
 करैँ पथ पंकिल दान प्रवाह, लगेँ तन तोमर चुक्कत राह ॥

प्रत्यय का लोप जानिये ॥ २७ ॥ चलीहति ॥ पति पंक्ति. भंति तुल्य.  
 मग मार्ग. निट्टि कष्टसो. करेण हस्तिनी. तिनके. डगेँ चलै. डग एक ।  
 पैद. डाकन डाक. वाकोँ कुड करिकेँ शस्त्रको अल्प प्रहार करनोँ तिनकरि.  
 छकतछोभ चोभ लोके छोभ. तामै. छकत तृप्त होत ॥२८॥ मरोरतंति ॥ साखी  
 वृत्त. तिनकोँ. जुत्थप जुत्थ [यूथ] घने हस्तीनके समूह. तिनके पति. परिणत  
 भिरछी घात करियेधारे हस्ती. व्याल दुष्टहस्ती. "तिर्यग्घाती परिणतो गजो  
 व्यालो दुष्टगजः" इतिहैमः ॥ गुड हस्तीकी सिलह. तिन करि "गुडकं हस्तिस्त्रा-  
 ह" मितिमेदिनी ॥ अंतक जमराज. ताके. अंश श्यामतामै तथा क्रोध मै ॥२९॥  
 यहैइति ॥ यहै चलै. सुंडिन सुंडादंडनतै. पव्वक हस्तीके जुव्वन अवस्थामेँ विदु  
 निकसेँ ते "धिन्वुजालं पुनः पद्म" मितिहैमः ॥ अहारत अहार करत. इच्छित  
 चाक्षो. अघात तृप्त होत. जनैँ उत्पन्न क्रियेः विघातानेँ यह शेष. घटजांत अग-  
 स्तप ॥ ३० ॥ उडेँइति ॥ अंदुक जंजीर "शृद्धला निगडांऽन्दुकाः" इतिहैमचन्द्रः ॥  
 त्रिपदी डगपेरी. तिन करि "त्रिपदी गात्रयोर्वन्धः" इतिहैमः ॥ बीत महावत-  
 नको पगनको हूलनोँ. तिनके ॥३१॥ कसेति ॥ मखतूल रेसम. कडाप कला-  
 वे. बरत्त रस्से. तिन करि. "नध्री बंधी वरत्रा स्या" दितिहैमः ॥ कुथ झूल.  
 उयो उदय भयो. अक्क अर्क ॥ ३२ ॥ करैँइति ॥ पंकिल पंकवारे. दान मद. रा-  
 ह चालिषेकी रीति. सिरी मस्तक को भूषण. देशीप्राकृत. हाटक सुवर्ण. भर्म

सिरी मनि हाटक मंडित सीस, मनाँ ग्रह मंडल भर्म गिरीस ३३  
करै नभचारन चंचल चोट, उडै फटि फेट कपाट रु कोट ॥  
घटा घन भद्रवके अनुकार, हले गिरि जंगम पंचहजार ५००० ३४  
जुरे हय भूपत जामल लक्ष्म २०००००, तरारन निंदत मारुततक्ख  
जरे बर जेवर पक्खर तीन, तरोगति नीर कि मंडत मीन ॥३५॥  
धपै धरि धोरित आदिक धाव, पसै छिति पातुरिकी गति पाव ॥  
प्रबज्जत लासन नासनपौन, बटा नटके जिम गुफत गोन ॥३६॥  
बनावत नालन भुम्मि विभाग, मनोगति मप्पन मप्पत माग ॥  
उडै गजगाह मलंगत अच्छ, प्ररोहिग जानि अपाकृत पच्छ ॥३७॥  
चलै निज छाँह जभक्कत चित्त, घलै वर घुम्मर मान समित्त ॥  
पटीपर पूर लगावत लीह, मनाँ मत गोतम पाठक जीह ॥३८॥  
थरक्कत घुम्मत नीर कि थाल, फलंगत चित्रकतैबढि फाल ॥  
लसै गल यालन माल उदोत, सुचंदन चाप कि पन्नग पोत ३९  
उठै भुकि नद्ध दुतंगन अंग, कमानन हारत कंठ कुरंग ॥  
कडै छपि हत्थिनमै धपि धाव, बनै जनु वारिद बिज्जु सलाव ४०

सुपर्ण ताके. गिरीस गिरिराज (सुमेरु) तापै ॥ ३३ ॥ करैइति ॥ नभचार प-  
क्षी. तिनपै. घटा इस्तिनके समूह. जंगम चलते ॥ ३४ ॥ जुरेइति ॥ जामल दो-  
य २. तरारे उडान. तिन करि. मारुत पवन. तक्ख ताक्ष्य (गरुड)ताकां. तरोग-  
ति वेगगति. कि मनां ॥ ३५ ॥ धपै इति ॥ धोरित गति पिशेष. धाव गति.  
लास लास्य (नृत्य) तिनभै. नास नासिका. तिन करि. गोन गमन ॥ ३६ ॥  
बनावतइति ॥ नाल खुरताल. तिनकरि. मप्पन मापिधकां. माग मार्ग. प्ररोहिग  
अंकुरितमये. अपाकृत काटा ॥ ३७ ॥ चलैइति ॥ जभक्कत चमकत. घुम्मर मंडलनृ-  
त्य. मान बल माफिक विशेष दोरनां. लीह लीक. मत गोतमको न्यायशास्त्र ता-  
के पाठक की. जीह जिह्वा ॥ ३८ ॥ थरक्कतइति ॥ याल चित्र विचित्रित गुंफि  
त शिखाकेकेस तिनकी. सुचंदन श्रेष्ठ चंदन के. चाप धनुष तापै. कि मनां. पोत बा-  
लक. अच्छे चंदन के चाप के रूप घोरन के स्कंध कहै. सुचंदनसों पन्नगनकी प्री-  
ति विशेष है. अरु चाप नहीं कहते तो स्कंधन की आकृति नहीं आवती. सु-  
चंदनसों हेतु अलंकार ही जानिये ॥ ३९ ॥ उठै इति ॥ भुकि नमिनामिकै. नद्ध

वहाँ छिति छेकत बत्थन घल्लि, कसीसत कंधर अँड उभल्लि ॥  
 कुसानुग जे पटकँ जित जाय, रहँ लाखि लोभ पतंगहु पाय ११  
 घमंकिप पकखर घुग्घर नट्ट, छमंकिप नेउर भेककि भट्ट ॥  
 दिसा विदिसा बढि हिंकृत हेस, सजै जिन आसन आस सुरेस १२  
 दुरै पलटै कुलटा जिम विडि, चलै चरज्यौ परि पत्रिय पिडि ॥  
 खलीनन लेहनमँ अनुगत, सदा जपसूत्रक जे जव जत्त ॥ १३ ॥  
 बनेँ चकरी सकरी विसिखान, सहागति द्रौपदिके पट मान ॥  
 बडे तरु साखन छै कडिजात, बराछिनपै उडि लंगत बात ॥ १४ ॥  
 भिरै खुर भोगिय भू भटभेर, फिरै गज फेटनतै चकफेर ॥  
 सजे इम आजमके दलसंग, तगोसय जासल लकर २०००००००००  
 क्रमेलक जुबन वेग बिसस, बनेँ जिनतै घर देस बिदेस ॥  
 बजावत गल्लन हल्ल वितंड, चलै धरि पव्वय पिडि प्रचंड ॥ १६ ॥  
 भरे सल जे दल डेरन भार, हल जुरि घुम्मत साडि हजार ६०००००  
 सजे वर बेसर बीस सहँस्र २०००००,  
 तथा सकटावलि तीससहँस्र ३००००० ॥ १७ ॥  
 जनाननके जन बाहन जुत्त,  
 सजे सिबिका रथ इक अयुत्त १००००० ॥

वधे ॥ ४० ॥ बहैइति ॥ कंधर कांधे अँड मगखरी. तामै. कुसानुग कुसा बाग  
 ताके. अनुग कछा करिवेवारे. पतंग सूर्य ॥ ११ ॥ घमंकिपइति ॥ भकं मंहुक लो-  
 के मंडक. भट्ट भाद्रपद. तामै. हेस हींस. ताको. आस इच्छा ॥ १२ ॥ दुरैइति ॥  
 चर दास. खलीन लंगम तिनको. लेहन चाटनां तामै. सूत्रक दिस्त्रायवेवारे. ज-  
 व वेग. तामै. जत्त वधे ॥ १३ ॥ बनेँइति ॥ विसिखा गली तिनमै. बात पवन.  
 ॥ १४ ॥ भिरैइति ॥ भोगिय सर्प. अरु भू पृथ्वी. यहाँ भू के योगसौं सर्प शेष ही  
 जानिये. तरोसय वेगमय. जासल दोय २ ॥ १५ ॥ क्रमेलकइति ॥ क्रमेलक ऊं-  
 ट. गल्ल गाल तिनको. वितंड वतंड हस्ती ॥ १६ ॥ भरेइति ॥ सल उष्ट्र. लोकै  
 ऊंड. "मलोभोलिर्वरुप्रियः" इतिहैमः ॥ बेसर खचवर. "बेसरोऽह्वतरो वेग-  
 सरः" इतिहैमः ॥ १७ ॥ जनाननके बाहन निवाहिबको. जुत्त जुत्त. सिबिका पा-

चली भुव डोरिन मपपत फोज, उदै हुव आय प्रवीरन ओज ॥४८॥  
हजारन होरिय हेति समान, दिसा विदिसा फहराय निसान ॥

सहस्रकपंच ५००० नकीव जलेव,

चली पृतना रचि जेवर जेव ॥ ४९ ॥

समात न सेलनके गन गेन, छई भुव पकखर लकखन लैन ॥

विभागन बंटत सत्रुन बंस, उमीरन बीरन के अवतंस ॥५०॥

हरोलन चंड नकीवन हाक, करै मग लुटन बाक कजाक ॥

चले इम दिछियपै रचि दाव, उमंगन आजम ओ उमराव ॥ ५१ ॥

( दोहा )

इत आजम इम सजि कटक, प्रभु वनि किन्न प्रयान् ॥

उत आत्म सुनि उज्जलपो, सावन मुदिर समान ॥५२॥

इतिथी वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दी  
प्रतिबुधसिंहचरित्रे दिल्लीपट्टाधिवेशनाभिप्रायोरंगजेवकनिष्ठपुत्राज  
मशाहस्य दक्षिणादेशादिल्ल्यागमनवर्णनं नवमो मयूखः ॥ ९ ॥

आदितः सप्तचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४७ ॥

( पट्टपात् )

आत्मसाह वकील हुते अवरंग निकट जिन ॥

समय साह अवसानं पत्र लिखि छन्न प्रपंचिन ॥

जतु गुटिका विच रक्खि दूत करि वेस दिगंबर ॥

लकी. आजमेज ॥ ४८ ॥ हजारनहाति ॥ हेति शिखा लोकभार ॥ "अच्छि-  
तिः शिखा छिया" मित्पमरः ॥ जेव जोभयं घायनी ॥४९॥समातेति ॥ मनस-  
सूत. गेन गंगन तामे. लैन पंचित. उमीर बडे वैभवके स्वामी. यावनी. अवतंस  
भूषण विशेष ॥ ५० ॥ ५१ ॥दोहा॥ इतइति॥ मुदिरमेघ ॥ ५२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के रूपानि  
हुभासिंह के चरित्र में दिल्ली के पाट बैठने के अभिप्राय से आंगजेव के लघु  
पुत्र आजमशाह का दक्षिण में सेना सभ्कर दिल्ली पर जाने के बगान का  
नवनामयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सी नैतानीमर२७मयूख हुए॥  
पट्टपात् ॥ आत्मसाहंति॥ जतु लापकी. गुटिका गोली. ताके॥ "जतु शतघना

काबल धर मुक्कलिय आनि अटांकिय रेवापर ॥  
 उनमत्त होय सरिता उतरि गति सबेग काबल गयो ॥  
 निद्रित जगाय अद्विय रजनि आलस्य प्रतिदल अप्पयो ॥१॥  
 बुल्लो दे कग्गरहिं छत्र भग्गत भुव भग्गी ॥  
 अब निवारि निंदरिय पिक्खि पब्बय दव लग्गी ॥  
 घर फुट्टा जर फुट्टि फुट्टि हिंदुव मिलि आवत ॥  
 आजम अनय सिचान पस्त दिल्लिय पारावत ॥  
 बंधहु प्रपंच मंडहु विहित यह न बेर फिरि आयहै ॥  
 बिन जतन गये लव लव बहुरि दूजे कल्प दिखायहै ॥२॥

[ निःशमणी ]

अद्दीके घरियारपै चर पत्र लग्गाया ॥  
 धूजि थरुथर नाजरुं अवरोध बलाया ॥  
 साहबहादुर सैनसै वरजार जगाया ॥  
 जिन खंधै सुख निंद ते परलोक पलाया ॥ ३ ॥  
 जिनकी बाहर चाहते तिन धाट बनाया ॥  
 अब उट्टैही अप्पनां नहिं छत्र पराया ॥  
 यौ सुनि बेगम अप्पनी कर अँचि उठाया ॥  
 जाकौं कत कहावते वह बासर आया ॥ ४ ॥  
 लाय सिलगगी भक्खरौं तुम निंदू लुभाया ॥  
 यौ सुनि आलस्य जग्गिकै अवरोध उठाया ॥  
 कग्गर वंचि प्रपंचवै बुधसिंह बुलाया ॥

कृमिजा इतिहंसः ॥ रेखा नर्मदा, दल पत्र, अप्पयो दयो ॥१॥ बुल्लयो इति ॥ भग्गत नष्टहोत, निंदरिय निद्रा, सिचान लोक वाज, पारावत कपात, "पारावतः कलरवः" इतिहंसः ॥ विहित योग्य ॥ २ ॥ निःशमणी ॥ अद्दीके इति ॥ अद्दी अर्थ रात्रि, देशी प्राकृत, ताक चर दूत, (नाजर) याचनी, अतः पुन ले जायवे अप्प नरपेसधारी नपुंसक तिनमै, अवरोध अतः पुन तामै, "शुद्धान्त आवरोध अत्ये परः ॥ सैन सयन, तासां, निंद निद्रा ॥ ३ ॥ जिनकी इति ॥ बाहर सहाय धाट लोके धा, बासर दिन ॥ ४ ॥ लाय सिलगगी इति ॥ भक्खर पर्वत, देशी प्राकृत.



नैन मिलाया नेहसँ भुज भार किलाया ॥ ५ ॥  
 बंस सताके वीर तू कहि यौं विरुदाया ॥  
 हिंदू भूप हराम है सब फोरि मिलाया ॥  
 दिल्लीके कुच कुंभपै कर आजम लाया ॥  
 जोर जवानें जारका नहिं जात पचाया ॥ ६ ॥  
 अब तेरे भुजदंडपै एसबीर बढाया ॥  
 बाजीमें और न रहया पण प्राण लगाया ॥  
 हौरें भुग्गन हूर हैं जितें जस माया ॥  
 यौं सुनि राव उछाहकै कर मुच्छ मिलाया ॥ ७ ॥  
 मुठ्ठि सम्हारी संभरी रस सत्त ७ उढाया ॥  
 थाई वीर रउहका इकै छक छाया ॥  
 ज्यौं कंदल कनउज्जके भट संजमजाया ॥  
 कै गोरी सुरतानपै सजि कन्ह धंकाया ॥ ८ ॥  
 ज्यौं जंभासुर जंगपै सतसत्त सुहाया ॥  
 कै दोगाचल लैनकाँ कपिराज कसाया ॥  
 पावन पारावार कै घटजात घुमाया ॥  
 कै बन सुत्ता बिटिकै मृगराज जगाया ॥ ९ ॥  
 कै काकोदर चंपतै फनफैल बनाया ॥

तिनमें अक्षरोषउठाया दूर किया. कगर पत्र: कै कारकै. बुधसिंह बुद्धी क स्वा  
 भीको. भुलाया दिया ॥१॥ बंसइति ॥ सताके शत्रुशत्रुक. जोर पराक्रम. पचा  
 या पाचन किया. दिल्ली मेरे भोगने योग्य स्त्री रूप है; ताके कुच कुंभपै आजम  
 हस्ताक्षेप कियो चाहत है यंतें जनानेके जार आजमका जार अरे पाचन नहीं  
 होता ॥ ६ ॥ अबहति ॥ बाजी खेलतामै. पण दाघ. भुग्गन भोगियेको. हूर अ  
 पसरा. यावनी. माया वैभव ॥ ७ ॥ मुठ्ठिइति ॥ खड्गधी यह शेष. सत्त सत्त ७.  
 थाई स्थाईभाव. वीररउहका वीररस रौद्ररस का उत्साह अरु क्रोध यह अ  
 र्थ. गोरी सुलतानपै. कन्ह पृथ्वीराज चहुवानका काका ॥ ८ ॥ ज्यौंइति ॥ स  
 तसत्त सतसत्त. (हन्द्र) शुद्धप्राकृत. कपिराज हनुमान. कसाया सजीभूत हुन्ना.  
 पारावार समुद्र. ताको. घट फलस. तासो. जात जन्में ऐसे अंगस्तय. घुमाया  
 उत्साह जुक्त भया ॥१॥ कैहति ॥ काकोदर सर्प. ताको. सावात वारुद. ताके.

सोर किधौं सावातमै दव दुंग मिलाया ॥  
 जमका शंखल जानिकै कहि पाव दवाया ॥  
 यौं सुनि बत्तै संभरी मन जंग लगाया ॥ १० ॥  
 सोक सिलग्गा साहका कहि वैनु समाया ॥  
 सो सिर जोलौं कंधपै सुख अप्प कुमाया ॥  
 गद्दी ज्याँनपनाहकी हम वीर सिवाया ॥  
 धर्महरामी सेर व्है कोऊ न कहाया ॥ ११ ॥  
 अगगै पंडव जित्तिकै कुरुवंस नसाया ॥  
 रावन किन्नी रामसौं सोही फल पाया ॥  
 पापन पक्की होनदै दल होहु सिवाया ॥  
 अँचौं आजम कंठमै धरि चाप अधाया ॥ १२ ॥  
 यौं सुनि साह सिराहकै तजबीज लगाया ॥  
 सेनानी संभर किया चतुरंग सजाया ॥

॥

बड़े प्रात प्रयानकौं फरमान चढाया ॥ १३ ॥  
 जंग नगरोँ नह व्है धर काबल छाया ॥  
 सिंधू राग रनंकिया चढि सोर सिवाया ॥  
 डेरौं डेरौं सज्ज व्है नर बाजि कसाया ॥  
 जालग तीजे जामका घमियार वजाया ॥ १४ ॥

दुंग दमंग (घिनगी). जानि इच्छा पूर्वक ॥ १० ॥ सोकइति ॥ सिलग्गा प्रवृत्ति  
 तभया. समाया समित किया. सोसिर मेरोमस्तक. कंधपै कंध पर. तोलौं य-  
 ह शेष. कुमाया संघ किया. ज्यान प्राण. सखनके तिनके. पनाह रत्नक. ऐसे  
 आप. तिनकी है यहशेष. ज्यान पनाह ए दोऊयावनी लब्ज हैं. सिवाया सब  
 सौं सिवाय. सेर सिंह. यावनी ॥ ११ ॥ अगगैइति ॥ पक्की प्रारब्धकी सिद्धि.  
 दल सेना. हाँहु यह भू धातु को बाँद लकार के प्रथम पुरुष के अवतु प्रयोग को  
 प्राकृत है. अधाया अतृप्त ॥ १२ ॥ यौंइति ॥ सिराह प्रशंसा ताकों. कै करिकै.  
 आम यही समा. तजबीज देशीप्राकृत. प्रारब्धकी रचना विशेष. सेनानी से-  
 नापति. संभर बुधसिंह. फरमान हुकम ॥ १३ ॥ जंगइति ॥ रनंकिया यह शब्द  
 को अतुकरण. कसाया सज्जभया. जाम प्रहर ॥ १४ ॥ केइति ॥ डेरौं डेरौं इ-

के गज घेरों घल्लिकें चेरों गरदाया ॥  
 काहू व्याज प्रपंचकें बिरुदाय मिलाया ॥  
 अंग रुमालों मंजिकें रजरंग उडाया ॥  
 द्वै द्वै मनके मानके संजाव खिलाया ॥ १५ ॥  
 के जल देगों पायकें मुख लोभ लगाया ॥  
 अगगें रक्खि गजीनकाँ विसवास बढाया ॥  
 भंपि महाउत कंधपै गति बंदर आया ॥  
 जंगी हौदन मंडिकें गुड नद्ध बनाया ॥ १६ ॥  
 घाय घरघारी घोरज्यौं घलि घंट क्लिलाया ॥  
 चाप तुपकौं आदिकें सब हेति सजाया ॥  
 बांधि बरतौं सज्जकें बड बाक लगाया ॥  
 फोजौं नायक भार ए सिर तेरे आया ॥ १७ ॥  
 यौं कहि कंधा थप्पिकें रन रंग रचाया ॥  
 जंगी अंडुक डारिकें आलान छुराया ॥  
 बारी बाहिर बाकतें रचि डाक डगाया ॥  
 केक मतंगौं तुंगके धुजदंड झुकाया ॥ १८ ॥  
 मेघाडंबर के कसे सिर अंबर लाया ॥  
 केक हवहौं सज्जवहै गल गज्ज मचाया ॥  
 यौं नभ अंबर अत्र भू १०००परिमान गिनाया ॥

स्त्री के अनुचर तिननें, व्याज कपट, रुमाल वस्त्र के खंड विशेष, तिनकरि, सं-  
 जाय, सख्याव, लोके सींग, तथा हलवा, खिलाया भक्षणकराया ॥ १५ ॥ केह  
 ति ॥ देग देशीप्राकृत, बहुत बडे पात्र विशेष तिनको, गजी हस्तिनी तिनको,  
 गति तरह, चंदर वानर ताकी, गुड हस्ती की सिलह तिनकरि, नद्ध बंध ॥ १६ ॥  
 घायहति ॥ हेति आयुध, चरत रस्से तिनकरि, बड बडे, बाक बधन ॥ १७ ॥  
 यौंहति ॥ अंडुक जंजीर, आलान बंधयेकोखूटा, तथा खभा "आलान बंधनस्त  
 भः" इतिहैमः ॥ बारी हस्तीको ठान ताके "बारी तु गजबन्धु" रितिहैमः ॥  
 तुंग जंभे ॥ १८ ॥ मेघहति ॥ मेघाडंबर छायाघारे होदा, लोके अबाबाही.

हथी आलमसाहके रन एह सजाया ॥ १९ ॥  
 लकख १००००० तुंगों लैनपै वर साज बनाया ॥  
 देत खलीनों दोरपै नचि कंध नमाया ॥  
 जंग पलानों डारिकै कभि तंग मिलाया ॥  
 घोर घमंकी पकखरों छोनीतल छाया ॥ २० ॥  
 रंग विरंगे राह के गजगाह लगाया ॥  
 छोरि दुवगों ठानतै चर बाहिर लाया ॥  
 तुकि मलंगों तुंगपै रवि रुकिक लुभाया ॥  
 तोप हजार १००० तीरकै चहकात चलाया ॥ २१ ॥  
 डारि दवाली बीर जे सजि जंग लुभाया ॥  
 साहबहादुर सज्ज व्है अथ बाहिर आया ॥  
 बारनपट्ट अरोहिकै फरमान लगाया ॥  
 कुंच नकीबो बुल्लिकै हरवल्ल बढाया ॥  
 एते मान विद्वानका घरियार बजाया ॥  
 पाय रकावों मंडिकै चढि बीर चलाया ॥  
 छोनि मचककी भारकै फन नाग डगाया ॥  
 चोंके दिग्गज चिक्करै उर कल्प अमाया ॥ २३ ॥  
 ध्यान समाधि छोरिकै मन चित्र बढाया ॥

के कितेकनपै. नभ शून्य०. अवर शून्य०. अभ्र शून्य०. भू एक१. ऐसे हजार १०००  
 ॥ १९ ॥ लकख इति ॥ लैन पंक्ति. तिनपै. खलीन लगास तिनकों ॥ २० ॥  
 रंग इति ॥ राह रीति. तिनकरिकै. दुवागों दोऊ तरफ बंधके अगारी के रससे  
 तिनकों. तुकिक तुलितुलिकै. तुंग ऊंचा. तिनपै. तोप हजार तोपनको हजार.  
 हजार १००० तोप यह अर्थ. तीरकै तीर. उनको निचाला बादरुंकी थैली अरु  
 गोला सो उनमें डारिकै. चहकात चहकनों. चरखनके शब्दको अनुकरण २१ ॥  
 डारि इति ॥ दवाली सेखलाकों. देगी प्राकृतमें. बारनपट्ट मुखधारन. हस्ती ता-  
 पै ॥ २२ ॥ एते इति ॥ कल्प प्रलयकाल ॥ २३ ॥ ध्यान इति ॥ समाधि. समाधि

तद्विन धूरि बितानके घन भान पिधाया ॥  
 सारद पुगिबामका ससी जिम बारद छाया ॥  
 दब्बि धरिती पकखरौ इक ओध लखाया ॥ २४ ॥  
 सेलौ अंबर ढांकिया नभचार रुकाया ॥  
 अंडे बात रूपेटके फीलौ फहराया ॥  
 तारा उत्तरि पोदकी सुभ सौन बताया ॥  
 दक्खिन भारद्वाजन द्रुत लाभ दिखाया ॥ २५ ॥  
 यौ दरकुंच अनीकनै लाहोर निराया ॥  
 पंजाबी दल बुद्धि के कछु तथ मिलाया ॥  
 आलमसाह सिपाह यौ सजि सेर सिवाया ॥  
 दिल्लीके सिर दावपे करि चाव चलाया ॥ २६ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पुके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपति  
 बुधसिंहचरिते दूतद्वारावहादुरशाहान्तिकौरंगजेबपञ्चत्वोदन्तप्रापणा  
 १, सेनापतीकृतबुधसिंहसैन्यवहादुरशाहलखपुरागमनवर्णनं दश  
 मी मयूखः ॥१०॥ आदितोऽष्टचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥२४८॥

वारे. तिननै, चित्र अशिरज, पिधाया अन्तर्धान हुआ. पुण्यम पूर्णिमा. वा दि  
 पस. बारिद भेव. ओध मधूह ॥ २४ ॥ सेलौइति ॥ नभचार पची. यात पवन.  
 फीलौ फील [हस्ती]. यावनी. तिनपै. तारा नाम दिशसे दक्षिण दिशा काली चिरी  
 आवै ताका कहिये. पोदकी काली चिरी. सौन शकुन. भारद्वाज लोके रूपारेख  
 तथा बुजावहा सौनचिरी ॥ २५ ॥ यौइति ॥ निराया निकटलिया. पंजाबी पं  
 जावका. दल कटक. बुद्धि बुलाया. तथ तहाँ. सेर सिंह. चाव चाह  
 [उत्साह] ॥ २६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पु के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के राजा बु-  
 धसिंह के चरित्र में दूत द्वारा वहादुरशाह को औरंगजेब के मरने की खबर  
 मिलना, बुधसिंह को सेनापति करके सेना सहित वहादुरशाह के लाहौर  
 आने के वर्णन का दशवां १० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ अठ-  
 तालीस २४८ मयूख हुए ॥

## ॥ गीर्वाणभाषा ॥

लाहोरनामपुरतोऽपि कृते प्रयाणे,  
मेघानुकारकबहादुरशाहचम्वा ॥

आयातमाशु दलमीप्सितमागरातो

ऽर्जामस्य भूतयुतभाविविदः स्वसूनोः ॥ १ ॥

[उपजातिः]

श्रुत्वाऽवरङ्गं कृतकायहानं, मया समागत्य मनोजपुर्ध्याः ॥

तत्रत्यभूतिर्द्रविणादिरात्ता दुर्गं च सज्जीकृतमागरायाः ॥ २ ॥

स्वास्थ्यं गृहाणोति विचार्य वपुर्जहीहि चाचार्यितचक्रचिन्ताम् ॥

गीर्वाणभाषा ॥ वसंततिलका ॥ लाहोरेति ॥ मेघानुकारकबहादुरशाहचम्वा मेघा-  
ऽनुकृतवत्या बहादुरशाहसेनया लाहोरनामकपुरीसकाशात् प्रयाणे कृते स-  
ति आगरात आगरानामनगरसकाशात् भूतयुतभाविविदोः अर्थावभवि-  
ष्यद्भानवतः अर्जामस्य रूपनगरराज्ञा भागिनेययाजीमनाम्नः स्वसूनोः स्व  
शब्देन बहादुरशाहबोधयस्तस्य सूनोः पुत्रस्य संबंधि आत्मन ईप्सितं दलं पत्रं  
आशु शीघ्रं आयातं प्राप्तम् ॥ १ ॥ उपजातिः ॥ श्रुत्वेति ॥ अवरंगं मत्पिता  
महं कृतकायहानं त्यक्तशरीरं 'ऊह त्यागे' इत्यस्मात् भावेत्युट् ॥ 'युवोरनाका'  
वित्यनोदेशः ॥ मया कर्त्रा मनोजपुरी लोके सैनपुरी तस्याः सकाशात् आगरापुरं  
समागत्य संप्राप्य तत्रत्या तत्र अथा या द्रवणादिभूतिः द्रव्यादिकमैश्वर्य-आ-  
त्ता गृहीता तस्या दुर्गं च सज्जीकृतं सन्नद्धीकृतम् ॥ २ ॥ स्वास्थ्यमिति ॥ वमः  
हेपितस्त्वं इति मल्लिखितं विचार्य स्वास्थ्यं स्वस्थातां गृहाण अङ्गीकुरु चाचार्यित-  
तचक्रचिन्तां चाचा लघुपितृव्यक आजमशाहनामा तेन अर्जितं संचितं यच्च  
क्रं सेना तांचिन्तां । जहीहि त्यज । अत्र युद्धकार्ये मया अपि प्रयत्नो वि-

॥ भाषानुवाद ॥

लाहोर नाम नगर से मेघ का अनुकरण करनेवाली बहादुरशाह की सेना  
प्रयाण करते ही आगरा नामक नगर से भूत भावि को जाननेवाले अपने पु-  
त्र अर्जाम का चाहा हुआ पत्र शीघ्र आया ॥ १ ॥ अवरंग के शरीर की हा-  
नि सुनकर मैंने सैनपुरी में आकर यहाँ का वैभव धन आदि ले लिया और  
आगरा के गढ़ को भी सज्जीभूत कर लिया है ॥ २ ॥ हे पिता! इस मेरे लिखे  
हुए को विचार कर निश्चितता धारण करो और मेरे काका आजमशाह की  
एकत्र कीहुई सेना की चिन्ता को छोड़ो । यहाँ मैंने भी युद्ध का उपाय रच-

विरचयतेऽत्रापि मया प्रयत्नः प्रलक्ष्यते चाऽऽजमशाहपन्थाः ॥ ३ ॥

[ इन्द्रवज्रा ]

आगम्यतां द्राग्भवतापि विद्वन् सेनाभृता बुन्दितृपेसा साकम् ॥  
न्यस्यात्र शुभ्रान्तमुखां विभूतिं जालमो विपुर्जाजवर्तीस्मि जयः ॥४॥  
( शुद्धप्राकृतभाषा )

( गीतिः )

इयं पत्तं सौकुशां अईमतिहिभं जयायभेसा समम् ॥  
सादेवहाउगजोहा हरिसममदा जिईसवो हृद्या ॥ ५ ॥  
जह सुमसासाखिते बुद्धो मेहो परुहसातिस्मि ॥  
अहव दिशयगे उद्गो निमादिम बुडविहलपदिअगसे ॥६॥  
वा मोअस्मि अमजभे मितिओ धन्वन्तरी बुद्धाहसमम् ॥

चरणे शि।ने. च पुनः आजमशाहपन्थाः अ जमशाहस्य मार्गः प्रलक्ष्यते विला-  
क्यते ॥ ३ ॥ इन्द्रवज्रा ॥ आगम्यतापि विद्वन् सेनाभृता बुन्दितृपेसा साकम् ॥  
न्यस्यात्र शुभ्रान्तमुखां विभूतिं जालमो विपुर्जाजवर्तीस्मि जयः ॥४॥  
शुद्धप्राकृतभाषा ॥ गीतिः ॥ इन्द्रवज्रि ॥ इति पत्रं अत्वा अर्जा-  
सतिस्मि अजयभेन समम् ॥ गार्ग्यगार्ग्योश्च कथयस्व ता जिगीषवा अतः ॥ ५ ॥  
यथा सुप्रमाणेन वृष्टो मेवः प्ररुहसातिके ॥ अथवा दिनकर उद्गो निमा दि-  
बुद्धं चन्द्रल पथि रगजे वि वा रोने अजाधे मितिओ धन्वन्तरीः सुधया नमम् ॥

॥ भाषानुवाद ॥

लिखा है और आजमशाह का मार्ग देखना है ॥ ३ ॥ हे बुद्धिमान्! आ-  
प भी बुद्धी के राजा सेनापति बुन्दितृ सहित शीज आओ. जनाना आदि पै-  
भव और लीजन आदि परिकर को यहाँ रखना अधिनामी (दुष्ट जात्रु (आ-  
जमशाह) को जाजव नामक नगर की भीमा से जीतने का बलव है ॥ ४ ॥  
अजीम का निम्नाहुआ यह पत्र सुनकर जय के आनन्द के साथ महादुरशा-  
ह के वीर हृष से पूर्ण जीतने का इच्छावाले हुए ॥ ५ ॥ जैसे वडेहृष धान्य के  
सुखने हुए जेन पर सर्पा होवे जैसे या रात्रि के दिना भूले हुए व्याकुल पथि-  
कों के कलह में सूर्य उदय हुआ ॥ ६ ॥ अथवा रोग के असाध्य होने पर अस्तु-  
त के माध धन्वन्तरि मिले वा सुरदा के शरीर में आश्रय करनेवाले प्राण  
फिर आये ॥ ७ ॥

अहवा कुशावसरीरे अर्धो पद्मागया असुखो ॥ ७ ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

[ पट्टपात् ]

क्रिय उच्छाह इम साह वंचि कग्गर चरासम ॥

बुलि नृपति बुधसिंह कहयो तदुदंत विहित क्रम ॥

इक १ इक २ संजोग होत जिहिंविधि एकादस ११ ॥

इम अजीम गढ लेत दइव दीसत अप्पन वस ॥

अल्लाह महर सूचक यहै अब न बीच अरि भय अटक ॥

आमग और पढ़ति उचित क्रम सबेग हंकरहु कटक ॥ ८ ॥

यह प्रपंच अनुकूल पिदिख बुधसिंह चरूपति ॥

क्रिय फोजन दरकुंच मंडि व्यूहन विदग्ध मति ॥

सेन मध्य सुरतान हहु नरनाह हरोली ॥

सुवन साहके तीन श्वाम दिखिन चंदोलो ॥

जयसिंह अनुज कूगम विजय लघुवय जखिनृपसंग लिय ॥

इहिं क्रम उपेत दवत अथनि चलि सबेग चतुरंगिनिय ॥ ९ ॥

काकोदर कलकलत फनन फुंकरि पलटावत ॥

कद्रु हिय अकुलात जखत पुतहिं लचकावत ॥

त्यो विनता उर तिख्य पुव्व चिंतत दासीपन ॥

यह क्रोतुक अदभूत फैलि कस्यपघर फोजन ॥

संकर समाधि तजि तजि सहज कारन लखत विचार करि ॥

अथवा कुशावसरीरे अल्लाह प्रत्यागता अमवः ॥ १० ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृती मिश्रित भाषा ॥ पट्टपात् ॥ क्रियशक्ति ॥ चरासम साम संहित. बुलि बुलाय. तदुदंत वा अजीम का वृत्तान्त. और तरफ पढ़ति मार्ग. "मरणी पढ़ती पचे" त्यमरः ॥ ८ ॥ यहडति ॥ व्यूह रचना विशेष. सु-वन पुत्र. सोजदीन १ रफीलफदर २ अखतरविलंद ३. उपेत नहित ॥ ९ ॥ का-कोदरडति ॥ काकोदर यहां जेप. कद्रु नाममाना. विनता गमहमाता. पुव्व प्र-दिलो दासीपनो. कद्रुने याको दासी करीही यह भाय. नयमालएनु नयीन मुंह भाषा को कारण. इनहि इनको शिषको. गहकि सों पालिके. गघरि पार्षती १०



नवमाल हेतु कहि कहि इनहिं गहकि मोद बाढत गवरि ॥१०॥

मिजल इक्कसाहसन अग्न बोकी तिइसहखन ॥

अरिन छन्न उपचार प्रबल बिस आदि परखन ॥

निधि लून अन्न निवान मग्ग मैदान मुकामिक ॥

खग मृग तरु उद्यान जात सोधत इम जाभिक ॥

प्रतिदिस जिहान खलभल परिग मनहुँ वजू भुव फारिहँ ॥

पापिन निदान आय कि प्रलय छलि समुद्र हृद छोरिहँ ॥११॥

कमठ भंग गिलि अंग प्रान नारिन परि बुडिय ॥

भिरि हमल्ल भुव भार पिडि पावक घसि उडिय ॥

भगि दमंग बडि आल जात कच्छप पतंग जरि ॥

दरित टारि दंतुलिय टिकत सूकर तुंडाकरि ॥

आतंक सुरन उतपात इहिं कंपत जय कारन कहिय ॥

बुधसिंह मनहुँ आगम विजय अकूपार आहूति दिय ॥१२॥

अहि कच्छप भूदार इहिन दिग्गज दिगपालक ॥

भूलोक रु तिम भुवर वहुरि सुरलोक विसालक ॥

इन समस्त अतलादि तिमहि सागर इत लासहिँ ॥

इक्कहिँ परि आयास अवर आतंक उपासहिँ ॥

मिजलहति ॥ अग्न अगारी. त्रिसहअन. तीन हजारन ३००० फी. अ-  
रिन अग्रनके. छन्न शुभ. मैदान चोगान. यावनी. मुकामिक मुकाम संबंधी. ख-  
ग पक्षी. लून पशु. उद्यान बन. पापिननिदान पापी बहुत बडे तिनके कारण  
सों. कि मनो. हृद सीमा ॥ ११ ॥ कमठइति ॥ नारिन नाडिनमें. पतंग कीट  
पतंग तुल्य. यहाँ जात अमो वर्तमान प्रयोग कियो यानें एक कच्छप जरत वि-  
धाता वृजो बनायत सो जरत नीजा बनायत ऐसे जानिये. दरित भीत. "द-  
ग्निश्चकितो भीतः" इतिहेमः ॥ सूकर वराह. अकूपार कच्छपराज. "अकूपारः कू-  
र्मराजे मज्जोदरौ" इतिमेदिनी ॥ १२ ॥ अहिकच्छपइति ॥ अहि शेष. कच्छप  
भूमिस्वभक्त. भूदार वराह. "कोडो भूदार इत्यपि" इत्यमरः ॥ इहिय ब्रह्मा.  
"धाताब्जयोनिर्इहियः" इत्यमरः ॥ भुवर भुवरलोक. जगलादि अतलको आ-  
दि देको सातो ही तले लोक. इक्कहिँ इनमेंसो एकको ब्रह्माको तो. आयास भ-

संकित विनास धुज्जत सकल चकित चेत भूतन भजिय ॥  
 प्रिय जिय इतेन नागिन परिग भटन नेह नारिन तजिय १३  
 इम अनीक दगकुंच आय उत्तरि वृंदावन ॥  
 संभरपति बुधमिंह मंत्र भंडिय प्रपंच मन ॥  
 रागिय गनाउत्ति आदि अप्पन अंतउर ॥  
 कामविपिन न्नत्र बीच तत्थ रक्षिखय जुद्धातुर ॥  
 सजि कुंच बहुरि आलम सहित नृपति आय अकदर नगर ॥  
 गिलतहि अजीम संबोधि मुद जटित पिदिख बीरन जगर ॥१४॥  
 तेरीवेर अजीम न्याय रठोरि नहिय दुख ॥  
 तेरीवेर अजीम थाल बज्जयो सु सवन सुख ॥  
 तेरीवेर अजीम पट्ट दिछिय चढिपानी ॥  
 तेरीवेर अजीम जन्यो अंग न तुरकार्ना ॥  
 इगं इहिं मिराहि वुंदिय अत्रिप सब दल दुग्ग सम्दाणि लिय ॥  
 मिलि सुतहिं साह मांडय गहर कहि तुम विजय प्रपंचकिय १५  
 कछुक काल रहि तत्थ सेन पिदिखय सेनापति ॥  
 दत्ता सारथ दुवलकस्य २५०००० तोप हज्जार १००० विविध तति ॥  
 सवालकस्य १२५००० तुक्खार जंग पकखर जिन्ह डारिय ॥  
 दुवर्दीनन वर वीर दस्यसि गज गाग बढारिय ॥

म. प्रजा केर पनाचयेको. अदर ओर. (जह्ना विना). भूतन देहधारिने. अजिय  
 भाजे. जिय जीय. इतनें इत. ये कहे निनके. नारिन न'डनधैं. परिग परे. ना-  
 रीम नारी स्त्री. तिम संबधी ॥ १३ ॥ इमइति ॥ अनेजर अनेहपुर. कामविपि-  
 ने कामवन. जुद्धातुर अंतउरको विजेपन. संबोधयो. बुद्ध भौदसो. जटित जंग.  
 जगर कवच. "जगरः कवचोऽस्त्रिया" शित्यमरः ॥ १४ ॥ तेरीइति ॥ रठोरि रू-  
 प नगरके राजा भानसिंहको बंटी. तेरी जाता तामैं. दुग्ग गर्भ संबधी. चढि  
 चढ्यो. वही रठोरि तुक्खको, दई. तामैं कस्यो. गहर कुपा. धावनी ॥१५॥ पट्ट  
 कहति ॥ सेनापति बुधमिंहमैं. सारथ (सार्थ) अथ सहित दुव लकस्य २५००००  
 अढाई खाल यह अर्थ. विविध अनेक प्रकार. तति पंखा. तुक्खार घोर. जिन्ह

इम सहस्र इज १००० चैत्र निगड बहु निसान फहरानि वनि ॥

इम सब सप्हारि बुंदिय नृपति प्रति जवनेस प्रयान भनि ॥१६॥

॥ दोहा ॥

अंतहपुर धन आदि सब, राज विभव रखि तथ ॥

चंबक डक वज्रिग बहुल, संगर पढत समथ ॥ १७ ॥

अपन दल क अजीम दल, सब एकत सप्हारि ॥

काग्य कुंच तजि आगग, अपन जाजवगारि ॥ १८ ॥

इतिश्री वंशभास्कर महाचम्पूके उत्तराशौ सप्तमराशौ बुन्दी-  
पतिबुधसिंहचमित्रे अश्वरक्षितवृन्दावनबुधसिंहादराधदहादुरशा-  
हाकबरपुरायमनमेकादशो मयूखः ॥ १९ ॥

आदिन एकोनपञ्चाशोत्तरद्विंशततमः ॥ २४९ ॥

दोहा—मेचक कृष्णुन साह गरि, इन सुनि मधु अवदात ॥

आवत विने मास हुवर, अब आपाढ प्रभात ॥ १ ॥

आजग कछुक विलंब किय, साहबहादुर भाग ॥

दल निवाहि आनप दिनन, आवत सुव अलुगग ॥ २ ॥

तपन जेठ दिनकर दुमह, आजम कटक दुगंत ॥

जिगपै, बुवदीनन दोऊ दीन हिंदू सुमलमान, तिनके इम हस्ता, जिगड जं-  
जीर, फहरान फरकनों ॥ १६ ॥ दोहा ॥ अंतहपुरडति ॥ तथ तहां [आगरामै]

चंबक, बाघरिशेष, बहुल घने, संगर युद्ध ताको ॥१७॥ अपनइति ॥ स्पष्ट ॥१८॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तराशु के सप्तम राशि में बुदी के भूपति  
बुधसिंह के चरित्र में मर्ग में बुधसिंह के जनाने का वृन्दावन में रखकर पहा-  
दुरशाह के आगर आने के वर्खन का ग्यारहवां ११ मयूख समाप्त हुआ श्री-  
र आदि ने दो सौ उनचास १५६ मयूख हुए ॥

मेचकइति ॥ मेचक कृष्णपक्ष, कृष्णुन फाल्गुन मास संबधी तामै, साह श्रीं-

गजेव, गरि मर्या, इन या आलमशाहने, सुनि सुन्यो, मधु चैत्रमान ताके-

अवदात शुरु पक्षमें ॥ १ ॥ २ ॥ तपनइति ॥ दुगंत कटकों मंगलका अंत आबै

ऐसा, पंशु जयचंद्र, कदमबल नगरका राजा राठौर, इधरीगल चोहानका प्रति

पदी, अगै पारहसै अष्टचालीस १२५८ के साल विद्यमान हो सौ जानिये

चलत पंगु जयचंद्र जिम, वसुधातला दब्बल ॥ ३ ॥

इम पत्तो ग्वालोरपुर, आजम विभव उपेत ॥

सजि किछा बनितादि सब, रक्खिष्य तत्थ निकेत ॥

॥ पट्टपात् ॥

अग्रज अवरंगीय साहदारा अभिधानी ॥

ताकी तनया व्याहि लई आजम अभिमानी ॥

यह अगगै इकवेर पकरि बंधी मरहद्वन ॥

तब अनिरुद्ध नरैस जिति आनी भुजदंडन ॥

दीदाग्बखस जाके उदर ताहि नगर ग्वालोर धरि ॥

उततै उफान सागर उपम आयो आजम कोपकरि ॥ ५ ॥

अकबरपुर इन तजिय तजिय ग्वालोरनगर उन ॥

ए दक्खिन सम्मुह रु वेसु उत्तरपर आरुन ॥

इम आवत दुव कटक मिले जाजव दिन अत्थै ॥

रहि मुकाम यह राति कलह उगतरवि कत्थै ॥

दुव २ दल प्रपात सोहत सहज मनहुँ सिंधु बीचिन भारिग ॥

बहल उदीचि आवाचिके प्रबल बात भेट कि परिग ॥ ६ ॥

घाक भेन बहुतही. अरसी लाख घोर हे, यानै सेना क बाहुज्यमें बाकी उपमा दीनी. दब्बल दाबल ॥ ३ ॥ उमइति ॥ पत्तो प्राप्त भयो. उपेत सहित. किछा ग्वालोरपुरको. बनिता स्त्री. निनकां आदि दैकै सब वैभव. निकेत स्थान ॥ ४ ॥ पट्टपात् ॥ अग्रजहति ॥ अग्रज बडा भाई. अवरंगीय अवरंगशाहको. साहदारा अभिधानी दाराशाह नामक. तनया पुत्री. यह आजमकी स्त्री. अनिरुद्ध बुंदी का राजा बुधसिंहको पिता तनै. ताहि वा अपनी स्त्रीको ॥ ५ ॥ अकबरइति ॥ अकबरपुर आगरा. इन बहादुरशाहनं. उन आलमजाहनं. ए बहादुरशाहकी सेनाबारे. रु अरु. वे आजमशाहकी सेनाबारे. सु पादपूर्णाथि है. आरुन संसारुन. जाजव आगरा अरु ग्वालोरक बीचमें ग्राम विशेष तहां. कलह युद्ध. कत्थै कहै. प्रपात पडाव, बीचिन बीचि (तरंग) तिनकरि. भारिग भरघा. बहल मेघ. उदीचि उदीचा (उत्तरदिशा) ताके. आवाचिके दक्षिण दिशा ताके. बात पवन ताकरि. कि मनो ॥ ६ ॥ दाहा ॥ सकइति ॥ जुग च्यार ४. खट छै ६. सत्रहसै चौसठि १७६४. असित कृष्ण पक्षकी ॥ ७ ॥ पद्धतिका ॥ दैदलइ

॥ दोहा ॥

सक चउखट सत्रह १७६४समय, अशित तीज ३आपाठ ॥

दिय मुकाम दुव दलन इम, मिलि जाजव गहि गाढा ॥५॥

( पद्धतिका )

दौ दल मुकाम बुंदिप्र नरेस, क्रिय मंत्र पिक्खि अरि दल बिसेस

रतिवाह वाह गोकन विचारि, निज दल प्रबंध बंधिय निहारि ॥८॥

पखरैत सहैस द्वादस १२०००प्रवार, सजि धप्पि सेन बाहिर सधीर

निज भट रनपंडिन जैत नाम, तिनसांहिं मुख्य करि गिक्खिताम ॥९॥

यह बैरिसल्ल कुल्ल भव अभंग, निज बंधु जैत दिय सोधि संग ॥

कहि नेह बचन सनमानकोन, अब काका दिल्ली तव अधीन १०

जो रचहिं मत्रु रतिवाह जाल, तो अेलि चास भेजहु उताल ॥

इम भाखि छवीनां क्रिय तयार, हय जैतसंग द्वादसहजार १२०००

दल परिधि जाय तिन चक्र दिन्न, क्रम इम प्रबंध चहुवान किन्न ॥

पुनि बाहिय नीति साहहिं प्रबाधि, सुख सैन करहु अब काल

सोधि ॥ १२ ॥

निस जाम गहत निंदहिं निवारि, पिक्खहु विहान रन भटप्रचारि ॥

सुनि साह सैन मंडिय सतास, भूपाल बुद्ध भुज दुव भरोस ॥१३॥

सत्र साह हसम डरन सप्पहागि, नृप भिविर आय कटिपट निवारि

ति ॥ रतिवाह रात्रि सयम अचानक आय लरै सो युद्ध ताके. वाह चार त-

था प्रहार. प्रबंध रचना विशेषसां फोजको राखनां. बंधिय बंधयो. निहारि दे-

खिकै ॥ ८ ॥ पखरैतइति ॥ जैतनाम जैतमिह नामक. वैरीशछांत हाडा फलो-

धी नगरको अधिाज. तिनसांहिं वे छवीनांक चारह हजार १२००० पखरैत

सेनाके बाहिर गिरदी आकी फिरबेका भेजे तिनसें. ताम तहां ॥ ९ ॥ यहइ-

ति ॥ यह जैतमिह. अब अयो. बंधु सपिंड कुलसें. सोधि विचारिकै ॥ १० ॥

जोरचहिंइति ॥ रतिवाह रात्रिका युद्ध. ताको. चास खबर ॥ ११ ॥ दलइति ॥

परिधि गाढ [चक्र मंडल फिनां]. सैन सयन [सोवनां] ॥ १२ ॥ निसइति ।

जाम एक प्रहर. निंदहिं निद्राको. विहान प्रातःकाल. सैन सयन. सतास तो

स प्रसन्नता ता सहित ॥ १३ ॥ सपहति ॥ हसम वैभव. देशीप्राकृत. सिपर

लिय सबहि फोज नाभव बुलाय, सहुकाय कहिय आगम सुनाय १४  
अगों प्रमाद समुपत सुत, पांडव दल मान्यो दोग पुत ॥

निस सुत साह गोरिय अनोक, कइसास इक किय कांदिगी क १५  
तसमात असन अल्पहि विधाय, गजजहि समस्त सोवहु सुभाय ॥  
करि तोनइ स्वस्व परिकर बिभाग, कहुहु त्रिइ जाम जय राखिख  
गम ॥ १६ ॥

गज हयन देहु विश्राम पंथि, श्रम पिक्खि अल्प आहार संधि ॥  
वपु गांजे सत्रहु हय गज बहारि, जंगा पजान संधान जोरि १७  
निस रगत जाम ताजे तजे निकाय, पुनना सु उकावन देहु पाया  
बुल्लिप निदग्ध तोपन चलाक, काह बिटि दलहि मंडहु कजाक  
पंद्रहहजार १५००० पायक तुंग, आगोपि साह तोंगन अभंग ॥  
इम मंडि व्यूइ जामिक अनूर, बहुवान असन दानों करुप १८  
हुन पुनि अगेहि हैबर दिवान, सबडिम फिरि किने आवधान ॥  
इम सिद्धैर पिक्खि निज धान आय, मुख्य समय किन्ग नय बल  
सुभाय ॥ १९ ॥

अथना विजेय गे आनी मया कां डेरानहीं. कटि म कसरथेवा. पुनजा-स्वान  
करि. नाभव साजिन. पावनी. आगम आर्य ॥ १४ ॥ अर्धैडभि ॥ प्रमाद गा-  
फिलता करि. समुपत महित. सुत सुत. लोके सुता. दोगपुन अम. तयामा ता-  
नै. साहगांयि गोंग जाति को पठान गननीको आइसाह लनाहुदीन नाम-  
क ताको. कयमास पुथीगाज बहुवानों खेरी ताँ. कांदिनीस अथमाँ भा-  
जियेका रे. "कांदिशीको मयद्रुन." इतिर्दणः ॥ १५ ॥ तसमातइति ॥ असन  
भोजन. अलरहि थोरोडी. धिय य काँरे. मज्जाइ मज्जी १५३३. स्वस्व अपने  
अपने परिकरिके. त्रिजाम तान प्रहर. जय चित्रय तामें. राज वीति ॥ १६ ॥  
॥ १७ ॥ निमडति ॥ जाम इक प्रहर. निजाव स्वान "निकाथां अरसें दुरः"  
इतिहैमः ॥ बुल्लिप सुभाय. विदग्ध चपुर ॥ १८ ॥ पंद्रहहति ॥ पायक पग. दे.  
तुंग अल गार. यहाँ उपादान ललगांनों यह अर्थ जा लिये. आरापि स्व र-  
कवे. तोरन बाह्यको दरबजा तहाँ. व्यूइ अचना विजय. ता. करिके. जामिक प-  
हराभन. असन भोजन. अलू लनागनि. यहाँ बहुवानको विजेपन ॥ १९ ॥  
हैबर हय. दिवान बुधसिंहको उपपद ॥ १९ ॥ यहइति ॥ थपि थापि. निसान

यह सुनि अनीक व्यूहन विवेक, आजमहु थपि जामिक अनेक  
इम क्रिय मुकाम दुवदल अमान, दुवघाँ निघात वज्जत निसान२२  
रन माहताव उदित दुर्ओर, चकि चोँकिपरत जिन लखि चकोर  
बहि दुर्दल चंद्रजातिनविकास, पुशिखाम मयंक बहुविफुरिपास२२  
दुहुँओर बाजि गज रव दुरंत, दुवसेन उच्च डेरन दिपंच ॥

दुहुँओर सूर जामिक दुखह, सजि सजि अनेक विचरत समूहा२३  
दुहुँओर लखत प्रछन्न दूत, दुव दल नकीव आरव अभून ॥

भंडन रूपट मच्चत दुर्ओरे, सिंधुव अलाप दुवदिस सजोर॥२४॥

दुहुँओर करत जामिक दुगव, दुहुँओर छवीनाँ लखत दाव ॥

दुहुँओर बाजि फाँदत दुर्वंध, दुहुँओर दंति गज्जत मदंध ॥ २५ ॥

दुहुँओर मुद खेलन चमक, दुहुँओर घंट पक्खर घमक ॥

दुहुँओर मूग हूरन उछाह, दुहुँओर होत हरि हर इलाह ॥ २६ ॥

दुहुँओर सुतर जंघाल जात, दुहुँओर चास पल पल दिखात ॥

दुहुँओर करत बहुरीति दान, दुहुँओर होत विधिजुत विधान॥२७॥

गुन३ नाम रति हुव इम अतीत, गहक्रिय सु जंग आरंभ गीत ॥

निदहिँ निवारि बुँदिय नरेस, करि नित्य बंदि पभु द्वारिकेस ।२८

वाधविशेष ॥ २१ ॥ रनइति ॥ माहताव यावनी. हवाई विशेष. जाको प्रका-  
श चंद्रिका के भाफेरु हांत है सो. दुओर दोऊ तरफ. दुदल दोऊ दलनमें.  
चंद्र जातिन चंद्रज्योति नामक हू हवाई विशेष होत है. तिनका विशेष प्रकाश.  
पुशिखम पूर्णिमासी ताके. मयंक सृगांकाचंद्रमा). विफुरि पिस्फुरित भये. पा-  
स लमीप ॥ २२ ॥ दुहुँओरेति ॥ रव शब्द. दिपत सोहत. दुखह ऊहा तर्कना  
तालें दुवसों आँसे ॥ २३ ॥ दुहुँलखतइति ॥ प्रच्छन्न गुप्त. आरव शब्द.  
अभून अद्भुत॥२४॥दुहुँकरतइति॥दुराष पैलनको न दीलें ऐसो गुप्त चोर्कीसैं  
लिपनों. बाजी घोर. फाँदत कूदत. दुर्वंध दोऊ अगारी पिछारीके बंधन छतेंह.  
दंति दंतीः[इस्ती]॥२५॥ २६ ॥ दुहुँसुतरइति ॥ सुतर ऊँट. यावनी.जंघाल अति  
वेगवान्. "जंघालांनिजवस्तुन्य"इत्यनरः ॥चास खवरि ॥२७॥ गुनइति ॥ गुन  
तीन३. जाम प्रहर. रतिरात्री. अतीत व्यतीत ॥ २८ ॥२९॥ सुनिइति ॥ उवाच

जामिकन साह आत्म जगाय, बुधसिंह तथहि द्रुत लिय बुलाम  
 कहि उचित मंत्र मंडहु नरेस, अब नहि किलंबहुव सब असेस ३९  
 सुनि नृप उवाच नय कछु सनर्म, अब होत जंग विधि विधि अधर्म  
 वह तोष कस्त दुर्गाह विनास, बीरहु सकै न यह टारि लार ३७  
 लैजात सवन धरि खिम्त घोर, मनमौहि रहत सुभटन मगोर ॥  
 तसमात अप्प दल पिहि हू, गहि छत्र काल कहहु जरु ३१  
 हम सुभट जुद्ध पंडित हगेल, विधि संव निवाहि नय धर्म बोले ॥  
 गथि दल समुद्र भुज मंदराग, निज बल कृपान गचि चंड नागादर  
 जपरतन कछि जतन जरु, व्है ख्यात निवेदहि निज हजुग ॥  
 इहिनीति छन्नमाहहि नि कासि, बल सजिय अप्पहिय जय बिकासि  
 दल चढन बेग दै निज निदस, विधि करि विधान संध्या विसैस  
 सजि उनहु चढन आपस प्रसाहि, नरगज तुरंग कलकलनिहारि ३४

॥ दाहा ॥

दुवदल इम खलभल परिग, गहकि नफीरिय गान ॥

किलक नकीधन हुव कहग, पहर पलान पलान ॥३५॥

॥ भुजंगप्रयातम् ॥

जगी सेन दोऊ रही जाम रती, वजे वंघ भोरी वंडी हल्ल बती ॥

दुहूँ और व्है सुद्ध के नित्य संधै, दुहूँ और संसारतै प्यार छंडै ॥३६॥

दुहूँ और गंगोद के अंग मंजै, दुहूँ और मातादि गातादि रंजै ॥

दुहूँ और वानंत नागोद वंघै, दुहूँ और के टोप मन्नाइ संधै ॥३७॥

कहत मथो. सनर्म नर्म लोके ठहा. तानाहत ॥ ३० ॥ लैजातइति ॥ सिस्त ता-  
 के ॥ ३१ ॥ हमइति ॥ मंदराग अंदर नामक अंग पर्वत. ताकारि. नाग वासुकि.  
 ॥ ३३ ॥ जयइति ॥ चहनीति या नीतिमों. बल नेमर ॥ ३३ ॥ दलइति ॥ निदेश  
 हुकम. उन आजतशाहनै. कलकल कोलाहत ॥ ३४ ॥ दाहा ॥ दुवइति ॥ नफीरी  
 वाच विशेष. वेशोप्राकृत ॥ ३५ ॥ भुजंगप्रयात ॥ जगाइति ॥ स्पष्ट ॥ ३६ ॥ दुहूँ  
 गंगोद इति ॥ गंगोद गंगाजल. ताकारि. गातादि मगवह्नीतादिक. पुनः गातादि  
 गान तदादि करि. नागोद लोके पंथी ॥ ३७ ॥ दुहूँजालीइति ॥ जाली लोके



दुहुँओर जाली दवालीन डारै, दुहुँओर धाराल धाराल धारै ॥  
 दुहुँओर सिंधून उच्छाह जग्गै, दुहुँओर बाजीनपै जीन लग्गै ॥३८॥  
 दुहुँओर झडाल सुंडाल गज्जै, दुहुँओर हिंजीर जंजीर बज्जै ॥  
 दुहुँओर उच्चूल नेजा फरकै, दुहुँओर के जोर छोनी सचकै ॥३९॥  
 दुहुँओर धानुक्ख टंकार पूरै, दुहुँओर देखै लगो लोम हूरै ॥  
 दुहुँओरमैं दून व्है भून भिल्लै, दुहुँओर बेताल खेताल खिल्लै ॥४०॥  
 दुहुँओरके भीरु उद्राव मंडै, दुहुँओरके वीरु वानैत तंडै ॥  
 दुहुँओर वंशीनको सोर वडै, दुहुँओर तोपेँ दरावीन चडै ॥४१॥  
 धरै कुंत वंडूक तुल्लै वरच्छी, हल्लै हंकि हथी खुल्लै सज्ज कच्छी  
 चढा सैन दोरु वढा जंगवाहै, अवाची उदीची घटा ज्यों उमाहै ॥४२॥  
 ॥ दोहा ॥

बुंदियपति सन्नद्ध बनि, नय निकासि निज साह ॥

दल सारध दुवलकख २५००००लै, चढयो तुरग जय चाहा ॥४५॥

उत आजम आरोहि गज, लै दल सम्मुह आय ॥

मुलक प्रलय आगम मनहुँ, उदधि सत्त उफनाय ॥ ४६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तदशशौ बुन्दी-

पतिबुधसिंहचरित्रे अकवगपुरप्रस्थितवहादुरशाहगोपाद्रिपुत्रप्रस्थित

त्रिगह, "जालिका स्वगच्छर्णा" निहैमः ॥ धाराल अच्छी धारावाले. धाराल

खड्ड ॥ ३८ ॥ दुहुँओर झडालइति ॥ झडाल झडौंवर. सुंडाल हस्ती. ॥ 'सुंडालः

सोडजा नागः" इतिधरंजयः ॥ हिंजीर हस्तीके जंजीर. जंजीर हस्ती दिना और

पाखर तोप आदिने जानिये. उच्चूल ऊपर लुल्ल बडे झुंदावारे ॥ "अस्याच्छूता-

वचूलारव्यः बुद्धीधोलुनकूर्चता" वि.निहैमः ॥ ३९ ॥ दुहुँओर धानुक्खइति ॥ धानु-

क्ख धानुपत्त. कमनैव ॥ "लुर्णा धनुपमान् धानुपत्तः" इत्यमरः ॥ भिल्लै मिलै. खेता

ल खत्रपाल ॥ ४० ॥ दुहुँओरकेभीरु ॥ उद्राव भाजनों. तंडे गर्जनाकरे ॥४१॥४२॥

॥ ४३ ॥ ४४ ॥

श्रीविंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तदशे राजी में बुन्दी के भूवति बुधसिंह के चरित्र में आगरा से वहादुरशाह और ग्वालेर से आजमशाह का

ताजमशाहरणाहेतुजाजवनगरान्तिकस्कन्धावारनिवेशनं द्वादशो  
मयूखः ॥ १२ ॥

आदितः पञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५० ॥

( दोहा )

सक चउ खट सत्रह१७६४समय, मिलि चउत्थि सुचि मास ॥

असित पक्ख उग्गत अरक, बढि दल विजय विलास ॥१॥

( मुक्तादाम )

बढे दल तोपनको करि अग्ग, मिले भट उद्धत संगर मग्ग ॥

इतेविच कोतुक जंग अछक, उपो उदयचलके सिर अक ॥२॥

लख्यो रवि दोउन बंदि विसेस, भयो तब तोपन पुब्ब निदेस ॥

पलट्टनि पिक्खि रमात्तन सौंन, लगी दुहुँओर अत्तातन देंन ॥ ३ ॥

मिली तँई तीनहजार३०००न अग्गि, बढी अफलेत दुहुँदिसदग्गि

भयो नभ धूमित धुंधरि भान, लगे दग मीचन देव विमान ॥४॥

परे अष मोलक विद्युत पात, जुरे नर गँवर है उडिजात ॥

उगल्लत फेरहि फेर अखंड, चलै चटका रिनके मित चंड ॥ ५ ॥

भुजंगमके सिर नच्चत सुम्मि, धरै फनतै फन घायन घुम्मि ॥

नचे जिम कन्हर कालिय कंध, बनेँ इम छोनिय तंडव बंध ॥६॥

लगे डगमग्गन अद्रिन सृंग, गिरैँ जिनतैँ मृग भ्रामित भृंग ॥

चलकर युद्ध के अर्थ जाजव नामक नगर के पास मुक्तादाम करने के वर्णन का  
बारहवाँ १२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ पचास २५० मयूख  
हुए ॥

सकइति ॥ चउत्थि चतुर्थी, ४ सुचि आपाह. असित कृष्ण ॥ मुक्तादाम ॥ बढेइति ॥

अक अरुत्त. उपो उदयभयो. अक अरु (सूर्य) ॥ २ ॥ लख्यो ॥ पलट्टनि पया

दे सिपाहनकी पंक्ति ॥ ३ ॥ मिलीइति ॥ अफलेत तोपनके तार करायबे की

क्रिया विशेष ॥ ४ ॥ परेइति ॥ फेरहि फेर अवाज प्रति अवाज. मित प्रमान.

भुजंगमइति ॥ भुजंगम शप. ताके. कन्ह कृष्णावतार. कालिय कालानाम

निवानन आकूलि तुद्धत नीर, पर्यो इक आंतप ग्रीखम पीर । ७।  
 तजै बहि बाधिेन सागर भीम, भ्रमै प्रलगानिलमै जिम भीम ॥  
 जुग्घो दन दब्बि कुहू तम जग्गि, अत्तात लगै जनु प्रेतनअग्गि ८  
 परै दग वे उत योग प्रकास, लखै इनहू इन फैर उजास ॥  
 दुहूँदम यौ लखि पारन दाव, भयो दुहुँघाँ डम मोर भ्रमाव ॥९॥  
 सज्यो बहि घूम सुरालय संग, अजौ नभ बहल राजिहि रंग ॥  
 गिरै विच गोलक गोलक फेट, मनौ पावतै पवि चंडचपेट ॥१०॥  
 गिरै गजमथ्य छिनच्छिन छूट, करै पवि पात कि अद्रिन कूट ॥  
 गिरै गज अंडहु गोलन गोन, गिरै तरु ताल कि पव्वय पोन ११  
 लख्यो रवि उग्गत ज्यौ तम लाल, किते अब भुल्लत आन्हिक  
 काल ॥

विहानहु कोकन लब्धि वियोग, विनाँ नर जानत जामिनि जोग  
 परै गज गंडन गोलक पात, करै जनु भद्रक जातिन ख्यात ॥  
 परै दुहुँ और तुपकन पंथ, मज्यो गव भ्राष्ट्रक ज्यौ हरिमंथ ॥१३॥  
 चहूँदिस चंड चहयो गज चूर, पर्यो रजताचललो उडि पूग ॥

ताके ॥ ६ ॥ ७ ॥ तजइति ॥ भाम भयंकर. कुट्ट चंद्रकला रक्षित अमावास्या  
 की रात्रि ताके. भां तस अंधकार ॥ ८ ॥ परैइति ॥ वे पेली सेनाके. उत बात-  
 रफने. मोर बालुद. ताके प्रक. कानें दीसै. इन ओली संनाचारनको. इत यातर  
 फने. लखै देखै ॥ ९ ॥ सज्योइति ॥ सुरालय सुरलोक. ताको. अजौ अबभी  
 नभ आकाश. बहल संघ. ग स्याम. जिहरंग वा धुंवांके रंगसा है. पहलं या रं-  
 गक न हे. गोलक गोलासो. पवि दज्ज ॥१०॥ गिरैइति ॥ गोन गमन.  
 तामो. तरुनाल तालवृक्ष. कि जनां. पव्वय पवंतसो. पोन. पधन करिकै ॥ ११  
 लख्योइति ॥ तम अंधकार. तामै. लाल भांशुवय. विनानर मनुष्य राहत. और  
 प्राणीमात्र. जामिनि रात्रि. ताको ॥ १२ ॥ परैइति ॥ भद्रकजातिन भद्रजाति  
 वारनके. ख्यात पकर. भद्रजाति दक्षिणके मस्तकसो भोती निकमै है यातै. रव  
 शब्द. भ्राष्ट्रक लोक भाइ. तामै. हरिमंथ चना ॥ "चणको हरिमंथकः" इति हेमः ॥  
 चहूँदिसइति ॥ रजताचललो रजताचल कैलास पर्वत तहां लागि. जदी शिव

जटी जटजूटहु पंकिलजात, लगे कुत्र कंजन पुंज लसात ॥१४॥  
 भज्यो ससि भीरुक भालहि छोरि; रहैं रज लेत सुधा सम चोरि।  
 अकंज सकंज भये इम ईस, समात न खाद भयो भर सीस ॥१५॥  
 महानट पाँलहि खेद समाज, निमीलत नैन समाधिक ब्याज ॥  
 जलंधर बंचित चंडिय अग, लखैं धव संकि महाभय लग्ग ॥१६॥  
 भयो यह विग्रह संकरभान, गिरैं घुनना इत गोलन गोन ॥  
 थरथर भुम्भि जथा जल थाल, वन्यो रन तोपन पाँ विकराल १७  
 सिलगगहिं तज्जहिं गज्जहिं सोर, लरज्जहिं वज्जहिं सिंधु हिलोर ॥  
 भजैं गज संगर लंगर तोरि, महावत गवत लावत सोरि ॥ १८ ॥  
 दिसाविदिसा जगि जारत ज्वाल, सनौं कुहु उज्ज दमंधन माल ॥  
 चलैं उडि सोर सिखा चमकात, परैं जिम अह्वर विज्जुव पात ॥१९॥  
 अमैं कडि मुंडि गिरैं उडि भाग, सनौं जनभेजय अध्वर नाग ॥  
 पगवलि गिहिनकी प्रजरात, जटायुक अग्रज ज्यो गिरिजात ॥२०॥  
 उडैं ध्वजदंडन खंड अकास, रहैं जिम उडहि केकिय रास ॥  
 जरैं गज पिडि पताकन जूट, किधौं द्रव लडिगन अद्रिन कूट ॥२१॥

तिनकी. जट जटा ताको. जूट जूटा. पंकिल पंकवाता. जान भयो. कुत्रकंज कुत्र  
 कुत्रलय. लोके गहूल. कंज कमल तिनके. "कुहेले कुवले कुये" इतिहेमः ॥ १४ ॥  
 भज्योससिइति ॥ भालहिं जिवके ललाटको. छोरि भ्यासिके. अकंज कंज चं-  
 द्रमा ताविना. कंज कलन. तिनवाहित. खाद पंक. "कर्मवश्च निपकः खादः"  
 इतिहेमः ॥ १५ ॥ महानटइति ॥ महानट शिव. "महापरादेवनदेश्वर्य हरः" इ-  
 तिहेमः ॥ ब्याज निसर्पो. जलंधर बंचित जलंधर वैत्यकी टगो. चंडिय पार्वती.  
 धव अपनो पति. वानो. लग्न लग्न. लोके लख्यो ॥१६॥ १७ ॥ सिलगगहिइति ॥  
 तज्जहिं तर्जना करे. जोर वासुद. हिलोर अहातरंग ॥ १८ ॥ दिसाइति ॥ कुहु  
 चंद्रकला रहित अमावास्या की रात्रि तासै. "ना नष्टेन्दुकला कुहुः" इतिहेमः ॥  
 उज्ज कार्तिकमास तामें. "वाहुलोउजो कार्तिकिकः" इत्यपरः ॥ दमंधन दी-  
 पक. तिनको माल. "दण्डनो गृहमणि" इतिहेमः ॥ १९ ॥ अमैं इति ॥ अ-  
 ध्वर चजः तामें. "चितानि वार्हिध्वरः" इतिहेमः ॥ जटायुकअग्रजज्यो खंपाति  
 गृध्रकेसमान ॥ २० ॥ उडैंइति ॥ उडहि ऊपरही. केकिय मयूर. रास चृत्य ॥२१॥

कहैं पुर जाजव हो अधकोस, दण्यो चहुँघाँ तउ संगति दोस ॥  
 तप्यो समरंगन तोपन ताप, चहघाँ नभ जसलरजाम दिवाप ॥२२॥  
 ॥ दोहा ॥

इम तोपन रन होत इत, इत कोलूहल आम ॥  
 रवि दुगहरयो चह्नि रुकयो, तऊन तुमुल तसास ॥ २३ ॥  
 इहिं अंतग दुबदिग अतुल, युगत तोप निर्घात ॥  
 साहबहाडुर भास सन, बज्ज्या उत्तर वात ॥ २४ ॥

॥ पदपात् ॥

पलटत उत्तर पवन दाह तोपन इत दग्गिय ॥  
 उछुत पिक्खि अनीक लाय सञ्चुन उर लग्गिय ॥  
 आजम गज आशूह हुतो निज कटक हरोली ॥  
 गोला लागि लैगयउ पारि दल मध्य प्रतोली ॥  
 इम तोप जनक आजस उडत निज दल लखिपर भर नयो  
 दीदारवखस तख सुत दुसह व्है नायक हरवल भयो ॥५२॥  
 आजसहुत इम कहिय भगन संगल भट संगर ॥  
 करहु सोक जिन बीर धरहु पायन लज लंगर ॥  
 इम विसासि सब सेन अगग ठहो आजमसुत ॥  
 गति अंगद पय गह्नि सरन मंडयो जनुँन जुत ॥  
 दै पृनि निदेम तोपन दगन नृप नवाव हलकाशि सब ॥  
 दीदारवखस सज्ज्यो हुजन गुमर टेक मंडत गजव ॥ २६ ॥

कहैं पुरइति ॥ जासल उभय. दिवाप दिवापनि (सूर्य) ॥ २२ ॥ दोहा ॥ इमह-  
 ति ॥ तऊन हेलन. तुसल संकलितसुद्ध ताको ॥ २३ ॥ इहिंअंतगइति ॥ वात  
 पवन ॥ २४ ॥ पदपात् ॥ पलटतइति ॥ हरोली फाँजके अत्रमाण. प्रतोली वा-  
 धी. गोले वाली. "रथवा प्रतोली विभिन्ना" इतिहैमः ॥ तस ताहाँ ॥ २५ ॥ आ-  
 जमसुतइति ॥ संजत युद्धमें रहेहुय. भट लखीर को. मंगल उत्तमय होतहैं ता-  
 तें. जनुन. यावनी. क्रोध ॥ २६ ॥ दतियापतिइति ॥ इतन इतनें सहित. इनमंत्र

दतियापति राउत नाम दलपति बुंदेलह ॥  
 नरउरपति गजसिंह बंस कछवाह मभेलाह ॥  
 रामसिंह चहुवान अनय आकर कोटापति ॥  
 लागि बुंदियधर लोभ गिनत शोरों न कालगति ॥  
 सचिवन इतेन आजमसुवन गजारूढ दरदल्ल गहि ॥  
 इनमंत्र अबहि आजम उदयो सुवन ग्वास अथसेस गहि ॥२५॥  
 इम आजम उदुतहि सुवन ठडो चडि सिंधुर ॥  
 दगत तोप दुहुँओर उवन वीरन रस अंकुर ॥  
 इहिं अंतर जयसिंह नगर आमैर नरेसुर ॥  
 निज नकीव मुकलिय बुद्ध भूपति प्रति आतुर ॥  
 गृहविधि कहाय प्रछन्न गय जापिय तुम ए खल जवन ॥  
 कुल स्वसुर टारि मंडहु कलह होत तोप सालक हवन ॥२८॥

[ दोहा ]

बुंदियपति यह सुनि बिनय, प्रतिउत्तर पठवाय ॥  
 घर अप्पन संबंध घन, यँह रन दंड उपाय ॥ २९ ॥  
 ताँतै तुम साहस तजहु, बय नय समर विचारि ॥  
 बचहु बाम दक्खिन बदलि, तोपनको मग टारि ॥ ३० ॥  
 इम कहाय बुंदिय अधिप मंडयां तोपन जंग ॥  
 इहिं अंतर दूतन कहयां, भां आजम असु भंग ॥ ३१ ॥  
 बलहिं प्रचागत भटन विच, हो हत्थिय आरूढ ॥  
 गोला लागि दोजख गयो, महा अनय रत मूढ ॥  
 तब ताको सुत सजगहुव, तथा सचिव नृप तीन ॥

ए तीन सचिव कहे तिनके मंत्रमां ॥ २५ ॥ इमइति ॥ उवन उदयहान. रम  
 बीररस ताको. हवन होम ॥ २८ ॥ दोहा ॥ बुंदियइति ॥ अप्पन अप्पन ॥ २९ ॥  
 ताँतैतुमइति ॥ साहस हठ ॥ ३० ॥ इमइति ॥ असुभंग प्रासभंग ॥ ३१ ॥ बल  
 हिइति ॥ दोजख. यावनी. नरक ॥ ३२ ॥

नरउरपति दतिया नृपति, कोटा पति ईक कीन ॥३३॥

[ पट्टपात् ]

सुनत एह बुंदीस मंत्र निजदल सह मंडिय ॥

अरि आजम उडुतहि लारन तससुत हरांल लिय ॥

अरक जाम अवसेस तोष चल्लत त्रिजाम गय ॥

अव हय देहु उठाय जानि हरिहत्य जयाजय ॥

इम कहि नरेस सुभटन उचित हंयन हंकि सम्मुह हलिय ॥

नीगद उदीचि दिसतै मनहु चंड पवन दक्खिन चलिय ॥३४॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तशायणो सप्तमराशो बुन्दीप-  
तिबुधसिंहचरित्रे जाजवनगरान्तिकबहादुर [आलम] शाहाजमशा-  
हनालीपन्त्रद्विषामरणाजमशाह १ पितृस्थानस्थिताजमसूनुदीदारव-  
केसरखावर्णनं त्रयोदशो मयूखः ॥ १३ ॥

[ नाराचम् ] उठाय जंग यौ तुरंग बुद्धसिंह उप्पगघो ॥

मची कजाक हड्ड हाक वीर वाक वित्थम्यो ॥

महा गभीर धीर वीर नीर छीर ज्यौ गिल्ले ॥

हमल्लो भोक्क भुम्मिलोक्क खंड खंड ठहै खिल्ले ॥ १ ॥

ऊनंकिंतति सिंधयी अलाप राग भुक्कपो ॥

रनंकि जीन पदखरीन पौन गौन रुक्कपो ॥

खनंकि धार ठहै प्रहार अंग भंग उल्लटै ॥

सनंकि ग्वास सेसकी फनालि फुंकरै फटै ॥ २ ॥

॥ ३३ ॥ ३४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तशायण के सप्तम राशि में बुन्दी के नृपति बुध-  
सिंह के चरित्र में जाजवनगर के समीप बहादुरशाह [आलमशाह] और आ-  
जमशाह से दुपहर तक तोपों का युद्ध होकर आजमशाह का मारा जाना ?  
आजम के पुत्र दीदारवखस का पिता के स्थान में स्वामी होकर लड़ने के वर्णन  
का तरहवां १३ मयूख समाप्त हुआ और आदिसै दो सौ इकावन २५ मयूख हुए ॥  
नाराच ॥ घह स्पष्ट ॥ ? ॥ ऊनंकिइति ॥ घहरस्पष्ट ॥ २ ॥ छनंकिइति ॥ छदियो

छनंकि वान लौ उडान आसमान छदयो ॥  
 ठनंकि घंट जंग जाम नाग तोम नदयो ॥  
 तनंकि रंच खंचरौ प्रतंच चाप टंकरौ ॥  
 मनंकि पच्छ भूरि मच्छ गिद्धनी भरप्फरौ ॥ ३ ॥  
 चली भली कृपान सानसुद्ध राव बुद्धकी ॥  
 अरीन जुद्धकी उमंग राज रंग रुद्धकी ॥  
 मण्या अनीक संभर्गक आजमीक अंगस्यो ॥  
 चलै कु चक्र भोगि भोगभोगपै भ्रस्यो धस्यो ॥ ४ ॥  
 प्रहार खग्गधार मारू लुत्थि लुत्थियै परै ॥  
 चिरै बितंड गंड अंड खंड खंड व्है भरै ॥  
 दिसादिसानमै कृपान विज्जुमान निक्खसी ॥  
 धिरै गरू पूर सूर पिक्खि हूर हुल्लसी ॥ ५ ॥  
 सुवाजि लोक अोकअोक भीरु लोक भग्गये ॥  
 लरै निघान सख्खपात इक्करीठ लग्गये ॥  
 भरै ससुंड गै सुसुंड कंध बंधतै कटै ॥  
 अटै सु रुंड गालकुंड फाटि सुंड उच्छटै ॥ ६ ॥  
 छिकै बिछेक वान के पलान हान बित्थरै ॥  
 गिरै उल्लहि सूर पिक्खि हूर भरू भरुगरै ॥  
 जमाति जुग्गिर्नानकी पिबंत पेय पत्तकै ॥

आच्छादित ईश्या. नागतोम नाग हस्ता तिनको. तोम समूह. भूरि बहुत ॥ ३ ॥  
 चलीइति ॥ सानसुद्ध सान खुरसान. ताकारिकें नयार. अरीन अरिनकी. राज-  
 रंग राजनके लरिष योग्य रंग संज्ञाम भूषि तामै. रुद्धकी रोकी. आजमी आ-  
 जमका पुत्र. कुचक्र भूमिचक्र. भोगि भोगभोगपै भोगी ज्ञेय ताके भांग फन  
 फनपै ४ प्रहारइति ॥ बितंड वेतंड [हाथी] तिनके. गंड करट. विज्जुमान विज्जु  
 प्रमान ॥ ५ ॥ सुवाजिइति ॥ सुवाजि अच्छेवाजी तिनकी लोकसौ. ससुंड सुडादंड स-  
 हित. गै सुसुंड गै हस्ता तिनके सुसुंड दंतन सहित मुख. कंधबंधतै कलावाके बंधके  
 स्थानतै ॥ ६ ॥ छिकैइति ॥ हान त्याग. सूर सुंड. पेय उनके पीये योग्य राधर-



किलाक्कि वीर बावनी ५२ फिरँ उमत्त रत्तकैँ ॥ ७ ॥  
 चलैँ समग्ग खग्ग के कटार पार निकखसैँ ॥  
 सुवीर सीस संचयी गिरीस हुल्लसैँ हसैँ ॥  
 दरारि वारिजंत्र ज्यों छुलाक्कि घाय उब्बकैँ ॥  
 अनीक नारि के छइल्ल छोह छाकमैँ छकैँ ॥ ८ ॥  
 डुरैँ विभान मुक्कि दान कुक्कि भुक्कि के करी ॥  
 बजंत हेति हेतिकैँ मनो कि दंड चच्चरी ॥  
 जरैँ बितंड पिड्ढि अंद्रिकूट तालज्यों ॥  
 वहंत रत्त खाल के बिसाल ताल नालज्यों ॥ ९ ॥  
 सिलग्गि सोर ओरओर ज्वाल जोर संक्रय्यौँ ॥  
 भयो निसान ध्वान जो दिसा दिसानमैँ भ्रय्यौँ ॥  
 विधाय भानु रेजुको बितान व्योम वित्थरयो ॥  
 लखे परैँ न अप्प पार अंधकार यौँ भरयो ॥ १० ॥  
 चलच्चली मही रु सेन आजमी खलवभली ॥  
 कलक्कली किलक्क भाल ज्वालकी भलउभली ॥  
 गिलंत गूढ गिद्धनी फिकारि फिककरी फिरँ ॥  
 खिलंत कंक स्यार खग्ग धार धारतैँ खिरैँ ॥ ११ ॥  
 उडैँ डुरओर वीर यौँ तुपक्क तोप त्यौँ चलैँ ॥  
 जरैँ दुक्कूल के हठी हकारि सम्मुहे हलैँ ॥

वीरबावनी धारनकी बावनी ५२ ॥ ७ ॥ चलैँइति ॥ सुवीर अच्छे वीर ति-  
 नके सीसनके संचयवारे, गिरीस शिव ॥ ८ ॥ डुरैँइति ॥ विभान सुधिविना,  
 दान मदके कितेक हेति हेतिनके शत्रुशत्रु करिकैँ, दंडचच्चरी चर्चरीके दंड, पा-  
 मरलोग फागनमैँ लगावैँते, ताल तद्दाम लोक तलाव ताके ॥ ९ ॥ सिलग्गि  
 इति ॥ ध्वान शब्द "ध्वनिध्वानरवस्वनाः" इत्यसरः ॥ विधाय अंतर्धान क-  
 रिकैँ, भानु सूर्यको ॥ १० ॥ चलच्चलीइति ॥ फिकारि अंगाली ॥ ११ ॥ उडैँइ-  
 ति ॥ डुरओर दोऊ तरफ, तुपक्क यंदूक, दुक्कूल बख, कालखंड कलेजा ॥ १२ ॥

वरखत बानन विंदु निविड नीरद बनि आयो ॥

सुंडि बीच इहिँ समय घाय गाला लागि घल्ल्यो ॥

इभ पोगर उडिजात चकित चिक्करि भजि चल्ल्यो ॥

गज भजत कुट्टि बरवारगति कट्टि असिय दारुन कलह ॥

हयमेध चरन डारत हलिय सान संडि अति कोप मह ॥१७॥

[ त्रिभंगी ]

कोटैस कूपानी चंडचल्लानी घेग घल्लानी सेर घटा ॥

तंडै रचि ताली जुगिगिनि जाली भूरि भटाली करत कटा ॥

काली किलकारिँ बीग बकारिँ चंडचिकारिँ कुंभि करिँ ॥

अति पान इसारिँ बांध दिसारिँ मुंडन मारिँ प्रेत परिँ ॥ १८ ॥

असवार उल्लैँ कंकट कट्टैँ पूर पल्लैँ सूर सजैँ ॥

पन्नग फन फट्टैँ अवनि उल्लैँ बंघ विकट्टैँ बंघवजैँ ॥

बुंदीपतिवारी काल कशागी तेग दुधारी वेग चली ॥

कोटैस अवाहन उग्र उछाहन मांड महारन बीर बली ॥१९॥

गिद्धी गहि अंती अग्रभ उडंती कोक भिल्लंती चंग निभा ॥

सूगन सिर छाया रचन रचाया बेस बनाया छत्र विभा ॥

सुंडिन भरि कुंकेँ भोरव सुंकेँ चोसठि कुंकेँ नच्च नसा ॥

हल्लीसक मंडैँ तालिन तंडैँ स्वाय अखंडैँ बीर वमा ॥ २० ॥

सवन. नीरद मेध. इभ हस्ती. पोगर लुहाको अग्र. चकित भीत. चिक्करि चि-  
कारी करिकै. अतिकोपमह अति बहुतहै कोप बांध अज मह उत्साह वा त-  
ज ताता. ऐसा 'बहत्तंजल्लुत्सवं चे' तिहैमः ॥ १७ ॥ त्रिभंगी ॥ कोटैसइति ॥  
कोटैस कोटापुरतो ईग ताली. भटाली भटनकी आली परिकत. कुंभि कुंभी  
[गज]. अतिपानइमारिँ पान पीवती रुधिरको ताकेँ इसारेसैँ ॥१८॥ असवारिति ॥  
कंकट कवच. विकट्टैँ घा विकट्ट. यहाँ बहुवचनमें ऐकाहै ॥ १८ ॥ गिद्धीइति ॥  
अंती अग्रभाके अंत. अंतनिभा चंग दागजको पची. जाकडोर बांधिकैँ वा  
लक डडाधैँ ताके. निभ आभा. छत्रविभा छत्रकी तरह. कुंकेँ यहाँ बहुवच-  
नमें ऐकाहै. कुंकेँ चोसठैँ. हल्लीसक स्त्री जननको महलाकार ल्य ॥ 'मंड-  
लेन तु पन्धत्यं स्त्रीषां हल्लीसकं तु तत्' इतिहैमः ॥ यसां हृदयको गद्द. 'हृन्मेद-

गहुगहु बढि बानी भटन भयानी धार धपानी मार मचै ॥

ढालन लागि ढल्लरि के असि कल्लरि राव सु झल्लरि भाव रचै ॥

कटि हड्ड करकैँ फिफ्फ फरकैँ तेग तरककैँ एक उडैँ ॥

चाटन असि चंडैँ खंडैँ खंडैँ छारि पितंडैँ गिरत गुडैँ ॥ २१ ॥

बिनु मत्थ दुवाहे संभु सिराहे चांडिय चाहे उडि अरैँ ॥

ढोलैँ गज डारे फुटि नगारैँ पत्थ हठारे वत्थ परैँ ॥

गजदंत उपारैँ कोप करारैँ मीरन मारैँ वार बडैँ ॥

कटि धार कृपानन गात सु गानन वीर विमानन केक चडैँ ॥ २२ ॥

जुगिनि जय जपैँ कासर कपैँ बाजि बिभूपैँ बेग बली ॥

लुत्थिन भुव छावैँ वीर बढावैँ मिच्छु न मावैँ छोह छली ॥

कोटेस विनाँ हय छंडि महा गय रुडि बडे रय रागि रूप्या ॥

गज बाजि गहम्मह कूह कडककह त्रंब त्रहलह लोक लुप्यो ॥ २३ ॥

[ दोहा ]

कोटापति किलकत परधो, आलम दल सिर आय ॥

करि सु संध चंडासि कुल, तुटयो असिन अघाय ॥ २४ ॥

स्तु बपा वसे' त्यमगः ॥ २० ॥ गहुगहुइति ॥ धपानी धपायवेवारी. केकितेक. असि खड्ड. कल्लरि कालरेवहैकै. राव शब्द. झल्लरिभाव देवालयधै वाद्य विशेष-प ताकी तरह. फिफ्फ लोक फेफरा. तेग खड्ड. तरकके तडाकै. एक केवल 'एक संख्यातरे श्रेष्ठे केवलं तरयात्रिपिब' तिमेदिनी ॥ पितंडैँ वेतंडाकै. गुडैँ गुड हस्ती की सिलह. तहां बहुवचनमें अकार है ॥ 'गुडकं हस्तिस्नाहः' इतिमेदिनी ॥ ॥ २१ ॥ पिनुइति ॥ दुवाहे दोऊ हस्तों से लुत्थ प्रहार करैँ ते. गजडारे गजन के पटके. पत्थहठारे पत्थ पार्थ ताकी तरह हठवारे. मीरन मीर जवन विशेष तिनकां. गात गवत. सुगानन अच्छे गाननकां ॥ २२ ॥ जुगिनिइति ॥ जपैँ कहैँ. बिभूपैँ विशेष करिकैँ भूपैँ. वीर वीर रस. मिच्छु मृत्यु. नमावैँ नहीं मावैँ. छोहछली जोभसों उफनी हुई. यहां देशरूढियों मिच्छुको ख्यातिग क्रियो. ग-य गज. रय बग. गहम्मह धनी भीर. मरुदेशीय प्राकृत. लुप्या लुप्तभया ॥ २३ ॥ दोहा ॥ कोटाइति ॥ सुसंध श्रेष्ठ है संधा प्रतिज्ञा जाके एसा ॥ २४ ॥ पटपा-

( पट्टपात् )

तजि मतंग भुव कुट्टि कट्टि असि बर धकि कुप्यो ॥

नट मलंग नचि अंग रंग अंगद जिम रूप्यो ॥

रतन भोज रयिमल्ल मग्ग उज्जल करि मानी ॥

तिलतिल धारन तुट्टि भयो अमरन अगवानी ॥

पैतासशुभंम सिखवत प्रकट धारत तदपि न धर्म धर ॥

चंडासि बंस रन भजि चलन नन सिक्खो पिक्खो निडर ॥२५॥

चक्खयो कल्लु चित्तहनिन कल्लुक गिद्धेन निज किन्नों ॥

कल्लुक लदयो विसकंठ कल्लुक कालिय लागि लिन्नों ॥

स्वाय कल्लुक खित्ताल डमरुधर ताल डकारयो ॥

भन्वि जुग्गिनि कल्लु भाग बहुत अनुराग बढारयो ॥

अट्टि अट्टि हट्टुड्डु फग्गुन उपम फट्टि फट्टि फोजन उप्फन्थो ॥

कोटा नरेस कट्टिकट्टि असिन बट्टि बट्टि बहु पोसक बन्थो ॥२६॥

( दोहा )

कोटापति अरि भुव परत, आजम सुत अकुलाय ॥

पट्ट मतंगज पिळ्ळिकैँ, आयो बलहि बढाय ॥ २७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप-  
निबुधासिंहचरित्रे निगडनात्तीयन्त्ररक्षोत्थापिताडवबहादुरशाहसै-

त ॥ नजिहात ॥ पैनीअबंमसिखवत चहुवान विना और क्षत्रियनके पुगतन  
और नूनन मय आधुनिक लोक गणनामें पैतास ३५ वंश हैं ते. युद्धमें बहुत  
ठोर भजि जावत हैं योही उनको भजिवो सिखावनों है ॥ २५ ॥ चक्खयो  
इति ॥ विसकंठ अथ तिनमें. खित्ताल जेचपाल. अट्टिअट्टि अट्टन करिकरिक्कैँ.  
फट्टिफट्टि जुडा व्हैवट्टैँ. अथवा फाट्टि फाट्टि बट्टि बट्टि सधनको व्हैक्कैँ. पोसक  
पोखिचवागे ॥ २६ ॥ कोटाइति ॥ पट्टमतंगज मुख्य हस्ती ॥ २७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणे के सानवें राशि में बुन्दी के स्वामी  
बुर्धसिंह के चरित्र में, तोपां का युद्ध रोक कर बहादुरशाह का सेना के घांड़े  
उठाने में तरवारों से युद्ध हांकर कोटाकेरिक्का/रामसिंह के काम आने का

न्यासिसमरकोटाधीशरावरासिंहमरणां चतुर्दशो मयूखः ॥ १४ ॥

आदितां द्विपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५२ ॥

॥ पट्टपात् ॥

घटिय पंच दिन रहत परत उद्वत कोटापति ॥

आजमसुत इभ पिछि गुमर मंडत रावन गति ॥

आपो आहि जिम विसिख विसिख बरसत कुंकारव ॥

नरउर दतिया नृपति वाम दक्खिन सजि संजव ॥

दव्वत उभीर वीरन दुसह बुंदियपति उप्पर बाढिग ॥

मानहुँ अवाचि धुंमडत सुदिर चंड अनिल उत्तर चढिग ॥१॥

डक त्रंजक ड कडकत वान लकलकत सल्लभ सम ॥

छिंछि रुदिर छकछकत घाप धकधकत दमइ दम ॥

वेतालक बकवकत धकत अच्छि हठि हेरत ॥

उवर कुट्टि फकककत गिद्ध सकसकत लोभ गत ॥

कोसत दुसंत दारुन कल्लइ मार मंडलग्गन मचिग ॥

मानहुँ विगंचि नूतन मज्जुज रस अचिज्ज मंहित रचिग ॥२॥

धगनि धुज्जि धमससत सम कसममत कमठ सम ॥

हर दिग्गज हिय बुद्धि भुद्धि थहगत प्रलय धम ॥

कटि कंकट नागोइ टोप बाहुल करि टूकन ॥

रथया दिसदिस रचत वेध विमिखन बंदूकन ॥

बनि दूत भूत दुहुँदेम विविध रिम रचाप लावत जुरन ॥

चउदहवां १४ मयूख ह्या और आदि सं दो सौ वावन २५२ मयूख हुए ॥  
पट्टपात् ॥ घाटियपंचडानि ॥ विभिन्न विना सिखाकां न्नेच्छ ग्रह अर्थ. विसि-  
ख नीर, सजव मस्यकू है जव वंग ज!कां ऐमां. सुदिर मेघ 'वनजीधनसुदिर'  
इतिहैमः ॥ अनिल पवन ॥ १ ॥ डकत्रंजकडानि ॥ सल्लभ कीटविहंग. लोके टोडी.  
दम स्वाम. घापनी. उवर उदर. मंडलग्ग मंडला;अ स्वद्ध. तिन करिके. विगंचि  
ब्रह्मा. "दुद्धिगो विरिचिद्रघणां विरिचः" इतिहैमः ॥ रसअचिज्ज अकूभुनरस.  
साकरिके ॥ २ ॥ धरनिइति ॥ सम सहित. रथया गली. रिस क्रोध, जुरन ल-

छल इहिँ अनेक कटि भट छकत मिच्चु चहत न चहत सुरन ।३।  
 गज पय खंडन जोरि रचत उप्पर नर रुंडन ॥  
 सजि सुंडिन उच्छीस मंजु कंदुक नृप सुंडन ॥  
 गुड पक्खर गद्दी रु बंधि बहु अंत वरत्तन ॥  
 इहिँ मंचक आरूढ भात कालिय अधप्प मन ॥  
 लौ तिहिँ पिसाच बाहक महत वहत उछाहक महमहत ॥  
 जित तित सुगंधि तित ते सजव रुहिर मिष्ठ हेरत रहत ।४।  
 भटन भूत कहुँ भिरत कहुँक कातर आक्रंदत ॥  
 करभ कहुँक कल्लरत गिरत गज कहुँक चिक्करत ॥  
 कहुँक अश्व कटि परत कहुँक घायल भट घुम्मत ॥  
 कहुँ कबंध उठि लरत कुट्टु कुणपन कहुँ भुम्मत ॥  
 कहुँ कंक मेद कवलन करत कहुँ सिचान आरत अपटा ॥  
 ॥ ५ ॥

कहुँक नैन कटि परत कहुँक कटि भौह फदकत ॥

उत्तमंग कहुँ उडत गहत हर उड मोदगत ॥

कालखंज कहुँ कटत बुद्धि बुक्कन कहुँ बुडत ॥

कहुँ फुल्लत हिय कंज मधुप मानस उडि उडत ॥

कर पय विभिन्न तरफत कहुँक मनहु मीन जल तुच्छ मत ॥

तसरिपेको. छलपह या भूतनके छलसों. मिच्चु सृत्यु. सुरन सुरधो॥३॥ गजप-  
 पइति ॥ पय पद. उच्छीस उसीसा. कंदुक छोटे तकिया. गुड गजमिलह. गद्दी  
 बिछोना. तिहँ वाकालीकों. महमहत महकत. सुगंध सीठे रुधिरको जानिये  
 ॥ ४ ॥ भटनइति॥ करभ ऊंट. कबंध घिना मस्तक क्रियावंत लूरपीर. कुट्टु को-  
 ट्टु. लोके त्याल. कुणपम कुणप सृतक तिनके ॥ ५ ॥ कहुँकइति ॥ उड ऊर्ध ऊप  
 रही. मोदगत मोदप्राप्त. कालखंज कलेजा. 'कालखंजं कालखंजं कालेयं कालि-  
 यं पकुदि' तिहैयः ॥ मधुप अमर. सोही मानस मन. उडिउडत वा हियकंजहिं  
 सों. यामें कत गत, छमत रमत, ए अंत्याऽनुप्रास राखे. या रीति सर्वत्र एकसों  
 लौकें अितनै अक्षरनको अन्त्याऽनुप्रास खदायें तितमैं अक्षरनको पद जुदो क-  
 रिलेनों. प्राचीन भाषा के अंधनमें

दीदारवखस बुधसिंह दुव २ रसिक प्रान बाजिय रमत । ६ ।  
 रुदिर रंग बढि बहत छेद छत्तिय पिचकारिन ॥  
 डफ महल हिंडिमिय तान मंडन सिव तारिन ॥  
 पात गुग्ज पुट्टलिय पुट्टप अंगार प्रकासत ॥  
 खग्ग खग्ग मिलि खिगत वृग् अर्वा र विभासत ॥  
 जुग्गिनि जमानि पननारि जिम आलापन झुकि उच्चरत ॥  
 दीदारवखस बुधसिंह दुव २ कलह फग्ग कोतुक करत । ७ ।  
 पहुमि छत्र कटि परत जरत चामर ज्वालानल ॥  
 वगत वार अछरिय भगत हेतिन कृसानु झुल ॥  
 कोसन कलह दुगंत बाड आसि वर इक वज्जत ॥  
 बहु निखंग विकखरत चाप तुट्टत सर सज्जत ॥  
 तरफत प्रमत्त हिंदुव तुग्क आलम दल जालम जन्घो ॥  
 नवत्रय खिलहार बुंदिप नृपति आजमसुत वढि अंगरघो ॥ ८ ॥

॥ तौटकम् ॥

धर संगर आजम पुत धक्यो, गज उप्पर लौहन लाक छक्यो ॥  
 दतियापति आदि कगीन चढे, बहु अग्ग प्रवीर उर्मार बढे । ९ ।  
 रसघोर निमानन ध्यान रघ्यो, विदिसान दिसान कुमानु मच्यो ॥

पिन मना. सत्तान पत्तान, सर्गीर उर्मार, हम्पादिक अलुमान रागे सो लच्छ-  
 न चीन जाविरोयवथा ॥ "अंगजमं वेगवाधरं नकाचंन स्परंन तु ॥ आनरुधेनोऽन्व  
 मोचवन्पादुम्यामुजान पुन नात् ॥" इतिमार्दण्यदर्पणे ॥ ६ ॥ रुदिररंगरुणि ॥  
 पातस्यो न्यकंदेन. गदां, रुदिर रधिर, सोही रंग. छेदुलसिगदिचकारिन छार्नी  
 नये धारदने. छेद वेदी पदकारि निन कर्मिके. महल मदेन. पाचविशेष. ता-  
 पिन गानात रि. पुट्टप पुट्टप. पतनारि मेरगा ॥ ७ ॥ महसिंहनि ॥ हेतिन द्वा-  
 रजन. कृसानु रघिनि. निरोष नरपत. सरसुजान पागदो संभान करम. जाध-  
 न पावनी. ललत करिधेनोत. नरपय दरे नररघ्यो. अंगरघ्यो नपरो सोररो  
 रिथो मर ॥ तौटक ॥ मरुदनि ॥ पदमेरु झुपिन भयो ॥ ९ ॥ रन्दरनि ॥ सोर  
 नपानल. रघनि अरु. गार्गे. भी रीट कोट मरे. वर धरगु. पे मद्र. एकपेठ म-  
 यद अये मरु मरी भरी. मरिग कारिद. वरु म्यायदास्य पाथे पादुका.

मिलि सूर भरै पर पै न मुरै, जिम तकिकय सहिय बाद जुरै ॥१०॥  
 खग धारन धार समार खिरै, पलभोजन चोसठि संग फिरै ॥  
 नटके बट वहे भट के लटके, भटकेन भरै बटके बटके ॥ ११ ॥  
 किलकारत भै करि भूत भिलै, हलकारत खित्तरपाल खिलै ॥  
 उमडे असि विज्जुव अंकनसे, घुमडे दल भद्वके घनसे ॥ १२ ॥  
 गहि भैरव नर्तककी गतिकौं, मिलि बंचत कालियकी मतिकौं ॥  
 करितुंड ससुंड स्वसुंड कसै, वनि आखुग संकर अंक वसै ॥१३॥  
 सुत जानि प्रचुंबन ईस सजै, भय धारि तबै किलकारि भजै ॥  
 छहदजोजन फोजन भुम्भि छई, अति पाउस जानि घटा उनई ॥१४॥  
 पवमान दिगुत्तरको प्रसरयो, सु मनौं घन पौसक होय सरयो ॥  
 चहुघाँ तरवारिनकी बमकै, ति दिपै मनु विज्जुवकी दमकै ॥१५॥  
 मिलि भूखन अोज इरम्मदलौं, लागि सिंजित दहुरके नदलौं ॥  
 बहु भंड सु रोहित चाप बनै, तनितारव हुंदुभि ढाल तनै ॥ १६ ॥

सहिय शाब्दिक. (शब्दशास्त्र व्याकरण ताकं पाठक ॥ १० ॥ खग धार इति ॥ सुमा-  
 र देशीप्राकृत. अतिशय करिकै. चोसठि यहां युद्धमें १४ जोगनी ऐसे सर्वत्र  
 जानिये. बट मार्ग. भटकेन भटके, देशीप्राकृत, खङ्गाऽऽघात तिन करिकै ॥ ११ ॥  
 किलकारत इति ॥ भै भय. असि खड्ग. अंकनसे अंक चिन्ह तिनसों. विज्जुरी  
 के चिन्हनसे यह अर्थ ॥ १२ ॥ ॥ गहिइति ॥ नर्तककी नर्तक बहुरूप स्वांग आ-  
 नित्येवारो लाकी. बंचत ठगत. करितुंड करि हस्ती तिनके तुंड सुख. "तुंडमा-  
 स्यं सुखं वक्र" मितिहैसः ॥ ससुंड सुंडा सहित. स्वसुंड अपने सुंडमें. आखुग  
 गणेश. आखु उंदर ताकरिकै चलियेवारे. "द्वैमातुरो गजास्थैकदंतौ लंबोदरा-  
 खुगौ" इतिहैसः ॥ अंग लोके गोद तामै ॥ १३ ॥ १४ ॥ पवमानइति ॥ पवमा-  
 न पवन. दिगुत्तरको उत्तर हिमाख्यकी तरफकी दिशा ताको. आजमशाह गो-  
 लासों उड्यो ताके पहिलेही पलड्यो हो स्यो. सरयो चलयो. यहाँ प्रसरयो प्रस-  
 रयो ए अंत्यानुप्रास हैं. ति ते ॥ १५ ॥ मिलिइति ॥ इरम्मदलौं इरम्मदमेघकी  
 प्रभा ताके तुल्य 'मेघज्योतिरिरंमदः' इत्यमरः ॥ सिंजित शूषणको शब्द. "शू-  
 षणानां तु सिंजित" मित्यमरः ॥ भंड भंडे. रोहित सीधे इंद्रधनुष. 'तदेव ऋजु  
 रोहित' मित्यमरः ॥ तनितारव तनित स्तनित्र मेघको निर्घोष ताके तुल्य आ-  
 रव शब्द 'स्तनितं गर्जितं मेघनिर्घोष' मित्यमरः ॥ १६ ॥ करकावलिइति ॥



करकावलि इहुन खंड किरै, फटि टोप उडे बरुपंति फिरै ॥  
 चक्कै जो इरिंगखालौं चिनगी, उद सोनित बुद्धि भरै उमगी ॥१७॥  
 रन जाजव पाउस यौं बिरच्यो, सुगलान चुहानन दाव मच्यो ॥  
 भट खगन के कटि सुंढि भ्रमै, अहि ज्यौं जनमेजय अध्वरमै ॥१८॥  
 करकै कटकावलि कोच कडै, फरकै कटि कालिक बल फटै ॥  
 तरकै तरवारिन हड्ड तुटै, छरकै छिति छिंछिन रत्त छुटै ॥१९॥  
 लटकै असवार तुखार लरै, पटकै गहि इक्कहिं इक्क परै ॥  
 चटकै कटि टोपनकी चटकै, छटकै भट बाजिन लोह छकै ॥२०॥  
 गटकै पल गिद्धनि प्रेत गिलै, खटकै असि खुप्परि खंड खिलै ॥  
 अटकै कि रकावन पाय अरे, भटकै भट गज्जहि छोह भरे ॥२१॥  
 लागि कोसन जंगनकी लरसै, बरखा नरअंगनकी बरसै ॥  
 सननकत प्रोथन प्रान सरै, अननकत आयुध अग्नि भरै ॥२२॥  
 तननकत तेगनकी तरकै, थरकै रननकत लोह थकै ॥  
 रन होत सुहूरत भान रह्यो, बलतै बल लोह सुमार बहयो ॥२३॥

[ दोहा ]

बल बल लोह सुमार बढि, घोर मचिग धमसान ॥

करका लोके गड़ा तिनकी. आवली पंक्ति. किरै बिलरै. जुइरंगख खद्योत.  
 लोके जिगनियौके तुख्य. 'खद्योतो ज्योतिरिंगखः' इतिहैमः ॥ यहाँ जकार  
 विशिष्ट ओकारको प्राकृत तालों उद्भव जानिये. यतै सगनको उहास भयो नहीं  
 यथा ॥ 'इहिआरा बिहुजुआरा ओहुद्धा. अयखामिलिआवि लहुलहवजणसंजो-  
 ये परे असेलं पिसबिहास' सितिपिंगलो नागराजः ॥ उद् जल. यहाँ नगी  
 जगी अंत्याऽनुप्रास ॥ १७ ॥ रनेति ॥ अध्वर 'यज'तामै ॥ १८ ॥ करकैइति ॥  
 कालिक कलेजा. बल लोके छाती. रत्त रत्त ॥ १९ ॥ लटकैइति ॥ तुखार उत्तम  
 हय विशेष. "ताजिकाश्च खुरासाणास्तुपाराश्चोत्तमा हयाः" इति नकुलपांडवः ॥  
 चटकै चटक खंड ताके बहुवचनमै ऐकार है ॥ २० ॥ गटकैइति ॥ कि कितेक.  
 ॥ २१ ॥ लागिइति ॥ लरसै लरस. पंक्तिको पाचक. देशीप्राकृत ताके बहुवचनमें  
 अकार. प्रान हृदयमै रहिवेवारे प्रान विशेष. सरै चलै ॥ २२ ॥ २३ ॥ दोहा ॥

आजमसुत अंधार भो, चंडकिरन चहुवान ॥ २४ ॥

( पट्टपात् )

घटिय दोय २ गवि गहत प्रथित आजम सुत पिल्लयो ॥

नरउर दतिया नृपति ठानि हरवल दल ठिल्लयो ॥

कुक्क परिग चहुँकोद टुकक टुककन दल तुट्ट ॥

हग्न मोह हुलाम छोह सूरन असु छुट्ट ॥

निज साह भाग रनगति नव प्रवल नीति फल पक्कयो ॥

बुंदिय नरस पावक विसम तून आजम दल तक्कयो ॥२५॥

( मुक्तादाम )

घटानिभ फोजन भो घममान, उतै जवनेस इतै चहुवान ॥

वजै अमि हड्डन अड्ड विदारि, किधौ तरु कट्टहिँ कूर कबारि॥२६॥

अग्यो दतियापनि सम्मुह आय, पग्यो भरि वोर लयो फल पाय ॥

रुप्यो गजगिहहु कूरमगज, सज्यो इत हड्डनको सिरताज ॥२७॥

वही बुध भूपतिर्का हतबाह, कटे भट और भज्यो कछवाह ॥

धग नभ गंगर गंकुलि धुंधि. लयो नृप आजमको सुत रुंधि॥२८॥

रुपे इम जाजव हे दल गरि, अतै अशि अल्लरित्तौ अककारि ॥

गडानट नञन सुंडन मोह, करै किलकारत कालिय कोह ॥२९॥

अकै विहसेँ चउसद्विष्टदन अंड, गचै अभिवार नचै बहु सुंड ॥

अतै इकतै इक वत्थन आय, पतै गज पववय जयो पवि पाय ॥३०॥

थरत्थर सुम्म नलञ्चन थान, लरयो अदिभोगनको लचकान ॥

कुलालक चक्र भयो अमि कच्छ. वाञ्छत सूकर दह्व विलच्छ ॥ ३१ ॥

चलहान ॥ अंधार अंधार. चंडकिरन सुर् ॥ २४ ॥ चहुवात् ॥ घटियडनि ॥ प्र-

थित विलपात् ॥ २५ ॥ मुक्तादाम ॥ घटाडति ॥ कबारि कबारी चककटे ॥ २६ ॥

॥ २७ ॥ २८ ॥ नोडराडान ॥ लडानट जिय. कोह कोनाहल ॥ २९ ॥ कुहँडति ॥

अलि चहग नाके. वाग प्रहार. सुंड विना सत्तमके क्रियाधान सुभट अंडकवन्धौ

त्वपरीपे क्रियायुजि उतिरेव ॥ पवि नज नाको ॥ ३० ॥ थरत्थरडति ॥ भो-

न जन विनको. कच्छ कच्छ ॥ ३१ ॥ लरइति ॥ विविष्टय स्वर्ग. सूचत सूच-

लगे अतलादिक कंपत लोक, इतै अकुलात त्रिविष्टप ओक ॥  
 रमें पलचारहु आरुन रंग, सबै इम सूचत सोनत संग ॥ ३२ ॥  
 चढयो गज आजमपुन सचाव, धप्यो नृप रम्मुह उदत धाव ॥  
 कमानन अँचत कानन कानि, तफ्यो इम मारत वानन तानि ॥ ३३ ॥  
 लगेँ सर छत्तिन व्है इम लीन, मनौँ विल सप्य कि संवर मीन ॥  
 सजैँ वजि पवन सायक सोक, उडैँ सलभा जिम अँवर ओका ॥ ३४ ॥  
 चलैँ असि कुंत बरछिछन चौट, अमूग दुँगँ बहु हथिन आट ॥  
 उडैँ बहु अँवर अग्गि अलात, जरी गिगि गिद्वनि चिलहनि जात ॥ ३५ ॥  
 फिरैँ रचि फेरव फेन फाल, विबुल्लत कंक उडैँ बिकराल ॥  
 कमान फटैँ रु दटैँ कमनैत, पलान कटैँ उलटैँ पखरैत ॥ ३६ ॥  
 हरैँ कहँ पान लरैँ कहँ हकि, जरैँ कहँ मुच्छ परैँ कहँ जकि ॥  
 बरैँ कहँ हार भरैँ कहँ बाढ, गिरैँ कहँ भात धरैँ कहँ गाढ ॥ ३७ ॥  
 रुलैँ कहँ मत्त खुलैँ कहँ रांस, हुलैँ कहँ हथि दुलैँ कहँ होस ॥  
 वकैँ कहँ प्रेत छकैँ कहँ वीर, धकैँ कहँ ज्वाल हकैँ कहँ धीर ॥ ३८ ॥  
 घडैँ कहँ वाजि बडैँ कहँ चाव, पडैँ कहँ वंदि कडैँ कहँ पाव ॥  
 धमैँ कहँ स्वास नमैँ कहँ धून, अमैँ कहँ गिद्व रमैँ कहँ भूत ॥ ३९ ॥  
 रुचैँ कहँ गीठ जचैँ कहँ मुंड, रचैँ कहँ माम नचैँ कहँ रुंड ॥  
 वजैँ कहँ प्राथ सजैँ कहँ गाह, लजैँ कहँ भीत भजैँ कहँ लाह ॥ ४० ॥  
 स्वसैँ कहँ घुम्मि हसैँ अट संग, वसैँ कहँ गोय कसैँ कहँ संग ॥

ना करत. सोलितलंग रुधिरके संगकी ॥ ३२ ॥ चढ्योगजइति ॥ कानि अवाधि  
 ॥ ३३ ॥ लगेँसरइति ॥ संवर जल नामै. पत्रन अपनै पचन करिकै ॥ ३४ ॥  
 चलैँइति ॥ अमूग कातर. अलात अंगारे. जरी दग्ध भई. ॥ ३५ ॥ फिरैँइति ॥  
 फेरव श्वाल. 'फेण्डः फेरवः शिवा' इतिहैमः ॥ फेरन फेरफिरके ॥ ३६ ॥ ३७ ॥  
 रुलैँकहुँइति ॥ रुलैँ रचैँ. हथि हस्ती लाका. होम ज्ञान ॥ ३८ ॥ चडैँकहुँइति ॥  
 पंदि धदीजन. धमैँ धमन करै ॥ ३९ ॥ मचैँकहुँइति ॥ जचैँ नागैँ. साम उपाय  
 विशेष. प्राथ हथमासा. बाह प्रहार. जाह जाय ॥ ४० ॥ स्वसैँकहुँइति ॥ वसैँ

चट्टे कहुँ सोन घट्टे कहुँ चेत हट्टे कहुँ पिक्खि गट्टे कहुँ हेत ॥४१॥  
 वट्टे कहुँ संगि रट्टे कहुँ धेर, खट्टे कहुँ भिट्टि चट्टे कहुँ खेर ॥  
 चट्टे कहुँ उट्ट फट्टे कहुँ चाट, अट्टे कहुँ मिच्छ टट्टे कहुँ श्रोत ॥४२॥  
 भिल्ले कहुँ वार खिल्ले कहुँ भुम्मि, भिल्ले कहुँ घुम्मि मिल्ले कहुँ भुम्मि ॥  
 लगे कहुँ मोह वगे कहुँ लोह, दगे कहुँ तोप जगे कहुँ द्रोह ॥ ४३ ॥  
 गिनै कहुँ घाय बनै कहुँ गाय, हनै कहुँ दोगि मनै कहुँ हाय ॥  
 चिपै कहुँ सोन लिपै कहुँ चेल, छिपै कहुँ भाजि दिपै कहुँ छेला ॥४४॥  
 तनंकत चाप प्रपंचन तुट्टि, खनंकत खरग सु मुट्टिन खुट्टि ॥  
 सनंकत वानन प्रानन संकि, भनंकत पक्षर रोचि भ्रमंकि ॥४५॥  
 बडे पणवानक नह विहह, महाबल बुद्ध रच्यो अवमह ॥  
 परयो अरि सेन उपक्रम पूर, सज्यो डम संभर पुंगव सूर ॥ ४६ ॥  
 थेट्थेइ नच्चहिँ उट्टि कबंध, मलप्पहिँ दे कर ताल मबंध ॥  
 निसादिन जादिन हिन्न अनंत, भिरै गजतैगज मत्त भ्रमंत ॥४७॥  
 अट्टे बहु बोति विनाँ अगवार, उलट्टहिँ खुट्टहिँ जान अपार ॥  
 गिरै इभपालक दारित गत्त, गनौ तरुनै कपि निंद प्रमत्त ॥ ४८ ॥

प्राप्त पावै. मान रुधिरा ॥४१॥ वट्टे कहुँ इति ॥ चट्टे यह मज्जदगीय प्राकृत. उद्धत तासाँ  
 लरै. भिट्टि मिल्ले. खेर-यावनी. कुशल. उट्ट अंग, लांके छोट ॥ ४२ ॥ ४३ ॥  
 गिनै कहुँ इति ॥ घाय घाय तिनको. सोन रुधिर. चेल वज्रा. चेल चेल चतुश्चरु  
 रितिदिरूपकोणकारः ॥ छेल यहां मेनासुदगीके रसिक जादिन ॥ ४४ ॥ ४५ ॥  
 वट्टे इति ॥ पणवानक पणव वाच विशेष. वानक हाँल तिनके. विहह वने अष्ट.  
 अवमह अवमह. लांके कचरघाण ॥ "अवमहस्तु पीडनः" इतिहैमः ॥ उपक्रम  
 पलायन. "उपक्रमस्तुप्रेभ्योद्राव" इतिहैमः ॥ संभर पुंगव संभर नायक चतु-  
 वाननमें अष्ट ॥ ४६ ॥ थेट्थेइ इति ॥ ए दाऊ हृत्यके अनुकार अवट्टे ॥ यहां  
 थकार विजिष्ट दाऊ प्रकारनको प्राकृत तासाँ पहिले लिख्यां, या नागराजके  
 पचनसोँ पदस्व जानिय. निसादिन निसादी हाथीनके अगवार तिन कारिके.  
 "हस्त्यारोहं सादियन्ता महासात्रनिसादिनः" इतिहैमः ॥ जादिन वादिचनमें.  
 हज हीन. अनंत अरारिभिन ॥ ४७ ॥ अट्टे इति ॥ बोति अथ. "भंशर्वो वा स-  
 सर्वाति" गितिहैमः ॥ इभपाल लांके महावन. "गजाजी इभपालकाः" इतिहै-  
 मः ॥ दारितगत्त दारित फांटे गत्त गात्र जिनके ऐसे, निंद निद्रा ॥ ४८ ॥ पता-

पताकिन होत सडंड प्रपात, बडे तरु ताल सकीस कि बांत ॥  
 किरैं बहु मस्तकं लस्तक कटि, गिरैं गुन तुष्टि फिरें धनु फट्टि ॥ ४९ ॥  
 खिरैं विखरैं सर छोरि निखंग, जथा विलतैं बहु भाम भुजंग ॥  
 इली असिधेनुन बुडि अपार, किधौं मलयाचल नागकुमार ॥ ५० ॥  
 बहैं परिघातन कुंत सवेग, त्रिसीमक संगि रू पट्टिस तेग ॥  
 अरैं कति अश्वन मंडि नियुद्ध, करैं तुमुलाहव के नट क्रुद्ध ॥ ५१ ॥  
 परैं फट्टि दुंदुभि भेरिन पूर, गरज्जहिं के नर मंडि गरूर ॥  
 परैं भरि वग्ग कबी रूलपान, कटैं खुर प्रोथ हयच्छद कानं ॥ ५२ ॥  
 रची इम संभर जाजव रारि, हनी आरें सेन घनी हलकरि ॥  
 घटा गज मध्य सु दै घन घाय, लयो नृप आजम पुत निराय ॥ ५३ ॥  
 भयो जवही असु आजम भंग, सबै नृप तथु टुटै तजि संग ॥  
 भज्यो इक १ भूप रु द्वे २ हनि भिटि, लयो अत्र भुजंगको सुत  
 विटि ॥ ५४ ॥

किनडति ॥ पताकिन पताकी पताका रजववारे: लोके निहो निखरदान. तिन  
 के. सडंड ध्वजा डंड सहित. तरुताल तालवृक्ष सकीस कीम बातर तासहित  
 "कपि: काम: पतवंगल:" इतिहैम: ॥ कि जनां. अतंभवम. गौ: किरैं विखरें.  
 लस्तक धनुषकी सुप्री. "हालासा लस्कोस्यांत" इतिहैम: ॥ गुन प्रत्यंचा.  
 ॥ ४९ ॥ खिरैं विखरैं इति ॥ सर तीर. भौम भयंकर. इली लोके कुधी ॥ "स्यादि-  
 ली करवानिके" तिहैम: ॥ असिधेनु लुरी. "छुरिका चासिधेनुका" इत्यमर: ॥  
 ॥ ५० ॥ बहैं इति ॥ परिघातन परिघ लोके लोहांगी. "पघि: परिघातन" इत्य-  
 मर: ॥ त्रिसीमक त्रिसूल. "सर्वदा तोमरे अख्यं शकौ शूलं त्रिशीर्षक" इति  
 हैम: ॥ अरैं करैं. अश्व घोरेनकां. नियुद्ध सुजयुद्ध. "नियुद्धं वाह्युद्धं स्या" दि-  
 त्यमर: ॥ तुमुलाहव संकुलित युद्ध ॥ ५१ ॥ परैं फट्टि इति ॥ पूर मरूह. गरूर  
 देशीप्राकृत भव. वग्ग घोरेनकी वाग. कबी लयाम. हयच्छद घोरेनके स्कंध.  
 "हयच्छदो हयच्छद" तिहारचली ॥ ५२ ॥ रची इम इति ॥ घटा गजमध्य हस्ती  
 न ही घटाके बीच. "बहनां घटना घटे" तिहैम: ॥ सु सो ॥ ५३ ॥ भयो इति ॥  
 अनु प्राण. आजम लुणपट्टीक. नृप अश्विराज. इक नरवरको राजा मजसिंह  
 कलवाह भज्यो. ल अर. द्वे २ कोटाकां महाराज रामसिंह अरु दत्तियको राजा  
 दत्तपतिभिह कुंदला २ ए दोऊ तिनकां. भिटि मिलिकैं. भिटि घरि ॥ ५४ ॥

चढ्यो गजहो अब द्वारि विचारि, रची सुत आजम बानन रारि ॥  
 सु संभर हेति सचै वरसाय, दयो अरि निव्वल पारि दयाय ॥५५॥  
 हुती हय ७ लक्ष चमू हमगीर, भयो अवसान न इक्कुहु भीर ॥  
 रच्यो जिहिं विग्रह भुगगन राज, वचै वह तित्तिरि क्यौं लहि बाजा ५६ ॥  
 फितूर दफै करि मंडल केरि, घनी निज सेन लयो गज घेरि ॥  
 कियो तउ बानन जंग कराल, कहलै लग जोर करै लहि काल ॥५७॥  
 अधर्म न होत सहायक अंत, लग्गे बुध आयुध मर्म मिलंत ॥  
 भयो सुत आजम मोहि विमान, चलयो समतंगहि लौ चहुवान ५८  
 ( दोहा )

घटिय इक्क खिल रवि रहत, घल्लिय संभर घत ॥

आजमसुत इभपाल सह, मोहित भयउ प्रमत्त ॥ ५९ ॥

इभ समेत लौ तिहिं अधिप, उमडि मुकामन आय ॥

साहवहादुर छिग सजव, पत्र विजय पठवाय ॥ ६० ॥

सरिता इक छिग सजतहो, सफरन बडिस सिकार ॥

आयो डेरन विजय सुनि, कहत बुद्ध जयकार ॥ ६१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-  
 पतिबुधसिंहचरित्रे आजमप्रधानान्तरमनेकार्यराजाजमसेनापृथ-

चढयोइति ॥ सु सो (दीदारबख्श). संभर बुधसिंहनें. हेति शस्त्र ॥ ५५ ॥ हुती  
 इति ॥ हय सात ७ लाख. अवसान अंत समय. भीर सहाय. भुगगन भोगिधे  
 कों ॥ ५६ ॥ फितूरइति ॥ फितूर यावनी. झूटो गर्व. लुप्तद्वितीयाक. दफै याव  
 नी नष्ट. तउ तथापि. काल सृष्ट्यु ताहि ॥ ५७ ॥ अधर्मइति ॥ अंत अवसान  
 तामें. मोहि स्मृद्धित व्हैकें. विमान विना भान. समतंग मतंग मातंग वाको ह-  
 स्ती तासहित ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ घटियइति ॥ खिल शेष. लोके बाकी. घत घात.  
 इभपालसह महाबत सहित ॥ ५९ ॥ इभसमेतइति ॥ अधिप राजा (बुधसिंह).  
 सजव बेग सहित ॥ ६० ॥ सरितेति ॥ सफरन सफर मत्स्य तिनकी. बडिस  
 बनसी लोके बालिया ताकरिकें ॥ ६१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के पति बुध-  
 सिंह के चरित्र में आजम के मरे पीछे अनेक आर्य राजाओं का आजम की

गभवन १ नरवरनृपकूर्मगजसिंहरत्नपलायन २ दत्तियाभूपदत्तपति  
सिंहमरणा ३ आजमात्मजदीदारवखलसमूर्छितदशाग्रहर्षा पञ्चदशो  
मयूखः ॥ १५ ॥

आदितस्त्रिपञ्चाशोत्तरविंशततमः ॥ २५३ ॥

( दोहा )

आजम दत्त अवलन वज्यो, पुथक लोभगति पाय ॥  
अव टरिटरि रत्न उत्तरे, आत्मन दत्त विच अय ॥ १ ॥

( पट्टपात् )

चरमाचल रवि चतुत चित्त प्रसुदित नित्तचारन ॥  
आजम सुत तजि मोह बहुरि बुल्लयो थित बारन ॥  
को जिरयो दत्त कोन सु सुनि इन कहिय कुसीलित ॥  
जिरयो आत्मसाह कटक वाको तुम कीलित ॥  
दीदारवखल यह सुनि दुचित होदासौं सिर हनिमरिय ॥  
अति लोह छदित मथपाकहू परि प्रमत्त असु परिहरिय ॥

[ दोहा ]

जिहँ उप्पर आजम सुवन, मरिग फोरि उतमंग ॥  
वारन वह सोनित दमत, आयुध भेदित अंग ॥ ३ ॥

लेना से जुदा होना १ नरवर के राजा गजसिंह पञ्चाहे का युद्ध से भागना  
२ दत्तिया के राजा दत्तपतिसिंह बुंदेजे का मारा जाना ३ आजम के पुत्र दी-  
दारवखल का मूर्छित दशा अं पकड़ेजाने का पन्द्रहवां १५ मयूख समाप्त हुआ  
और आदि से दोसौ प्रेपन २५३ मयूख हुए ॥

दोहा ॥ आजमइति ॥ अवलन अथावधि. पुथक जुदो ॥ १ ॥ पट्टपात् ॥ चरमे-  
ति ॥ चरमाचल अस्ताचल ताके ऊपर. "अस्तस्तु चरमदभाभू" दित्यसरः ॥  
प्रसुदित प्रसोदित लोभकरि. मोह मूर्च्छाको. सु सो. इन बुधसिंह के सुभटों  
ने. कुसीलित यह संबोधन है. खोटे सीतवारें ते. फीलित बड़. लोके कैदी  
प्रमत्त मोहित. असु मान. परिहरिय तजिय ॥ ३ ॥ दोहा ॥ जिहँउप्परइति ॥  
सोनित रुधिर. प्रमत्त उगदात ॥ ३ ॥ आजमइति ॥ अंदर दावनी आभूषण.

बिबुधालय झल्लरि घंट बजे, सुरभीन स्वबच्छन मेलसजे ॥ १० ॥  
 दिन सूकन धूकन हूक दई, चित बळन चौंकि तजी चकई ॥  
 चिलकारिन पिंगलिका चहकी, निधिरी निसचारन धारनकी ॥ ११ ॥  
 चहुँओरन चोरन चाय चढे, बहु जारन दारन मोद बढे ॥  
 दिनचार भवार अगार दुरे, फवि ब्योम नछत्रन चित्र फुरे ॥ १२ ॥  
 जुरि दीप निवासन भास जगी, दहनोदय चुलिहन हेति दगी ॥  
 रचि गायक गोरिय गान रहे, गनिकान उमंगि भुजंग गहे ॥ १३ ॥  
 रस पीय स्वकीयन हीय रजे, परकीयन तीयन पीय तजे ॥  
 भय मुद्ध नबोढन चित भरघो, हिय हृच्छय मध्यन बोध हरघो ॥ १४ ॥  
 बसि प्रोढन केलि त्रपा बिसरी, क्रुध धारि अधीरन रारि करी ॥  
 छमि आगस धीरन नाह छले, चढि चाव विदग्धन दाव चले ॥ १५ ॥

चावनी संतारमें. विरंज बिना रंज. बिबुधालय देवालयमें ॥ १० ॥ दिनसूक-  
 इति ॥ चिलकारिन चीत्कारी वाके शब्दको अनुकरण है. "चिलीतिसान्ते बि-  
 लोत्तिती" दीप्तवसंतराजः ॥ पिंगलिका कोचरी. की करी. कहीं नहीं अन्त्यानु-  
 प्रास है ॥ ११ ॥ चहुँइति ॥ भवार भयवारे ॥ १२ ॥ जुरिदीपइति ॥ जुरि ज्व-  
 लित वहैकै. दीप दीपक. निवासन घरमें. भास कांति. "भाहृच्छविद्युतिदीप्तयः"  
 इत्यमरः ॥ दहनोदय दहन अग्नि ताके उदय करिकै. चुलिहन चुलही चुली लोके  
 चूल्हा. रसोई प्रकारके तिनमें. हेति श्ताल. "अर्चिहेतिः शिखा जिया" मि-  
 त्यमरः ॥ गोरियगान गोड़ी रागिनीको गान. इनुमान कपिराजके मतमें तथा  
 आधुनिक गायकनके मतमें गोड़ीको समय सायंकाल है. भुजंगगहे भुजंगम  
 अपने पति ॥ "भुजंगो नखिरापति" रितिहैमः ॥ १३ ॥ रसपीयइति ॥ पीय  
 प्रिय. अपने परिणीत. अपने परिणीत नायक. तत्संबंधी रस शृंगार तामें.  
 स्वकीयन स्वकीया नायिकानको. हीय हृदय. रजे रंजित भये. मुद्धनबोढन मुद्ध  
 सुग्धा. नबोढन नबोढा तिनके. चिहय चही लज्जा तामें. "मंदाचं च्हीस्त्रपा त्री-  
 ष्टा" इत्यमरः ॥ हृच्छय काम तामें "विषमायुधो दर्पककामहृच्छया" इतिहै-  
 मः ॥ मध्यन मध्या नायिकानके ॥ १४ ॥ बसिप्रोढनइति ॥ प्रोढन प्रोढा नायि-  
 कानमें. केलिबसवहैकै. त्रपा लज्जा कां. क्रुध क्रोध कां. अधीरन अधीरा नायि-  
 कानमें. छमिआगस आगस अपराध ताकां. छमि जमाकरिकै. धीरन धीरा  
 नायिकानमें. नाह नायक. विदग्धन विदग्धा परकीया नायिका विशेष तिनमें.  
 चावविदग्धा १, क्रियाविदग्धा २ ए दोऊ तिनके. दाव चातुर्यसों नायकको



रस भूति स्वदूतिन जति रची, बयवारिन लच्छितिकान बची ॥  
 कुलटा तजि गेह सनेह कमी, जियमें सुदितान सु प्रीति जमी ॥१६॥  
 अनुपुब्बसयानन भीति अरी, पिघ संग सहेट न भेट परी ॥  
 परभोगदुखीन सखीपरखी, हिय रूप रू प्रेमवती हरखी ॥ १७ ॥  
 पतिप्रोषितकान बिलाप पण्यो, कुध मानस खंडितिकान करयो ॥  
 दिन टेक निबाहि अवेँ दरिता, तजि मान उठी कलहंतरिता ॥ १८ ॥  
 ऋगि विप्रसलब्धन सोक भिलयो, मन सेट सहेट न आनि मिलयो।  
 उत्कंठिनि पुच्छि निदान अली, लखयो मग बासकसज्जलली १९  
 भर दर्प अधीनइनान भज्यो, अभिसारिनि वेस नयो उपज्यो ॥  
 बहु गंध कुबेलनको बिकरयो, सखिहू ब उदैगिरितैँ निकरयो ॥२०॥  
 ससिके बसि ओषधि पोष लहयो, गहकाय चकोरन मोद गहयो ।

संकेतादि सूचना करियेके ॥ १५ ॥ रसभूतिइति ॥ रसभूति रसहीमें भूति वै-  
 भव जिनके ऐसी. स्वदूति स्वयंदूतिकानमें. यह नायिका प्राचीनमें लिखी  
 नहीं. अरु चमत्कार विशेष हू नहीं तथापि आधुनिक भाषाकविके मतानु-  
 सार लिखिदीनी है. जति झीड़ा. बयवारिन बयवारी अपने समान अवस्था-  
 वारी सखी तिनसों. लच्छितिका लक्षिता नायिका. नवखी नहीं छिपी रही.  
 सनेह नेह सहित. कमी खली. सुदिता सुदिता नायिकानके ॥१६॥ अनुपुब्बइति ॥  
 अनुपुब्बसयानन अनु है पूर्वमें जिसके ऐसी सयानन सयाना जे अनुसयाना  
 तिनके. भीति दास संकेतके नासादिककी. सहेट संकेत तहां. भेट मिलाप.  
 परभोगदुखीन अन्यसंभोगदुखिता तिनमें. सखीपरखी यहां विपरीत लच्छ-  
 नासों याकी शत्रु जो नायकसों संभोग करिआई सो दूती जानिये. रूपरूपेम.  
 वती रूपगर्विता प्रेमगर्विता ए दोज ॥१७॥ पतिप्रोषितिकानइति ॥ पतिप्रोषितिका  
 प्रोषितपतिका तिनके. कुध क्रोध. मानस मन. खंडितिकान खंडितानमें. दरिता  
 डरी हुई ॥ १८ ॥ ऋगिविप्रइति ॥ ऋगि दूती प्रकृषित वहीके. विप्रसलब्धन वि-  
 प्र सहित लब्धा जे विप्रलब्धा तिनके. मनसेट मनस इट, मन ताको इट स्वा-  
 मी ऐसो नायक. उत्कंठिनि उत्कंठिता तिनमें. पुच्छि पूछयो. निदान आदि-  
 कारन नायकके अनागतको. लखयो लखयो. मग मार्ग. पासकसज्जलली वा-  
 सकसज्जा ललनानें ॥ १९ ॥ भरदर्पइति ॥ भर भार. दर्प गर्व ताको. अधीन  
 इन अधीन वशीभूत है इन पति जिनके ऐसी जे स्वाधीनपतिका तिनमें. अ-  
 भिसारिन अभिसारिका तिनमें. कुबेलनको कुबेल कुबलय लोके गहूल तिन-

भुवपैँ इम होत । नलीध भयो, रस मीतन साइ नयो रचयो ॥२१॥  
 थित निंद प्रजा वषवहार थके, जिम संजम द्वंद्विय जोमिनके ॥  
 गति या भालि रति सु विरति नई, भक्त प्रसासुधूरत बेर भई ॥२२॥  
 बिरुदारत्र बंदिनको बिथरयो, क्रम अणिम तहाँ नृप नित्य कलयो ॥  
 छकतँ कसि आयुध जोम छलयो, चढि वाइ सूसाइ हजूर चलयो २३  
 इत आगम प्रात लुभे अहके, चटकी चरनायुधहू चढके ॥  
 दिक प्राचिय आरुन रंग दिधी, लागि अंबर सुग्नि ह रोचि लिपी २४  
 लघु द्विष्टि नछत्रन निष्टि लहैं, चित्त जयो ताज भोगन प्यान चहैं ॥  
 भजिकैँ तम अदि सुफान भरयो, जिम तत्प लहैं पुर पुर अरयो २५  
 दुति पूर जरूर इतँ पसकयो, अछि अक उदैपिरिहैं चकयो ॥  
 छकमैँ तिहैं बेर नरेस छयो, नति अर्जुन साइ समीन भयो ॥२६॥

( दोहा )

साहवहादुर तिहैं समय, वैठो आम बनाय ॥  
 नजरि निछावरि खेत निज, परिकरतँ अष पाय ॥ २७ ॥  
 सुनि आगम हुंकीरको, दाइ अटा चढि देखि ॥  
 प्रमुदित आयो तखत पुनि, लोभ विजय द्विय खेखि ॥२८॥

( मनोहरम् )

एतेमें नरेस आय अंबर प्रवेश होत,  
 उमहि नवीय कीनी सूचना अछूती है ॥  
 जाय करि नजरि निछावरि मिसल खेत,

को. व अष ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ इतआमहति ॥ अहके दिनके. चढकी  
 चिरी. चरनायुध कुकुट. दिक दिशा. प्राचिय प्रानी पूर्व. आरुन अरुन लाल  
 रंगकी. सु लो. रोचि कांति ॥ २४ ॥ लघुद्विष्टइति ॥ भोगन अन्ध स्पर्शादि  
 निषयनको. तम अंधकार. तत्पलहैं तत्त्वज्ञान अर्थ ॥ २ ॥ दुतिपूरइति ॥ दुति  
 कांति. ताको पूर समूह. अक अर्क लुग्घ ॥ २६ ॥ दोहा ॥ साहवहादुरइति ॥  
 आम जही सभा ॥ २७ ॥ सुनिआगमइति ॥ दाइअटा काठकी पुरज. प्रमुदित  
 अधिक प्रसन्न. पुनि फिरि. लेखि देखिकैँ ॥ २८ ॥ मनोहरम् ॥ एतेमेंइति ॥ नरे-

निकाट बुलाय साह बखसी बिभूतीहै ॥  
 दीउहाथ हियसों लमाय सुखिकाय कहयो,  
 यरद दर्दः तैं रखी खूब प्रजवृतीहै ॥  
 दिल्लीपुर वादी मैं लही जो यह बादी वीर,  
 मेरे महाराजराजा रावरी लपृतीहै ॥ २९ ॥  
 ( पादाञ्जलकम् )

महाराजराजा इस अकरुया, भूपहिं छिनक लाय हिय रक्खयो ॥  
 पुनि वखसीस करी दिल्ली उपति, रावकृपति यह सुनहु रक्खि रति ३०  
 कोटादिक नैमगपधजल नाने, कहत नाम कछु कछु हम चीने ॥  
 कोटाशमपुरि आहारापट्टनि, मायरोनिहतीजो दुर्गम मनि ॥ ३१ ॥  
 साहावायधरेरपछुधानक, अरु बडोवडैनेतअचिधानक ॥  
 छवडाटअरु गूँर९दुर्गबर, पंचपहाड१०पडाप११डग१२नगर ॥३२॥

॥  
 ॥ ३३ ॥  
 ॥  
 ॥ ३४ ॥  
 ॥  
 ॥ ३५ ॥

रा बुनसिह, पंढर गिरायके जधव, लुचगा जागहारी, आहूती और फाहूके  
 आदयेसों री गुमना करी परी देली, आबगदातके मारियेवारे अरु दीदार-  
 पालश को सुद्धि समनेमज जीलित परि मयावनेवार, दुर्गसके आयवेतें नकी-  
 ममें कीनी, विशुती मिनेः मीरग ॥ ३२ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

भयं प्रयकर्ता [सुर्वगत] की रक्षाद्वि: टीका यदा तक ही लगते विधी तो हमने प्रयकर्ता के स्वयेदुप-  
 त्तम के अनुसार अंश को यों यदा किम ही है, पर दतां के नामे एम [वाकठ कृष्णसिंह] अपने स्वये  
 दुप मम के अनुसार, मूक कठिन रूपों पर अंग देकर नीचे टीका लिखते हैं:

॥

॥ ३६ ॥

॥

॥ ३७ ॥

साह सिक्ख डेगन दिन्नी जब, विन्ति नृप करजोरि करीं तव ॥  
 कूरम नृप जयसिंह हगगिय, पै सेवक मंगी तस जागिय ॥ ३८ ॥  
 ताते तिहि संबंध अरज यह, आजम दोस आदि जखनी वह ॥  
 जो आर्यस तिहिं ढिग तो जाऊँ, सेवक करि अप्पन समुक्ताऊँ ॥ ३९ ॥  
 सुनि यह अरज साह कछु अकखैं, तव संबंध महर हम रकखैं ॥  
 पुर आमैर सु तो फिरि पावहु, अब तव संग भलैं ढिग आवहु ॥ ४० ॥  
 यह सुनि नृप कूरम ढिग आयो, प्रदेर घाय सिक्कत वह पायो ॥  
 तीर एक श्भुज सव्य लग्यो तस, जाजव रन इक श्कंठ लहन जस ॥ ४१ ॥  
 सो जम भयो बुद्ध सरनागत, छकि कूरम पाये केवल छत ॥  
 तिन सिक्कत जायरु नृप तक्यो, करि मखुहारि माद हिमछक्यो ॥ ४२ ॥  
 कही बहुरि नृप नेह कहाई, आजग वसि आमैर विहाई ॥  
 आत्म सेवा अबहि अराधहु, म्वरूप जोर दुल्लभ सुख माधहु ॥ ४३ ॥  
 डेरा अब आत्म दत्त मंडहु, खगि कछु दिनन विपति दुखखंडहु ॥  
 कूरमको लौ संग यहै कहि, चाहवान निज दत्त आयां चहि ॥ ४४ ॥  
 अप्पन ढिग कछुवाह उतारें, सालक जागिय विनय समहार ॥  
 विधि इहिं कदेन अपूरव वित्तयो, जाजव रन दुल्लभ नृप जित्तयो ॥ ४५ ॥

१ वनकी पहिन की मुक्कत मगाई (मंगनी) हुई है ॥ ३८ ॥ २ आजम के पञ्च  
 में होने के अपराध से ३ पावल है ४ काजा होवे तो ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ५ तीर  
 के घाय का तपाताछुआ ६ पाग रुज पर ॥ ४१ ॥ ७ घाय ही पाया, वज नहीं  
 पाया ॥ ४२ ॥ ८ पहिन के पति (पदिनोई) बुधसिंह के बल ले ॥ ४३ ॥ ९ न-  
 हन करके ॥ ४४ ॥ १० साला कदिनोई ने अधिक नभवा थी ११ इस रीतिसे-  
 अपूरव (पहले नहीं हुआ ऐसा) नाश १२ राजा बुधसिंह ॥ ४५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबु-  
 धसिंहचरित्रे मूर्च्छात्थितश्रुतस्वानीकपराजयकरिपल्याणाप्रहारभग्न  
 मस्तकदीवाग्बख्शामरणा १ दीदारबख्शजगतकोटिमुद्रालंकारो  
 पेतविजयप्राप्तिबुधसिंहवहादुरशाहसेवानिवेदन २द्वितीयदिनप्रभातय  
 वनेन्द्रबहादुरशाहसभासमागतबुधसिंहार्थमहारावराजपदसहितद्वा-  
 पञ्चाशत्प्रान्तयवनेन्द्रप्रदान ३ बुधसिंहालमसेनासमानीतामैराधी-  
 शजयसिंहालमसेवकत्ववर्णनं षोडशो मयूखः ॥ १६ ॥

आदितः चतुःपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५४ ॥

( षट्पात् )

मरत साह अवरंग मंत्र मंडिय रहोरन ॥

अब न साह अवेनीस सूढ तस सुत प्रनाद बन ॥

इहि अंतर यह पिक्खि आनि बंभन अगार सन ॥

पहु तखत जोधपुर नृपहि रक्खहु निसंक मन ॥

यह मिसल अठउपजाय उर द्विज गृहते तव आनि हुते ॥

नृप अजितसिंह रक्खयो तखत सबन तत्थ जसवंत सुत ॥१॥

( दोहा )

इत आलम लहि बिजयअरु, प्रभुपन सत्य प्रमानि ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के आठवें राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में, मूर्च्छा से सचेत हुए दीदारबख्श का अपनी पराजय सुनकर हाथी के होदे से मस्तक फोड़ कर मरना ? दीदारबख्श के हाथी पर फोड़ रूपियों के भूषण सहित विजय मिलाने का बुधसिंह का बहादुरशाह की सेवा में निवेदन करना ? दूसरे दिन बुधसिंह के प्रभात लग्नय बादशाह बहादुरशाह की सभा में जाने पर बादशाह का बुधसिंह को महारावराजा के पद के साथ वाचन परगने देना ? आमैर के राजा जयसिंह का बुधसिंह का आलम की सेना में लाकर आलमशाह के सेवक बनाने के वर्णन का सौलह-वां १६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ चौपन २५४ मयूख हुए ॥ राठोड़ों ने ?सलाह की ? भूमि का पति बादशाह अब नहीं है उसका सूख पुत्र उन्मत्त मनवाला ? ब्राह्मण के घर से ४ जोधपुर के उमरावों की गणना में मुख्य आठ मिसल (बैठने की जगह) मानी जाती हैं ? शीघ्र ॥ १ ॥ २ ॥

मृत जखमिन आजम भटन, नृपन हरामी जानि ॥ २ ॥  
इहिँ अंतर मरुंधर खवारि, पहुँची विविध पुकारि ॥  
रठोरन जसवंत सुवँ, दयो तखत वैठारि ॥ ३ ॥

[ पट्टपात ]

यह सुनि आलमसाह कहैर हिंदुनपर कुप्यो ॥  
प्रलय रुद्र जिम प्रबल लज्ज घोरज सब लुप्यो ॥  
दिय आयस तिहिँबेर नगर आमैर१रु नरउर२ ॥  
कोटापत्तन३ बहुरि पुरी दतिया४ रु जोधपुर५ ॥  
आमैर आदि चउ४राज्य ये आजम दोख उतारि लिय ॥  
रठोर हुकम बाहिर रहत धँव् सौस अमरख धक्रिय ॥४॥  
समँर जित्ति यह साह रहिय चउ४मास भुसावर ॥  
इसँ दसमी१०अवदाँत अनखि मारवँधर उप्पर ॥  
पीरन जायति करन बुल्लि अजमैर बहानौँ ॥  
करि फोजन दरकुँच आय आमैर रहानौँ ॥  
बुधसिंह हिँतुँ जयसिंह तब कहिय एह परिनँय समय ॥  
इत साह संग अनँवधि गमन बहिनि भई इत उचितँ वय ॥ ५ ॥

( दोहा )

साह जेर करि जोधपुर, करिहै दक्खिन जेर ॥  
बेग न पुनि आवन वनँ, व्याहनकी यह बेर ॥ ६ ॥  
लग्गी हमरी खालसै, रजधानी रन रोस ॥

१ मारवाड़ देश की २ पुत्र को ॥ ३ ॥ ३ क्रोध करके अथवा जुलम के साथ हिंदुओं पर क्रोधित हुआ ४ आमैर को आदि लेकर चार राज्य तो आजम के पक्ष में होने के दोष से उतार लिये और राठोड़ पहिले से ही छुक्रम बाहिर थे इसकारण ५ मारवाड़ पर क्रोध में ६ लला (प्रज्वलित हुआ) अथवा क्रोध करके मारवाड़ पर चला ॥ ४ ॥ ७ जाजब का युद्ध ८ आश्विन ९ सुदि दशमी १० मारवाड़ पर क्रोध करके ११ से १२ परनने (विवाह करने) का १३ बिना अवधि १४ विवाह के उचित अवस्था ॥५॥६ ॥ १५ लड़ाई करने के क्रोध

\*अंतहपुर सामोदगढ, रक्खयो भटन भरोस ॥ ७ ॥  
 तातैं द्वैरदिन सिक्खलै, वहिनी लेहु विवाहि ॥  
 संगहि अैहैं साहडिंग, चित्त बहुरि भुव चाहि ॥ ८ ॥  
 बुंदियपति यह सुनि कहिय, सुनहु अरज मम साह ॥  
 मुलतान जु संबध भो, जानत ध्यानपनाह ॥ ९ ॥  
 कूरम नृप यातैं कहत, सहर निकट सामोद ॥  
 द्वैरदिन अंतर लगनहै, विरचहु व्याह विनोद ॥ १० ॥  
 तातैं जो आयसैं लहौं, आऊं करि उदबाह ॥  
 द्वैरदिनकी यह सुनि सुदित, सिक्ख दई तब साह ॥ ११ ॥  
 संभर कूरम सिक्खलै, आये दुहुँ सामोद ॥  
 बनि दुल्लह बुधसिंह नृप, सद्धि लगन सविनोद ॥ १२ ॥  
 जाँमि वडी जयसिंहकी, अमरकुमरि अभिधान ॥  
 बुंदियपति हिय हित विरचि, व्याही विहित विधान ॥ १३ ॥  
 इत आलम अजमेरपुर, पहुँच्यौं गजब गरूर ॥  
 बुंदियपति आमैरपति, आये बहुरि हजूर ॥ १४ ॥  
 ( पट्टपात् )

इम आलम अजमेर आय पूजन पीरन करि ॥  
 राचि मारुन पर रीस हेल्यो दरकुंच अलसैं हरि ॥  
 अजितसिंह सुनि एह नमित मरुदेस नरेसुर ॥  
 बेग आय कर बंधि परयो पायन अलहैनपुर ॥  
 इम साह धन्व किय निज अमल सत्य रक्खि जसवंतसुव ॥

से राजधानी (आमैर) चालजे होगड़े \* जनाना ? डमरावों के भरोसे  
 ॥ ७ ॥ २ भूमि लेने की चाह से ॥ ८ ॥ ३ मुलतान में थे तब ॥ ९ ॥ १० ॥ ४  
 आज्ञा ५ विवाह ॥ ११ ॥ १२ ॥ ६ वहिन ७ नाम ८ उचित रीति से ॥ १३ ॥  
 ६ पहन घमंड से ॥ १४ ॥ १० मारवाडों पर ११ चला १२ आलम मिटा कर  
 १३ आलमवाचास नामक नगर में १४ मारवाड में १५ जसवंतसिंह के पुत्र को

उपपरि उफान साँगर उपम दक्खिन पर गज्जयो गरुवा १५।  
 रहि कछुदिन अजमेर सज्जि संभर सेनापति ॥  
 दक्खिनपर दरकुंच गव्व धरि चलिय जनक गति ॥  
 होय दुर्ग चित्तो ग हेठ दत्तउर मिलान दिय ॥  
 यँह रानाँ अमरेस प्रनति मनुहारि पठाविय ॥  
 हिंदवान सास मिच्छन हुकम तामें कुल रानेन टरयो ॥  
 जवनेस तँदपि निकसत निकट प्रनति द्रव्य पठवने पश्यो ॥१६॥

[ दोहा ]

अमररान अप्पन अनुज, तखतसिंह अभिधान ॥  
 देवसिंह वेधमपुर पँ, दुव २पठये सनिदान ॥ १४ ॥  
 इक १अनेकपँ च्यारि ४हय, साइ काज दिय संग ॥  
 च्यारि ४वाजि चहुवाँन हित, इम पठवाय अभंग ॥ १८ ॥

( पट्पात् )

अड्डवाजि गज इक १भेट अमरेस पठाये ॥  
 तखतसिंह अरु देव लै रु दँसउर दुव २आये ॥  
 वाजि च्यारि बुधसिंह हेत नतिपुँव्व निवेदिय ॥  
 मंडि त्रिविध मनुहारि जानि जाँसिप प्रमोदि जिघ ॥  
 पुनि कहिय साँहँहिन रान प्रभु हय हत्थिय पठये हुलाँसि ॥

साथ रख कर वहाँ से १ उपड़ कर २ सखुद्र के बहाव के ३आँति ४पहुत (आ-  
 री) ॥ १५ ॥ ५ चदवाण बुधसिंह को ६ गर्व ७ पहिले इसका पिता औरंगजे-  
 ब गया था उसी रीति से ८ चित्तोड़ के नीचे होकर ९ मंदसोर सुकाय किया  
 १० अमरसिंह ने ११ विशेष नम्र होकर १२ हिन्दुस्थान के ऊपर मलेच्छों के  
 हुकम से १३ रानाओं का कुल ही बचा है १४ तोभी १५ भेजना पड़ा ॥ १६॥  
 १७ अपना छोटा भाई १८ नाम १९ पति २० कारण सहित [अपने देश में  
 आये हुए बड़ों का भेट देनी चाहिये इसकारण से] ॥ १७ ॥ २० हाथी २१ बु-  
 धसिंह के लिये, 'अभंग' यह महाराणा का विशेषण है ॥ १८ ॥ २२ मंदसोर  
 नामक पुर में २३ नम्रता पूर्वक २४ बुधसिंह को बहिन का पति जान कर २५  
 वादशाह के लिये २६ प्रसन्न होकर



मिलवाय हमहिं यह भेट अव\* विदित निवेदहु समय बसि।१९।  
दोहा-सुनि संभर तिन्ह संग लै, जवनईस ढिग जाय ॥

मिलवाये दसतूँ मित, क्रम सलाम करवाय ॥ २० ॥

सीसोदन अफरवी सबहि, छुति जु कड़ाई रान ॥

आलम अंगकार किय, छुति रु भेट सनिदान ॥ २१ ॥

बुंदियपति करि सिक्ख तब, लै तिन्ह डेरन आय ॥

नृप कूर्म रडोरहु, लीन्हे उभय बुलाय ॥ २२ ॥

अजितसिंह अपसिंहको, इक संभर अर्बलाव ॥

पुच्छिय मंत्र नरेसंप्रति, कहिकहि कित्ति कंदंब ॥ २३ ॥

[ पट्टपात् ]

वेदहु वत्त बुंदीस औप रुकत हम आतुर ॥

लियउ कुप्पि जवनेस छिन्नि आभैर जोधपुर ॥

नहिं निवाहि अव सकत बिभव गज बाजि बिभैन अति ॥

स्रोत खफरें जिय साह गहत दिनदिन उलटी गति ॥

सुनि यह नरेसं अक्खिय उचित बाँसर कछुधीरज बहँहु ॥

सेवन बढाय कछु साहको गत मही सु निजनिज गहहु ॥२४॥

बुंदियपतिको हुकम साह दलौ माँहिं सवनसिर ॥

सीसोदन यह पिक्खिं जानि जौमिप जग जाहिर ॥

रान सुभैट राउत्त देवसिंहह वेधस पति ॥

\* प्रसिद्धा ॥२५॥ १ बुधसिंह २ वादशाह के पास ३ रीतिके अनुसारा ॥२०॥ ४ नम्रता वा स्तुति-कारण सहित अर्थात् राखाओं ने पहिले नम्रता और भेट कभी नहीं की थी इसकारण से ॥२१॥ ५ आभैर का राजा कछवाहा जयसिंह ७ जोधपुर के राजा राठोड़ अर्जातसिंह का ॥ २२ ॥ बुधसिंह का ही आधार था ९ बुधसिंह से १० कीर्ति का समूह ॥ २३ ॥ ११ कही १२ हम आमद रुकने से १३ पीड़ित हैं १४ वदास १५ जल के प्रवाह में मच्छ के समान [बहते हुए जल में मच्छ उल्टाही जाता है] १६ बुधसिंह ने कहा १७ दिन १८ धारण करो ॥ २४ ॥ १९ वादशाह की सेना में २० देखकर २१ पहिनोई २२ महाराना का हमराब देवसिंह

संभर प्रति करजोरि बिहित अक्खिय यह बिन्नति ॥  
 करि नेह गेह पावन करहु मंजु विवाहहु जाँमि मम ॥  
 सुनि यह नरेस स्वीकार क्रिय सिक्ख बिसंगिय साह सम ॥

[ दोहा ]

दस बाँसकी सिक्ख दिय, साह बिदित सनमान ॥  
 अजितसिंह जयसिंहसौं, तव अक्खिय चहुवान ॥ २६ ॥  
 बेघम व्याहन जात हम, तुम रहि साह समीप ॥  
 मन न गिनहु कुमहर महर, उर बिचारि अवनीप ॥ २७ ॥

[ पट्यात ]

सुनि कूरम रहोर दुहुन अक्खिय सनेह सधि ॥  
 साह कितवके संग अबहु जेहँ रेवाँवधि ॥  
 इहिँ अंतर कछु होय ततो रहिहँ संगति सर ॥  
 नहिँतो अँहँ मुररि अप्प करियो कछु उप्पर ॥  
 यह सुनि नरेस पुनि उच्चरिय यह उचित न तुमकाँ अवहि ॥  
 जोलों बिवाहि आऊँ सजव तोलों पुनि रक्खहु दितहि ॥ २८ ॥

[ दोहा ]

इम प्रबोधि बुंदिय अधिप, मन जय जुँव्वन मत्त ॥  
 दसउरतँ दरकुंच करि, पुर बेघम हुत पत्त ॥ २९ ॥  
 पुँती अनुपमसिंहकी, फूलकुमारि अर्धिधान ॥  
 देवभ्रातँ सविनय दई, बुद्धहिँ बिहितँ बिधान ॥ ३० ॥  
 वान तक मुनि इक १७६५सक, पुशिखाम मारधँव मास ॥

१ सुंदर २ बहिन ३ मांगी ४ बादशाह से (जहाँ 'सम' शब्द 'सं' का वाचक है)  
 ॥ २५ ॥ ५ दिन की ॥ २३ ॥ १ अकृपा और कृपा ७ हे राजाओ ॥ २७ ॥ ८  
 छली [डग] के साथ ९ नर्मदा नदी पर्यन्त जावंगे १० साथ चल कर ११ वेग  
 सहित ॥ २८ ॥ १२ समझाकर १३ जाजब के बुद्ध की जय और जीवन से मन  
 में अस्त होकर १४ प्राप्त हुआ [गया] ॥ २९ ॥ १५ पुत्री १६ नाम १७ भाई देव-  
 सिंह ने १८ उचित रीति से ॥ ३० ॥ १९ वैशाख ॥ ३१ ॥

चुंडाउति व्याही चतुर, बुंदियपति सबिलास ॥ ३१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दीप-  
तिबुधसिंहचरित्रे दृष्टयवनेन्द्रराजवदोर्बल्यमारवाठक्कुराजितसिंहयो-  
धपुरपट्टाभिषेचन १ श्रुतमरुदेशोदन्तक्रुद्धयवनेन्द्राजममित्रत्वापराध  
हतामैरकोटानरउरदतिघाराज्ययोधपुरप्रयाणा २ हतयोधपुराल  
मशाहदक्षिणादेशगमनं सप्तदशो मयूखः ॥ १७ ॥

आदितः पञ्चपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५५ ॥

[ पट्टपात ]

चोवन५४गढ जय स्वाह दये जाजव रन जित्तत ॥

कोटाहू तिन माँहिं नृपहिं दिन्नों अरिबित्तत ॥

जय उद्धत चहुवान नाँहिं सम बिसम विचारयो ॥

भ्रातन भुव लारि लेन प्रथम दल उतहि हकार्यो ॥

कंगगर पठाय लिखि अण्ण कर बेधम सन बुंदिय नगर ॥

करिलेहु प्रथम कोटा अमल भट मंत्रिय सन्वति समर॥१॥

एह कंगगर हुत बंचि मल मंडिय इत बुंदिय ॥

जोधराज परधान बनिंक बयवृद्ध प्रपंचिय ॥

धावरै गंगाराम सूर सुभटन इकत करि ॥

कोटा उप्पर कटक बेग मंडिय वीरन वरि ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के भूपति  
बुधसिंह के चरित्र में वादशाही का निर्बल देख कर मारवाड़ के उमराओं  
का अजितसिंह का जोधपुर की गद्दी पर बिठाना, मारवाड़ की खबर सुनने  
से वादशाह का क्रोधित होकर आजम के साथी होने के दोष से आमैर,  
कोटा, नरउर, दतिया इन चारों राज्यों को खालसै करके जोधपुर पर चढाई  
करना २ जोधपुर को खालसे करके आलमशाह के दक्षिण में जाने का सप्त-  
हवां मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ पंचपन २५५ मयूख हुए ॥  
१ बुधसिंह का २ शत्रुओं का नाश होने पर ३ सेना ४ भेजी ५ कागज [पत्र]  
६ अपने हाथ से उसे युद्ध में सलाह करके ॥ १ ॥ ९ पत्र १० बतियां ११ धाऊ

सुहुकम्म बंस कनकैस सुत जोगीरामहिंमुख्य क्रिय ॥  
यह वीरधीर हड्डन उमगि चलि सव्हारि चतुरंगिनिय ॥२॥

[ दोहा ]

क्रोटापति जाजव मरघो, तासै तनय नृप भीम ॥  
बेसतरुन लै पट्ट बल, सो न तजत निज सीम ॥ ३ ॥  
बालकृष्ण निज व्यास अरु, फतेबंद कायथ ॥  
बुंदिय पठये भीमनृप, करन साम नय कथ ॥ ४ ॥  
आय दुँहुँन किन्नी अरज, कांटा इकशन लेहु ॥  
मुलक और सबधी नजरि, निज गिनि धरहु सनेहु । ५ ।  
नाथाउति नृपमात तव, अरज न मन्नी एह ॥  
हिंदुनके दिन पत्तरे, उपजत लोभ अछेह ॥ ६ ॥  
तमकि तथ दोऊरसचिव, पछे निज पुर पत्त ॥  
भक्की भूपति भीमसाँ, रन मंडहु अंबुरत्त ॥ ७ ॥  
इत बुंदियतै उमडि दलँ, चम्भलि उत्तरि चँडै ॥  
गंजन जोगिघराम गो, भिरत अर्थ भुजदंड ॥ ८ ॥

( मुक्तादाम )

सज्यो उत भीम महादँल खूर, गज्यो इत जोगिघराम गरूर ॥  
कचोदियखेट मिले दुव आय, दये दँल दोउन बाँजि उठाय ॥९॥  
वजी रन गीठँ मची धमचक्र, चललल छोगिर्ष लागि लचक्र ॥

? कनकसिंह का पुत्र २ सेना ॥ २ ॥ ३ उल्ल रामसिंहका पुत्र भीमसिंह  
तरुण अवस्था में था तो भी ॥ ३ ॥ ४ राजा भीमसिंह ने कीर्ति के कथन से  
मिलाप करने को भेजा ५ अरण्य जात्र कर ॥ ५ ॥ ६ बुधसिंह की माता ने  
॥ ६ ॥ ७ तहाँ क्रोध करके ८ कहा ९ युद्ध में अंबुरत्त हाँकर युद्ध रचो  
॥ ७ ॥ १० सेना ?? भयंकर (यह यातो सेना का विशेषण है अथवा चाम-  
ल नदी का विशेषण है) १२ आकाश से ॥ ८ ॥ १३ भीमसिंह १४ बड़ी सेना  
१५ कचोदीखेड़ा में १६ सेना में १७ घोड़े उठादिये ॥ ९ ॥ १८ चल पूर्वक प्रहार  
अथवा निरंतर प्रहार १९ भूमि चलायमान होकर रुकने लगा

कोधपुर जैपुर दोनों राजाओं का पछि चकना] सप्तमराशि-अष्टादशमयूख [३००९]

खटकिय हँडन हडन खग्ग, मचकिकय पब्बय लौ डगमग्ग ॥१०॥

बडेबल भीम करी हतबाह, कटे बहु बुंदिय सेन सिपाह ॥

तिलतिल तुट्टिग स्वामिय काम, परयो कनकाउत जोगियरामा ॥११॥

दयो सत्र बुंदिय सेन बिगारि, जयो नृप भीम हजारन मारि ॥

उतँ सु कबंध रु कूरम नत्थँ, गये दुव मेकलजा लग सत्थ ॥१२॥

तथापि न साह भयो अनुरत्त, चलयो दरकुंचन जात उमत्त ॥

वहै सरिता तत्र साह उतारि, फिरे दुव भूपति डेरन जारि ॥१३॥

मिलयो नृप रान इहाँ अनुरत्त, उदैपुर हँदरकुंचन पत्त ॥

इते दुलही नृप बेघम व्याहि, चलयो जवनीधिप सेवन चाहि ॥१४॥

लयँ त्रय शानिन साँरँ संग, मिलयो जवनेसहिँ धारि उमंग ॥

गयो दरकुंचन दक्खिन साह, सजे दल सब्बलँ सूर सिपाह ॥१५॥

( दोहा )

कामबखस निज भ्रातहो, दक्खिनधर रखवार ॥

भागनगर बीजापुररँपँ, हुव तिहिँ सिर हुसियार ॥१६॥

विक्रमनृप परमारभो, उज्जइनीपुर ईसा ॥

ता पीछँ नृप भोज भो, धारानगर अर्धास ॥ १७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दीप  
तिबुधसिंहचरित्रे कोटारावभीमसिंहस्यकोटाविजयार्थप्रस्थितबुन्दी  
सैन्यनिरसनमष्टादशो मयूखः ॥ १८ ॥

१हाडों के खड्ड हाडों पर खटके ॥१०॥ २तूटा (मारागया) ॥११॥ ३ बिजई हुआ ४  
भीमसिंह ५ कछवाहों का नाथ (पति) ६ नर्मदा तक साथ गये ॥ १२ ॥ ७  
तोभी = अनुकूल ८ उन्मत्त १० वह नर्मदा नदी ॥ १३ ॥ ११ वादशाह को  
सेवन की इच्छा से ॥ १४ ॥ १२ बुधसिंह १३ खचल (बलवान्) ॥१५॥ १४ पति  
॥ १६ ॥ १७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के भूपति  
बुधसिंह के चरित्र में कोटा के राव भीमसिंह का कोटा विजय करने को  
गईहुई बुन्दी की सेना को नष्ट करने का अठारहवाँ १८ मयूख समाप्त हुआ

आदितः षट्पञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५६ ॥

( दोहा )

इन लग हिंदुन अदरयो, छकि उचित रन छोभ ॥  
 इन पिच्छेँ नय धरम तजि, लग्गे केवल लोभ ॥ १ ॥  
 पृथ्वीराज चुहान नृप, जयचंदह रडोर ॥  
 इनलगहू कछु अनुसरी, हिंदुन धरम हिलोर ॥ २ ॥  
 तिनपिच्छेँ तुरकान हुव, निजं नय धरम निधान ॥  
 पीठिन कछु अंतर परत, छंडी तिनहु कुरान ॥ ३ ॥  
 इत बुंदियपति अदरिय, कोटाउप्पर कोप ॥  
 इत आलम रन अंकुरयो, लाज धरम करि लोप ॥ ४ ॥  
 कामबखस आलम अनुज, अगैँ जिहिँ अवरंग ॥  
 भागनगर बीजापुरह, सूबा दिय हित संग ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

तुरकन दिन बिपरीत आय आलम तिहिँ उप्पर ॥  
 धर दक्खिन धमचक्र सजिय बीजापुर संगोर ॥  
 बुधसिंहहिँ बलईस विरचि अति कोप बढारयो ॥  
 कामबखसकोँ पकरि सुद्ध अगस बिजु मारयो ॥  
 बप्पके दये छलकरि कुंविधि लिप बीजापुर भागपुर ॥  
 सूबा सम्हारि सजिय अमल आलम अनय उमंगि उर ॥ ६ ॥  
 इत कूरम रडोर आय विरहित अति आतुर ॥  
 मेकलजासन सुररि उररि हुव पत्त उदैपुर ॥

और आदि से दोसौ छप्पन २५९ मयूज हुए ॥

१ युद्ध में उचित क्रोध करना इन तक ही रहा २ नीति ॥ १ ॥ २ ॥ अपनी नी-  
 ति और धर्म में निधान ऐसे ३ यवनों का राज्य हुआ ॥ १ ॥ ४ युद्ध में खड़ा  
 हुआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५ युद्ध ६ सेनापति ७ सुर्व ने ८ अपराध बिना ९ पिता को  
 दिये हुए १० बुरी रीति से ११ अनीति से ॥ ६ ॥ १२ अपने राज्यों की आमद के  
 विरह से पीड़ित होकर १३ नर्मदा से १४ उड़ंड होकर (धीठता से) १५ प्राप्त हुए

दहवारी दिस इक्क हुते बहुरा जु विनायक ॥

आय रान अमरेस तत्थ भिंटयो छल तच्छक ॥

तीनइहि नरेस कंकान तजि मन प्रसन्न वत्थन मिले ॥

रानहिं निहारि भूपन दुहुनरखूविंय हिय पंकज खिले ॥७॥

( दोहा )

अगँ रान प्रतापसे, भये अरौतिन भीम ॥

आयसहू नहि अहरयो, साहनको जिन सीम ॥ ८ ॥

साह सिकंदर जुलिकरन, अरु गज्जन गोरीस ॥

अगँ हिंदुन जितिकेँ, भये प्रबल भुव ईस ॥ ९ ॥

तिनतँ अबलग नहिं तक्रयो, सीसोदन गिनि साँह ॥

यह कुल राउल वरूपको, रक्खँ हिंदुन राह ॥ १० ॥

पुर आमैर रु जोधपुर, साह सुभट सरसाय ॥

आलमतँ अब तोरिकेँ, उभयउदैपुर आय ॥ ११ ॥

अमर रान अति सोद करि, भिंटयो सनमुख आय ॥

कूरम तँहँ जयसिंह कछु, चरनन हत्थ चलाय ॥ १२ ॥

पकरि हत्थ हियलैय तव, कहिय रान अमरेस ॥

भूपति में पावन भयो, आवन दुँहुनअसेस ॥ १३ ॥

( पट्पात )

इम मिलाप करि रान आय तिनसहित उदैपुर ॥

महलन परिखैद मंडि उभयरबुल्ले अवनीसुर ॥

वाहिर परिखद लांघि रान सम्पुह पुनि आयो ॥ ॥

१ वहीरा विनायक नामक [गणेश] २ छल को काटनेवाला [यद् महाराणा का विशेषण है] ३ घांड़े छोड़ कर ४ खुशी से ॥ ७ ॥ ५ शत्रुओं को भयंकर रूप ६ दुकम ॥ ८ ॥ ९ ॥ ७ वादशाह अर्थात् उनको सदैव ही शत्रु ही समझे वादशाह कभी नहीं सज्जे ८ वापा राउल (इनका नाम जेहेन्द्र और उपपद वापा था) का कुल ॥ १० ॥ ९ वादशाह के उभराय ॥ ११ ॥ १० मित्रा ॥ १२ ॥ ११ हृदय से लगाकर १२ अपरसिंह ने ॥ १३ ॥ १३ राजा

करि जुहार कर सीस रक्खि बहु मोद बढायो ॥  
 कर दुहुँन<sup>२</sup>थंभि निज संग करि हुलासि खास परिखद हलिय ॥  
 उमराव बुल्लि निजनिज उचित करन मंत एकैत्त किय ॥१४॥

( दोहा )

बहिर्ना बुद्धिं व्याहि इत, देवसिंह तखतेस ॥  
 वेद्यमतें इत आयकै, गिह्यो गन नसेस ॥ १५ ॥  
 दिलाखुसाल प्रासादकं, गोख मध्य पर्यधारि ॥  
 बैठ भूपति तीन<sup>३</sup>हहा, चोरों गहग डारि ॥ १६ ॥  
 मध्य रान अमरेम अरु, कूरम नृप दिस वाम ॥  
 दकिखन दिस गहोर नृप, इम रहि सज्जिग सार्म ॥ १७ ॥

॥ पट्टपातु ॥

कूरमपति करजोरि कहिय सीसोद नृपति प्रति ॥  
 तुरकनको नहिँ तोरि भयो सव जोर मंद गति ॥  
 राजाकुल तुमरो सुँ हह हिंदुन तुम रक्खै ॥  
 जोखी दिल्हिय जार प्रबल आनन तुम पक्खै ॥  
 साहसों तोरि हस आय इत राज धरम साहस परखि ॥  
 हिंदुन हँकारि हिंदुज अवनि हिंदुनपति भुग्गहु हरखि ॥१८॥

( दोहा )

इत बुल्लयो रघोरनृप, हम रावरे सुभँट ॥  
 भुग्गहु अज्जाउत्त भुव, ताहि दिल्हिय पुर पट्ट ॥ १९ ॥

( सुक्तादाम )

१ मंत्र (सलाह) करने को २ एकत्र (इकट्ठे) ॥ १४ ॥ ३ शीघ्र ४ मिला ॥ १५ ॥  
 ५ दिलाखुशाल नामक महल के अरोमों से ६ पधार कर ॥ १६ ॥ ७ अमरसिंह  
 ८ मिलाप किया ॥ १७ ॥ ९ प्रताप १० सो ११ घोषित (स्त्री). दिखी रूपी स्त्री  
 है सो तुम जैसे प्रबल जार का १२मुख देखती है १३ हिंदुओं को बुलाकर हि-  
 न्दुओं की भूमि को १४ है हिन्दुओं के पति हर्ष के साथ भोजो १५ उमराव १६  
 आर्यावर्त की भूमि ॥ १९ ॥



यहँ सुनि रान कही अमरेस, न मैं पुरदिल्लिय जोग्य नरेस ॥  
 सुनै हम दिल्लियको दसतूर, रहो सब सांजलि साह हजूर ॥२० ॥  
 प्रवेसत सांयुध इक्क न आम, सजैँ सब बारहि बार सलाम ॥  
 जहाँ विनु आयसँ बुल्लि सकैँन, नमैँ इकटक निहारत नैन ॥२१ ॥  
 जहाँ नहिँ बैठक दुख दुँरूह, तरज्जत तंडिँ नकीवन जूह ॥  
 चलैँ सब पैदल आनन अगग, प्रभूजिम मन्नि पँलोतत पगग ॥ २२ ॥  
 पठावत नारिनकाँ नबरोज, उठावत पतनकाँ हतओज ॥  
 बजावत बंबँ न जावत बार, सजावत पुत्रिन व्याहिँ सिंगार ॥२३ ॥  
 सुनौँ यह साहनको दसतूर, हलैँ सब हिंदुव धुजि हजूर ॥  
 प्रभुँपन मिच्छन भोग्यहिँ एह, लिख्यो विधि हिंदुन गोधि न लेहँ २४  
 रु कोउ करैँ इम हिंदुव राज, भिरैँ तव जानि असूधन भाजैँ ॥  
 हमैँ तसमाँत न दिल्लिय हाँस, दहँ घर रक्खन ही निस द्यौँसा २५  
 रु जो दह दोउनको मत एह, गिनौँ तब दिल्लियही यहँ गेह ॥  
 रजुँ तुम साह उथप्पन राज, उदैपुर ही तब दिल्लिय आज ॥२६ ॥  
 पुराँ नृप कूरम माँन जु किन्न, पधारि सुधारि यहैँ तुम लिन्न ॥  
 अबैँ दह अप्पन ज्यौँ जस होय, जथौँ करिये बल कालहिँ जोया २७ ॥

१ हाथ जाँडेहुर ॥ २० ॥ २ आधुध सहित ३ बडी सभा में ४ विना  
 आज्ञा बोल नहीं सकता बादशाह के देखते ही नेत्र नहीं टिकता कर ५ भु-  
 कते हैं ॥ २१ ॥ ६ कठिनाई से तर्कना में आवै ऐसा दुःख ७ गर्जना करके  
 नकीबों का समूह डराता है और सुख आगे मथ पैदल चलते हैं ८ स्वामी  
 के समान आन कर ९ पैर दवाते हैं अथवा पग पँपोलते हैं ॥ २२ ॥ १० नगारा  
 ११ उनसे विवाह करके पुत्रियों को शृंगार कराते हैं ॥ २३ ॥ १२ यह स्वामीपन  
 म्लेच्छों के भोजने योग्य ही है १३ ललाट में नहीं लिखा १४ लेख ॥ २४ ॥ जाति  
 की अज्ञाता के १५ पात्र १६ इस कारण हज्र को दिल्ली की चाह नहीं है १७ घर की  
 रक्षा में ही जलते (छीजते) हैं ॥ २५ ॥ १८ इस घर (उदैपुर) को ही दिल्ली जा-  
 नों ॥ २६ ॥ १९ पहिले २० तुम्हारे प्रपितामह राजा मानसिंह ने जो किया  
 था (मानसिंह ने बादशाह अकबर की सेना का सेनापति होकर महाराणा  
 प्रतापसिंह से युद्ध किया था और सामिल भोजन नहीं कराने के कारण रा-  
 खा की पुत्रियों को यवनिये बनाने का भय दिखाया था) २१ जिस प्रकार ॥ २७ ॥

बयो पुनि कूरम भूप वृत्तंत, भली सबही करिहै भगवंत ॥  
अवैकरि हिंदुन इच्छत \*अत्थ, सजै पुनि आलमपै निज सत्थ ॥

( दोहा )

हिंदुव चाकर रानके, इक परंतु यहँ ओर ॥  
आलमतँ हम तोगिकै, लियउ रावरो जोर ॥ २९ ॥  
देस दुहुनरके खालसै, ओर न लैन उपाय ॥  
ताँ हम जितैँ मुलक निज, जो दल देहु सहाय ॥ ३० ॥  
जित्ति मुलक पुनि कटक सजि, व्है दुवैरान हजर ॥  
दक्खिनपर दरकुंच वारि, जित्तिहँ साह जरूर ॥ ३१ ॥  
रानकहिय कछुदिन उभयर, रहहु अत्थ गृह जानि ॥  
पुनि जो जो भवितव्यहै, लेहँ सबहँ प्रमानि ॥ ३२ ॥  
वाँदिन डेरन सिक्ख दिय, दोउनतँ कहि एह ॥  
इक१इक१गज द्वैरुँ अरव, दोउरन अप्पि सनेह ॥ ३३ ॥  
अतरपान पुनि बुल्लिकैँ, इन ढिग रक्खे रान ॥  
तव दोउनरकर ओडि कहि, देहु अप्प कर दान ॥ ३४ ॥  
रान तर्थापि न पान दिय, पानदान गहि हत्थ ॥  
जिहँ अंतर कर दुहुँनरके, संग्रहि धरिय समत्थ ॥ ३५ ॥  
दोउरनृप इम पान लै, निज निज डेरन आय ॥  
दूजेदिन किय गोठि तव, रान अमर रस भाँय ॥ ३६ ॥  
दोउरनृप बुल्लिल्लय बहुरि, पति परिय चहुँ ओर ॥  
करिय अरज तँहँ रान प्रति, पुनि कूरम रठोर ॥ ३७ ॥  
इच्छथाल विच अप्पनाँ, हमसँह भोजन होय ॥  
अवतँ संतँन एकता, करहु न संसय कोय ॥ ३८ ॥

\* यहाँ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ १ जाँधपुर और आसंग के दोनों राजा ॥ ३१ ॥  
२ यहाँ इहोनेवाला ॥ ३२ ॥ ३ उस दिन ॥ ३३ ॥ ४ बुलाकर ५ हाथ माँड(फैला)  
कर ६ आप के हाथ से ॥ ३४ ॥ ७ ताँभी ८ पकड़ कर, उस समर्थ (महाराणा)  
से ॥ ३५ ॥ ९ स्नेह की रीति से ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ११ हमारे साथ १२ निरंतर ॥ ३८ ॥

सुनि बुल्लयो \*भट रानको, दढमन गंगादास ॥

सगताउत पुरवानसी, पति कछु ँरोस प्रकास ॥ ३९ ॥

‡कूरम पति यह रावरे, पुरुखन अगँ कीन ॥

तोहू कुल उज्जल यहै, भो नहिँ धरम बिहीन ॥ ४० ॥

॥ पट्टपात् ॥

अगँ अकबरसाह लैन जुगगज लुभाये ॥

भगवतसिंह रु मान पिता सुत उभय२पठाये ॥

दरकुंचन इन दोरि जोर जिती गुज्जरधर ॥

पलटे पुनि सुत जनक मिजल पंचक५के अंतर ॥

भगवंतसिंह आयो प्रथम दिल्लीय जावत रान घर ॥

जिनदिनन छत्र राना उदय धारन हिंदुन धर्मधर ॥ ४१ ॥

नृप भगवंतहिँ रान जाय सम्मुह गृह लायो ॥

उनहू भोजन करन रान जुत प्रसंभ रचायो ॥

दिय उत्तर तब रान देत तुरकन तुम पुलिय ॥

हम हिंदुव अकलंक धरम छंडै न जात जिय ॥

तसंभात सुनहु दोउन२असन इक्क१थाल नाँदिन उचित ॥

यहसुनि नरेस भगवंत तब पृथक जिम्मि बुल्लयो विदितं ॥ ४२ ॥

॥ पञ्कटिका ॥

नृप सुनहु पंच बामेर विहाय, सुत मान इहाँ अँहँ सुभाय ॥

\* महाराणा का उमराव ँ क्रोध करके ॥ ३९ ॥ † हे कछवाहाँ के पति (जयसिंह) आप के बडाउवाँ ने भी पहिल ऐसा ही किया था ॥ ४० ॥ ? खानसिंह २ गुजरान ३ पुत्र और पिता ४ पांच दिन के अंतर \* से ॥ ४१ ॥ ५ दठ किया ६ निष्कलंक ७ इत्तफारण मे ८ भोजन ९ भिन्न (बुदा) जीमकर १० प्रसिद्ध बोला ॥ ४२ ॥ ? १ पांच दिन बिनाकर ? २ सग पुत्र मानसिंह

छठे राशि की टीका के नोट में हम लिख आये हैं कि आमेर के राजा मानसिंह के साथ भोजन नहीं कर ने का विरस महाराणा प्रतापसिंह से हुआ था उदयसिंह का नाम भूट से लिखागया है सोही यहां जान ना चाहिये ॥

वासों नरेस ठहै हठ प्रमत्त, बुल्लहु न भुल्लि असी \*कुवत्त ॥ ४३ ॥  
 यह कहि नरेस भगवंत वत्त, दरकुंचन दिल्लिय नगर †पत्त ॥  
 दिन पंचक अंतर कुमर मान, भिटयो पुनि ‡सम्मुह जाय राना४४।  
 मिलि तासँ विरचि अति मानुहारि, पुनि रान स्वगृह तिनै जुत पधारि  
 रचि गोठि विविध व्यंजन रसाँल, बैठारयो मानहिँ पृथक थाला ॥४५॥  
 रहि रान दिट्टि परुसनँ लगाय, तब कुमर मान बुल्लयो हिताय ॥  
 तुमकोहु उचित बैठन नृपाल, भुज्जँ दुव भुज्जन इक्क थाला ॥४६॥  
 तब कहिय रान राजाधिंराज, एकासन व्रत में करिय आज ॥  
 कूरम तथाँपि बुल्लयो निहोरि, सागँस न होत व्रत इक्क छोरि ॥४७॥  
 हमरो हुव आगम समय पाय, है इक्कथाल भोजन हिताय ॥  
 इस प्रसँभ पुंज मानहिँ निहारि, पटु भान उँदय बुल्लयो प्रचारि ४८  
 तुम लाभ धारि लिय जवन रीति, हमरे घर हिंदुन धर्म नीति ॥  
 तुम अधम जाँमि दुहितै कलत्रँ, तुरकन समापि हुव सचिवतत्रा ४९।  
 अकलंक यहै ईकलिंग अँन, तसमातँ संग भोजन बनँ न ॥  
 यह सुनत मान कुप्यो कराल, बुल्लयो सु उट्टि छँकि छोरि थाल ५०  
 तुम तियन पारि तुरकन प्रसंग, कछु दिनन अंत खँहँ बैँ संग ॥  
 यह काह् द्रुत दिल्लिय मान जाय, अकवरहिँ अत्थ आँन्यो कृपाय ५१

\*ऐसी खोटी चार्ता भूलकर भी मत कहना ॥ ४३ ॥ † प्राप्त हुआ (पहुँचा) ‡  
 सन्मुख जाकर मिला ॥ ४४ ॥ १ उस मानसिंह से २ मनुहार ३ उस मानसिंह  
 सहित ४ रसयुक्त ॥ ४५ ॥ ५ परोसने में दृष्टि लगाकर ६ भोजन करें ७  
 भोजन ॥ ४६ ॥ ८ राजाओं के पति [महाराजा] ने कहा ९ दिन में एक समय  
 भोजन करने का व्रत १० तोभी कछवाहा बोला कि ११ एक व्रत छोड़ने से  
 अपराध नहीं होता ॥ ४७ ॥ १२ दिन के अर्थ १३ मानसिंह का हठ का समूह  
 देख कर वह चतुर १४ [महाराणा उदयसिंह] ललकार कर बोला ॥ ४८ ॥ १५  
 वहिन १६ चेष्टियों और १७ स्त्रियों को देकर वहाँ (यवनों के) सचिव हुए हो  
 और यह १८ एकलिंगेश्वर का घर [मेवाड़वालों के इष्टदेव एकलिंग महादे-  
 व हैं] कलंक रहित है १९ इसकारण २० क्रोध में पूर्ण होकर ॥ ५० ॥ २२ अब  
 २१ साथ खावेंगे ॥ ५१ ॥

बहु बरस रहिय चितोर जंग, शान न तथापि छंडयो स्वरंगे ॥  
 बिनु बित्त लहिय बरसन बिपत्ति, छिति हित तथापि कंपी नछत्ति।  
 यह कुल वहै हि निज नय उपेत, दुहितादि तुम सु तुरकान देत।  
 इकथाल असन तातै बनैन, भट हम निसंक मिथ्या भनैन ॥५३॥  
 यह सुनि कबंध कछवाह राय, स्वामि समय जानि रोस न दिखाय ॥  
 करजोरि कहिय दुवरनृपनफेरि, हिंदुन नरेस तुम धर्महेरि ॥५४॥  
 हम किय अधर्म गिनि बिभव हानि, मरजी सु करहु भट हमहिमानि ॥  
 अमरेसरान यह सुनि उदार, बुल्ल्योसु व्यावहारिक विचार ॥५५॥  
 मम गेह ओर नहिं तुमहिं देयं, इक बत्त सुनहु दुवरनृप अजेय ॥  
 सौपहु जो निजकर लिखित सत्य, अबतै न दैहिं तुरकन अपत्या ॥५६॥  
 तो दुवरसुतां सु दोउनरबिवाहि, देसहु लै दैहै अरिन दाहि ॥  
 सहभोजन तो नहिं उचित आहि, पत्रावलि जिम्मत हम सदाहि ॥५७॥  
 तुम डारि रजत विष्टर बिसाल, नगजटित मध्य धरि कर्नक थाल  
 इम भुज्जत तुरकन एधैमान, इत्यादि हेतु सह असन हयान ॥५८॥  
 करि लिखित देहु जो कथित चाहि, तो दैहिं सिक्ख पुत्रिन विवाहि  
 दुवरनृपन यहै सुनि अभनै किन्न, राम सु परसावन रहिय भिन्न ॥५९॥  
 नृप दुव जिमाय इम सिक्ख अप्पि, डेरन हैन आय रु मंत्र अप्पि ॥

१ तांभी २ अपनी धर्मपरायणता का रंग नहीं छोडा ३ क्षत्र ४  
 तोभी भूमि के अरि छाती नहीं कांपी ॥ ५२ ॥ ५ अपनी नीति सहि-  
 न ६ पुत्री आदि ॥ ५३ ॥ ७ सहन करके ॥ ५४ ॥ ८ उमराव जान कर ९ व्यव-  
 हार सम्बन्धी ॥ ५५ ॥ १० देने योग्य ११ किसी से नहीं जीने जावै ऐसे १२ अ-  
 पने हाथ का लिखा हुआ १३ सन्तान (पुत्री) ॥५६॥ १४ पुत्रियें हैं यो १५ आ-  
 मिल भोजन करना तो १६ उचित नहीं है १७ पातल (गुल के पत्र) का निर्मि-  
 त पात्र) हैं ॥ ५७ ॥ १८ चांदी का बाजोठ १९ लोहे का थाल २० भोजन कर-  
 ते हो २१ यवनों का पकाया हुआ [यहां 'इध एधन' इस धालु से एधमान शब्द  
 हुआ है जिसका अर्थ पकाना है] ॥ ५८ ॥ २२ अने कहा उसकी [विवाह की]  
 चाहना होवे तो २३ भोजन किया २४ न्यारे ॥ ५९ ॥ २५ इन दोनों राजाओं ने

यँहँ उभय साहसों तोरि आय, करि लिखित दैन इत इन कहाय ६०  
 अब करहि साह कुमहर अजेय, तसमांत रान कथितहि विधय ॥  
 यह सोधि लिखिय नयँ दुहुँन रूआदि, तुरकन न दैहिँ अबतँ सुतादि  
 कहिहँ जु गान धरिहँ सु सीस, इम लिखित ठानि दुव भुवअधीस ॥  
 यह लिखित रानकर दियउ आय, प्रभु रान सुनत विस्वास पाय  
 दुहिता दुहुँन रूव्याहन विचारि, बिरचिय बिबाह उच्छव बढारि ॥  
 कूरमनरेस यह समय पाय, प्रछँन्न रान प्रति कथ कहाय ॥६३॥  
 संग्रामसिंह पट्टप कुमार, सुहिँ तास जामि दैहो उदार ॥  
 सुनि रान बहुरि पछ्छी कहाय, इक लिखित ओर अप्पहु लिखाय ॥  
 याकै जु पुत्र जगदीस दैहिँ, वह मुख्य राज आमैर लेहिँ ॥  
 आमैरईस सुनि यह उपाय, लिखि स्वकर पत्र दिन्नों पठाय ॥६५॥  
 दुहिता स्वकीय जनिहँ सु पुत्त, आमैर पट्ट लहिहँ अभुत्तँ ॥  
 यह लिखित रान बंचि रू विचारि, निज पुँत्ति उचित कूरम निहारि

( दोहा )

निज पुत्तिर्ये संबंध तव, कूरम सैन क्रिय राने ॥  
 निज काकासुत पुत्रिका, दिय रठोरहिँ दाने ॥ ६७ ॥  
 चंद्रकुमरि कूरम लहिय, कृष्णाकुमरि रठोर ॥  
 इम बिबाहि दुव रू भुवअधीप, जचियँ सिक्ख इन जोर ॥६८॥  
 हँ टक दोलाजंत्र तव, दुहुँन रू गान नृप दिन्न ॥

१ महाराणा ने ॥६०॥२ इसकारण से ३ राना का कहना ही ४ उचित है ५ दोनों ने नीति को आगे करके ६ पुत्री आदि ॥ ६१ ॥ ७ भूपति ॥ ६२ ॥ ८ जानै ॥ ६३ ॥ ९ आप के पाटकी पुत्र संग्रामसिंह की पुत्री ॥ ६४ ॥ १० जयसिंह ने ॥ ६५ ॥ ११ आप की पुत्री १२ अशुक्त (नहीं भोगने योग्य अर्थात् छोटा हाँस पर भी आवैर का राज्य लेवेगा) १३ पुत्री यहाँ सामान्य रीति से पोती को पुत्री करके लिखा है ॥ ६६ ॥ १४ पुत्री का १५ से ॥६७॥ १६ भूपति १७ माँगी [इन, विवाह कीहुई कन्याओं के पल्ल ने, अथवा महाराणा के, पल्ल से ॥ ६८ ॥ १८ स्वर्ण का १९ हिंडोला [हिंडोलाट] ॥ ६९ ॥

दोनों राजाओं का सांभर पर आना] सप्तमराशि-एकोनविंशमयुख[३०१९]

दुहुँनशुल्य दायज अरपि, कुसल सिक्ख तव किन्न ॥६९॥  
सत्त सहँस ७०००निज दँल सबल, करि दुव२भूपन संग ॥  
रान सिक्ख देसन दई, अँवनी लैन अभंग ॥ ७० ॥  
तव दुव२भूपति सिक्खकरि, बढि चल्लिय बरजोर ॥  
छोनी दब्बत साहकी, उमँडिय संभर ओर ॥ ७१ ॥  
दुव२नृप इम दरकुंच करि, संभर उप्पर जात ॥  
नारनोल सय्यद सुनी, रँमा बिल्लुट्टन बात ॥ ७२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप-  
तिबुधसिंहचरित्रे दक्षिणगतालमशाहहतस्वानुजकामवस्त्रशभा-  
गनगरबीजापुरादान १ आलमशाहविरुद्धनर्मदाप्रत्यागतमैराधीश-  
जयसिंहयोधपुराधीशाजितसिंहोदयपुरागमन २ सहभोजनानंगी-  
कारापमानितलेखितयवनेन्द्रकन्याप्रदानप्रतिषेधपत्रोक्तोभयराज -  
महाराणामरसिंहनिजात्मजायुगलपरिणायन ३ पट्टपाभावेऽपित्ते -  
खितस्वदौहित्रामैरस्वामित्वहस्ताक्षरमहाराणामरसिंहस्वपट्टपुत्रसं-  
ग्रामसिंहकन्याजयसिंहपाणिपीडनवर्णनमेकोनविंशो मयूखः॥१९॥

१ सेना २ भूमि लेने को [अभंग, यह महाराजा का विशेषण है ] ॥ ७० ॥ ३  
सांभर नगर की ओर बढे [उठे] ॥ ७१ ॥ ४ सांभर लूटने की ॥ ७२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
बुधसिंह के चरित्र में, आलमशाह का दक्षिण में जाकर अपने छोटे भाई का-  
मवस्त्रश को मार कर भागनगर और बीजापुर लेना १ आमैर के राजा जय-  
सिंह और जोधपुर के राजा अजितसिंह का आलमशाह से विरुद्ध हांकर  
नर्मदा नदी से पीछे फिरकर उदयपुर आना २ महाराजा अमरसिंह का उक्त  
दोनों राजाओं को सामिल भोजन नहीं करा कर अपमान किये पीछे आगे  
कभी यवनों को पुत्रियें नहीं विवाहने का पत्र लिखा कर दोनों राजाओं का  
अपनी दो पुत्रियें विवाहना ३ अपना दौहिता पाटवी नहीं होने की अवस्था  
में भी आमैर के स्वामी होने के अचर लिखा कर महाराजा अमरसिंह का  
अपने पाटवी पुत्र संग्रामसिंह की पुत्री का जयसिंह से विवाह करने के वर्ण-  
न का उन्नीसवां १९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दासौ सत्पादन २१७

आदितः सप्तपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५७ ॥

[ पट्टपात ]

जाजव संगर जित्ति साह अति गंब्ब सम्हारयो ॥

संभर पिद्विख सहाय धरा जित्तन मन धारयो ॥

हुसनअली सय्यद नबाव आदिक सम्मत करि ॥

जित्ति सँजव जोधपुर धाय दक्खिन साहस धरि ॥

कूरम कबंध अवनपे इत अमररान पुत्तिनपरनि ॥

पुतनाँ प्रचारि लुट्टन प्रथम पत्ते लागि संभरसरनि ॥ १ ॥

[ दोहा ]

नागनोलपुर सैनपति, हुसनअलीके भ्रात ॥

धिंसीखान रु नूरदी, तँहँ पत्तो यह बात ॥ २ ॥

॥ पट्टपात ॥

हुसनअली सय्यद नबाव सुभटन अग्रेसर ॥

नागनोलके फोजदार ताके सांदर भैर ॥

धिंसीखान रु नूरदीन तिन बत्त सुनी यह ॥

लुट्टन संभर नगर सुपहु कूरम कबंध सह ॥

सजि तवदि गेन द्वादस सहस्र २००० रूपी नगर रक्खन चलिय ॥

इत नृपन लुट्टि संभर सहर कहँर काल बेहाल किय ॥३॥

( दोहा )

पुरहिँ लुट्टि दुवर नृप कहत, सय्यद पत्ते आय ॥

भट कूरम रहोरके, बुल्ले तिन विहसाय ॥ ४ ॥

मयूख हुए ॥

१ गर्भ २ बुधसिंह को अपनी सहाय पर रखकर ३ सहमत (सलाह) ४ शीघ्र  
५ भूपति ६ राखा धरसिंह की ७ सेना ८ प्राप्त हुए ९ सांभर के मार्ग में लग  
कर ॥ १ ॥ १० सेनापति ११ पहुंची ॥ २ ॥ १२ उमरावों में अग्रणी मुख्य १३ भ-  
ट [वीर] १४ सांभर नगर की रक्षा करने को चले. इधर काल रूपी १५ कोषकर-  
को इनने बुरा हाल कर दिया ॥ ३ ॥ ४ ॥



हरवै राउत दंक्रिये, ध्रातप करत उभेल ॥

श्रमजल हथ्य पर्साजिहै, मुँडि न पैहै मेल ॥ ५ ॥

सुनत एह सद्यद भटन, दिय उत्तर अति आघ ॥

उँधानता बिच छिडिजकै, नँहो दरित निदाघ ॥ ६ ॥

इम कहि बाजिन वग्गलै, तुहे दिंदुन सीस ॥

दँल दोउन धगचक बजि, ज्याँ कैटम जगदास ॥ ७ ॥

॥ पट्टपात् ॥

मिलि दिंदुन मुगलान धिठै रन रिठै रँमापुरि ॥

भिरि भट चंचल सयनै पयन चंचल जिम पातुरि ॥

लुत्थिन लुत्थि अँहुटि बुत्थि लुत्थिन भट कट्टिय ॥

इडुन खगग खनंकि रुंड मुंडन भुव पट्टिय ॥

प्रकिनिन डक डिंडिमि डगकि नचि भैरव डेरुव नदियै ॥

जेम बनिजकार टंडा ढरत इम अनीकँ भुव अछुदियै ॥८॥

॥ दोहा ॥

धैमीखान रु नूरदी, दुवर सद्यद लिय मारि ॥

हँस १०००सूर दुहुँ आरके, भरिगँ घोर खँग करि ॥९॥

म क्रम रहार लृप, पुगसंभर जय पाय ॥

दँली गहि दोउतर दई, लहँगे अँदर लौय ॥ १० ॥

॥ सारहा ॥

जेज निज देसन आय, दुवर नृप संभर लुट्टिकै ॥

धैर २५०० [गग्गी] १ पविश्रम के जल [पसीने] से ह. थकिनलै [रपट्टे] मे. इमकारण  
रत्नवार की सुंठ से मेल नहीं पावँगे अर्थात् हाथ से तरवार नहीं धारी जावँगे  
५ ॥ ६ क्रोध लुथि अ. नि में ललकर गरजा से ७ ड. वेगला जल (पमाना) ६  
८ होगया ॥ ९ ॥ = सेना १० जसप्रहार कैटम नामक दंतप और विष्णु भक्तनो  
युद्ध हुआ था तैमे ॥ १० ॥ १० धृष्ट (धोःठ) ११ वल पूर्वक प्रहार १२ नांभर १३ चंचल  
धों से १४ युद्ध करके १५ नादयुक्त किया अर्थात् गैरबने डेह (भैरव के वायु वि-  
लेश) को बजाया १६ वनजारा १७ सेना से १८ भूमि को अण्डाइन की ॥ ८ ॥ १९ भड़े  
मारगये २० भयंकर लड़ चलाकर ॥ ९ ॥ २१ दिल्ली लुथी खा के लहँगे (शायरे)

थानाँ दियउ उठाय, आलमके करि करि अमल ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

इत कोटापति भीम दिय, बुंदिय कैटक बिगारि ॥

जुज्झयो जुगियराम हद, मारि मरद तरवारि ॥ १२ ॥

धावर गंगाराम पुनि, सेनानायक होय ॥

कोटा उप्पर उप्परयो, उत्तरि चम्पलि तीर्य ॥ १३ ॥

कायथ घासीराम किय, पंचोलिय परधान ॥

मंलि बनिक हरिगम किय, गुज्जर कुमति गुमान ॥ १४ ॥

अलीखान अमिधान इक, जवन रुहिल्ला बुल्लि ॥

पंचसहस्र ५००० पति रक्खयो, खमग पताकन खुल्लि ॥ १५ ॥

यह सुनि कर्गार भीम नृप, धावर प्रति पठवाय ॥

वाँवा धावर हमहुकौं, रक्खहिँ बुंदिय रीय ॥ १६ ॥

जान्यौ धावर नीतिजंड, गुज्जर गहल गमार ॥

वावा कहिकहि जो लिखत, भिरै न सो रन भार ॥ १७ ॥

दौ मिलान बहु दिन रहयो, तव धावर नय हिन ॥

अलियखानको हँक चढयो, दोयश्मास दिन तिन्न ॥ १८ ॥

॥ पञ्चकटिका ॥

लहि समय भीम तव किय उपाय, बहु वित्त रुहिल्ला हित पठाय

अकिंखिय धावर प्रति वैदहु वेन, हक देहु न तो अबहम लौरै न १९

धावरहिँ कहिय यह अलियखान, जब किय कुंमंत्र गुज्जर अजान

में अग्नि लगा ही ॥ १० ॥ १ मारवाड़ और हुंहाड़ में अमल (अधिकार)

करके आलमशाह के आगे उठादिये ॥ ११ ॥ २ भीमसिंह ने ३ सेना को

॥ १२ ॥ ४ सेनापति ५ चामत नदी के जल को उतरा ॥ १३ ॥ १४ ॥ १

नाम • पाँच हजार सेना का स्वामी ६ आकाश मार्ग में ध्वजाएँ खोलकर

॥ १५ ॥ ७ कागज (पत्र) १० हँ वावा धाऊ [धाव का पति] ११ बुंदी का राजा

॥ १६ ॥ १२ नीति में मूर्ख उम धाऊ गुज्जर जाति वाले ने जाना कि ॥ १७ ॥

१३ सुकाम १४ तनवा ॥ १८ ॥ १९ भीमसिंह ने २० कहा २१ धाऊ से कही

॥ १६ ॥ १६ बुरीसलाह २० गुज्जर जाति के मुखने

बुंदिय भट बुल्लि रु कहिय एहु, मिलि सबहि जवन हक वित्तदेहु २०  
 जो वित्त तो न हय करम टारि, सब यांहि देहु भगनां वगारि ॥  
 सुनि यह कुमंत्र दुर्मन सिपाह, चढिचढि समस्त लागि घरन राह २१  
 तुरकन दिय धावर कैद धत्ति, यह खवरि देस दक्खिन हु पत्ति ॥  
 सुनि नृपति बुद्ध आयसँ पठाय, नहि लेहु मूढ धावर लुगया २२ ॥  
 बहुदिन तब धावर कैद लिन्न, हरिगमसाह पुनि अरज दिन्न ॥  
 तब हुकम पाय जवनन चुकाय, हरिराम लियउ धावर बुलाय २३  
 कोटा नरेस इम खगग आगि, हैरवेर कटक दिन्नां विगारि ॥  
 इत कामवखस सोदरहि मारि, निज अमल देस दक्खिन विधारि २४  
 दरकुंच उतरि रेवा दुरंत, उजैनि आय करि भ्रात अंत ॥  
 गिरिवर मुकुंददर मध्य होय, पुर पट्टनि चैम्मलि लंघि तोय २५  
 लकखेरिय गिरि दर कढि सुभाय, अजमेर पीर भिंठन चलाय ॥  
 सक सत्त तक्क मुनि इक्क १७६७मान, अजमेर आय दित्रोमिलान २६  
 तब बुद्धसिंहप्रति कहिय साह, कूगम कबंध किन्नां गुनाह ॥  
 संभैरहि लुट्टि लिय स्वैस्व देस, तसमातें जंग संडहु नरेस ॥२७॥  
 कहि भूप जियत अवरंगसाह, हिंदून कियउ सासन निवाह ॥  
 यह आदि मुलक हिंदुन असेस, विनु नीति अमल करनो न बेसँ २८  
 फरमान दे रु दोउन बुलाय, अबही नहिं रुक्कहु दुहुँन २९ ॥

अबग्रहु अनापें किय भुस्मि मौज. तिन सचन समप्पह ग्वग्गज २९

१ घना १० ॥ २ ऊँटों को छोड़कर ३ उदात्त होकर ॥ २१ ॥ ४ कैद में घालदिया  
 [रखादिया] ५ हृत्तम भेजा ॥ २२ ॥ ६ अरजी भेजा ॥ २३ ॥ ७ संगे भाई को  
 ॥ २४ ॥ = दूर है अंत जिसका ऐनी नर्मदा नदी ९ नाथ १० मुकुंदरा का घाटा  
 कोटा के राज्य में है ११ चामल नदी का पानी लांघकरा २२ ॥ १२ लकखेरी के  
 पर्वतों के दूरे से निकलकर १३ मुकाम ॥ २६ ॥ १४ सांभर का १५ अपने अपने  
 देश १६ इनकारण से ॥ २७ ॥ १७ आशा का पालन किया १८ उत्तम नहीं है  
 पावनी भाषा में वेस शब्द अधिक का वाचक है परन्तु यहाँ लकखेरी से उ-  
 त्तम के अर्थ में लिया है ॥ २८ ॥ १९ आमदनी २० चिता आमदनी २१ भूपतियों को

यह कहि पठाय फरमान तैत, सैभगहु लिखिय दुयश्नृपन पत्त ॥  
 हम कहि गुनाह सब कियउ दूर, आवहु निसंक तुम अब हजूर ॥ ३० ॥  
 यह सुनि कबंध कृपा चलाय, अजमेर साह भिट्यो सुभाय ॥  
 तब कहिय साह गिनि अप्प तोर, संभर दुहून श्लुट्टिय स्वगौरा ॥ ३१ ॥  
 कूम कबंध तब कहिय एह, निज स्वामि निमक खडो सनेह ॥  
 आज्ञा अधीन अब उभय रँधिँ, जँह स्वामि काम तँह लरन जाँहिँ ॥ ३२ ॥  
 आत्म सिराहि तब दुव नरेग, दोउन श्लिखाय दिय स्वस्व देस ॥  
 दतियादि राज अत्रहु लिखाय, सँह देस सबन दिन्ने बुलाय ॥ ३३ ॥  
 इम दिंदु नृपन निम्ब्यामि साह, गहि नीति सबन अप्पिय गुनाह ॥  
 दिन कछु विनाय अजमेर द्रंघे, अब आय तखत दिछिय उमंग ॥ ३४ ॥

इतिर्था वंशनास्करे महाचम्पूके उत्तरावणं सप्तमराशौ बुन्दीप-  
 तिवुधसिंहचरित्रे योधपुरराजराष्ट्रवराजितसिंहामैरराजकूर्मजयसिं-  
 हयोर्नरगण्णामैन्वसहायशाकम्भरीपुरिलुण्टनानन्तरस्वरचराज्य -  
 स्वाधिकारपापणा १ कोटाधिजयप्रस्थितबुन्दीसेनापतिधावरगंग-  
 रामगुर्तराज्य यवनकरकारानियतन २ अजमेरागतात्मशाहस्याहू-  
 ताजितसिंहजयसिंहभूपतिद्वयतद्राज्यपुनर्दानानन्तरेतरराजदतियादि

॥ २६ ॥ १ तटां २ बुधसिंह ने भी ३ पत्र ॥ ३० ॥ ४ मिला ५ अपना प्रताप  
 जानकर ६ अपने पल से ॥ ३१ ॥ ७ स्नेह पूर्वक निमक खाया 'सांभर नगर  
 में निमक की भौंल है इसकारण यहाँ निमक खाना कहा है' ८ हैं ॥ ३२ ॥ ९  
 दतिया को आदि लेकर १० देश सहित ॥ ३३ ॥ ११ सब के अपराध दिये  
 [चम्पू क्रियं] १२ नगर में ॥ ३४ ॥

थीवंशनास्कर महाचम्पू के उत्तरावण के सप्तम राशि में बुन्दी के नृपति  
 बुधसिंह के चरित्र में जोधपुर के राजा राठोड़ अजितसिंह और आमैर के  
 कछवाहा राजा जयसिंह का महागण्ण की सेना की सहायता लेकर सांभर  
 नगर को लूटकर अपने अपने दोनों राज्यों में अपना अधिकार करना १ कोटा  
 को विजय कर्ण को गयेहुए बुन्दी के सेनापति भ्रातृ भंगाराम गुजर का एक  
 यवन की कैद में होना २ साह आत्म का अजमेर आकर राजा अजितसिंह  
 और जयसिंह को पुताकर दोनों को दोनों के राज्य पीछे दिये पीछे अन्य रा

राज्यपुनर्दानवर्णनं विंशो लयुखः ॥ २० ॥

आदितीऽष्टपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५८ ॥

[ दोहा ]

नृप कूरम गडोर खिर, साह नजरि लखि मुद्द ॥  
हुसनअली सद्यद धरुयो, बंधुत बैर प्रबुद्ध ॥ १ ॥  
पति बुंदिय अरु जवनपति, जाजव रन दुव जिति ॥  
अव अभिमानन उफने, करन किति अपकिति ॥ २ ॥  
कामवखम जवतै हन्यो, तवतै आलम भुद्ध ॥  
वाहि मुद्धपन चिंतया, बुंदियपति अव बुद्ध ॥ ३ ॥  
पुर दिल्लीग दिन पत्ते, आलम गरव उपत ॥  
पुर बुंदिय दिन पत्तर, उपजिय धरम अद्वैत ॥ ४ ॥  
तुमक हिंदु सब संग तकि, उपजि अपुब्ध उछाह ॥  
करिय कुंच अजमेर सन, लिय दिल्लीय मग साह ॥ ५ ॥  
सेखाउत कूरम सहर, नाम मनोहरदंग ॥  
दिन दुवगतत मिलान दिय, आलम अधिक उमंग ॥ ६ ॥  
नृप कूरम गडोरको, दिय निज देसन सिक्ख ॥  
चित्त बुद्ध बुंदिय चहिय, तोरै गरव जय तिरख ॥ ७ ॥

[ पदपात् ]

किय विन्नति करजोगि रावराजा आलम सन ॥  
बंदगाहु किय बहत रचिय पुनि स्वामिधरम रन ॥  
पुगबुंदिय अव पाम सिक्ख वखसहु पैगाद भूम ॥

जाओं को दानिया आदि राज्य पीछे देने का वासधां २० मयूख समाप्त हुआ  
और आदि सं दोसौ अठारवन २५८ मयूख हुए ॥

१ क्रोधिम हुआ २ भाइयों का बैर समाप्त होने में ॥ १ ॥ ३ य दशाह ४ की-  
ति को अपकर्ति फाने के लिये ॥ २ ॥ ५ सूखे सह) ६ जानकर मूर्खपन का  
स्मरण किया ७ बुखसिह ने ॥ ३ ॥ ८ सहित धर्म की शक्तता ॥ १० ॥ ११ म-  
नोहरपुर १२ सुकाम ॥ ६ ॥ १३ बुधसिह ने १४ प्रताप ॥ १५ ॥ १५ प्रसन्नता से १६ से

भट विग्रह मम भुम्भि उतहु रचिहँ कछु उद्यम ॥

मम जैत नाम काका मरद वैरिसल्ल कुल उद्धरन ॥

\*सादी हजार १००० सुभाटन सहित रहिहँ हाजरि चतुररन ॥८॥

( दोहा )

यह सुनि बुंदिय सिक्ख दिय, बुद्ध नरेसहिँ साह ॥

जैतसिंह भट सँहँस जुत, संग लपो सु सिप्राह ॥ ९ ॥

इम आलम दग्कुंच करि, पुर दिल्लिय संपैत ॥

सत्त तक सुनि इल्ल १७६७सक, बँटो तखत विभँत ॥ १० ॥

फूँकसेर अजीम सुत, करि तिहिँ संग करीम ॥

पूरव सूना ताहि दिय, रक्खपो निक्कट अजीम ॥ ११ ॥

बिनु बिक्रम अरु नीति बिनु, रहत पिक्खि दिल्लिस ॥

दक्खिन कावल दोहु दिस, सीमा दबिय सँरीस ॥ १२ ॥

इत आलमनँ सिक्ख लै, चित इच्छत घर चाव ॥

चलिय मनोहर दंग तँ, बुंदिय दिस बुधराय ॥ १३ ॥

[ पट्पात ]

इक कनफटा नित्यनाथ कउलँन आचारिज ॥

हरि हँर धरम द्ढाय करत अधमन मत कारिज ॥

सिस्प बहुत तस संग सुभट हय भँय सिविकी सह ॥

जावत दक्खिन देस नृपहिँ मगमाँहिँ मिलयो वह ॥

गजमुखँहँ पुरोहित नृपति को कउलँसँग सेवत रहत ॥

तिहिँ जाय नाथ भिँट्यो तँरित परिय पाय कित्तिय कहत १४

( दोहा )

\* सवार ॥ ८ ॥ ६ ॥ ? संयास हया (लुख सं पट्ट्या) २ विशेष मत्त होकर ॥ १० ॥ ३ फाजवाहियर नामक ४ करीमखल नामक ॥ ११ ॥ ५ रीम (क्रोध) सहित ॥ १२ ॥ ६ राज बुधसिंह ॥ १३ ॥ ७ वासमार्गियों का ८ चंपखव ९ को द्ढाकर १० हाथी ११ पालखी सहित १२ पुरोहित का नाम है १३ वाममार्ग १४ मिला १५ शीघ्र १६ कीर्ति ॥ १४ ॥

नित्यनाथको \*गुरुव नमि, गजमुख नृप ढिग-आय ॥  
 सिद्ध मन्नि गोरकख राम, महिमा कहिय बनाय ॥ १५ ॥  
 यातैं †सकति प्रसन्न अति, याहि सकति बर दिह ॥  
 दै मनवांछित यह करत, सिद्धपहुकोँ लैम सिद्ध ॥ १६ ॥  
 अनुष्ठान जप दोम अरु, मंत्र जंत्र मतिमंत ॥  
 कहैं जाहि भलसहु करैं, कहैं जाहि भुवकंत ॥ १७ ॥  
 किय नृप गजमुख कथित सुनि, नाथ निकेत प्रयान ॥  
 बुंदियको विगारन समय, अरु भावी बलवान ॥ १८ ॥  
 नित्यनाथ ढिग जाय नृप, पैय परि करिय प्रनाम ॥  
 कहिय सिद्ध मोकोँ कगहु, भगहु भेट धन धाम ॥ १९ ॥  
 लकख १००००० रूपयन करैं सुलभ, जैसे ग्राम अनूप ॥  
 गहहु दच्छिना छत गिनि, रहहु इहाँ गुरु रूप ॥ २० ॥  
 नित्यनाथ यह सुनि कहयो, इन दक्खिन बसवान ॥  
 गुरु भृत सुनि हुन जातहैं, न रहैं तास निर्दान ॥ २१ ॥  
 हम भवेदोष पुरोहितहि, मुख्य भेल देजात ॥  
 यातैं सिच्छा लेहु तुम, देहु याहि वसु धात ॥ २२ ॥  
 यह कहि मैनु गजमुखहि दै, गयो कनफटा देस ॥  
 इत बुंदिय ढिग कुंचकगि, आयो बुद्ध नरेस ॥ २३ ॥  
 जब कावल नृप बुद्ध हो, तब निज सोदर जोधैं ॥  
 यहि तरंडै गुनगोरि दिन, किय जलकोलि कुंभोध ॥ २४ ॥

\*गुरु के समान ॥ १५ ॥ † शक्ति ? अपने बराबर का सिद्ध कहेता है ॥ १६ ॥ २  
 बुद्धिमान् ३ राजा करता है ॥ १७ ॥ ४ गजमुख का कहा हुआ २ उस नित्य-  
 नाथ नाथक नाथ के स्थान पर गया ॥ १८ ॥ ६ पैरों से पड़कर ॥ १९ ॥ ७ सु-  
 गमता से लाख रुपये प्रतिवर्ष हांसिल के आवैं ऐसे ८ छात्र (शिष्य) ॥ २० ॥  
 ९ गुरु को मेरा हुआ सुन कर १० इसकारण से ॥ २१ ॥ ११ आप के पुरोहि-  
 त को १२ शिक्षा १३ धन का समूह ॥ २२ ॥ १४ मंत्र ॥ २३ ॥ १५ सगा भाई  
 जोधसिंह १६ नाव पर १७ बुरी बुद्धि से ॥ २४ ॥

सुभट सचिव अनुचर सकल, बैठे पोतन ताथ ॥  
 नचि गावन पातुगि\*निकर, श्रुति स्वर तारन सत्य ॥२५॥  
 गज इकलिंगप्रसाद इक, इहि अंतर मयमत ॥  
 निजदायज आयो हुतो, उदयनैगते अत्त ॥ २६ ॥  
 वह वाग्न अनि दानछक, जल पीवन तँह आय ॥  
 ताल पिक्खि पातन निगत, कुप्पि चल्पो अतिकाय ॥२७॥  
 सत्य सकल आपोन थित, किन्ना कछु न उपाय ॥  
 निज पोतहि पकग निठुग, एतेमै गज आय ॥ २८ ॥  
 धाइभ्रात निज संगदो, तास भयो इक वार ॥  
 एनेविच उलटाइ इभ, बोरी नाव सु वार ॥ २९ ॥  
 नियति जोग सब तिरि कठिय, अंसु बंसु त्वरित अवेरि ॥  
 धाइभ्रात अरु अर्थ हुवर, स्वसंत निकासे हेरि ॥ ३० ॥  
 निकमत खिन गुँजर मरिय, अंसु निज कछु अवसेस ॥  
 सो बँउत्थि तसमान सो, पत्तो मृत परदेस ॥ ३१ ॥  
 अनुज गन जयसिंहको, भीग सुताँ यह तास ॥  
 जाँधे नारि सहयोगन वारि, पत्ता दिवँ पति पास ॥ ३२ ॥  
 यातँ पुर प्रविसन अबहु, सादर सुचँ न सनाय ॥  
 मति तँथापि संवाधि मन, इम पुरहिग नृप आय ॥ ३३ ॥

\*समूहों ग क म थ की बाईस अति और स्वर तथा तालों के साथ ॥२०॥ ?  
 मदमस्त २ जोधामिह के दहेज में ॥ २३ ॥ ३ वह एकलिंगप्रसाद हाथी ४ बड़े  
 शरीर वाला यह हाथी का किशोरण है ॥ २७ ॥ ५ पानगोष्ठी (मनडाल) में  
 ६ जोधसिंह की नाव का ही ॥ २८ ॥ ७ धाय भाई धाय का पुत्र ८ हाथी  
 ने ९ जल में यह नाव डुबा दी ॥ २९ ॥ १० प्राणरूति ११ धन को उधर अवेर  
 कर १२ जं.ध.सिंह १३ तूटने हुए (अन्तिम) स्वास लेनेहुओं को ॥ ३० ॥ १४  
 निशस्त्रने भयग गुणर जाति का धायभाई मर गया और जोधसिंह का कुछ  
 प्राण बाकी था सो १५ इसके चौध दिन मर कर १६ परलोक गया ॥ ३१ ॥  
 १७ बनेहा के राजा भीमसिंह की पुत्री १८ जोधसिंह की स्त्री १९ सती हो-  
 का २० स्वर्ग गई ॥ ३२ ॥ २१ शोक २२ ताँभी बुद्धि से मन का संभला कर



मुनि भूपहिं आवत सुभट, सचिव बेग \* समुपेत ॥

बुंदियपुर सन निकसि सब, सम्पुह आय सहेत ॥ ३४ ॥

नगर जैतगढ ताल तट, रहि नृप अंतप मिलान ॥

प्रात पुरहिं प्रविसत प्रकटि, गृहगृह मंगल गान ॥ ३५ ॥

कोटारन निज भट मग्घो, जुगियराम निसंकै ॥

ताको सुत सालम लयो, गजाँरुढ नृप अंक ॥ ३६ ॥

इम आलमके पैसे रहि, पंद्रह १५बरस विहाय ॥

हय खट सत्रह १७६ ७भई सित, प्रविस्यो बुंदिय आय ॥ ३७ ॥

बुंदियपुर प्रविसत समय, सउँन किद्ध मग रुढ ॥

विधवावाँल रजश्वला, पिकखी संम्पुह बुद्ध ॥ ३८ ॥

इत्यादिकं असउँन विविध, मन मन्ने नहिँ तँत ॥

प्रविस्यो उत्तरद्वार पुर, जाजव जय उनमत्त ॥ ३९ ॥

इतिश्रो वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तमराजो सप्तमराशो बुन्दीप-  
तिबुधसिंहचरित्रे अजितसिंहजयसिंहबुधसिंहार्थदत्तस्वस्वराज्य-  
गमनाज्ञात्मशाहदिल्लीगमन १ गुणगौरीदिनबुधसिंहानुजयोधसिं-  
हस्य नावा सह बुन्दीतडागमज्जनमूचनमेक विशोमयूखः ॥ २१ ॥

आदितः एकोनपठ्यधिकद्विशततमः ॥ २५९ ॥

॥ ३३ ॥ \* सहित १ स्नेह सहित ॥ ३४ ॥ १ तालाव के किनारे २ मुकाम  
॥ ३५ ॥ ३ बिना शंका चाला जोजीराम ४ तार्थो पर चहेहुए राजा ने गोद में  
लिया ॥ ३५ ॥ ५ अर्थीन ६ आदना सुदि पज में ॥ ३७ ॥ ७ शत्रुनों ने मार्ग  
रोका ८ चालविधवा और रजश्वला का बुधसिंह ने ९ सामने देखा ॥ ३८ ॥  
१० इनको आदि देकर अनेक प्रकार ११ अजकून १२ तहाँ ॥ ३६ ॥

आवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरराज के सप्तम राजा ने बुन्दी के भूपति  
बुधसिंह के चरित्र में अजितसिंह, जयसिंह, बुधसिंह इनको अपने अपने राज्यों  
की सीमा देकर वादगाह आलम का दिल्ली जाना १ गुनगौर के दिन बुन्दी के  
तालाव में बुधसिंह के छोटे भाई जोधसिंह का नाव नहित डूबने का सूचना  
का इलीसवां २१ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसा उनसठ २५९ म-  
यूख हुए ॥

( छप्पई )

बुंदिय गहिय बैठि बुल्लिल गजमुखह पुरोहित ॥  
 मन्नि गुरुव सुनि मंत्र कउल्ल मारग चाहयोचित ॥  
 लकख १००००० रूपय्यन मुलक हँथि सिबिका हय अप्पिय ॥  
 गहिय तक अधिकार बखासि गजमुख गुरु थप्पिय ॥  
 आचार अधम अहारि रहिय पंच मकारन मुदित मन ॥  
 बुंदीस बुद्धि बिगरी विविध कउल्ल कम्म लग्गो करन ॥१॥  
 जब काबल बुंदीस हुतो आलम अनुगामी ॥  
 तबहि रान जयसिंह गयो परलोक सु नामी ॥  
 तास तखत अमरेस रहयो रानाँ कछु बच्छेर ॥  
 पैतो वह परलोक सुनी बुंदिय यह संभेर ॥  
 लौ सिक्ख तबहि पटरागिनी रानाउति पीहर गई ॥  
 उम्मेदकुमारि तथहि अँचिर भावीबसि अँसु बिनु भई ॥२॥

[ दोहा ]

पटरागिनि पंचैत्व इम, लया उदैपुर जाय ॥  
 च्यारिलकख ४००००० मुद्रा प्रमित, रहयो तहाँ तस रँय ॥३॥  
 इहिअंतर बुंदीस प्रति, सगपनहित सरसाय ॥  
 पुर भनाय रडोरके, नारिकेल्ले हुत आय ॥ ४ ॥  
 सो सगपन स्वीकार करि, नारिकेल लिय भेलि ॥

१ बुलाया २ गजमुख नामक पुरोहित को ३ बासमार्ग ४ हाथी ५ पालकों ६  
 गादी पर बैठने तक का अधिकार ७ वाममार्ग के \*पांच मकारों में मन प्रसन्न  
 करके ८ धारियों के कार्य ॥ १ ॥ ९ अमरसिंह १० वर्ष ११ प्राप्त हुआ १२ च-  
 हुवान बुधसिंह ने १३ पाटगाणी १४ शीघ्र १५ प्राण बिना ॥ २ ॥ १६ मृत्यु १७  
 धन ॥ ३ ॥ १८ संबंध के लिये १९ नारियल (सम्बन्ध करने का प्रथम दस्तूर)

\*त्रामर्गियों में, मंडित १ मंत्र २ मंत्र ३ मुद्रा ४ चार मस्य ५ ए पांच मकार प्रसिद्ध हैं, जिनके  
 सेवन से वागीलोक मोक्ष होना मानते हैं, जिनका विशेष विवरण देखना हवे तो वागियों के 'भैरवी चक्र'  
 नामक ग्रन्थ में देखें ॥

मन परंतु लजि कउल मत, प्रथित बेदमत पेलिं ॥ ५ ॥

रहत चक्रपूजांनुरत, विधि नय धरम विसारि ॥

आलस मद्य प्रमाद करि, बिगरी राज सम्हारि ॥ ६ ॥

इहिंअंतर लाहोरतैं, दिल्लिय आय पुकार ॥

सूबा विच दल बंधि सब, सिख मिलि करत बिगार ॥७॥

नानक मत अहुंगामि सिख, अजितसिंह तिन ईस ॥

सो मंडत अप्पन अमल, सूबा खंडि सरीस ॥ ८ ॥

( पट्टात )

सुनत एह दिल्लीस अटकदिस कटक अगंजित ॥

सजि चल्लिय हुत साह राह उद्वत जय रंजित ॥

सबहि पुत्र निज संग हुरम बेगम सब हाजरि ॥

तीन लकख ३००००० तुकखार भार सतपंच ५०००ताम भीर ॥

संक्रमित साह आलम सबल क्रम प्रवेश लाहोर करि ॥

वह अजितसिंह सब सिखन हनि दंडिखंडिलिन्नो पकरि ॥९॥

( दोहा )

त्रासित करि सब सिखनतैं, नानक पंथ छुराय ॥

मुंडित डही मूछ करि, दंडि<sup>३</sup> दये निकसाय ॥ १० ॥

सालमार उपवन निकट, रहयो कछुक दिन साह ॥

शोध आये ॥ ४ ॥ १ प्रसिद्ध २ हटाकर ॥ ५ ॥ ३\*चक्रपूजा में ४ नफलत [भूल]

॥ ९ ॥ ७ ॥ ५ नानक के मत के साथ चलनेवाले १ रीस [क्रोध] सहित ॥ ८ ॥

७ घोड़े = चल कर १ सेना सहित १० दंडें लांघ कर [नानक मतवाले हाथों में

दंड रखने हैं] ॥ ९ ॥ ११ आसयुक्त करके १२ उन दंड रखनेवालों को डाही

मूछ मुंडवा कर निकला दिये [डाही मूछ का मुंडवाना नानक मत के विरुद्ध है]

॥ १० ॥ १३ सालमार नामक पाग के समीप

\* ग्रामवासियों के ग्रन्थों में "भैरवो चक्र" की पूजा की विधि विस्तार से लिखी है, वह यहां नहीं लिखी

जासकी जिस किलोंको देखना होवे वह "भैरवो चक्र" नामक ग्रन्थ में देखें, उसका सिद्धान्त नृसिंहे के

श्लोक से जानना चाहिये ॥

प्रवृत्ते भैरवाचके सर्वे वर्णा द्विजोत्तमाः ॥ निवृत्ते भैरवाचके सर्वे वर्णाः प्रथक् प्रथक् ॥ १ ॥

अब अभाग तुरकानको, उलटी करत \*इलाह ॥ ११ ॥

( पट्टपात )

कल्लिजुग भूपन कुमति †निलय नारिन भरि रक्खै ॥

रहै इक्क अजुरत्त अवर जारन तब चक्खै ॥

याँहाँ आलम संग निकर नारिन अंतहपुर ॥

तिनमें बेगम इक्क लज्ज लंघिय कामाँतुर ॥

सँहँसन सिपाह जाँमिक रहत रुद्धत तोहु न काँमरय ॥

निसदीह जार इच्छत निलज सरमा जिम सारदँ समय ॥१२॥

( दोहा )

गायक आवत गान गृह, सिखवन नारिन गान ॥

तिनविच पिक्खयो रूप बैर, गायक इक्क जवान ॥ १३ ॥

छन्नै ताहि कहायकै, रक्खयो चिकन दुराय ॥

प्रतिँसीरा पलटाय पुनि, लिन्नौ रत्ति बुलाय ॥ १४ ॥

दिन रक्खै संजूस धरि, रत्ति निकारै ताहि ॥

याँ बेगम दिल्लीसकी चिपी कलाँवत चाहि ॥ १५ ॥

पिक्खि सँउत्तिन इक्क निस, अक्खी आलम अग ॥

सुनत प्रमादी साह धकि, लयो ताँहि गृह मग्ग ॥ १६ ॥

साहाँगैम बेगम सुनत, छन्नै संगै लगाय ॥

जाय सँउँच संकँनिलय, आई ताहि दुँराय ॥ १७ ॥

( पादाकुलकम् )

\* ईश्वर वाची यावनी शब्द है ॥ ११ ॥ † स्त्रियों से घर भर रखते हैं, उन में एक से प्रीतिद्युक्त रहता है १ स्त्रियों का समूह २ जनाने में ३ काम से पीड़ित ४ पहरायत ५ काम का वेग ७ सरदक्तु के समय में ६ कुत्ती के समान ॥ १२ ॥ ७ कलावंत ८ गाना सिखाने के लिये १० देखा ११ श्रेष्ठ ॥ १३ ॥ १२ कनात में लंपटकर ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ सौनों ने १४ उर्रा बेगम के घर का मार्ग ॥ १७ ॥ १८ वादशाह का आना १६ छाने अपने साथ लेकर १७ पाखाने जाकर १८ पाखाने में १९ उस कलावंत को छिपाआई ॥ १९ ॥

इहिँअंतर आलम तँहँ आयो, तिय जुब्बन \*तसकर नहि पायो ॥  
 तव नचाय †सोतिन डगतारा, †सउचगेह दिय सैन इमारा ॥ १८ ॥  
 सु लखि साह अक्खिय बेगम सन, मँ ड्वावरेकगद ॥ अज्जविकल मन  
 यह सुनि गायक मिच्छु विचारयो, खंजर दोरि साह हिय मारयो  
 रीढेक फारि पार वह फुट्टो, छिन अंतर आलम असु छुट्टो ॥  
 निर्याति जोग इम लेहु निहाँ, दिछीसहिँ गायक हनिडारै ॥ २० ॥  
 गायकहू नारिन गहि मारयो, साह कुबिधि मरि सुजस विगारयो ॥  
 अंतहपुर तव बजिगँ अचानक, इतउत रुदनराग उरअचानक ॥ २१ ॥

( पदपाठ )

हुरम हार-शृंगार तोरि झूरत तोबा करि ॥  
 झारिझारि बंगरिन परत लुट्टत उट्टत परि ॥  
 मोजदीन पट्टप कुमार यह सुनि हुँत धायो ॥  
 सुतो कुमर अजीम भुँद ताकँहँ हनिआयो ॥  
 लघुभ्रात दोय तिन सिर निलज पिल्लयो दल्ल हलकारिकै ॥  
 दोउनरमराय गहिय लई आजमँ अनय विचारिकै ॥ २२ ॥

( दोहा )

आलम मरन अपुँव हुव, फुट्टी दिस दिस वत्त ॥

\*झरी के जावन का चार साँतोंन जत्रों की पुनलियाँ का इमारा करके इतहारत में  
 हाने का इमारा किया ॥ १८ ॥ \*दन्तों के राग मँ 'आज' श्रुत्यु ॥ १९ ॥ २० वाँसे की [पीठ  
 की लंघा] हट्टी अथवा पीठ को फाड़ कर ३ प्राण ४ भाग्य के योग से ५ कलावत  
 ॥ २० ॥ ६ वज ७ रोने के राग और = छातिमों के होल ॥ २१ ॥ ६ फारसी में  
 तोबा शब्द परित्याग की प्रतिज्ञा का वाचक है जिमका अन्वय 'हार शृंगार-  
 र' के साथ है, अर्थात् हार शृंगार के परित्याग की प्रतिज्ञा करके १० शब्द ११  
 भूद [यहाँ भूद कहने का अर्थ यह है कि अजीम, आलमशाह का छोटा पुत्र होने  
 से वह पाठ का हकदार नहीं था तो भी उस सूखे ने वृथा मार डाला १० भेजी १३  
 सेना १४ आजमशाह के किये हुए अनय [अनीति] को विचार करके अर्थात्  
 आजम ने भी आलम के छोटे भाई होने पर दिछी के तखत का दावा किया  
 था इसीप्रकार ये भी कर बैठे तो आश्चर्य नहीं, यह जानकर ॥ २२ ॥ १५ अपूर्व

मोजदीन लयश्चात हनि, बैठा तख्त प्रमत्त ॥ २३ ॥

( षट्पात् )

आलम मृत सुनि अजितसिंह मरुदेस नरेसुर ॥

कारि फोजन दरकुंच आय अजमेर निडर उर ॥

लिन्नों \*बिंदुलि दुग्ग साह थाँनाँ हनि †संगर ॥

सूवा दन्वि †सजोर भयो बिनु संक गब्ब भर ॥

इत तक्कि छिद्र दक्खिन अर्वाणि मरहट्टन बल मंडयो ॥

जिततित उठाय दिल्लिय अमल छँलि कातरपन छंडयो ॥२४॥

( दोहा )

मँति प्रमाद आलम मरत दिल्ली तिय बरजोर ॥

तक्की मारि कटाँच्छ द्दग, सहर सितारा ओर ॥ २५ ॥

( षट्पात् )

देसदेस मचि दंगं चंग भूखन चमकाये ॥

पुरपुर धाटिन पात पयन घुग्घर घमकाये ॥

अलस अस अन्याय हावभावन बिसतारत ॥

आसवपान अपार मार आतुर द्दग मारत ॥

गनिकान विभव अधिकार गत चंडाँतक घुम्मर रचिय ॥

दिल्लिय नवोढ दुलहनि बनिय सहर सितारा बरन प्रिय ॥

( पहले किसी बादशाह का मरना नहीं हुआ ऐसा ) ॥ २३ ॥ \* अ-  
जमेर के गढ़ का नाम 'बीटली' है † युद्ध में † जोर [ बल ] सहित † भूमि  
में २ बह कर ३ काघरपन छोडा ॥ २४ ॥ ४ प्रमाद की बुद्धि से ५ कटाक्ष ॥ २५ ॥  
अथ यहाँ रूपक अलंकार से दिल्ली रूपी स्त्री का सितारा शहर को बरने का  
वर्णन करते हैं कि ६ उपद्रव (दंगा) मचा सोही तो ७ चंगे (सुन्दर) भ्रूषण च-  
मकाये और पुरपुर में ८ धाड़े (डाक) ९ पड़े बेही पैरों में गूघरे बजाये १० अ-  
त्यंत मद्य पीना ही कामदेव से पीड़ित होकर नेत्र चलाये [नजारे मारे] गनि-  
काओं को वैभव मिलना और राज्य के अधिकार [उहदे] मिलना ही ११ लह-  
ंगे [घागरे] की घुमर लगाई (स्त्रियों के समूह के नृत्य का नाम घुमर है) ॥२१॥

॥ दोहा ॥

मोजदीन इत आत हनि, बैठि तखत बनि बीर ॥

निलज दूर किन्नौं \*अनखि, आलमशाह वजीर ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

हुसनअली †आलमवजीर करि दूर ‡कुसिकखन ॥

जुलफकारखाँ नाम अवर थप्यो लखि §इकखन ॥

तजि पत्तन लाहोर रचिय दरकुंच गेह रुख ॥

अतिजब दिह्लिय आय पट्ट पायो सु परम सुख ॥

आसव ¶बिपान अनुग्त अति हठ प्रमत्त तय ३आत हनि ॥

गनिकान संग गाँदर रहत दिल्लिय पाँदप दीमँ बनि ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

नायँक लाडकपूर इक, गायक गँहिर गुमान ॥

तास लालबीबी बहिनि, अधिक रूप गुन आँन ॥ २९ ॥

पट्ट हुम्म ताकोँ करी, मोजदीन बस होय ॥

गलबाँही छिनछोरिकँ, कम्म सुनैँ नहिँ कोय ॥ ३० ॥

पादाकुलकम् ॥

नारिन संग फिरत काँतारन, नारिनहीमँ सहल सिकारन ॥

इक दिन बाग करी असदारी, नाजर संग तथा सब नारी ॥ ३१ ॥

पान कार्पिसायन अति किन्नौं, माँम चढन सासन पुनि दिन्नौं ॥

दिन बैला बसि केलि बिहाई, अपरअँन्ह संध्या अब आई ॥ ३२ ॥

\* क्रोध करके ॥ २७ ॥ † आलमशाह के वजीर को ‡ बुरी जिद्दा से [लोगों के खिम्बाने में] § परीक्षा करने के लिये अथवा अपने नेत्रों से देख कर ¶ विशेष पीने [अधिक पीने] में अनुग्त ? दिल्लीरूपी वृत्त का २ दीमँक (उदेही) ॥ २८ ॥ ३ कलावंतों का अफमर ४ कलावंत [गानकार] ५ गहरे घमंड वाला ६ घर अथवा नखरा ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ७ वज्रों में ॥ ३१ ॥ ८ मद्य-पान ९ सन्ध्या समय १० दिन का समय क्रीड़ा में बिताया ११ अपरान्ह स-

मोजदीन अतिपान विभक्तो, रहसि लालबीबी अद्युक्तो ॥  
 सोधि तास सिविका विच सोयो, जावतखिन काहू नहिं जोयो ॥३३॥  
 असवारीके समय अचानक, इत उत वजे चढनके आनक ॥  
 कहि कहि त्वरौ दरोगन किन्नी, सब हरमन सिविका कसि दिन्नी ॥  
 लौलौ चले कहार नृजानन, जोबत फिगत साहकोँ सब जन ॥ .  
 भटन लालबीबिय ढिग भास्यो, खोजन तब तहँ जायनिकास्यो ३५  
 खोलि बंध सिविका इक नाजर, आन्यौँ साह भटनके अंतरै ॥  
 अति अचेत सिविकाविच डारयो, बुहुहिं राज समरत विचारया ३६  
 आई तब दिल्लिय असवारी, मनजित साह रहै इम मारी ॥  
 दे अधिकार विभव सुखदायक, गुरुमंत्री किन्नेँ सब गायका ३७ ॥  
 दोहा—इत दिल्लिय इम मचि अनप, इत बुंदिय अवनीस ॥

साहबदादुर मिच्छे सुनि, सोचि रु छुन्प्यौँ गीस ॥ ३८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणं नाम ७ गणौ बु-  
 न्दीपतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहवाममार्गधारण १ नानकमतीयोप-  
 द्रवश्रवणालमशाहलाहोरगमन २, आलमशाहकलत्रोपपतिगाय-  
 ककरालमशाहपञ्चत्वप्रापण ३ इताद्युजत्रिकमोजदीनदिल्लीपट्टो  
 पविशन ४ अतिमद्यपमोजदीनगायककनीलालबीबिविशाभवनं द्वा-

न्ध्या [सायंकाल] ॥ ३२ ॥ १ विशेष मत्त हुआ २ एकान्त में ॥ ३३ ॥ ३  
 शीघ्रता ॥ ३४ ॥ ४ पालकियों को ५ नाजरों ने ॥ ३५ ॥ ६ उमरावों के भी-  
 तर ॥ ३६ ॥ ७ बादशाह के मन का जीतने वाली ८ महाजारी [मगी] गंग वि-  
 शेष जिसको अंगरेजों में प्लेग कहते हैं, यह लालबीबी का विशेषण है ९ ब-  
 डे सलाहकार सब कलावंतों को किये ॥ ३७ ॥ १० अनीति ११ मृत्यु ॥ ३८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के भूपति  
 बुधसिंहके चरित्र में, बुधसिंह का वाममार्ग धारण करना १ नानक मत वा-  
 ले सिक्कों का उपद्रव सुन कर आलमशाह का दिल्ली से लाहोर जाना २  
 आलमशाह की वेगम के जार [उपपति] एक कलावंत के हाथ से बादशाह  
 आलमशाह का मारा जाना ३ तीन छंदे आइयों को मार कर मोजदीन का  
 दिल्ली के तखत पर बैठना ४ अत्यन्त सखपान करनेवाले मोजदीन का एक



विंशो मयूखः ॥ २२ ॥

आदितः पष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६० ॥

दोहा ॥

मति बिगारि भजिं बाममत, सजि विधिरहित समाज ॥

आलस पर आसिक भयो, राजकाज तजि राज ॥ १ ॥

पट्टपात् ॥

हुसनअली सय्यद नबाव इक संत्र रचिय इत ॥

मोजदीनकोँ मत्त जानि चिंतिय प्रपंच चित ॥

पूरब पुर पटनाँ सु साहफूरुक अजीम सुव ॥

तव पत्रनँ मिलि ताहि भिरन आन्योँ दिल्ली भुव ॥

रन मोजदीन तासन बिरचि भजि बिल्लिय अंदर दुरघो ॥

लागि पिठ्ठि साहफूरुक सजव आय ताहि हनि अंकुरघो ॥२॥

दोहा ॥

सक नव खट सत्रह १७६९ समय, विक्रम हार्यन बट्ट ॥

मोजदीनकोँ मारिकेँ, वैठो फूरुक पट्ट ॥ ३ ॥

जुलफकारखाँ सचिव तस, हन्योँ सोहू हमगीर ॥

सय्यद फूरुकसाह किय, हुसनअली सु वजीर ॥ ४ ॥

पलटी गहिय तीन ३ इम, बरस इक १ के माँहिँ ॥

आलम पिच्छेँ मोजदी, अब यह फूरुक आँहिँ ॥ ५ ॥

बुध नृपकोँ याही बरस, भयो कुमर कुलभान ॥

कछवाही रानी उदर, देवसिंह अभिधान ॥ ६ ॥

होत जनम दिमदिस दये, लक्ष्मिन देम्म लुटाय ॥

कलावंत की पुत्री ताब बंधी के बसीभूत ताने का चार्ईसवाँ २२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौं साठ २६० मयूख हुए ॥

१ याम सत का लेवन करके ॥ १ ॥ २ पूनकगाह ३ पुत्र ४ पत्रों से मिल कर अर्धात्त लिखा पट्टी करके ५ पुत्र करने के लिये ६ उल पूनकगाह के ७ खड़ा हुआ ॥ २ ॥ ८ विक्रम के सय्यद के मार्ग से ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ १ सय्यद

जातकरम अरु दान जप, सबविधि पुण्य सधाय ॥ ७ ॥  
 कुमर जनम आभेरपुर, सुनि जयसिंह नरिंद ॥  
 पठये कुल पहिरावनी, दस १० हय दोय २ करिंद ॥ ८ ॥  
 मास तीन ३ रहि कुमर वह, छोरि गयो निज देह ॥  
 विगारि बाममग बुद्धमति, आलस गहिय अछेह ॥ ९ ॥  
 असो आलस अवर गत, सुन्यो न पिक्खयो रंच ॥  
 सातो ७ प्रकृति सम्हार नहिं, विगरत सबहि प्रपंच ॥ १० ॥  
 पुर बनाय संबंध भो, तिहिं पर लगन लिखाय ॥  
 रठोरनको खबरि दिय, आवत बुंदिय राय ॥ ११ ॥  
 विप्र पुरोहित निज बिबुध, नाम भवानीदास ॥  
 महडू केसोदास पुनि, कुल चारन मतिक्रास ॥ १२ ॥  
 ये दुव २ भूप तयार करि, पठये नगर बनाय ॥  
 लगन बेर हम आयहे, दिन्नी एह कहाय ॥ १३ ॥  
 द्विज चारन दुव २ जायके, भाखि लगन रहि तथ ॥  
 इत नृपको आलस अधिक, उपजत विविध अनर्थ ॥ १४ ॥  
 बहै लगन नृप चुक्किके, दूजो लगन दिखाय ॥  
 लगन पंचइम चुक्कयो, व्याहन गो न बनाय ॥ १५ ॥  
 द्विज चारन प्रति कहिय तब, पति बनाय करि रास ॥  
 अथ तुम सिर कन्या हनो, कै आनहु बुन्दीस ॥ १६ ॥  
 तब चारन तथहि रहयो, द्विज आयो नृप पास ॥  
 बुल्लयो अथ मरिहो न तो, व्याहहु आलस वांस ॥ १७ ॥  
 यह सुनि द्विज संकोच वारि, गो नृप नगर बनाय ॥

१ विधिपूर्वक ॥ ७ ॥ २ बड़े हाथी ॥ ८ ॥ ३ बुधसिंह की बुद्धि ॥ ९ ॥ ४ अन्य  
 में गया हुआ स्वामि, अमात्य, मित्र, कोश, राष्ट्र, दुर्ग, सेना ये राज्य के सातों  
 अंग हैं ॥ १० ॥ ११ ॥ २ पंडित ७ चारनों की एक शाखा का नाम है ८ बुद्धि का  
 प्रकाश करने वाला ॥ १२ ॥ १३ ॥ ६ अनर्थ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १० हे आलस्य  
 का स्थान ॥ १७ ॥

परनि सुता रहोरकी, विविध त्याग बंटाय ॥ १८ ॥

बुंदिय दिस पुनि कुंच क्रिय, अति आलस \*अलसात ॥

आत आत मगमाँहिं रुकि, बहु सुकाम रहि जात ॥ १९ ॥

चलत रुकत रुकि चलत इम, नगर मालपुर आय ॥

तहँ तडाग अंतर उतरि, कटकें सुकाम कराय ॥ २० ॥

व्याहयो मासतपरस्यँ बिच, साँह्यो अलस सुगाढ ॥

रहत मास पुरताल बिच, आयो सिर आषाढ ॥ २१ ॥

षट्पात् ॥

गरजि मेघ घनघोर ओर उत्तर सन आये ॥

अधिक मंडि आसाँर विहित संबर बरसाये ॥

आयो जल जब ताल तवहि स्पंदन मँगाय इक ॥

तिहिँ उप्पर थित होय रहयो बहु दीह आलसिक ॥

मालपुर सचिव यह सोधि मन कूरमर्पति प्रलि पत्र दिय ॥

उन कहिय नीर परिवाँह मग कहहु तब यह इन करिय ॥ २२ ॥

गीर्वाणाभाषा ॥ उपजातिः ॥

इत्थं स वक्षोद्वयसे कृपीटे रथस्थितो मालपुरातडागे ॥

बहून्यहानि ह्यवसत्प्रमत्तश्चिरक्रियो बिन्दुमतीक्ष्णितिशः ॥ २३ ॥

अनुष्टुप् ॥

तत्रैव फूरुके शाहे, जाते भटसहस्रभृत् ॥

स्वामिदर्शनसाकांक्षो, जैत्रसिंहः समागतः ॥ २४ ॥

॥ १८ ॥ \* आलस्य करता हुआ ॥ १६ ॥ ? तालाब के भीतर २ सेना का ॥ २० ॥ ३ फागुन में ४ उल आलस्य को गाढा (ढढ) पकड़ा ॥ २१ ॥ ५ मेघ धारा ६ उचित ७ जल ८ रथ संगवा कर ९ आमेर के राजा जर्घासिह प्रति १० जल निकलने के मार्ग [मोरी] के रस्त से ॥ २२ ॥ इसप्रकार वह छाती पर्यन्त जल आने पर रथ में बैठा हुआ मालपुरा के तलाब में मदीन्मत्त आलसी कुंदी का राजा बहुत दिनों तक रहा ॥ २३ ॥ वहाँ ही फरोखशाह के बादशाह होने पर हजार योद्धाओं को धारण करनेवाला और स्वामी के दर्शनों की इच्छावाला जैत्रसिंह आया ॥ २४ ॥ जिस पीछे आवण मास के आनं पर, आ-

वंशस्थः ॥

ततो नृपः श्रावणिके समागतै, बुन्दी समागम्य विषुप्तबुद्धिभृत्।  
आलस्यमासेव्य चिगक्रियेश्वरोऽवसद्यथापूर्वमवस्थितः पुनः ॥२५॥

प्रायो ब्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत मेरुनृप अजमेर लिय, तव विग्रह हुव एक ॥

रूपनगर रठोर नृप, राजसिंह किय टेक ॥ २६ ॥

मरुभूपति सौं नहिं मिल्यो, हठपूरव हमगीर ॥

साहहिं गिनि भानेज सुत, भो वह दिल्लिय भीर ॥ २७ ॥

याके अरु मरुईसकै, बनी नाहिं जब वत्त ॥

तव रजधानी संगलै, दिल्लियपुर वह पत्त ॥ २८ ॥

बुंइयहू तव आय वह, राजसिंह रठोर ॥

नहिं किन्नौं सतकार तम, बुद्ध अलस वरजोर ॥ २९ ॥

राजसिंह निज पुत्तिका, सगपन हित कहि वत्त ॥

सोहू नृप मन्त्री नहीं, अलस नारि अचुरत्त ॥ ३० ॥

पाय अनादर तव गयो, कोटापुर रठोर ॥

कन्या भीमहिं व्याहिकै, जुरि संडयो इक जोर ॥ ३१ ॥

रूपनगर पति रीति इहिं, भीम हितु करि मंत्र ॥

निज रजधानी संगलै दिल्लिय गयउ स्वतंत्र ॥ ३२ ॥

मरुनृपको बनि बनि पिंसुन, अनय साइसौं अकिख ॥

लक्ष्य का आश्रय लेकर, आलसियों का गिरासण, सोई हुई बुद्धि को धारण करनेवाला, राजा [बुधसिंह] जिसप्रकार पहिले स्थित था तिसीप्रकार बुन्दी में आकर फिर रहा ॥ २५ ॥ १ आरवाड़ के राजा ने रेकेशनगढ़ के राज्य के प्राचीन राजधानी का नाम रूपनगर है ॥ २६ ॥ २ राजधानी की हाथी घोड़ा आदि सब सामग्री ४ प्राप्नहुआ ॥ २८ ॥ ५ बुधसिंह ने ॥ २९ ॥ ६ आलस्य रूपा मन्त्री से अचुरत्त ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ७ भीमसिंह से ललाह करके ॥ ३२ ॥ ८ चुगल ९ अनीति

साह लगत भानेज सुत, यातैं अहर रक्खि ॥ ३३ ॥

पद्धति: ॥

इत बैठि पट्ट फूरुक सिताव, करि सचिव मुख्य सध्यइ नवाव ॥

फरमान देसदेसन पठाय, सतकागपुब्ब सत्र नृप बुलाय ॥ ३४ ॥

बुधसिंह पास नैति सहित तत्र, निज हथ्य मंडि पठयो सु पत्र ॥

द्रुत सदल आय सत्रुन विदारि, चाचा व रचहु मम घर सम्हारि ३५

सोहू न पत्र मन्थो नरेस, बिधिजोग राज बुहुन विसेस ॥

किय छत्रमहल विच सतत बास, अब सुभट मंत्रि सब हुव उदास ३६

दोहा ॥

चारन केसोदाससौं, इकदिन अक्खिय बुद्ध ॥

मरुनृप जो अप्पन मिलैं, जुरैं साहसौं जुद्ध ॥ ३७ ॥

बुंदिय तजि उत हम चलहिं, वे आयहिं इत बेग ॥

ततो उभयश्मगमाहिं मिलि, धर दब्बहिं गहि तेग ॥ ३८ ॥

महडू केसादास तब, यह सुनि गो अजमेर ॥

मरुनृपसौं मिलिकैं कहयो, अब नहिं करहु अवेर ॥ ३९ ॥

हेरतहो मरुनृप यहहि, कोऊ मिलहिं सहाय ॥

यातैं द्रुत दरकुंच करि, बुंदिय तरफ चलाय ॥ ४० ॥

कुंच तीन ३ मरुनृप करिय, चढ्यो तथापि न बुद्ध ॥

तब आलस्य अचेत गिनि, फिरयो कबंधहु क्रुद्ध ॥ ४१ ॥

दिल्लीपति फरमान इत, नहिं मन्नै बुंदीस ॥

यातैं अनखैं विचारि उर, रची साहहू रीस ॥ ४२ ॥

रूपनगरपुर भूपको, तबही लग्गो दाव ॥

संभरको मरुपति सहित, चरच्यो पिस्सिन चंवाच ॥ ४३ ॥

॥ ३३ ॥ १ पूर्वक ॥ ३४ ॥ २ नअता सहित ३ सेना सहित ४ हे काका अब

॥ ३५ ॥ ५ बुंदी के एक महल का नाम है जिसमें निरंतर रहना मांडा ॥ ३६ ॥

॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ७ रूपनगर नामक पुर के

राजा का ८ चुगल ने ९ चुगली रची ॥ ४३ ॥

[पट्टपात]

रूपनगर पति कहिय सुनहु मम वत्त साह श्रुतं ॥  
 मरुपति अरु बुंदीस जुरत मिलि उभय२मंत्र जुत ॥  
 कोटापुर पति मरद वाहि बुल्लहु करि अदर ॥  
 दै तिहिं बुंदिय देस प्रबल पिळहुं तिन उप्पर ॥  
 कूरम नरेस जयसिंह कहैं छंद लिखाय हिय प्रीतिछकि ॥  
 उज्जैन नगर सूबा अगपि तत्थ पठावहु नीति तकि ॥४४॥  
 सुनत एह दिल्लीस पत्र लिखि भीम बुलायो ॥  
 महाराव कहि मिलि रु बहुत सतकार बढायो ॥  
 दै तिहिं बुंदिय देस साह पिळ्लयो दोउन२पर ॥  
 इहिं तब कोटा आय सेन सज्जिय हित संगर ॥  
 इत साह भेजि आमैर दल जयसिंहहिं इम हुकम दिय ॥  
 सूबा सम्हारि उज्जैनपुर करहु जाय हम महर किय ॥४५॥

( दोहा )

सुनि कूरम उज्जैन दिस, करि दरकुंच चलाय ॥  
 सूर सबल सेना सहित, बुंदिय निकस्यो आय ॥ ४६ ॥  
 संभर सम्भुह जायकै, आन्यों पुरहिं बधारि ॥  
 रक्खयो कछुदिन प्रीति रस मंडि विविध मनुहारि ॥४७॥  
 अंतेउर कछवाहको, अंतेउर विच आय ॥  
 मिलि ननंदे भाउज मुदित, रही हृदय हरखाय ॥ ४८ ॥  
 उपालंभे कूरम दयो, बुद्ध नरेसहिं तत्थ ॥  
 मन्नै नहिं फरमान तुम, किन्नाँ बहुत अनर्त्थ ॥ ४९ ॥

१ कानों में २ पत्र ३ तहाँ (उज्जैन) ॥ ४४ ॥ ४ भीमसिंह को ५ कोटावाले इस  
 समय से पहिले केवल राव कहलाते थे अब महाराव की पदवी मिली ६ भेजा  
 ७ युद्ध के अर्थ ८ पत्र ॥ ४५ ॥ ९ वह शूर और बलवान् जयसिंह ॥ ४६ ॥ ४७॥  
 १० कछवाहे का जनाना ११ बुन्दी के जनाने में आया १२ बुधसिंह की स्त्री  
 ननंद और जयसिंह की स्त्री भोजार्ह ॥ ४८ ॥ १३ अलंभ १४ अनर्थ ॥ ४९ ॥

कोटापुर पति भीम अब, बुंदिय लिन्न लिखाय ॥  
 तुम प्रमत्त वह छिद्र तकि, करिहैं विग्रह आय ॥ ५० ॥  
 यातैं मम मत आहि यह, सजहु भ्रात दुव साम ॥  
 प्रथित सत्य मैं बीच परि, कष्टों द्रोह निकाम ॥ ५१ ॥  
 तब प्रमत्त नृप कहिय फिरि, एह गेहकी रारि ॥  
 घरहीमैं हम समुझिहैं, लिन्नी विविध विचारि ॥ ५२ ॥  
 सक अंबर रिखि सत्त ससि १७७०, फग्गुन द्वादसि रूयाम ॥  
 कछवाही उर कुमर हुव, भावतसिंह स नाम ॥ ५३ ॥  
 भागिनेयें हित हरख करि, करिय कुंच कछवाह ॥  
 पहुँचावन बुंदीसहू, चढयो तुरग हित चाह ॥ ५४ ॥  
 चढत बाजि प्रासाद सिर, बुल्लयो विकट उत्तूक ॥  
 काकन कंकन कुक्कुरन, किय फेरंडन कूक ॥ ५५ ॥  
 यह असकुन चिते न चित, चल्लयो चढि बहुदान ॥  
 कूरमकों पहुँचायकैं, मुररयो अलस अमान ॥ ५६ ॥  
 नाथाउत नगराजको, गुढा नाम इक गाम ॥  
 मातुलकुलं बहुबानको, किन्नैं तत्थ सुकाम ॥ ५७ ॥

सक अंबर रिखि सत्त इक १७७०, फग्गुन मेघैंक भूत १४ ॥  
 कोटापति लै दैल चढयो, बुंदीपर मजबूत ॥ ५८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दी-  
 पतिबुधसिंहचरित्रे हतदिल्लीपतिमोजदीनफूरुकसियरशाहयवनेन्दी-

॥ ५० ॥ १ मेरी सत्ताह है २ प्रसिद्ध ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ३ कृष्णपत्त की ॥ ५३ ॥ ४  
 भानजे के ॥ ५४ ॥ ५ घोड़े पर चढते समय ६ महल के ऊपर ७ पत्ति विशेष  
 ८ कुत्तों ने ९ गीदड़ों [स्यालियों] ने लूत की ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ १० बुधसिंह  
 के मामा के कुलवाला का था ॥ १७ ॥ ११ कृष्णपत्त की चतुर्दशी १२ सेना  
 ॥ १८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति  
 बुधसिंह के चरित्र में दिल्ली के बादशाह मोजदीन को भास्कर फूरुकशाह का

भवन १ बुधसिंह की शक्तिवृद्धि हेतु भूशायपपुत्रीविवाह लग्नपञ्चक्रा-  
तिक्रमसा २ मन्वपतिवसिंहाजनेग्रहद्वन्द्वरूपनगमराजराजसिंह-  
दिल्लीगमन ३ आज्ञाधजातिकरकुरुकसियरबुधसिंहबुन्दीहरसान-  
न्तरकोटापतिशीमसिंहनम्प्रदान ४ आमैरार्धाशजयसिंहोज्जयिनीप-  
दमेवशां त्रयोविंशो मयुखः ॥ २३ ॥

आदित एकपद्युत्तरदिशतमः ॥ २६१ ॥

[ पट्टपात ]

पोतन चम्मलि छाया घाय बांधजग निरसान घन ॥

पकखर घंट घमंकि बेग दल्लिय हग वारंन ॥

माधानी मव संग भिरन अवग्हु अनेक भट ॥

सहैस बीस २००००० हय सज्जि भास आयउ वठ उव्वैट ॥

निस घटिय दाय २ रहतं निडर लरन घेरि बुंदिय लई ॥

प्रान्हि पुकाग बुंदीस प्रति भय विहाल हाजरि भई ॥ १ ॥

मुनन एह बुंदीस चलिय चढि वाजि मुहं मन ॥

खवरि इते विच आय घेरि लित्रो अरि पंतन ॥

तवहि भूप हरि वास लंधि असतोली भूधर ॥

आय सुग्थपुग करिय रक्तदंता दगसन वर ॥

गजमुखश्च पुगेदित कदिय तव मैतो जावत लरन रन ॥

भीमसो विटि दिख्दगय भुज नगर द्वाग रचिदो मगन ॥ २ ॥

सादृशाह होना ? अर्थात् बुध के स्वयंभूत आत्मन्व के कारण भूशाय के राजा की पुत्री से विवाह करने में पांच लक्षों का बुकाना २ सादृशाह के राजा राजसिंह का अजमेर लेना और स्वयंभूत के राजा राजसिंह का अजमेरसिंह के विरुद्ध विद्रोह जानना ३ कर्मान नहीं होने के कारण कुरुकसियर का बुधसिंह से युद्ध होनेका जोटा के साथ भीमसिंह को देना ४ आमैर के राजा जयसिंह की परीक्षा के रूप में अजमेर का परीक्षण २३ मंगल समाप्त हुआ और सा-  
आदि में दो वर्ष २०१ मंगल हुए ॥

१ तार्थों से आमतौर नहीं की जाकर लेख से २ समान नगरे पक्ष ३ तार्थ ४ साधोर्गोदोय दाह ५ विना मार्ग ॥ १ ॥ ६ मन का पूर्ण ७ पुर ८ असतोली ना-



यह कहि गजमुख आय प्रविलि पच्छिम पुर तोरैन ॥  
 दक्खिन तोरन निज निकेतें तँहँ जाय रच्यो रन ॥  
 भरि भरि वाहत तुपक पिक्खि नृप भीम कहाई ॥  
 दोउन २ कें तुम बंधँ मिलहु करि बंध लाराई ॥  
 गजमुखहु पाय तब लोभ गति मँद जाय भीमहिँ मिल्यो ॥  
 पकराय तबहि लिननो निँपुन गुरुतामद तब द्विज मिल्यो ।३।  
 ( दोहा )

गजमुखकोँ पकराय इम, तोरैन अँररन फारि ॥  
 आय तखत कोटैस अरि, बुँदिय अमल विथारि ॥ ४ ॥  
 इत नृपसौँ सालाम कह्यो, मरन उचित इहिँ जुद्ध ॥  
 जो न रुचत तो लरहिँ हस, हमहिँ सिक्ख अव सुद्ध ॥ ५ ॥  
 यह कहि सज्ज्यो जाय गढ, निज पुर करउर नाम ॥  
 नृप सु सुरथपुरतें सुगरि, गो मेवाँरन गाम ॥ ६ ॥  
 मेवाँरहिँ पुनि दाहिँनै, करि गो मालव देस ॥  
 सालकें भिँट्यो जाय तँहँ, पुर आमैर नरेस ॥ ७ ॥  
 इहिँ अंतर अनियाँर पति, नरुँवँस संग्राम ॥  
 नैननँगरके ग्राम कति, दब्बे तकत कुकाम ॥ ८ ॥  
 कौरातें गजमुखहु कढि, गो मालव नृप पास ॥  
 तबहि अनादर तरँजि नृप, अंतर भो जु उदास ॥ ९ ॥  
 छिन्नि अखिलँ अधिकार तस, द्विज सिवदासहिँ दिद्ध ॥  
 कउल मग्ग गुरुसिर कहँरँ, कोप विगरि अब किद्ध । १० ।

स पर्यन्त लांघकर ॥ २ ॥ १ शहर के द्वार में २ अपना घर ३ नमस्कार करने योग्य ४ सूख ५ बतुर भीमाँसह ने ॥ ३ ॥ ६ पुर के द्वार के ७ किवाड़ों को तोड़कर ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८ मेवाड़ के नामों में ॥ ६ ॥ ९ शाला [जयसिंह] से मिला ॥ ७ ॥ १० उखियारा का पति ?? नरुका संग्रामसिंह १२ नैणवा नगर के ॥ ८ ॥ १३ कैद से १४ धमकाकर ॥ ६ ॥ १५ सब १६ क्रोध "यहाँ क्रोध की अधिकता दिखाने को एकार्थ बाची दो शब्दों का प्रयोग है" वा कहर का अर्थ जुर्म है

कोटापति बुंदिय मुलक, इत समरत अपनाय ॥  
 अनायत करउर समुक्ति, घेर्या सालम जाय ॥ ११ ॥  
 बुंदियपुर अवरोधतें, रानिय विपति विरत्त ॥  
 इक १ बेघम आमैर इक १, पुर भनाय इक १ पत्त ॥ १२ ॥  
 अवर लोक अवगोधके, विभव सचिव तिहिं बार ॥  
 सब बेघमपुर संचरे, देवसिंहके द्वार ॥ १३ ॥  
 खरच रूपये अठसत ८००, अरपि नित्य तिन्ह एव ॥  
 इक १ हाँपन बुंदिय विभव, दुभर निवाहयो देव ॥ १४ ॥  
 इत नृप मालव जायकै, लिन्नै तुरग अनाय ॥  
 बेघमपति प्रति मोलकी, हुंडिय दिन्न पठाय ॥ १५ ॥  
 देवसिंह वह बंचि दँल, गिनि समपन उपवहार ॥  
 दिन्नी हँय सोदागरन, मुद्रा तीस हजार ३०००० ॥ १६ ॥  
 विपति बीच इम बंदगी, चुंडाउत किय चाहि ॥  
 अप्पन सिर ऋन किय अधिक, बुंदिय विभव निवाहि ॥ १७ ॥  
 इत करउरपुर भीम नृप, रहयो बिंदि रनरत्त ॥  
 अठारह ८१ अह अंकुर्या, मुरयो न सालम मत्त ॥ १८ ॥  
 पल पल बिच गोहन परिग, प्राकारिन बिच पंथ ॥  
 सब करउर तोपन सिलगि, हुव भ्राष्ट्रकै हरिमर्थ ॥ १९ ॥  
 मुहुकमकुल उमराव इक, सुखसिंहह चहुवान ॥  
 पुत्रहिं दे घर विभव पद, किय कसार्थ परिधान ॥ २० ॥  
 वह अनिच्छ विचरत फिरत, कोटा दँल बिच आय ॥

॥ १० ॥ १ स्वतंत्र ॥ ११ ॥ २ जनाना से ३ विरक्त होकर ॥ १२ ॥ १३ ।  
 ४ देकर निनको धारण किए (रक्ते) ५ एक वर्ष ॥ १४ ॥ ६ कुछ आमद  
 नहीं तो भी ॥ १५ ॥ ७ पत्र ८ घोड़ों के सोदागरों का ॥ १६ ॥ १७ ॥ १९ मुद्र  
 में प्रीति करके १० अठारह दिन ११ खड़ा रहा ॥ १८ ॥ १२ कोटों में मार्ग होकर  
 १३ भाड़ में १४ चने होयें ऐसे होगया ॥ १९ ॥ १५ भगवा १६ वस्त्र ॥ २० ॥ १७  
 इच्छा रतिह १८ कोटा की सेना में आया

मिलि गह्विय तजि भीम नृप, दयो ताहि बैठाय ॥ २१ ॥  
 कहयो भीम करजोरि तब, मो सिर करहु निदेस ॥  
 सुखसिंहहु यह सुनि कहयो, चढि घरजाहु नरेस ॥ २२ ॥  
 तबहि कहैं सुखसिंहकैं, वह चढि बुंदिय आय ॥  
 नतो कितो करउर नगर, लेतो हुंताहि छुगय ॥ २३ ॥

( पादाकुलकम् )

कोटापति सुखसिंह कथित किय, जान्यो लोकन सालम जितिय ।  
 कूरमपति इन मंल विचारयो, जामिप बुंदिय हीन निहारयो ॥ २४ ॥  
 अमरं रानके पट्ट उदैपुर, लसत रान संग्राम धरम धुरं ॥  
 तिहिं प्रति दलं जयसिंह पठायो, स्वकर मंडि सतकार सिवायो ॥ २५ ॥  
 हे नृप तुम मीमहिं समुष्कावहु, बुद्धहिं बुंदिय देस दिवावहु ॥  
 यह मोसिर अैसान करहु अब, तुमरो हुकम भीम स्वकृत सब ॥ २६ ॥  
 तबहि रान यह पल विचारयो, कूरमपति संकोच समहारयो ॥  
 निज काका तखतेस बुलायो, बुंदिय भीम समीप पठायो ॥ २७ ॥  
 तबहि आय तखतेस भीम प्रति, अक्खिय विविध रानकी विन्नति ॥  
 बुंदिय तजि निज गेह पधारहु, मो सिर यह अैसान विचारहु ॥ २८ ॥  
 यह सुनि भीम कहयो धरि गव्हहिं, बुध नृपतैं बुंदिय नहि दव्हहिं ॥  
 जमी समस्त साहकी जानों, तजिहों तो व्हहैं तुरकानों ॥ २९ ॥  
 यह कहि सिक्ख दई तखतेसहिं, तजत भीम नहिं बुंदिय देसहिं ॥  
 यह देसहिं सालम लागि लुट्टन, कोटा पति थानन करि कुट्टन ॥ ३० ॥

[ दोहा ]

मेवावत सामंतहर, इन दडुन गहितेग ॥

॥ २१ ॥ १ आज्ञा ॥ २२ ॥ २ शीघ्र ही ॥ २३ ॥ ३ कहना किया और लोगों ने जाना कि सालसिंह जीत गया ॥ २४ ॥ ४ महाराणा अमरसिंह के ५ पत्र ॥ २५ ॥ ६ स्वीकार (संजुग) करेगा ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ २८ ॥ ७ गर्व ८ यवनों का राज्य ९ बुन्दी के देस को सालसिंह लूटने लगा ॥ ३० ॥

बुंदियडिग पुर जैतगढ, लुट्टिय आय सवेग ॥ ३१ ॥

तिन पर पठयो भीम नृप, धाइभ्रात भगवान ॥

वाँनै जाय धनावपुर, किन्नौ हद धूमसान ॥ ३२ ॥

मेवावत सामंत हर, मरे बहुत करि जंग ॥

धाइभ्रात भगवानके, घाय बिल्लंगे अंग ॥ ३३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप-  
तिबुधसिंहचरित्रे कोटामहारावभीमसिंहबुन्दीहरण १ बुन्दीन्द्र-  
बुधसिंहजयसिंहनृपान्तिकमालवगमन २ वेद्यमरावदेवसिंहबुन्दी  
कुटुम्बपालन ३ सुखसिंहाभिधहृदपतिकथनमहारावभीमसिंह-  
करवरनगरप्रावृत्त्युत्थापन ४ जयसिंहलेखमहाराणासंग्रामसिंह-  
स्य बुन्दीमुक्त्यर्थमहारावभीमसिंहभक्षानतदस्वीकरणवर्णनं चतु-  
र्विंशो मयूखः ॥ २४ ॥

आदितो द्विपष्टयुत्तरद्विशततमः ॥ २६२ ॥

( पञ्कटिका )

संग्राम रान सादर कहाय, सो भीम नाँहिँ मन्निप सुभाय ॥

तकसीर तास मेटन बिचारि, कोटेस उदय पत्तन पधारि ॥१॥

सीसोदभिदि संग्राम रान, दिय भीम तत्थ कछुदिन मिलान ॥

॥ ३१ ॥ १ युद्ध ॥ ३२ ॥ २ सामंतसिंह के बशवाले ३ विशेष करके घाय-  
लगे ॥ ३३ ॥

ओवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति बुध-  
सिंह के चरित्र में, कोटा के महाराव भीमसिंह का बुन्दी छीनना १ बुन्दी के  
रावराजा बुधसिंह का राजा जयसिंह के पास आलव में जाना २ वेद्यम के  
राव देवसिंह का बुन्दी के कुटुम्ब की पालना करना ३ महाराव भीमसिंह का  
सुखसिंह नामक हाडा सन्न्यासी के कहने से करवर नगर का घेरा उठाना  
४ जयसिंह के लिखने से महाराणा संग्रामसिंह का बुन्दी छोडने के अर्थ महा-  
राव भीमसिंह को कहलाना और भीमसिंह के अस्वीकार करने का चौबी-  
सवां २४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ वासठ २१२ मयूख हुए ॥  
४ आदर सहित ५ उदयपुर ॥ १ ॥ ६ सुकाम

राष्ट्रोजयसिंहकासालमसिंहपरजाना] पन्नामगशि-पंचविंशमवृत्त (३०४०)

\*यद्वात् सीम इक दीह आय. बैठे दुःभूप ऋगिखद बनाप ॥ २ ॥  
पामाद नामके दृष्ट याम, इक नटिय आय किन्नाँ इतमास ॥  
कोटेग कुजग करि कहि कुवत्त, बुद्धिय सालम जन चहिव त ३।  
सो सुनत भीम कः मुच्छ घाल्ल, लै गिखव आय बुंदय उभाँल्ल ॥  
ग्होर सुभट जयसिंह नाम, सालम सिग ।पल्लयो जय मकाँम ॥४॥  
इत्त महँमबीम २०००० लै तय दुँहह, जयसिंह विविध सजि नोपजूहँ  
करउग सु जाय विं टिय सजोर, इक १मास ग्हिय घममान घाम ।५।  
करउग रजपूनन इप उँपेत, मा पूर सँगधि जिम गोभ दत्त ॥  
जयसिंह पुर सु तुट्टन नजानि, मन साधि श्रंय गामहिँ प्रमानि ॥६॥  
सालम मर्माप लिखि दँल पठाय, अथ साम हगहिँ तुम भित्तहुआय ॥  
अरु तुमरे सुन गाँ दे अजेय, मन दुहना सगपन हे विधेय ॥ ७ ॥  
सानन कदाय तव इत अँनीक, पुगताँने अंदर मिलनठाँक ॥  
मन्नी यदँहु ग्होर तथ्य, पुग द्वार गयो लै तुच्छमथ्य ॥ ८ ॥  
उतनेँ चाढपालम गदँल आय, ग्होर लिपउ अंदर बुलाय ॥  
सालम सु मिलयो जालम जँनून, हुव घटय अह बैठक दुहून ॥९॥  
( वादा )

वीममहँम २०००० दलनेँ ववेँ, अँमो कगउग हो न ॥  
यदँ नजानैँ कयोँ मिलयो, भाँहँ कबंध भिगयो न ॥ १० ॥  
सालम सुत पगतापसोँ, स्वीयँ सुता मबंध ॥  
करि बुद्धिय गो कुंचकगि, सु जयसिंह तह मंधँ ॥ ११ ॥

\*इत न जगगी यथा काके । २। इति महल के नीचऽ । नाम ॥ ३॥ १ बुँछ पर हाथ  
रुव कः २ वड करः जय की नामना महि ॥ ४ ॥ ४ काटनाई जे तरेना में जावेँ  
एसा २ नमूह ॥ ० ॥ ३ महिन (मंयुक्त) जैमे चाणों मे पूर्ण भाथाओमा देवेँ नँस  
८ साम उराय ॥ ६ ॥ ६ पद ॥ ७ ॥ १० काटा की मना में ११ शहर के द्वार  
के भीतर मलना टीक है ' बाहर निकलने में पकड़ लेन का भय था इसका-  
रणा' ॥ ८ ॥ १२ संना सहिन १३ जुलम करने वाले क्राध मे ॥ ९ ॥ १४ काय-  
र ॥ १० ॥ १५ अपनी (जयसिंह राटाँइ की) पुत्री का १९ विजय करने की प्र-

जायो जुगियगगको, अंकुमि कगउर एम ॥

जेरै न दोरह बर भो, भावी मिहँ सु कैग ॥ १२ ॥

इत कूगम कहि संभगैहँ, उज्जइनी हम जात ॥

जोलो तुम अत्थहि रहहु, हम करिहँ भुव हात ॥ १३ ॥

यह कहि वह उज्जैन गां, सूवापति मगसाय ॥

गाम नाम कायत्थिया, रहयो सु बुंदिय राय ॥ १४ ॥

( पट्टपात् )

इत मरुपति निज भटन पुच्छि लखि समय मंत्र क्रिय ॥

मिलि अप्पन कूगमन अगग गंभापुग लुट्टिय ॥

अब कूगम पति फुट्टि भयो सूवा सिर स्वामी ॥

ऐकाकी अप्पनहि गहे दिह्लिस हगर्मा ॥

अवर न उपाय सुज्भक्त अरहि उचित आहि दिह्लिय गमना

सुंदर विवाहि साहहि सुता रहँ सदा सिर कूगमन ॥ १५ ॥

( दोहा )

अमर लिखाई उदय पुग, मेटि रंति वह भुद्ध ॥

पुन्निस संटै पहुमि पुनि, लग्गो ग्गखन लुंद्ध ॥ १६ ॥

निज तनया तब मंगले, यह कुमंत्र उपजाय ॥

आजनमिह दिह्लिय गयो, पायो माहक पाय ॥ १७ ॥

तब हिंदुन जिम ताभैकी, सुता विवाहयो माह ॥

अजितसिंहको इकठे, किन्नै माफ गुनाह ॥ १८ ॥

साह बनायो सत्यदन, यातै वे<sup>१२</sup> हमगोर ॥

हुसनअली उच्छैन करै, बाहिबेमात्र वजीर ॥ १९ ॥

निशा छोड कर ॥ ११ ॥ १ उदय [खडा] होकर : आर्षाल (नहीं कृपा) ॥ १२ ॥

३ अमरनिह को ॥ १३ ॥ १४ ॥ ४ अंतले ५ वादगाह को बेटी पाना कर ६ कलव हों के घस्तक पर रहै ॥ ११ ॥ ७ मडागशा अमरनिह ने वादगाहों को पुत्री नहीं देने की शक्ति लिखाई थी उसको मेट कर ८ सूर्व ने ९ बदले में १० बोर्षा ॥ ११ ॥ ११ ॥ १२ उसका ॥ १८ ॥ १२ सत्यद १३ चाहा हुआ (चाहे सो) करै

तिनसौं साहहृ दवि रहन, सन्मुह सजत न सत्य ॥  
हुसनअलीके हुकमको, मिट्टन कोन समत्य ॥ २० ॥  
हुसनअली काह मुकलयो, यह मरु भूपति पास ॥  
संभर पुर भाई हनै, बैर विमंगौ तास ॥ २१ ॥  
यह मुनि तव मरुपति गयो, हुसनअलीके गह ॥  
करन जोरि अरु साथ कार, अकखा निहिं प्रति एह ॥ २२ ॥  
में करम बरज्यो बहुत, सौहस तैदपि सम्हारि ॥  
जयसिंहहि पुर लुट्टिगे, अत रावर मागि ॥ २३ ॥  
सयद वृष्ये कगे इन मिलयो, सयदमौ मरुमोरै ॥  
सयद तव मरुगस गिन्यौ, जयसिंहहिं बगजांग ॥ २४ ॥  
जयसिंहहु यह मव मुन्यौ, मरुपति सयद मेल ॥  
तव उज्जइनी नीनि तकि, अंकुगि रहिय अठैल ॥ २५ ॥  
इहिं विव दकिखा देवकी, पता आनि पुकार ॥  
मरहट्टे लुट्टा मुत्तक, करि करि विविध बिगार ॥ २६ ॥

( पदपात् )

हुसनअली सयद नवाव दकिखन पुकार लहि ॥  
पुर अवरंगावाद चल्या दरकुंच विजय चहि ॥  
सारधलकख ५००००० तुर्ग संग सत दोय २००० तोप सजि ॥  
आवत घन जिम उमडि बंब निकरं च तनिते बजि ॥  
उज्जैन निकट आया जवाह कूरुमपति इक नाति करि ॥  
पैंतीस ३५ कोस दरकुंच गो दुलहनि व्याहनव्याज दौरि ॥ २७ ॥

( दोहा )

॥ १० ॥ २० ॥ १ उनका बैर मांगना हूँ ॥ २१ ॥ २२ ॥ २ हठ के तोर्ना ॥ २३ ॥  
४ झूठे सोमन ५ भागवाह का मुकुट ६ अपराध महिन ॥ २४ ॥ ७ नहीं छिद्री  
ऐसा हांकर ॥ २५ ॥ २६ ॥ ८ यहां अजहत् स्वार्थ लक्षण मे सवार जानने  
आहिये ९ नगरों का समूह १० संघ की गर्जना के समान बज कर ११ बिबाह  
के मिस से २२ दर कर ॥ २० ॥

सर्ग लिङ्गकोस उज्जैनतै, इक चहुवानन गःम ॥  
 तिन तनया सगपन कियउ, कूर्मसौ सह सोम ॥ २८ ॥  
 वह सगपन मन चिंति अरु, सद्यद गिनि बग्जोर ॥  
 विनुहि लगन व्याहन गयो, कूर्म कुल सिरमोर ॥ २९ ॥  
 गीर्वाणभापा ॥  
 वंशमथः ॥

लगनं विनोद्वाहनि कीर्षया गतो नातिस्थ आमेरपुगे नगेश्वरः ॥  
 तत्तस्य पत्नी खलु चाहुवाण गा पल्लकपाया वल्लयान्यधारयत् ॥३०॥  
 प्र कृती मिथितभापा ॥

( दोहा )

कौमको परिनाय डैम, सद्यद दक्षिखन पैत ॥  
 नवंबर तव उज्जैनपुग, आयो पगि उमत्त ॥ ३१ ॥

[पट्टपात ]

नवंबर आय अवेति जानि सद्यद दक्षिखन गैत ॥  
 तिखि तिन्नति मुकालिय साह फूरुक हजूर नत ॥  
 बुंदीपति आयैत स्वामि आयग लुण्यो किंन ॥  
 आलमके अनिसोक नाहिं फरमान लये इन ॥  
 बुंदिय लिखाय बसवगहु इनहिं सिग सब हुकम चढायहै ॥  
 फरमान दे रु बुल्लहु बुधहिं अब हजूर हुत आयहै ॥३२॥  
 दोहा ॥

यह सुनि साह नवाच डक, नाम दलावरखान ॥

१ विनाय के म.ध.२.॥२०॥नीति में स्थित, आमेर का राजा विना लगन  
 ही। वयाह की इच्छा में गया इस कारण से उसी स्त्री, चहुवाण की पुत्री  
 ने निश्चय ही लाग की चूड़ियाँ धारण कीं, अर्थात् विना लगन अथवा नक विवाह  
 में के कारण शीत का चूड़ा उपस्थित नहीं हो सका ॥ ३० ॥ २. सद्यदे की ३  
 इत्यकार का लक्षण ही बताइ कर गया ३ नवान वर [जयमिद] ॥ ३१ ॥ ३  
 गया दूपा ७ आपके अर्थान है ८नाजिक का हकूम किसमें लोपा ॥ ३२ ॥



लिखिन पटा जुत मुकलयो, करम अरज प्रमान ॥ ३३ ॥

आय दलावरखान तव, करम सचिव समेत ॥

बुंदी तै द्रुत भीमसौं, अर्प्या इनहिं सहेत ॥ ३४ ॥

प्रथम साह किय खालसै, बुद्धहिं तदनु समाप्पि ॥

कोटाकं उठवायकै, थानाँ इन निज थप्पि ॥ ३५ ॥

सुना भनाय अधीमकी, गनी जो ग्होरि ॥

सुनाँ नाग सूज कुमार, हुन ताकं गुनगोरि ॥ ३६ ॥

सक अंग हय सत इक १७७०, अर्मा रु फग्गुन मास ॥

कोटापति बुंदियलई, गिल्यो सु दुँजग प्रास ॥ ३७ ॥

सक जामल हय गत्त इक १७७२, अगहन द्वादसि रथाम ॥

आई पुनि बुंरीमकै, बमधा कुलटा वाम ॥ ३८ ॥

बुल्लि मचिव बुंदासके, फेरि बुद्ध नृप आन ॥

दै बुंदी दिल्लिय गयां, जवन दलावरखान ॥ ३९ ॥

अवग देग बुंरीमकै, आयो सबहि बहोरि ॥

भार्म नगर बागँ मऊ, द्वै पग्गना न छोरि ॥ ४० ॥

तदनंतर फमान पुनि, पठये साह जरूर ॥

बुद्धसिंह जयसिंह नृप, बुल्ले उभय २ हजू ॥ ४१ ॥

( पट्पात )

फमानन हुँत केलि सज्यो करम नरस जब ॥

बुंदासहिं बुल्लवाय कदयो अँ हून उभय २ अय ॥

ए विरैवहु फमान चलहु दिल्ली हम मत्थै ॥

तैहँ साह गिभाय मुकुट ठेहँ अरि मत्थै ॥

१ माफिक ॥ ३३ ॥ २ जगसिंह के कामदार सहित ॥ ३४ ॥ ३ पुत्री ॥ ३६ ॥ ४ अनावास्था २ दुर्जन शत्रु ने ॥ ३७ ॥ ५ कृष्णपत्त कं ५ स्त्री ॥ ३८ ॥ ६ ॥ ७ भीमसिंह ने ॥ ४० ॥ ८ जस पीछ ॥ ४१ ॥ ९ शीघ्र ११ दोना को बुलाये हैं १२ देखो १३ शत्रुओं के मस्तक पर

कृम नरेस यह कहि चढ्यो बंसीपनि तदपि न चढत ॥  
 आलम अथैत मतिमंदै अति पल पल प्रति चलिइ पढत ४२  
 सुनत एह जयसिंह आयुं बुंदिय दल आयो ॥  
 जामिय बुद्धि कहिय साल गाजि मंद सवायो ॥  
 अब नृजान आरुदहु नलहि धरि खंध भुन्य हग ॥  
 निज अमुं साथ दिवाय एह अकषय नृप कृम ॥  
 संकोच तास बहुवान तव चाँड तरंग तिन संग हुव ॥  
 इहिं शीत छेपि मालव अवनिदल्लिय चल्लिय भूप दुवरा ४३

[ दोहा ]

कठि मुकुंद दर उत्तंग, चमनलि पट्टन ओर ॥  
 लकष्यैगिय गिर लं घतै, आय ग्राम अनघोर ॥ ४४ ॥  
 कछुदिन तथ मुकाम कार, अंग मुकलि हित चाप ॥  
 संभर निज उमगव गव, दे दल लित्र बुलाय ॥ ४५ ॥  
 प्रथम इंद्रमल्लान भर, नगर इंद्रगढ नाह ॥  
 मेव सुवन छित्वर मरद, आयो अधिक उछाह ॥ ४६ ॥  
 छित्वरगौ जयसिंह नृप, मिलया न बथै घल्लि ॥  
 इन अकषी तुम आमई, हम मिलिहे अब दल्लि ॥ ४७ ॥  
 हम कहि कृमसौं मिलयो, दे पय गहिय सीस ॥  
 इक सूरपन अनुसग्यो, अनाखि इंद्रगढ ईम ॥ ४८ ॥  
 कर उरपति आयो तदनुं, मिलयो उर उद्योत ॥  
 सालम जुगगीराम सुव, भट मुहुकमसिंहोत ॥ ४९ ॥  
 रन कंगउर पचि पचि रह्यो, मृ नृप भीम हन संघ ॥

१ तोर्मा २ मंद बुद्धिवाला ॥ ४२ ॥ ३ जाघ ४ मेना में ५ बहिन के  
 पनि बुधसिंह ने ६ माले ने ७ पालना पर चढा ८ अपने प्राण का ९ सौ-  
 गन ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १० हलकार भेज कर ११ पत्र देकर ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ १२ हाथ  
 धरा कर नहीं लिना १३ रोगी ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ १ जिस पीछे १५ उरड (घमंड) प्र-  
 काश करके १६ पुत्री ॥ ४९ ॥ १७ प्रतिज्ञा छोड़ कर

यातौ दोऊन अहंयो, सालम थप्पत्ति खंथ ॥ ५० ॥

सुभट बैरिसल्लोत सजि, नगर पत्तोधी नाह,

जैतसिंह जाजव जर्या, आयो मरम सिपाह ॥ ५१ ॥

बेंगिमल्ल कुत्त उद्धरन, दड्डा गन दमगार ॥

वलवनपति आयो बहुगि, अमयसिंह अति वीर ॥ ५२ ॥

पुग स्वातोली पति प्रबल, अमरसिंह अभधान ॥

इंद्रसिंह कुत्त उद्धरन, चाप मिलयो चहुवान ॥ ५३ ॥

मिलयो आने उद्धत गुमर, चंडै समर चहुवान ॥

सेगसिंह सागंत हर, भजनेगी पुग भान ॥ ५४ ॥

नाथाउत नगर गहू, नगर गुढाको नाह,

पुनि दूजो निम्मान पति, आयो मिलन उछाह ॥ ५५ ॥

सबल मिले उमगव सब, इम स्वार्मा छिग आय ॥

सबहि मिगांह सूरपन, जयसिंहहु जस गाय ॥ ५६ ॥

दोहा-सवन कह्यो दिल्लीस दिप, बुंदिय लास्यत लिस्वाय ॥

ते कंगर पिक्खै दमहु, तव इन दिन्न दिस्वाय ॥ ५७ ॥

पाकख पटा भवाहन कह्या, कूग्म नृपि मिगाहि ॥

मऊ नगर वागै गुलक, ए न पटादिचि आह ॥ ५८ ॥

कूग्म नृप भुमिकाय कहि, दुव २ इम दिस्लय जात ॥

अव लेंह कहि साहसौं, गेग मुलक दसु जात ॥ ५९ ॥

इम कहि अवरन सिक्खवे, चलै उमय नृप तार्थ ॥

सालमसिंह रु जैनर्मा, सुभट लनेदुव २ सत्थ ॥ ६० ॥

इम दुव २ नृप आनेगपुर, दरकुंचन चलि आय ॥

जामिप सालक प्राति जुत, गेहे कछुत दिन गर्ये ॥ ६१ ॥

१ जयसिंह और बंधुसिंह इन दोनों के आकर कियः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ २

नमः ॥ ५३ ॥ ३ युद्ध में भांकर ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ४ पत्र ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

६ याकी का देश ७ भन का समूह ॥ ५९ ॥ ८ तहां से ॥ ६० ॥ ९ बहिनाई

और साला १० राजा

तैंहें करुता रन गीभः तकि, सालम हित दखसीम ॥

नैननेगगको परगनाँ, सब इन्द्रों बुंदीम ॥ ६२ ॥

मालमके इकन भई, पहुमि दम्भं नवलकख ९००००० ॥

कतिकन तव यौहू कहयो, वनिहै कवहु त्रिपैकख ॥ ६३ ॥

॥ मुकनादाम ॥

करी इम सालमको बखमीम, गये पुनि दि छिय द्वेअननीस ॥

उभे हिन संग गये पुनि आभं, गजी नृप दोउन २ साह सलाम ॥ ६४ ॥

अनामयं दोउनकां जवनंस, गिमनाथं पुच्छिय प्रीति दिसंस ॥

उभे २ नृप अप्पन अप्पन थोँह, सिगहहै पाय खरं हत गोरु ६५

उभे २ भट मालम जैत ममत्थ, बुलायउ एहु सभाविच तथ ॥

न कीवनकी इतमंम उभल्ल, परी लकरी इक १ सालम हेल्ल ६६

दई पुनि ग्राह समस्तन गिक्ख, रहीं नृप कूगमकी आन तिक्ख ॥

रहैं इम हिल्लिय द्वे २ नग्नाइ, गदा खलिवत्त बुलायत साह ६७

लपो नृप कूगम साह गिभाय, प्रसन्न कहैं सु कहैं हित पाय ॥

मुगाइव सालमको करि मुद्धे, पठायउ बुदियपै तव बुद्ध ॥ ६८ ॥

सभा दिन डक बडी गचि साह, बुलायउ आम सबै नग्नाइ ॥

गयो जयमिहह कूगम ईम, गयो बुध हहुन वंम अधीस ॥ ६९ ॥

गाव्वत स.हनके समुत्त, गयो मरु ईम अजिनहु तत्त ॥

गयो नृप संगैर भीम मंध, गयो पुनि रूँपुमेम कबंध ॥ ७० ॥

गये इम हिंदुव मिच्छ असेमं, गयो पहिलौ तैंहें बुद्धे नेस ॥

सलाम करी कसि पाट्टीं डल्ल, तई नृप बुंदिय पट्ट मिरुल्ल ७१

॥ ६१ ॥ १ नैगवा नगर का ॥ ६२ ॥ २ कायों की आमदनी की ३ गज ॥ ६३ ॥

४ आम द.वार में ॥ ६४ ॥ ५ कूजलना ६ हंसने हुन होठों में ७ स्थान पर ८

परांसा पाठ ॥ ६९ ॥ ६ समर्थ १० गंच बढ़ानेवाली ११ हाल पर ॥ ६९ ॥

॥ ६७ ॥ १२ सूत्र (बुधसिंह) ने ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ १३ यादगाह का गजुग होने में

घनेंड कस्ता हुआ १४ अजितसिंह १५ नृपवाण भौममिह १६ रूपनगर का प्रति

राठीक ॥ ७० ॥ १७ १८ १९ बुधसिंह २० कटारी ॥ ७१ ॥

गये तदनंतर सर्वहि आम, सजी हित पूव नम्म सलाम ॥  
 बिलंब कलू कणि आयउ भीम, तकपो हिय हेत रची तसलीम ॥७२॥  
 सिरे लखि बुद्धहिं मुद्ध गिमाय, जग्यां मनमांहिं सुक्यो मिटिजाय ॥  
 दई उठि साह समस्तन सिक्ख, रही तँहँ बुद्ध बलापति तिकख ७३

( शुद्धप्राकृतभाषा )

( मालिनी )

इय उअयउगयां तत्थ मङ्गामरगणा,  
 गाग्वडजयभिंइं पोमअं गोहपत्तम् ॥  
 जइ कुणाइ पमाअं फूरुआं तुब्भधाए,  
 वसइ गाणा ततो मे पट्टां चित्तऊडम् ॥ ७४ ॥  
 गायमयजयभिंदो तं कखु दहूणा पराणां,  
 समयबलविएगी गांइ एकत्तुबुद्धिम् ॥  
 दडवडहि गयो सो साहआमम्मि कुम्मो,  
 कहिउ जवणाणाहं फूरुअं राणावत्तम् ॥ ७५ ॥

॥ प्रायोदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

( पट्पात )

१ जिस पीछ सब आम दरवार में गये २ आदाव ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

संस्कृत अनुवाद ॥

इत उदयपुगत तत्र संग्रामगणानरपतिजयसिंहं प्रेषितं स्नेहपत्रम् ॥  
 यदि करोति प्रसादं फूरुकुणव बुद्धौ वसति ननु नदा पत्तनं चित्रकूटम् ॥७४॥  
 नयमयजयामेहः तं खलु दृष्ट्वापर्यं समयबलविवेकी नीत्या एकत्र बुद्धिम् ॥  
 शीघ्रं गतोत्तौ शाहकार्ये कूर्मः कथयितुं यत्नमनाथं फूरुकं राणवानाम् ॥ ७५ ॥

॥ भाषानुवाद ॥

इधाराणा संग्राममिह ने वहाँ राजा जयसिंह को प्रीति पत्र भेजा कि जो तुम्हारी बुद्धि से फूरुकुणाह कृपा करे तो निश्चय ही चित्रकूट वस जावे ७४। उस समय को और बल को जाननेवाला जयसिंह नीति के पत्र को निश्चय देव कर बुद्धि का एकत्र करके बादशाह के कार्य में शीघ्र वह कछवाहा फूरु कशाह से राणा की वार्ता कहने को गया ॥ ७५ ॥

अगैँ अकबर साह लियउ चितोर दुग वर ॥  
 पच्छी अपिय बहुगि गहयो तबनैँ वह उजैर ॥  
 साह हुकम विनु गन जाय स्वच्छंद बसैँ किम ॥  
 यातैँ पठई अथ अरज संग्रामसिंह इम ॥  
 अप्पहु निदेस बसवाय अब चित्रकूट हमहू रहैँ ॥  
 सतपंच ५०० सुभट पखैँत मम काथतकरो तँहँ निब्वहैँ ७६

[ दोहा ]

नजरि द्रव्य कगिहै कितो, यहै कही जब साह ॥  
 तबहि दम्म त्रयलकख ३००००० मित, अकखे कूरमनाह ७७  
 ( षट्पात् )

सुनि सु रान मुकलिय नजरि हुंडी त्रय ३ लकखन ॥  
 कूरम किन्नी नजरि साह पिकखा सु मोद सन ॥  
 लियउ पाट लिखवाय रही महुगहि अवसेसह ॥  
 अरज डक पुनि करिय नगर आमेग नरेसह ॥  
 बुधसिंह भीम विग्रह बिरचि छिज्जहिँ लरि लरि परसपर ॥  
 दोउन मिलाय अब अप्प हुत मेटि बइर मंडहु महर ॥ ७८ ॥

[ दोहा ]

सुनत एह कोटेसमौँ, दिन्नी साह कहाय ॥  
 करहु मेल बुंदास सन, जयसिंहह दिग जाय ॥ ७९ ॥  
 जां तुम छिन्ण्या हुकम लहि, खां सब पच्छो देहु ॥  
 उमयरभ्नात एकत जुगि, सनय साम करिँ लैहु ॥ ८० ॥

( हरिर्गीतम् )

बगजोग आयस साहका सुनि भीम भी जुन धी भई ॥

१ शून्य २ स्वतंत्र ३ कहना करो नहीं ॥ ७६ ॥ ४ कछवाहों के पतिन ॥ ७७ ॥  
 सुहर लगाना ५ बाकी रहा ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ६ बलवान् आला ७ भय  
 सहित ८ बुद्धि

जयसिंहके घन रूप डेगन जाय विन्नति मंडई ॥  
 कछवाह कहि बागँ मऊ अब छोगि इन लिखि दीजिये ॥  
 बुंदायसों मिलि सोमकैँ इकथाल भाजन कीजिये ॥ ८१ ॥  
 तब साह औ कछवाह द्वैरमन मंत्र इकत जानिकैँ ॥  
 काहेम वह तजि देस दानों लेख कगौर ठानिकैँ ॥  
 कगि असेन इकशहि थाल औ भूपाल त्रय दिन विंथरयो ॥  
 नृप भाम उप्पर और औ मनमाँहिँ दाख भग्यो जग्यो ॥ ८२ ॥  
 सक तीन हय रिखि इंदु ७७३ मैँ यह बत्त तीननकैँ भई ॥  
 इहिँ बीच जटनकी पुकार अपार दिल्लीय उँन्नई ॥  
 इक नैग थूहनि ईस जट्ट सु नाम चूडामनि रहैँ ॥  
 धन जोर औ मन जोर जो रन जोर फोजन निबवहैँ ॥ ८३ ॥  
 तब साह जट्ट पुकारपैँ कछवाह भूपति पिल्लयो ॥  
 बुंदीम विनु सब संग नृप करि सेन संघय ठिल्लयो ॥  
 इन जाय तोपन माल कौँ राँच जाल थूहनि विंठई ॥  
 इत साह बुंदिय नाह बुलिलँ रु रौन बत्त सु पुच्छई ॥ ८४ ॥  
 बुधैँसिंह रान पठाय विन्नति चित्रकूट बसावहाँ ॥  
 क्रिय भेट दम्म त्रिलख ३००००० औ अपनो निदेस उठावहाँ ॥  
 नयैँमंद हड्ड नरिंद यौँ सुनि कुँम्म कानि हु नाँकरा ॥  
 जयसिंह उक्त प्रपंचैँ जानत हू यहैँ कथ उच्चर्गा ॥ ८५ ॥  
 वह दुर्ग अकबर साह रन करि अद्व द्वादस ७ मैँ लयो ॥  
 हम आदि बहुनन रौन तजि तब सोम साहनकोँ नयो ॥  
 वह चित्रकूट बसायकैँ पुनि रान फौल प्रचारिहैँ ॥

१ साम उपाय [सल] करके ॥ ८० ॥ २ और ३ पत्र लिख कर  
 ४ भोजन ५ विस्तारा [फिलाया] ॥ ८२ ॥ ६ जाटों की उठती ॥ ८३ ॥ ८ मे-  
 ला ९ एकत्र करके १० बुला कर ११ राणा की वार्ता ॥ ८४ ॥ १२ है बुधसिंह  
 १३ दीने म सुर्व १४ जयसिंह की १५ जयसिंह की कही हुई यह रचना जानना  
 या तो भी ॥ ८५ ॥ १६ राणा को छोड़ कर बादशाहों का शिर झुकाया है

अवनोप हिंदुन फोरि अंकुरि साह नाह बिसारिहँ ॥ ८६ ॥  
 यह गह फूरुक साह सुनि वह पत्र भीत विदारयो ॥  
 जयसिंहपै इत भीम थूहनि जंग मोह प्रमारयो ॥  
 करजोरि कहि मम गेह पुत्रिय अप्प उपनयँ कीजिये ॥  
 कछवाह तव जयसाह कहि कछु दाहँ अंतर दीजिये ॥ ८७ ॥  
 नृप बुद्ध सादरकी सुता हम पुँब्व सगपन कै वगी ॥  
 वहव्याह करि दैन रावरे गृह बत्त उपनयँ अहंग ॥  
 जयसिंह यह कहि भीममौ बुधसिंह प्रति दँल पल्लयो ॥  
 तुम व्याह मंडहु बेग मै पुनि भीमको वैच भिल्लयो ॥ ८८ ॥  
 बुधसिंह यह सुनि साहसौ लहि मिक्ख थूहनि संक्रम्यो ॥  
 जल घोर सिंधु हिलोर ज्यौँ दँल जोर जट्टनपँ जम्यो ॥  
 लिखि पत्र बुंदिय जोधँ सोदरकी सुता नृप बुँल्लई ॥  
 उम्मेदकुमरि सु नाम जो परिनाय कूगमकाँ दई ॥ ८९ ॥  
 कोटेम भीमहु अप्पनी तनयाँ सु तथ बुलायकँ ॥  
 वरजोर कूगम मोर काँ दिष प्रीति सह परिनायकँ ॥  
 सक अगि हय रिखि इंदु ७७३ हायन नैर थूहनि जंगमँ ॥  
 कछवाह इम दुव व्याह कीने वीर सुँचि रस रंगमँ ॥ ९० ॥  
 करि व्याह कूगम नाह यौँ पुनि ताव जट्टनपँ दयो ॥  
 हरिमथँ आपूकँ गँव ज्यौँ तरकाव तोपनको भयो ॥  
 उडि कोट अट्टी थट्ट यौँ गढ वैह जट्टनकँ परे ॥

१ हिन्दु राजाओं का २ उदय होकर बादशाह का स्वामी बन भूलैगा ॥ ८६ ॥  
 ३ डर कर फाड़डाला ४ बिबाह ५ दिन की छेटी ॥ ८७ ॥ ६ बुधसिंह के  
 सगे भाई की बंटी ७ पहिल ८ जीघ ९ विवाह की धार्ता स्वीकार करी  
 १० पत्र भेजा भीमसिंह का ११ चवन ॥ ८८ ॥ १२ चना १३ सेना का १४ छोटे  
 भाई जोधसिंह की बटा को १५ बुलाई ॥ ८९ ॥ १६ पुत्री को १७ बलवानु उस वीर  
 कछवाहे को १८ युद्ध में १९ शृंगार रत्न किया ॥ ९० ॥ २० चनों का २१ भाइ में २२  
 शब्द होवै तैसे २३ बुरजें २४ मार्ग .



कठि वेग तव गहि तेग वे सब सेन सम्मुह व्है मरे ॥ ९१ ॥

जयसिंह थूहनि तोरिकैं इम जट चूडामनि हन्यौ ॥

अरु बदनसिंहहिँ रक्खि सरनैं \*अप्प जय छक उप्फन्यौ ॥

जिहिँ बदनसिंह निकेत सूरजमल्ल जट सु पुतभो ॥

‡जर बाँटिकैं सिर §संति लौ भुव फोज लखन जुतभो ॥९२॥

द्वै कोटि २००००००००० आमद मुलक दबि रु ताव साहनपैँ दयो ॥

धरि बीस २००००००००० कोटि स्वकीय कोस सरोस सत्रुनकाँ जयो ॥

लार आगरा लहि मारि दिल्ली साह कोसन लुटिकैं ॥

क्रिय भरतपुर निज राजधानी जंग मिच्छन जुटिकैं ॥९३॥

गढ भरतपुर कुम्भेर डिग्घ रुबैर ए चउधनिर्मये ॥

असान सिर आमैरको भुल्लयो न जोहु इते भये ॥

वाकं जहाहरमल्ल पुत सहाय सूरहु जाँहिलौ ॥

बैठो सु मरुपति विजयसिंहहु इक गहिय ताहिलौ ॥ ९४ ॥

जिहिँ पुत्र नातिय ए भये तिहिँ सगन कूरम स्वीकरयो ॥

गढ फोरि थूहनि तोरि सब नृप जोरि' दिल्ली संचरयो ॥

रस राहसौँ रु सिराहसौँ मिलि साहसौँ जय अप्पयो ॥

सिरमोर भूप समस्तमैं बरजोर कूरम यौँ भयो ॥ ९५ ॥

कछवाह साह उभैरहि इक गिनि वंजाज भीम विचारयो ॥

जामात पर रचि घात जड नृप सख मंत्र समहारयो ॥

पुग रूपनगर नरेस अरु मरुदेसपति दुव बुल्लिकैं ॥

मिलि इक मद्धमति मंत्र मंडिय भूप तीनन भुल्लिकैं ॥९६॥

॥ ९१ ॥ \* आप ँ घग में ‡ धन बाँट कर § बदले में महतक लेकर ॥ ९२ ॥ १ अपने खजाने में २ जीता ३ चादशाह के खजाने का ४ मलेच्छों से ॥ ९३ ॥ ५ बनाये ६ बीर भी जिसकी सहायता लेते थे ७ मानवाड़ का राजा ॥ ९४ ॥ ८ पोते ९ स्वीकार किया १० सब राजाओं को एकत्रित करके ॥ ९५ ॥ भीमसिंह ने ११ बल विचारा १२ जमाई (जयसिंह) पर १३ सलाह की ॥ ९६ ॥

लिखि पत्र सद्यदपै \*ततखिन देस दखिन मुकलयो ॥  
 इत साहकी हित चाहसौं कछुवाह भूपति †उज्जलयो ॥  
 जयसीह यह कछु दीहमें अधिकार अप्पन पायहै ॥  
 बनिकैं वजीर समगत मस्तक चंडै घात चलायहै ॥ ९७ ॥  
 रहनों तुम्हें जु वजीर ठहै अरु बंधु बैर निवेनों ॥  
 तो बेग आवहु तेग मंडि छुमंडि कूम घेरनों ॥  
 द्रुत पिखिख यह छुद सजिज सद्यद सेन सम्मद उप्पग्यो ॥  
 सजि अग्य तोपन मग्य कोपन लज्ज लोपन संवरयो ॥ ९८ ॥  
 उज्जैन आय रु साहको दैल मंडि दूतन अप्पये ॥  
 हम आनि पूग्ग देससौं तुम पट्ट दिल्लिय थप्पये ॥  
 जयसिंह नृप मम भ्रात मांगक ताहि निज हिय लायकैं ॥  
 मम तुल्लय अहर अहस्यो सु दये हि अप्प भुलायकैं ॥ ९९ ॥  
 कछु लौस नहि बिसवासहै अब पाग आय रु अखिखहौं ॥  
 रन चाय आयस पाय मै निज बंधु बैर न रखिखहौं ॥  
 सुनि साह यह निज मातसौं सब बात सद्यदकी कही ॥  
 तब मात अखिखय घात यह जयसिंह उप्परहै सर्हा ॥ १०० ॥  
 तिहिं देहु सौंदर सिक्खसौं आमैर नैर पठायकैं ॥  
 तब चूक अप्पनमाहिं नाहिं लरैं जु सद्यद आयकैं ॥  
 सुनि साह यह कछुवाहसौं हित चाह अखिखय सर्वही ॥  
 तुम जाहु बेगहिं सिक्खि लै अति फेल सद्यदको मही ॥ १०१ ॥  
 जयसिंह अखिखय भो वजीर जु मौजदीनहिं मारिकैं ॥  
 लौहें सु आवत बैर ये सब चौर छत्र उतारिकैं ॥

\* उमी समग्र १ बडा १ आपके चजार पन का २ अर्थकर ॥ ९७ ॥ ३ साहयो  
 का बैर मिटाना होवे तो ४ पत्र ५ रुप सहित ६ चला ॥ ९८ ॥ ७ पत्र लिख  
 कर ८ हलकारों को दिया ९ मारनेवाला १० आदर से देने परावर किया ११  
 अपने ॥ ९९ ॥ १२ लहर १३ कछुंगा १४ छुक्रम पाकर युद्ध का चाह लै ॥ १०० ॥  
 १५ आदर के साथ १६ दोष (धूल) ॥ १०१ ॥

तसमांत सज्जहु सेन सम्मुह सत्रु सय्यद मारिहैं ॥  
 सबहिंदु पायन लाय हिंदुसथान आन बिथारिहैं ॥१०२ ॥  
 कहि साह तुम गृह जाहु जो अति जोर सय्यद जानिहैं ॥  
 पुनि तुमहिं बुल्लि प्रपंच करि तिहिं मारि खैंरै प्रमानिहैं ॥  
 तव कहिष कूगम गनहित फामान जो वह निर्भयो ॥  
 चित्तार दुग्ग बमायबेहित सो समुद्धहु नांभयो ॥ १०३ ॥  
 बुंदीस धैनन चिंति तव यह साह नांहिं न स्वीकरी ॥  
 कछु और मंगहु गन हित दैहैं सु यह पुनि उच्चरी ॥  
 आमैगपति तव एह अक्खिय गमपुर लिखिदाजिये ॥  
 करि भान भूपति गन सर्वसमान सेवक कीजिये ॥१०४॥

[ दोहा ]

मालवधर अंतर मुलक, नगर गमपुर नाम ॥  
 चंद्राउत भीसोद तैंहैं, स्वामि नाम संग्राम ॥ १०५ ॥  
 याकै पुरुखन अग्य अति, सेये दिल्लिय साह ॥  
 किये सुभट तव राव कहि, राज बग्वमि हित राह ॥ १०६ ॥  
 तवतैं बुंदिय जोधपुर, पुर आमैर सदान ॥  
 सनमानित सीसोदहू, सेवत रहि सुलतान ॥ १०७ ॥  
 तिन कुल यह संग्राम नृप, गहयो सुररि लहि काल ॥  
 छिद यहै तकि गहन छिंति, कहि कूगम भूपाल ॥ १०८ ॥  
 पदपात् ॥

कहि कूगम करजोरि सुनहु मम वत्त साह श्रुतैं ॥  
 रामपुर पै संग्राम रहिय अव सुररि जोर जुत ॥

१. इन्द्रकारण मे ॥ १०२ ॥ २ कुशलता ३ लिखागया था सोऽमुद्रा [छाप] सहित नहीं हुआ अर्थात् छाप नहीं लगी सो लगवादेयें ४ स्वीकार नहीं करी ५ यादर करके ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ ७ सन्मान पाकर द्वादशाह का ॥ १०८ ॥ ११काल में १२ पति

जनपद लेहु उतारि गहैं मुगुरैं न ठिकानाँ ॥  
 रानहिं देहु लिखाय रचहि सेवन यह रानाँ ॥  
 सुनि यह लिखाय फग्मान दिय करि समुद्र जयसिंह कर ॥  
 रान तुम दब्बि गढ रामपुर सज्जहु सेवन सुभट बर ॥१०९॥  
 दोहा ॥

रामपुरहिं लिखवाय इम, रान अरथ हित राह ॥  
 सजव सिक्ख करि साहसौं, नीति चतुर कछवाह ॥११०॥  
 जामिप डेरन आय कहि, चलहु अप्प करि सिक्ख ॥  
 इहाँ समय कछु औरभो, रहैं न राजस तिक्ख ॥ १११ ॥  
 षट्पात् ॥

सुनत एह बुंदीस दियउ कूग्म प्रति उत्तर ॥  
 तुम आयउ लाहि सिक्ख सजव सज्जित पँद्वति पर ॥  
 हमहि सिक्ख अब होत कछुक अंतर परिजहैं ॥  
 चलहु अप्प तममांत सिक्ख लौ हुत हम अहैं ॥  
 जयसिंह सु सुनि आमैरपुर आय कटक बहुसज्ज किय ॥  
 इत सँदल आय दिह्लिय उमँडि हुसनअली अनखात हिय ॥११२॥  
 स्वसुर साहको मूढ अजित अभिधान धँन्वपति ॥  
 रूपनगर रटोर जनक मातुलै विमंदमति ॥  
 योहोको जामात भीम कोटैस राम सुत ॥  
 वंध्युवरग त्रय जानि बीच डारिय विसास जुत ॥  
 कहि साह साम सय्यद विरचि राजकाज निबहहु सकल ॥

१ देश २ छाप (मुद्र) लगाकर ॥ १०९ ॥ ११० ॥ ३ पहिनोई [बुधसिंह] के डेरे पर ४ राजापन की या राजांगुन की ॥ १११ ॥ ५ मार्ग पर ६ इसकारण भे ७ सेना सहित ॥ ११२ ॥ अजितसिंह का नाम ६ मारवाह का पति १० यादशाह फुरोखसिपर के पिता का ११ मामा १२ विशेष मूल्य बुद्धिवाला १३ इहमी राजसिंह का जमाई भीमसिंह कोटा के राजा रामसिंह का पुत्र १४ इन तीनों को सम्बन्धी जानकर

इन दियउ डारि सय्यद श्रवनं उन सब फोरिय मंतबल ॥१२३॥  
 ए तीन ३ हि अवनपीप लचिग अति भुम्मि लुभाये ॥  
 बदलि साहसौं छन्न अधम सय्यद बिच आयें ॥  
 साहहिं दै विसवास इक बँसर जुरि इकत ॥  
 बैठे करन रहस्य साह पंचमपु करि सम्मत ॥  
 तब साह तीन भूपन पकरि बंधि जाहिकी पग्घ करि ॥  
 मखतूल पासि गल डारिकें मारि गिरायउ गारिलरि १२४  
 हरिगीतम् ॥

सक बेद हय गिरि इंदु १७७४ हांयन मास फग्गुन गोरमैं ॥  
 हनि साह त्रय नैरनाह सय्यद चाह हुव अति जोरमैं ॥  
 परि कूक दिस दिस हरमखानन नारि तोबँह उच्चरैं ॥  
 आतंक सय्यदको अतीव सु द्रव्य गोपेनहू करैं ॥ १२५ ॥  
 लै सबन हरमन द्रव्य धन्वें धरेसैं धी गृहमैं धरयो ॥  
 मरुईस सुनि वसुजुर्त पुत्तिपैं बुल्लि लोभहि अहरयो ॥  
 सह बित्त मुकल्लि धन्वं दिय तनया सु यौं मरु ईसनैं ॥  
 अरु भीमैं सय्यदसौं कही बुधसिंह वैर रचैं घनैं ॥ १२६ ॥  
 जयसिंह जौमिप है यहै तुमसौंहु छल करि तोरिहै ॥  
 तसैंमात मारहु याहि सब मिलि जोर छल यह जोरिहै ॥  
 सुनि एह सय्यद फेरि फोजन बँट्ट बुंदिय बंधयो ॥

१ यह वार्ता सय्यद के कानों में डाल दी ॥ १२३ ॥ २ भूमि के लोभ से ये तीनों राजा न-  
 म गये ३ एक दिन एकत्र होकर ४ एकान्त सलाह करने बैठे ५ बादशाह को ६ तीनों  
 राजाओं ने ७ उसी (बादशाह) की पगड़ी से ८ रेसम की फासी ९ गालियों से  
 लड़कर अर्थात् बादशाह को गालियें देकर ॥ १२४ ॥ १० सम्वत् के ११ शुक्लपक्ष में  
 १२ राजा १३ 'तोवा तोवा' करने लगी १४ धन छिपाने लगी ॥ १२५ ॥ १५ मार-  
 वाड़ के १६ पति की १७ पुत्री के घर में १८ धन १९ सहित पुत्री को २० बेटी को  
 धन सहित मारवाड़ में भेज दी २१ कोटे के महाराव भीमसिंह ने ॥ १२६ ॥  
 २२ यह दिन का पति २३ इसकारण से २४ बुन्दी का मार्ग

अवनिस तीनन३ अंपप लै बुधसिंह डेरनपैँ गयो ॥ ११७ ॥  
 बुंदीस यह सुनि सेन सज्जि रु सेन सम्मुह संक्रेम्यौ ॥  
 तव जैत आंखिय घोर यह अति जोर सद्यदको जम्यौ ॥  
 लाहोर तोरै न होय नृप तुम जाहु कूग्म देसमै ॥  
 हम धीर रन हमगीर जुज्जहिँ वीर जागठ बेसमै ॥ ११८ ॥  
 यह कहत आतुर आय खल दल जानि बहल लुं वये ॥  
 वजि वीर आनकँ यौ अचानक राग सिंधुव लगगये ॥  
 वजि डेरु डिंडिम डक ओ बहुरक अंभ फरकई ॥  
 अहि भोगं लेत लचक ओ धरनी सु धक्कन धक्कई ११९  
 परि ओर ओरन रोरेँ दिखिय जोर जालम जंग भो ॥  
 हटनारि हटन लागि पैटन अंग गंग विरंग भो ॥  
 प्रजरात जान बजाग वीथिनै यौ अलौत सु उच्छरै ॥  
 जिम मास बाहुल दरसपैँ नेहास कास करै जरै ॥ १२० ॥  
 आकास धूम रु धूलि धुंधुगि भान भासन लुप्पयो ॥  
 वजि कंक गिह सिचान पच्छंति रारि सद्यद रूपयो ॥  
 अनिरुद्ध सुंय तव तेग आरत मीर मारत निककलयो ॥  
 कुल बैरिसल्लजैँ जैतसिंह सु सेन सम्मुह उज्जकलयो ॥ १२१ ॥  
 पुनि जोधराज प्रधान ऊँरुज आय ए रन अंकेरे ॥  
 लहि रोक कोकन सोक भो पुरलोक ओकन मैँ दुरे ॥

१आप (सद्यद)तीनों राजाओं को साथ लेकर ॥ ११७ ॥ २ चला ३ जैतसिंह  
 ने कलाहलाहोरी दरवाजे तोकर ५ वृद्धावस्था में ॥ ११८ ॥ ३शीघ्र वा घबराया  
 हुआ कि बुधसिंह भाग नहीं जावे ७ डोल = ध्वजा ६ आकाश में १० फण  
 ११६ ॥ ११ भय १२ हादों के किवाड लग कर १३ गलियों में १४ अग्नि १५ का-  
 तिक मास की १६ असावास्या पर १७ दीपक १८ प्रकाश ॥ १२० ॥ १६ सूर्य का  
 देखना लुपगया २० पंच २१ पुत्र बुधसिंह). बैरीमाल के कुल में २२ जनमाहुआ  
 २३ वदों ॥ १२१ ॥ २४ धैर्य २५ खड्ग २६ सूर्य की रोक देखकर चक्रवा न-  
 कियों को शोक हुआ २७ घरों में छिपे.

कमनैत फोजनमै परघो भट जैत हड्ड हकारिकै ॥

रन नैर दिखियकी रही तिय जालैरंध्र निहारिकै ॥ १२२ ॥

तगवागि नागिनि जैतकी बिस मोह सत्रुनकाँदयो ॥

दल जुद्ध जाँव प्रबुद्ध व्हें नृप ताँव तोरन लंघयो ॥

निकसाय स्वामिय संकरै बान आट तोरनपै अरघो ॥

बाजि हक्क रन धमचक्क यों विनु मत्थ जैत लग्यो परघो ॥ १२३ ॥

परि वीर सत्रह १७ संगके दल जाँम इक्क १ सु रुक्कयो ॥

लागि क्रोध कै परि जोध ऊरुज स्वामि ज्ञान सब चुक्कयो ॥

लाहोर पँदति भूय कढि कछवाह जनपद संक्रम्यौ ॥

इत जीति संगर घोर सद्यपद जोर दिखिय मै जम्पौ ॥ १२४ ॥

किय साह नाम रफीलदोला माम छहदबिच सां मरघो ॥

तब आर किय दुवर मास बिच तजि सोहु संघैर संघैरघो ॥

तब किय मुहुम्मदशाह साँह सु चाह सद्यपदकी भई ॥

पह यों छहदहायनमै छ ६ साहन धौपि दिखिय भुगई ॥ १२५ ॥

(पट्टपात्)

सक बसु खट हय इंदु १७६८ मरिग आलम औरंग सुँव ॥

गुनहतरि ६६ हनि मोजरीन फूरु क पट्टप हुव ॥

किय रफीलदोला सु ताहि हनि सक चउहतरि ७४ ॥

पचहतरि ५७ पह मारत अवर किय सोहु गपो मरि ॥

सद्यपद बजीर पुनि मंत्र सजि आलम नाँती जानि जिय ॥

तक्कत रफीलकदह तनय साहमुहुम्मद साह किय ॥ १२६ ॥

१ दिल्ली नगर की छिये २ जालियों के छिद्रों में ॥ १२२ ॥ ३ घूर्त्ता ४ सेना से जब तक युद्ध हुआ ५ तब तक राजा सचेत होकर ६ जहर का दार लंघ गया ॥ १२३ ॥ ७ सेना को एक पहर तक गौकी ८ करके ९ जोधराज वैश्य १० भार्ग ११ देश में १२ चला ॥ १२४ ॥ १३ जरीर को छोड़ कर १४ चला (मर) १५ बादशाह १६ छः वर्ष में छः बादशाहों ने १७ दौड़ कर (जीघता ले) १२५ १८ पुत्र १९ आलम का पोता

( दोहा )

सक सर हय सत्रह १७१५ समय, सय्यद थप्पि सुं लाह ॥

पुर दिल्लीके पट्टपर, धग्यो मुहुम्मदसाह ॥ १२७ ॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपति बुधसिंहचरित्रे महाराणासंग्रामसिंहभगवानबुन्दीमुक्तयस्वीकारापराधक्षमापनमहारावभीमसिंहोदयपुरगमन १ करवरसमरनिरासकोटाकटकप्रत्यागमन २ मरुधराधीशाजितसिंहदिल्लीन्द्रफूरुकसियरस्वमुतापगिणायन ३ आत्तसैन्यहुसनअलीसय्यददक्षिणादिगमन ४ वैवाहिकनक्षत्रमन्तरापिहुसनअलीभीतत्यक्तोज्जयिनीनगरशरगुणाक्रोशान्तरजयसिंहस्वविवाहार्थगमन ५ जयसिंहप्रार्थनापत्रागमभीमसिंहत्याजितबुन्दीबुधसिंहप्रत्यर्पणा ६ यवनेन्द्राव्हानजयसिंहबुधसिंहदिल्लीसरणा ७ जयसिंहद्वारामहाराणासंग्रामसिंहस्यपुनश्चित्तोडवासहेतुफूरुकसियराज्ञापदहणा ८ चूडामणिजट्टविजयार्थजयसिंहाधिकारथूहणपुरयवनेन्द्रसैन्यप्रेषणा ९ थूहणपुरसमरविवाहद्वयकरणानन्तरजयसिंहजट्टविजयन १० जयसिंहविरोधेन कोटाधी-

॥ १२६ ॥ १ अपना श्रेष्ठ लाभ ॥ १२७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के पति बुधसिंह के चरित्र में, महाराणा संग्रामसिंह के कहने से बुन्दी नहीं छोड़ने का अपराध क्षमा कराने को महाराव भीमसिंह का उदयपुर जाना १ करवर के युद्ध में कोटा की सेना का निरास होकर पीछी आना २ मारवाड़ के राजा अजितसिंह का दिल्ली के बादशाह फूरुकसियर को बेटी विद्याहना ३ सय्यद हुसनअली का सेना लेकर दक्षिण में जाना ४ हुसनअली के भय से उज्जयिणी को छोड़ कर पैंतीस कोस के अंतर पर जयसिंह का बिना ही लगन विवाह करने को जाना ५ जयसिंह की अरजी जाने पर भीमसिंह से छुड़ा कर बुधसिंह को बुन्दी पीछी देना ६ बादशाह के बुलाने पर जयसिंह और बुधसिंह का दिल्ली जाना ७ महाराणा संग्रामसिंह का जयसिंह द्वारा बादशाह फूरुकसियर से चीतोड़ बमाने की आज्ञा मांगना ८ चूडामणि जाट को विजय करने के अर्थ बादशाह का जयसिंह के अधिकार में थूहणपुर पर सेना भेजना ९ थूहणपुर के युद्ध में राजा जयसिंह का दो विवाह किये पीछे



लांघि पहर खट्कअसनं लिय, पुनि सुनि कुसल प्रसंग ।३।  
 दिल्लीतें इहिं बिच निकसि, रन कारि बुंदिय नाह ॥  
 मिलिय आनि जयसिंहसौं, टांडा अधिक उछाह ॥ ४ ॥  
 कोटापति अग्गैं लियउ, सोपुर मुलक छुराय ॥  
 इंद्रसिंह सोपुर अधिप, निकस्यो प्रान बचाय ॥ ५ ॥  
 गोर बंस अवतंस यह, सोपुर पुर अधिराज ॥  
 आयो मिलि बुंदीससौं, कूरम ढिग भुवकाज ॥ ६ ॥  
 उछुर ॥

इत उदयपुर पति एस, संग्रामसिंह नरेस ॥  
 पुर रामपुर लहि पत्तैं, सजि सेन पिछ्लिय तत्त ॥ ७ ॥  
 तिन रामपुर नरनाह, संग्रामसिंह सचाह ॥ ८ ॥  
 कर बंधि नैरं बिहाय, पय रान लग्गिय आय ॥  
 तव रान लखि नंत एस, दिय मंडि अद्वह देस ॥ ९ ॥  
 लहि अद्व भुव तव राव, हुव गनको उमराव ॥

बराव १ मराव २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

भुव अद्व छिन्निय रान, थित च्यारि४ पुर जुतथान ॥१०॥  
 जिन्नोद १ जीरन २ द्रंग, सजि कुकुटेश्वरसंग ॥  
 लिय नैर नीमचि४नाम, किय तथ सेन मुकाम ॥ ११ ॥  
 भुव अद्व लौ इम रान, दिय फेरि अप्पन आन ॥  
 भुव अद्व पत्तिहिं रक्खि, लिय बंदगी रस चक्खि ॥ १२ ॥  
 खट सत्त हय इक१७७६मान, लिय गामपुर इम रान ॥  
 इत जोर सयपद किन्न, गहि हत्थ दिछ्लिय लिन्न ॥ १३ ॥  
 निज पति मुहुम्मदसाह, ताकी न कछु जिय चाह ॥

१ भोजन ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥  
 १ भोजन ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥  
 १ नगर को छोड़ कर ७ नज़र देख कर ८ आधा देश लिय दिया "यह  
 रामपुरा वाले पहिले से पीतोड़ के राव थे परन्तु उस महाराणा की विपत्ति  
 में स्वतंत्र राजा होगये थे" ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

कोटेस अरु मरुनाह, किय दोहुबुल्लि सु लाह ॥ १४ ॥  
 तुम जाय निज निज देस, सज्जहु अनीक बिसेस ॥  
 खगमार धारन खेगि, लैहैं ब कूम घेरि ॥ १५ ॥  
 दुवरसालै जाँमिप मारि, आमैर बुंदिय धारि ॥  
 रहिहैं निरंकुस होय, पिच्छैं न कंटक कोय १६ ॥  
 मरुईस सुनि यह वत्त, मरुदेस आयउ मत्त ॥  
 लागि सेन सज्जन अंध, कछुवाह सीस कबंध ॥ १७ ॥  
 इत भीम भुम्मि उमंग, ब्रज आय गोकुल द्रंग ॥  
 गुरु गोकुलस्थ बिचारि, लिय मंत्र बल्लभ धारि ॥ १८ ॥  
 ॥ दोहा ॥

बल्लभमत चहि मंत्र लहि, रजततुला किय दान ॥  
 हुव सेवक ब्रजनाथको, कोटापति चहुवान ॥ १९ ॥

( पादाकुलकम् )

कृष्णादास निज नाम कहायो, नंदगाम कोटा लिखवायो ॥  
 सेरगढ सु थप्पिय बरसानाँ, इन नामन व्यवहार चलानो ॥२०॥  
 कोटकोट अंतर कोटापुर, किय ब्रजनाथ निवेदित आतुर ॥  
 दान रु द्विज भोजन बहुदिनाँ, चिकनमाँहिरहनाँ पुनि लिन्नाँ २१  
 दुस्यो कितव डेनरके अंदर, बाहिर नाँयो पंद्रह १५बाँसर ॥  
 रोग रोग कहि मृत्यु उडायो, कोटापुर सुनि सोक अघायो ॥२२॥  
 माधानी मिलि चाहि जुद्ध चित, सावधान कोटा किय सज्जित ॥  
 द्वारन अगरेँ लगाय धीर धुव, बुगज बरन सिर मरन मंडि हुव २३  
 जान्योँ मृत भीमहिँ सुनि अँहँ, बुंदिय कटक छिन्नि गढ लैहँ ॥  
 सोहि भई सालम सुनि धायो, लुट्टन कोटा मुलक लगायो ॥२४॥

१ मारवाड़ का पति ॥ १४ ॥ २ सेना ॥ १५ ॥ ३ लाला ४ बहिनाई ॥ १६ ॥ ५ ॥ ६  
 बल्लभ संप्रदाय को ॥ १८ ॥ ६ चाँदी की ॥ १९ ॥ ७ सेरगढ का नाम बरसाना  
 रक्खा ॥ २० ॥ ८ अँह ॥ २१ ॥ ९ छलाँ १० नहीँ आया ११ दिन ॥ २२ ॥ १२ मा-  
 धोसिंहोत हाडा १३ किंवाड़ ॥ २३ ॥ २४ ॥

दिल्लीमें वर्ष साल विद्वत्ति ७२, सालम पठयो मृगय सन्धि करि ॥  
 इति तव श्रेयो गज श्रेयो, ॥ किंचिदसमुक्ति विनु फंगो फंगो ॥  
 अब यह साल छदनरि ७६ अंग, मृत मृत मुनि भोमदि ॥ ज्ञानि सवरा  
 बुद्धिमें यहि वेग बुद्धि, रूपि सालम कोटा धर गुरु ॥ २६ ॥  
 विनु वर्ष मयापय दौड़ बहायो, मार लूट करि फौत मचायो ॥  
 सु मुनि भोम गोकुल सन चलयो, गिनि सागभे मुच्छन कर घलयो  
 काटापुर पैना निम वेता, हार आय सुभदन दिव हेता ॥  
 खुल्लह अमर तिपत हम आये, प्रात सबदि कारिहें मनभाये ॥ २८ ॥  
 यह सुनि अजबसिंह माधानी, प्रेम सुवन बानी पहिचानी ॥  
 शशि तव आयउ हार कन्ह हर, अमर सुखि भूपति तिय अंदर ॥ २९ ॥  
 बंदिग धर तव कुसल बधाई, हम सु भोम वर रति विदाई ॥  
 प्रानदि कटक अयापक सज्जयो, गदि गुमान सालमसिर गज्जयो ३०  
 पुर घाटोनि नना अह सालम, पहुँचयो भोम जोरि दत्त जालम ॥  
 सालम दलदिपकिअ विस्थर सह, सवन सुनाय भोम अदखी पर ३१

पल वक्रमम् ॥

सालम दल यह सज्जि सुनाक निज मारयो ॥  
 अयन अथ इति स्वत करन ललकारयो ॥  
 हुर मरिपनि बलवान तना हम गिनिहें ॥  
 कोटापानि सहुहुन नना पैद विवेति हें ॥ ३२ ॥

( अंदा )

भीम कहिय जिते विनाँ, अप्पन जियत रहैंन ॥

अप्पन विनु यह उग्रवहै, लैंहैं बुंदिय अँन ॥ ३४ ॥

यह कहि बाजिन बग्गलै, परयो भीम पैवि पात ॥

खरकोनैन मनु चुगत खिन, घल्ली सेनन घात ॥ ३५ ॥

मरुभाषा डिंगलभाषेत्येके ॥

अस्मिन्सजातीयेष्वेवप्रसिद्धंगीतनामकं मरुदेशीयं छंदः ॥

गीतेष्वपिसुपत्नीगीतः ॥

भूमी लागरै लुंभाणों डाणों संपाति रूपरा भड़ाँ,

लेताँ ताणों बागरै भूपराँ लग्गी लीह ॥

अंधायो खागरै बीसँ मागरै ऊपरा आयो,

सालमेम नागरै धूपरा भीमसीह ॥ १ ॥

घटा बीज घाटकी उतोळे खागाँ वीर घाँचै,

रटा त्रंवाटकी बागाँ घोळे नागाँ राडि ॥

दै काँवो रामरै छटा बिहंगराटकी दाँळे,

फँटा सेना विरोळे भाटकी फाडि फाडि ॥ २ ॥

शुन्दी का स्थान लेवैगा ॥३४॥ २वज्र पड़ने के समान ३मानों चुगते हुए तीतरों पर शिचाख (सिकरे) ने घात डाली ॥३५॥ मरुभाषा जो डिंगल भाषा कहलाती है उसमें हमारी जाति में ही प्रसिद्ध है ऐसा गीत नामक मारवाड़ी छन्द, जिन गीतों में भी यह सुपंखरा गीत है ॥ भूमि का ४ लोभ लाग कर ५ डाणा लगा हुआ (मस्त) संपाति रूप के वीरों से घोड़ों की बागें ६ खींचते ही ७ भूमि पर ८ लकीरसी लग गई खड्ग से ९ अतृप्त [भूखा] १० वी [पत्नी] तिन के ईस (गरुड) के मार्ग से सालमसिंह रूपी सर्प के ११ मस्तक पर भीमसिंह आया ॥ १ ॥ घाटा में विजुली के १२ रूपवाले खड्ग को हाथ में तोल कर, वीरों को घेर (धकेल) कर १३ तासों के भिरन्तर शब्द होने पर सर्पों से युद्ध करके रामसिंह के पुत्र ने १४ घेरा देकर, पत्नियों के राजा [गरुड] की शोभा से चारों ओर, सेना रूपी १५ फणों को १६ उडाये, और उससे नाकों को फाड़ फाड़ कर पछांट डाली ॥२॥ डांणां लगेहुए (उस डांकी वीरों का विशेषण है)

डांणाँ ओक ओक \*जाँगी जैतरा रुड़ाया डाकी,  
तोक चंचाँ केवाणाँ छुड़ाया वीर ताल ॥

†पाँणाँ ओक संभरी असंखाँ के उड़ाया प्राँणाँ,  
बाणाँ सोक पंखाँ के उड़ाया बूंदीवाल ॥ ३ ॥

काटी पूंछ भंडा ले ‡किसोर दूजे दाटी कोपि,  
सेना फटा फाटी मैँ कटार पंजाँ साजि ॥

वैनतेय भीमरी सपाटी तेग आगैँ बचे,  
भोगी जांगीरसगे त्रिपाटी गया भाजि ॥ ४ ॥ ३६ ॥

प्रायोदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

‡अहि सालम इम भजिंजगो, फोज फटा सु फटाय ॥

व्याधि महिन कृमि वैर की, अतिजव बुंदिय आय ॥ ३७ ॥

कोटेमहु हुन पिडि लागि, लिनी बुंदिय घेरि ॥

सठ सालम इक दाह लरि, गो भाजि आयुध गेरि ॥ ३८ ॥

जायो जुगियरामको, आयो नगर भलाय ॥

कोटापति इत लुट्ट करि, बुंदिय दिन्न जराय ॥ ३९ ॥

फगुन विसद चउत्थि४सक, रस हप सत्रह१७७६मानँ ॥

बहुरि भीम बुंदिय लई, इम फेगी निज आन ॥ ४० ॥

ने घर घर में मिजाय के \* नगरे बजाए और तरवारों रूपी चंचुओं में उठा-  
कर लड़कों की सूटों से वीरों की तालियाँ [छोखिलें] छुड़ाई, इसकारण हे चह-  
याण तुम्हारे † हाथों को धन्य है कि जिन से असंख्याँ के प्राण उड़ाए और  
बाणाँ के सोक रूपी पंखाँ से बूंदीवालों को उड़ाये ॥ ३ ॥ उस सेना के भं-  
डे लेने रूपी पूंछ को काटा और ‡ दूसरे किसोरसिद्ध ने क्रोध करके दयाई  
कटार रूपी पंजाँ का भय सज कर सेना रूपी फण को फाड़ा, इसप्रकार गर-  
द रूपी भीमसिद्ध की लीध बल्लनेवाली तेग के आगे बच कर, जांगीराम का  
पुत्र रूपी भय लीधता की दौर से भाग गया ॥ ४ ॥ ३६ ॥ † वर्ष १ फण २  
गोम नरसिंह ३ पद पैर का कोटा ४ पहलु लीध बूंदी आया ॥ ३७ ॥ ५ लीध  
॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ६ सुदि पद का ७ मसाण आला ॥ ४० ॥

सबहि देम बुंदीसको, अडर भीम अपनाय ॥

लूट माँहिँ बहु द्रव्यलै, इम पुनि कोटा आय ॥ ४१ ॥

( पादाकुलकम् )

अवरहु भीम देस बहु छिन्नै, चउदह सहस्र ४००० गाम निजकिन्नै  
अग्गैलिखित \*कूर्महिँ अप्पो, सो सब लुप्पि लोभहिय थप्पो ४२

हुलासि एह अक्खिय सुभटन हित, अब ब्रजनाथ करहि मबःच्छित ॥  
रन जयभिँह †बुद्ध लारि मागहिँ, ‡वसुमति आन §अमोघ विथारहिँ ४३

इक पुत्रहिँ बुँदियगढ अप्पहिँ, थिर इक्कहिँ कोटागढ थप्पहिँ ॥

इक सुतहिँ सोपुग्गढ दैहैँ, हम उज्जैन राज अब लैहैँ ॥ ४४ ॥

तदनंतर सय्यद प्रति कग्गंग, पठयो द्रुत लिखि भीम अप्पकर ॥

इत दल सजव सज्जि हम आवत, उत तुम आहु कटक अमावित ४५

पकरि बुद्ध जयसिँह विपक्खेन, लैहैँ पहुँमि मारि भट लक्खेन ॥

यह लिखि संगर भीम उमाहयो, चर्भु सज्जि सहस्र बीस २००००

जय चाहयो ॥ ४६ ॥

[ दोहा ]

इत मय्यदसौँ मिकख लहि, अजितसिँह मरुँ आय ॥

जँह सुभटन एकतँ जुगि, अक्खिय रंल उपाय ॥ ४७ ॥

[ पद्यात् ]

मिसल अठ उमराव जयहिँ उडोर इक्क जुगि ॥

अजितसिँह प्रति अक्खि अनयँ किन्नौँ तुम अँकुँरि ॥

कूर्मपतिसौँ तोरि अप्प सय्यद चाहयो उर ॥

॥ ४१ ॥ \* कछवाहा जयसिंह को दिल्ली में लिख दिया था कि बुन्दी के पर-  
गने छोड़ देंगे, उसको ॥ ४२ ॥ † बुद्धसिंह को ‡ पृथ्वी पर § पाला नहीं  
फिर ऐसी आशा फैलावेंगे ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ? जिस पीछे २ पत्र ३ अपने हाथ  
में ४ नहीं भावै ऐसा ॥ ४५ ५ शत्रुओं को ६ भूमि ७ युद्ध पर उन्माह युक्त  
हुआ ८ सेना ॥ ४६ ॥ ९ मारवाड़ में १० एकत्र ॥ ४७ ॥ ११ अनीति करी १२  
बड़े होकर

अज्ज गई आमैर कलिह जै हैं सु जोधपुर ॥

स्वामिकों मारि सद्यद सबल कानि न रक्खहिं अप्पनी ॥

तसमांत जोरि जयसिंहसों धन्व पहुमि रक्खहु धनी ॥४८॥

दोहा-कूरमसों सगपन बिरचि, मरुधग बुल्लहु ताहि ॥

रुचिर सुता अब रावरी, बिधिजुत देहु बिबाहि ॥ ४९ ॥

मरुपतिसों यह मंत्र करि, पठयो सुभटन पत्त ॥

नृप कूरम आवहु निडर, यँहँ व्याहन अनुरत्त ॥ ५० ॥

कूरम सुनि पच्छी कहिय, धरा अलप तुम धाम ॥

रक्खहु पुत्रिन जतन रचि, परहिं साहसों काम ॥ ५१ ॥

यह सुनि इन पच्छी लिखिय, हम तुम बिच हरिं आहिं ॥

आवहु अप्पन इक्कहँ, जावहु ससुख बिबाहि ॥ ५२ ॥

सु सुनि कंच जयसिंह किय, सजि दल सबल सिपाह ॥

बुंदी सोपुर नृप उभयर, चलिय संग हित चाह ॥ ५३ ॥

( पादाकुलकम् )

रस हित बिनय परसपर रत्ते, तब नृप तीन३जोधपुर पत्ते ॥

रठोरन अक्खिय कूरम सैन, लगनबेर अब चलहु बिबाहन ॥५४॥

मरुपति सों तब सबन सँमक्खी, कूरमपति सुभटन यह अक्खी ॥

हँम नृप परनि पधारहिं जोलौं, हमबिच रहहु धन्वपति तोलौं ॥५५॥

अजितसिंह यह मन्नि रहयो यँहँ, कूरमपति गो तब व्याहन कँहँ ॥

रनँ जिम सजिज कवच धारन करि, बैर दुलहनि रठोरि लई बरि ५६

१ उसके पति बादशाह को मार कर बलवान् हुआ है २ इसकारण से ३ मारवाड़ की भूमि ॥ ४८ ॥ ४ सुन्दर पुत्री ॥ ४९ ॥ ५ उमरावों ने ६ पत्र भेजा ७ प्रीति युक्त ॥ ५० ॥ ८ तुम्हारे घर में ॥ ५१ ॥ ९ विष्णु भगवान् हैं ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ १० नम्रता ११ रक्त प्रीतियुक्त हुए १२ जयसिंह से कहा १३ विवाह करने को ॥ ५४ ॥ १४ मच्छी सामने, गोबरू १५ सहाराजा [जयसिंह] १६ हे मारवाड़ का पति [अजितसिंह] तब तक हमारे बीच में रहो "भीतर जयसिंह का चूक करके न मार सकै इसकारण से" ॥ ५५ ॥ १७ जैसे युद्ध में सज्जित होकर जाता है तैसे १८ श्रेष्ठ दुलहनि राठोड़ी की बरी ॥ ५६ ॥

( दोहा )

इक नबाब कलीजखाँ, इहिँ अंतर लहि \*काल ॥  
दक्खिन सन आयो दुसह, दिल्लीपर रचि जाल ॥ ५७ ॥

( षट्पात् )

हुसनअली सय्यद वजीर सुनि एह बंदि †जर ॥  
नाम दलावरखान मुगल ‡पिल्लयो तिहिँ उप्पर ॥  
नरउर पति गजसिंह संग सह सेन दयो सजि ॥  
कटोपति प्रति पत्र त्वरित लिखवाय गेबब तजि ॥  
मारहु कलीजखानहिँ मरद खानदलावर संग रहि ॥  
जयसिंह जेर पिच्छैँ करहिँ यह करि जेर कलीज अहिँ ॥ ५८ ॥

( दोहा )

सु सुनि भीम सिर धुन्निकैँ, दिय दैल अधिक छुराय ॥  
जान्यौँ तप जयसिंहके अंत अप्पनाँ आय ॥ ५९ ॥  
बुढे वीरन संग लौ, तब यह मरन बिचारि ॥  
सम्मुह खानकलीज सौँ, रचन चलयो अब रारि ॥ ६० ॥  
खानदलावर भीम अरु, नरउरपति कछुवाह ॥  
दरकुंचन चलि भिँटये, सजुन सबल सिपाह ॥ ६१ ॥  
मेकलँजाके पार इक, तटिँनी कोठी नाम ॥  
तीननइ खानकलीज सौँ, सजिय तत्थ संग्राम ॥ ६२ ॥

षट्पात् ॥

सल्लो जुरि दुवरसेन हुलसि जुजम्हन बढि हल्ली ॥  
काँदबिनि चल्ली किँ बाढ चमकत धैनबल्ली ॥

\* समय पाकर ॥ ५७ ॥ † धन बाँट कर ‡ संजा १ घमंड को छोड़ कर २ हे वीर ३ दलावरखाँ कैसा धरद कर ४ कलीजखाँ रूपी सर्प को ॥ ५८ ॥ ५ जयसिंह के मारने को अधिक सेना इकली थी जिसको छोड़ कर ६ जयसिंह के तप से ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ७ नर्मदा नदी के पाम = नदी ॥ ६२ ॥ ९ घाँड़ों के सवार १० मेघमाला ११ मानाँ १२ विद्युत् (विजुर्ता)



दिष्टि जुगत हय दपटि मिले रनरसिक महाभट ॥

तव बज्जिग तरवारि भीरु भज्जिग बट \*उब्बट ॥

गिद्धनि सिचान †संकुलि गगन रचि ‡मयूख अवरोध क्रिया ॥

खुरतार मार §जव धार खुदि दिसदिस ¶पुहवि दरारदिय ६३

लग्गे जिम जिम लोहँ छोहँ तिम तिम उर छायो ॥

धायो जिम जिम धीर बीरँ तिम तिम प्रकटायो ॥

जिम खादित जैपालँ मथत अत्रन द्रुत दुँज्जर ॥

इम कलीज दलँ अतुल मथ्यो सायुध संय संभर ॥

हैदराबाद भट बहुल हनि चिरँ अच्छरि रस चकखयो ॥

भूपाल भीम काटस सिर रुद्रमाल नैन रकखयो ॥ ६४ ॥

हत्थी भज्जत हड्ड चढ्यो हयबर रँय चंचल ॥

हय कट्टत पयचौर बन्यो खयकौर महाबल ॥

तोमँर तुट्टत तंग तेग तुट्टत करि कत्तिपँ ॥

कत्तिय कट्टन कैरद घोर छत्तिय अरि घत्तिय ॥

देख्यो कजीज जीवन दुलभ मिलत भीम भद्व सुदिरँ ॥

जिम जिम रँयसीस रज रज रचिय तिम तिम धुन्निरँ संसुसिर ६५

दोहा ॥

मुनि हय मत्त रु इक्क १७७७ सक, जेठ रु पुणिसाम दीह ॥

\*बिना मार्ग आकाश म भर कर सुय की करणों को रोक दी शीघ्र दौड़ने के वेग से १ भूमि ने ॥ ६३ ॥ १ शस्त्र २ क्रोध वा उत्साह ३ चौर रस ४ जिसप्रकार दुःख से ज़रनेवाला खाया हुआ ५ अजैपालया [जमालगोटा] अंतां को शीघ्र मथ डालना है तिसीप्रकार महाराज भीमसिंह ने ६ कलीजखां की बड़ी सेना को मथी ७ आयुध सहित हाथ से चहवाण ने ८ बहुत ९ राजा भीमसिंह ने अपने मस्तक को शिव की सुंडमाला के अर्थ नहीं रक्खा, अर्थात् टुकड़े टुकड़े होगया १० बंग में चपल घोंडे पर चढा ११ पैदल हांकर १२ नाश करनेवाला [यमराज] १३ भाला १४ खड्ग विशेष १५ कटारी अथवा मतांतर से छुरी १६ भादवा के मेघ के समान १७ अपने मस्तक को १८ सुंडमाला के योग्य नहीं रहने के कारण शिव ने मस्तक धुना ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

परघो दलावरखान रन, सहित \*भीम गजसिंह ॥ ६६ ॥

नाउरपति जाजव भज्यो, परघो इहाँ तजि प्रान ॥

मारि हजारन भीम जिम, परघो भीम चहुवान ॥ ६७ ॥

( पट्टपात् )

सुनि कोटापुर भयउ †भीत मरतहि निज भपति ॥

धाडभ्रात भगवान हुतो बुंदी सु जानि ॥

बुंदिय बिच बुधसिंह आन फिवाय सोधि उर ॥

अप्यन सब थानाँ उठाय आयउ कोटापुर ॥

सुनि खबरि एह मतिमंद सठ सालम आय कलाय सन ॥

बनि सचिव मुरूप बुंदिय बहुरि राजकाज लग्गो करन ॥६८॥

[ दोहा ]

तनय तीन ३ नृप भीमकै, जेठो अज्जुन १ नाम ॥

अमरगान भानेज यह, तब भूपति हुय ताम ॥ ६९ ॥

रुपामसिंह २ मध्यम सुवन, लघु सुत दुरजन साल ३ ॥

राज लोभ निसदीह रखि, कहत एहू काल ॥ ७० ॥

[पट्टपदी]

हुसनअली इत सज्जि छोह कूरम सिर छायो ॥

साह सुहुम्मदको चढाय आमै चलायो ॥

सयपद अति बरजार साह दुम्मन इहिँ कारन ॥

चितत रहत उपाय मन्नि निहचै तिहिँ मारन ॥

तब नाम सुहुम्मदखान इक तूगनी तक्कयो प्रवल ॥

रचि मल साह तासौ रहंसि माग्घो सयपद छेदि छल ॥७१॥

दोहा—तब पच्छे दरकुंच करि, हुसनअलीको मारि ॥

\* भीमसेन के समान ॥ ६७ ॥ † भय ‡ भीमसिंह का नाश जानकर ॥ ६८ ॥

१ मशरफा अमरसिंह का २ तडाँ [कोश में] ॥ ३६ ॥ ३ पुत्र ॥७०॥ ४ उदात्त

५ एकान्त में सलाह करके ॥ ७१ ॥

वनि स्वतंत्र इम साहहू, पुर दिल्लिय\*पगधारि ॥ ७२ ॥  
 बरस तीन३ नृपकै बच्यो, भावतसिंह कुमार ॥  
 दुव२रानिन उर दोय२सुत, बहुरि भये इहिं वार ॥ ७३ ॥  
 नाम भवानीसिंह सुत, कछवाही गृहजात ॥  
 पदमसिंह दूजो२ भयो, बुंडाउति जठरांत ॥ ७४ ॥  
 कुमर बधाई जोधपुर, पर्ता संभर पास ॥  
 जयसिंहहु तथहि सुन्यौ, सय्यद सत्रु विनास ॥ ७५ ॥  
 सुनत कुंच जयसिंह किय, विनस्यो सय्यद बैर ॥  
 सोपुर बुंदिय नृपन सह, आयो पुर आसैर ॥ ७६ ॥  
 संभर किय बुंढाहरहि, दसवा निवसथ बास ॥  
 अनाहत जयसिंह गा, साह सुहुम्मद पास ॥ ७७ ॥  
 अहु मत्त हय इक्क १७७८ तक, चित्त भहर करि चाह ॥  
 अकवारपुर सूबा दियउ, कूम्पतिकौ साह ॥ ७८ ॥

### पञ्चाटिका ॥

पुनि कहिय साह कछवाह राय, कयौ नाहिं अत्रं बुंदीस आय ॥  
 जयसिंह कहिय सालमं नरेस, आवाद रखत पुनि नाहिं असेस ७९  
 कोटेस भीग करि जोर दीय, बागौ मऊ सु लिन्नै छुराय ॥  
 विनु खरच नाहिं निवहत प्रवास, जर कोस सबहि हुव नैठ जास ॥  
 सतपंच ५०० सुमट साँदी सुमंतै, मभ संग दिय सु हाजरि रहंत ॥  
 सुनि साह दयो अँभरख निवारि, अँसी अनेक दिय कुँम्म टारि ८१  
 चूडामनि सुत सुहुकम्म जहु, इन दिनन बहुरि लागो कुँबहु ॥

\* पधारा ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ कछवाही के घर में १ जन्मा २ जठर (उदर)  
 से ॥ ७४ ॥ ३ सुधासिंह के पास ॥ ७५ २ नाज हुआ (मिट्टा) ॥ ७६ ॥ ५ सुधासिंह  
 ने ६ दसवा नामक ग्राम में ७ जिनका बुलाया ॥ ७७ ॥ ८ कृपा ॥ ७८ ॥ ९  
 यहां १० सालमनिह ११ राजा (सुधासिंह) का ॥ ७९ ॥ १२ जोर की रीति से  
 [बल पूर्वक] १३ नष्ट ॥ ८० ॥ १४ मवार १५ अष्ट बुद्धिवाले १६ क्रोध १७  
 जयसिंह ने ऐसा अनेक आपनिय टाल दीं ॥ ८१ ॥ १८ कुमार

करि लूट मुलक सिर घलि घत्त, मरुईस सरन मरुदेस पत्त ॥ ८२ ॥  
जयसिंह बदन जट्टहिँ सहेत, बहुभुव दिवाय थूहनि समेत ॥  
वै साह हितु मुहुकम हराम, पातै पलाय गय धन्व धाम । ८३ ।  
तब साह कहाई हे नरेस, आतुरं गहि भेजहु जट्ट एस ॥  
मन्थो न हुकम यह धरु महीस, रचि साह मुहुम्मद सुनत रीस ८४  
इत लहि प्रमाद आलस अनंत, बुंदीस गाम बसवा बसंत ॥  
तँह किय अनीति लोकन अपार, दबिबय अनेक परकीय दार ८५  
ताड़न रु लूट तज्जर्न विधाय, पत्तन प्रजा सुँ किय दुखित प्रीय ॥  
पुरजन सब लहि तब दुख अपार, कूरम प्रति दिल्ली किय पुकार ८६  
सुनि कहिय भूप कूरम हसंत, बसवा सु गाम अबहु बसंत ॥  
कहि पुनि वे जामिप अस्मदीयँ, सहनौँ समस्त दुखखहु गैरीय ८७  
तुम माँहिँ अबहु जो परहिँ त्रास, तो कहहु जाय बुंदीस पास ॥  
मम डिग जो अँहो बहुरि भजिज, दैहौँ निकासि तो तौँडि तज्जि ८८  
यह कहि पुरवासिन सिक्ख दिन्न, कूरम इम जामिप हितहि किन्न ॥  
मन्थो न हुकम इत मरुँ नरेस, बँलसजिय साहतिहिँ सिरबिसेस ॥ ८९ ॥  
मरु पिच्छिँ वहादुरखान मीर, पिल्लयो पुनि कूरमपति प्रवीर ॥  
इम दुव २ चलाय मरु दिस अमौँन, मरुपहु सुनि सम्मुह किय प्रयान ९०  
मगरूर पूर बनि मरु महीप, सजि आय मनोहरपुर समीप ॥  
इततँ सँसेन मारन उपाय, जयसिंह बहादुरखान आय ॥ ९१ ॥  
मरु ईस अतुलँ लखि साह सँन, भजिगो तजि डेरन अप्प अँनँ ॥

१घात २मारवाड़ गया ॥ ८१ ॥ ३मारवाड़ में भाग गया ॥ ८२ ॥ ४श्रीग्र ५ मारवाड़ के पति ने ॥ ८४ ॥ ६पराई स्त्रियों को ७ पीटना ८ धमकाना ९ करके १० उस नगर की प्रजा को ११ बहुत दुखी की ॥ ८२ ॥ १२ काकुभापा से कहा कि क्या अब भी वह ग्राम बसता है १३ हमारे बहिनों हैं १४ भारी दुःख होंगे सो भी सहना चाहिये ॥ ८६ ॥ १५ ताड़ना और तर्जना करके ॥ ८८ ॥ १६ बहिन के पति का १७ मारवाड़ के राजा ने १८ सेना ॥ ८९ ॥ १९ मारवाड़ में भेजा २० अमाप २१ मारवाड़ के पति ने भी ॥ ९० ॥ २२ सेना सहित ॥ ९१ ॥ २३ अनांत (बहुत) २४ अपने घर (जोधपुर)

सक अंक सप्तहय इक्क १७७९वाँच, रन छेरि लगाई गालिनीच १२  
 सुनि साह कटैक अंति जब चलाय, रठोर बिभव लिय लुट्टियाय  
 संभर बिनु कहँ लरतहु सुन्यौं न, भजि भजि गो संगर छोरि भौंन ९३  
 अगँ जब आलम गो चलाय, अल्हनपुर लग्गो पयन आय ॥  
 पुनि अंमर रान कर लिखित दिन्न, सो मेटि साह जामाँत किन्न ९४  
 अरु बहुरि सय्यदन मिलि अधर्म, जामाँत साह हनि किय कुकर्म  
 पुनि तब तृतीयरन समय पाय, पृर्तना तजि कातर गो पलाय ९५  
 जयसिंह बहादुर लगिय पिठि, इन रचिय मंत्र गृह जाय निठि ॥  
 रघुनाथ सचिव रठोर सर्व, मिलि कहिय राज गय अर्पण गर्ब ९६  
 कर वंधि परहु अब साह पाय, जो यह नँ देहु कुमारहिँ पठाय ॥  
 भट सचिव मंल इम तब बिचारि, जयसिंह नरेसहिँ बीच डारि ९७  
 सुत अभयसिंह पट्टप समर्थ, पठयो पुर दिखिय कुम्भ सत्थ ॥  
 रघुनाथ सचिव दिप संग तामँ, लहिसाह जाय इन कियसलाम ९८  
 गृह जाहु कुमार यह कहिय साह, आवत हम मंडहु रन उछाह ॥  
 तब कुम्भ कहिय यह गिनत आन, याको न दोस जन कहि अमान ९९  
 पुनि कहिय साह जो यह प्रपन्नै, तो जनक इनहु तब हम प्रसन्न ॥  
 यह सुनि उवाचँ कछवाह ईस, वहाँहँ जु हुकम धरिहँ सु सीस १००  
 प्रल्हाद एँह तुम हरि प्रमान, मरुपति हिरण्यकसिपुव समान ॥  
 यह सीस साह सेवन बहंत, चित जनक ईहिँ न यातँ चहंत १०१

॥ ६२ ॥ १ बादशाह की सेना २ बड़े वेग से ३ सांभर नगर के चिना ॥ ९३ ॥

४ राणा अमरसिंह के हाथ में ५ लिखावट लिखकर दी थी उसे मिटाकर ६

जमाई ॥ ९४ ॥ ७ जमाई बादशाह को मारकर ८ सेना छोड़कर भगगया

॥ ६५ ॥ ९ आपके घमंड से ॥ ६६ ॥ १० जो यह नहीं करो तो ॥ ९७ ॥ ११ समर्थ

१२ कछवाहा जयसिंह के साथ भेजा १३ तहाँ ॥ ६८ ॥ १४ नहीं माननेवाला

इसका पिता ही है ॥ ६९ ॥ १५ अरणागत है तो १६ पिता (अजितसिंह) को

मार डालें तो १७ बोला ॥ १०० ॥ १८ यह [अभयसिंह] १९ इसकारण से

पिता-इसका नहीं चाहता ॥ १०१ ॥

\*प्रल्हादवत् कूरम सुनाय, इम अभयसिंह हित रिस उडाय ॥  
 कहि साह हमहिं जो गिनत ईस, सुत तो अबआनहु जनकसीस १०२  
 रघुनाथ सचिव किय अरज तत्थ, सब करहिं पाय आयस समत्थ ॥  
 डेरन बहोरि लहि सिक्ख आय, दैल अभयसिंह पठयो लिखाय १०३  
 निज अनुज आत बखतेस नाम, तिहिं प्रति उदंत सब लिखिय ताम  
 यह मिच्छ जनक सिर कुपित आज, लै हैं उतारि ध्रुव धन्वराज ॥  
 लहि राज भोग जो चहत लाल, तो भ्रात इनहु जनकहिं उंताल  
 दैहौं तब तो कहँ अद्द देस, नागोरपुर पै करिहौं नरेसँ ॥ १०५ ॥  
 बखतेस भुंइ यह पत्र पाय, जनक सु निज मारयो सुप्त जाय ॥  
 हाकार जोधपुर नगर होय, रनवास अचानक उठिय रोय १०६।  
 सुनि मिसल अहु ८ उमराव एह, गहि तेग कुमर बिंठयो ग्वेगेह  
 बखतेस भात तब नैति विधाय, दिय अभयसिंह कंगर दिखाय ॥  
 गिनि तब समस्त यह मंत्रगूढ, अब किय नरेस चितिकै अरूढ  
 नाजरन सहित सुंदांत नागि, चितिअंगि भस्म हुव असिह च्यारि ८४  
 सक गगन अहु हय इक १७८० साल, यह खबरि भई दिल्लिय उताल

\*प्रल्हाद की वार्ता १ पिता का मस्तक ॥ १०२ ॥ २ समर्थ आज्ञा पाकर ३ पत्र ४  
 अपने छोटे भाई ५ बखतसिंह के नाम ॥ १०३ ॥ ६ वृत्तान्त ७ नहं ८ पिता के ऊ-  
 पर ९ निश्चय ही मारवाड़ का राज्य उतार लेवेगा ॥ १०४ ॥ १० शीघ्र ११ ना-  
 गोरपुर का पति करके १२ राजा करदंगा ॥ १०५ ॥ १३ सूट १४ सोते हुए  
 पिता को ॥ १०६ ॥ १५ अपने घर में घेरलिया १६ भय ने १७ नज्जना करके  
 १८ पत्र ॥ १०७ ॥ १९ चिता पर चढ़ाया २० जनाने की स्त्रियां २१ \* चिता  
 की अग्नि में चोरासी जन भस्म हुए ॥ १०८ ॥

\* इसके लिये राजपूताने में ऐसा प्रसिद्ध है कि नाजर आदि जिन जिन का बखतासिंह को अपने में वि-  
 रुद्ध होने का खटका था उन ८४ जनों को चिता की अग्नि में बलात्कार डाल कर भस्म कर दिये  
 इस बखतसिंह की बुराई का यह लक्ष्य छंद प्रसिद्ध है ॥

छपय ॥ प्रथम तात मारियो, मान जीवती जडाई ॥ असीच्यार आदमां, हत्याबोरी पण आई ॥  
 कर माहो इकठ्ठास, जेग जैसिह बुलायो ॥ मिट मुरधर मरजाद, भरम गांठ को गुमायो ॥  
 कवियणां हंत केवाकरे, धराउदक लेदण धरी ॥ बखतसी जनय पायो पछे, कसादात आछे करी ॥ १ ॥

सुनिरीक्षि मरातब बखसि साह, किय अभयसिंह मरुदेस नाह १०९  
 अरु कहिय राज्य जमनाय जाय, पुनि आवहु सेवन मोद पाय ॥  
 मरुपति उवाच तब नाय मत्थ, नागोर देत मैं अनुज अत्थ ११०  
 सो सुभट मोहि नहिँ दैन देत, करि लिखित अप्प पठवहु निकेत  
 राजाधिराज पद वाहि देहु, अप्पहु निदेस करि महर एहु १११  
 इम अभयसिंह कहि धन्व आय, पुनिदियउ साह लिखित सु पठाय  
 राजाधिराज उपपद समेत, नागोर देहु बखतेस हेत ॥ ११२ ॥  
 यह सुनि रठोरन तजिय टेक, कष्टिय दिन मरुपति मरु कितेक  
 हनि अजितसिंह पितु बुद्धि हीन, इम बखतसिंह नागोर लीन ॥  
 पट्टप कुमार गजसिंह जाम, हुव अग्ग बीर अमरेस नाम ॥  
 नृप इंद्रसिंह नाती जु तास, सो करत पट्ट नागोर बास ॥ ११४ ॥  
 नृप अभयसिंह ताकँहँ निकारि, नागोर दई अनुजहिँ विचारि ॥  
 इत कुंम्म साह सेवन बिंधाय, लहि सिक्ख यहहु आमैर आय ॥  
 आमैर हुतो बुंदी नरेस, पुनि कियउ भूप कूरम प्रवेस ॥  
 मिलि तबहि साल जामिप समोद, बिरचिय दुहून २कति दिन विनोद  
 दोहा ॥

सक ससि बसु सत्रह १७८१ समय, कहि बुद्धिँ कछवाह ॥  
 बिरचहु राज्य प्रबंध तुम, वा हम रचहिँ सुलाह ॥ ११७ ॥  
 बिनु प्रबंध आलस बहत, रहत न सुरपुर राज ॥  
 कहत होत बुंदिय कुंनय, अह प्रति महत अकाज ११८  
 बुंदीपति अक्खिय तबहि, अच्छी करहु विचारि ॥  
 पठवहु कोऊ नीति पट्ट, सब जो करहि सम्हारि ॥ ११६ ॥

? मारवाड़ का पति ॥ १०९ ॥ २ अभयसिंह ने कहा ३ छोटे भाई बखतसिंह  
 को ॥ ११० ॥ ४ आय ५ हमारे घर [जोधपुर] ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ६ मारवाड़ में  
 ॥ ११३ ॥ ७ गजसिंह का पुत्र ८ उसका पोता ॥ ११४ ॥ ९ जयसिंह ?० करके  
 ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ १?स्वर्ग का?२अनीति ३३दिन प्रति ॥ ११८ ॥ ११९ ॥

नाथाउत नगराज तब, नृप मातुल कुल जानि ॥  
पठयो वह कूरम तु पहुँ, बुंदी विभव बखानि ॥ १२० ॥  
आय लांघि रक्खयो नृपति, द्विगुन खरच निज सत्थ ॥  
सब भेटयो नगराज सो, अधिप खिज्यो इम अत्थ ॥ १२१ ॥  
कछवाही सेवन करत, श्रीहरि मूर्ति सुमंत ॥  
कउल भूप बरजत कुठने, तदपि न टेक तजंत ॥ १२२ ॥  
पति पतनीकें याहि पर, बनेँ न हितकी बत्त ॥  
इहु न लोपैँ तिय हुकम, तदपि कउल मत रत्त ॥ १२३ ॥  
अगैँ नव हय संत इक १७७९, कछवाही यह किद ॥  
लौ सालमसौँ सचिवपन, निज अनुचरकाँ दिद ॥ १२४ ॥  
राम नाम निज दास इक, सो करि सचिव सु भाय ॥  
इम रानी पति हुकम बिनु, रही राज्य अपनाय ॥ १२५ ॥  
अद खरच कइत लग्यो, नाथाउत बिख रूप ॥  
रानी प्रति तब प्रीति रचि, भाखी बुंदिय भूप ॥ १२६ ॥  
निज अनुचर प्रति लिखहु तुम, रनेँ करि रक्खहु गेह ॥  
नाथाउत नगराजकाँ, द्रंग न प्रबिसन देहु ॥ १२७ ॥  
रानीहू सधुक्की तबहि, रुक्किँ मोर निदेस ॥  
सो करिहँ नगराज जो, कहिहँ कुम्म नरेस ॥ १२८ ॥  
यातँ अनुचर राम प्रति, दिय लिखि पत्र पठाय ॥  
नन सौँपहु नगराजकाँ, अप्पन गृह वंपय आँय ॥ १२९ ॥  
तब बुंदिय नगराज तिन, दित्रौँ प्रबिसन नाँहि ॥  
महुरछाप दैँहि न कहयो, अधिप निदेस न आँहि ॥ १३० ॥

१ बुधसिंह के मामा के २ कुल में श्रेष्ठ राजा ने १२० ॥ २२१ ॥ ३ श्रेष्ठ बुद्धि  
४ वाममार्गी राजा [बुधसिंह] ५ जलता [झीजता] था तो भी ॥ १२२ ॥ १२३ ॥  
६ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ ७ युद्ध करके ७ पुर में घत छुलने देता ॥ १२७ ॥ ८  
जयसिंह कहैगा सो करैगा ॥ १२८ ॥ ९ खरच १० आमद ॥ १२९ ॥ ११ राजा की  
आज्ञा नहीं ११ है ॥ १३० ॥



तिनहिं \*ठिल्लि नगराज तव, प्रविश्यो बुंदिय आय ॥  
 राजकाज लगगो करन, †नूतन छाप घराय ॥ १३१ ॥  
 आय खरच सब लिखिलियउ, ‡खंधावार सम्हारि  
 स्वामि समुक्ति बुधसिंहको, बिगरत लिन्न सुधारि ॥ १३२ ॥  
 द्विगुन खरच सेहत कियउ, मातुल पर नृप रोस ॥  
 अच्छीमें उलटी समुक्ति, दिय कूरय सिर दोस ॥ १३३ ॥  
 इत हुत जामिधे राज्यको, करि प्रबंध कछुवाह ॥  
 दरकुचन दिखिय गयो, सबिनय भिटयोसाह ॥ १३४ ॥  
 तदनंतर मरुईसहू, जय नय राज्य जमाय ॥  
 दिखिय भिटयो मुगल हुत, साहमुहुम्मद आय ॥ १३५ ॥  
 कूरम प्रति मरुपति कहिय, मम भट अति मगरूर ॥  
 जमन देत नहि राज्य जुरि, करहु अप्प मचकूर ॥ १३६ ॥  
 पठयो कूरम जोधपुर, तव निज कटंक उताल ॥  
 रदोरन समुभाय रहि, कट्यो तहँ बहुकाल ॥ १३७ ॥  
 हुते भूप जयसिंहकै, सुताँ दोय२सुत दोय२ ॥  
 सुनहु रामनृप नाम तिन्ह, सावधान श्रुति होय ॥ १३८ ॥  
 जेठो सुत सिवसिंह१जो, मारयो जनक प्रमत्त ॥  
 अनुज ईश्वरीसिंह२तस, तात कथित कर तत्त ॥ १३९ ॥  
 सुता विचित्रकुमारि१इक१, दूजी२कृष्ण कुमारि ॥  
 सु पहुँ रान संग्रामकी, जामिधी निरधारि ॥ १४० ॥

\*ठेल (हटा) कर † नवीन ॥ १३१ ॥ ‡ स्कंधावार [राजधानी] को ॥ १३२ ॥ १  
 मामा पर ॥ १३३ ॥ २ शीघ्र ३ बहिर्नोई के राज्य की ४ नैजता सहित ५ बा-  
 दशाह से मिला ॥ १३४ ॥ ६ जिसपीछे ७ नीति से जीतकर ॥ १३५ ॥ ८ डम-  
 राय ९ विचार ॥ १३६ ॥ १० सेना ॥ १३७ ॥ ११ पुत्रियाँ १२ के राजा रामसि-  
 ह कानों से सावधान होकर सुनो ॥ १३८ ॥ १३ उन्मत्त होने के कारण पिता  
 (जयसिंह) ने मारहाला १४ पिता जयसिंह का कहना करनेवाला ॥ १३९ ॥  
 १५ सो प्रभु राणा संग्रामसिंह की १६ भानजी ॥ १४० ॥

भयो बिचित्रकुमारिको, बय\*उपयम अनुसार ॥  
 जानि जनक जयसिंह जब, रचिय व्याह व्यवहार ॥१४१॥  
 अभयसिंह मरुईससौं, करि सगपन कछुवाह ॥  
 सामग्री किय उचित सब, नयपट्टु जैपुर भाह ॥ १४२ ॥  
 सिक्ख तबहि लहि साहसौं, दुबरनृप मथुरा आय ॥  
 अंतहपुरं आमैरतैं, लिन्नो सकला बुजाय ॥ १४३ ॥  
 सक ससि बसु सत्रह१७८१ असित, अग्राय८भैद विचारि ॥  
 तनया व्याही मरुपतिहिं, कुम्म बिचित्रकुमारि ॥ १४४ ॥  
 माता नृप संग्रामकी, रानी अमर कलत्र ॥  
 चाहवान पुरबेदला, पतिकी तनया तत्र ॥ १४५ ॥  
 सरसू बह जयसिंहकी, गंगा न्हावन आय ॥  
 मुरत मग मथुरा मिली, लीनी कुम्म बधाइ ॥ १४६ ॥  
 चाहवानि पिकखयो रुचिर, बिष्टी तनयां व्याह ॥  
 बरनि बिचित्रकुमारि नव, नव दुल्लह मरुनाह ॥ १४७ ॥

[ षट्पात् ]

सरसूकी जयसिंह कानि किंकर जिम किन्नी ॥  
 इक दिन गोकुल जात खंध सिविकां तस लिन्नी ॥  
 इकक बंस गहि अप्प मैरुप कर इकक गहायो ॥  
 मातासौं गिनि मैहत विहितैं सतकार बढायो ॥  
 अप्पनो गिनहु मोकों अनुगें यँहँ तीरथ हरि अवंतरिय ॥

\* बिषाह के ॥१४१॥ १ नीतिचतुर २ जयपुर का पति "अब थोड़े ही समय में जयपुर बसावेगा इससे जयपुर का पति कहा है" ॥१४२॥ ३ जनाना ॥१४३॥ ४ कृष्णपत्न ५ भादवा की ॥१४४॥ ६ उदयपुर के राणा अमरसिंह की स्त्री ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ ७ वेटी की पुत्री [दौहिती] का ८ रीदनी (दुलहिन) नवीन ॥ १४७ ॥ ९ अद्य १० पालखी ११ एक बांस तो आप [ जयसिंह ] ने लिया और दूसरा बांस जोधपुर के राजा [ अभयसिंह ] को षकड़ाया १२ बटी १३ उचित १४ सेवक १५ विष्णु भगवान् ने अवतार लिया तो तुम यहाँ

तुम देहु बैठि हाटक तुला करन जोरि इम अरज किय ॥१४८॥  
दोहा ॥

यह सुनि महिषी अमरकी, बोली नयमयै बैन ॥  
हुंदिताके बंसुतै तुला, हमको उचित यहै न ॥ १४९ ॥

गीर्वाणभाषा ॥

शाहूलविक्रीडितम् ॥

श्रुत्वैवमुदिताऽमरस्य महिषी प्रोवाच जामातरं,  
वस्वस्माकमकव्वगदलुञ्जितञ्जातन्तथाप्यायतम् ॥

भावत्कम्भुवनम्यवेद्यदिसुभूभृद्गूरिभर्माकरं,

पौरटयो बहुशस्तुत्तास्तदिह कार्या जामिजामेययोः ॥१५०॥

अग्निगी ॥

एवमाकर्ण्य कूर्मेश्वरः साहसी स्वस्वसारन्तदोवाच कार्या तुला ॥  
बुन्दीभृज्जाययाऽपीति नोरीकृतन्तकृता भागिनेयस्य राज्ञा दृठात् ॥

प्रायोदेशीयाप्राकृतीभिश्चितभाषा ॥

दोहा ॥

नाम भवानीसिंह निज, हो जामेयहुँ तत्थ ॥

ताकी तव हाटक तुला, किय कूरुम दृठ सत्थ ॥ १५२ ॥

रैन मात जामातै प्रति, पुनि अकिखय चित प्रैयै ॥

१ सोने की तुला दो रदानों हाथ जोड़ कर ॥१४८॥ २ पटरानी धराया अमरसिंह की  
१ नीतिमय १ बेटी के धन से ॥१४९॥ प्रसन्नता से ऐसा सुन कर अमरसिंह की  
पटरानी जमाई से बोली कि हमारा धन तो सादशाह अकबर से युक्त होने  
में अलुचित गया अर्थात् ऐसे पुण्य में नहीं लग सका और उसी प्रकार उस  
[अकबर] के आधीन गया. हे उत्तम राजा जो आप की भूमि बहुत सोने की  
मान वाली होवे तो आपके बहिन और भानजी की सोने की बहुत तुला  
करो ॥१५०॥ ऐसा सुन कर उस साहसवाले कछवाहीं के पति ने उस समय  
अपनी बहिनको तुलादान करनेको कहा यह बुन्दीके राजाकी स्त्रीने भी स्वी  
कार नहीं किया तब यह तुला राजाके दृष्टसे भानजकी कीगई ॥१५१॥ ३ भानजा  
१ स्वर्ण की तुला ॥१५२॥ २ पटरानी की माता ने १ जमाई अमरसिंह से १ स्वयंवर से

पुल \*कालिंदी सरित पर, बंधौ सुगम विधेय ॥ १५३ ॥  
 इन तव लिखि दिल्लीससौं, लित्रौ हुकम मंगाय ॥  
 सद्धि सहस्र ६०००० मुद्रा खरचि, इइन पुल दिय बंधाय १५४  
 कुमार रान संग्रामकै, जगतसिंह ॥ अभिधान ॥  
 ताहूकै तिहि दिन तैनय, भो प्रताप कुलभान ॥ १५५ ॥  
 सुत सुत सुतकी मधुपुरहि, सुनी खबरि चहुवानि ॥  
 दिय हाटक लखखन द्विजन, मुदित बधाई मानि ॥ १५६ ॥  
 कूरमपति पठयो तदनु, अंतहपुरं आमैर ॥  
 इत पत्नी चहुवानिहू, निज उदयादिकनैर ॥ १५७ ॥  
 अभयसिंह जयसिंह ए, दुव २ पुनि दिल्लीय आय ॥  
 हाजरि साह हजूर हुव, लाह बिनय हित लाय ॥ १५८ ॥  
 सक दग बसु सत्रह १७८२ समय, सेय रिझायो साह ॥  
 सोहि करत दिल्लीस सब, कहत जोहि कछवाह ॥ १५९ ॥  
 सूबा दुव २ जयसिंहकै, आगरा रु उज्जैन ॥  
 अब सूबा अजमेरको, बहुरि दयो हित बैन ॥ १६० ॥  
 मतिमें नयमें मल्लें में, सबमें कूरम सेर ॥  
 बिनु बजीर दब्बे बहत, जवन हिंदु सब जेर ॥ १६१ ॥

[ षट्पात् ]

अभयसिंह मरुईस सुन्यो निज देस देवर दुख ॥  
 सिक्ख साहसौं मंगि रचिय दरकुंच गेह रुख ॥

\* जमुना नदी पर १ सुगमता से बंध लहे तो पुल बनाओ ॥ १५३ ॥ † रूप-  
 ये ‡ महाराणा की माता ने ॥ १५४ ॥ ॥ नाम १ पुत्र २ प्रतापसिंह नामक  
 ॥ १५५ ॥ ३ पड़पोते की ४ लथुरा में ही ५ लाखों ब्राह्मणों को सोना दिया  
 वा ब्राह्मणों को लाखों मुहरें दीं ॥ १५६ ॥ ६ जिस पीछे ७ जनाने को ८ प्राप्त  
 हुई (पहुंची) ९ उदय है आदि में जिनके ऐसा नगर अर्थात् उदयपुरा ॥ १५७ ॥  
 १० लाभ ॥ १५८ ॥ ११ सेवन करके ॥ १५९ ॥ १० ॥ १२ बुद्धि में १३ नीति  
 में १४ सलाह में १५ सिंह (पलवान्) ॥ १६१ ॥ १६ उपद्रव (रूढ़ खसोट)

संग दियउ जयसिंह सेन वसुसदस ८००० जुत्त बर ॥  
 राजामल निज सचिवकर सिवदास \*सहोदर ॥  
 †कहि जाय राज्य मरुईसको सजव जमावहु जोर सन ॥  
 समुभाय सबहि रटोर सठ पारहु तुम मरुपति पयन ॥ १६२ ॥

[ दांहा ]

आयो मरुपति गेह इम, सत्थ सचिव सिवदास ॥  
 इत मेठयो कूरम अधिप, तँहँ इक हिंदुन त्रास ॥ १६३ ॥  
 दिछ्छामैं यह दुसह दुख, सहि सब कटत काल ॥  
 गहि गहि हिंदुन बरस प्रति, कर मंगत चंडाल ॥ १६४ ॥  
 बीस २० दम्म वसुमान सौं, इक्क १ अबसुं सौं लेत ॥  
 जन प्रति हेरत स्वपचै जर, दिन प्रति यौं दुखदेत ॥ १६५ ॥

पादाकुलकम् ॥

दिवाकित्ति तिनमैं इक नायव, स्वपच ओर तस कथित करै सब ॥  
 दिन प्रति करि हिंदुन हरबल्लो, स्वपच कहै स्वामिहिं जुरि संछी १६६ ॥  
 हमरी यह गेटपत हे नायव, आई हासिला देन इहाँ अब ॥  
 तव वह अखिख स्वामि जिम उत्तर, कथितै सीति सब हितुं गहै कर १६७ ॥  
 कर गहि लिखि बंधै दैल कंठन, यह लिखि स्वपच तजै इक हौयन ॥  
 दूजे वरस बहुरि गहि लावै, अह प्रति दंद मंदध उपावै ॥ १६८ ॥  
 हिंदुन हेरत फित दान दैल, कस्त राहि दिन प्रति कोलाहल ॥

\* समा आर्ही कटा ॥ १६२ ॥ ११३ ॥ † भंगी (चांडाल) ॥ १६४ ॥ २ घनवान  
 से बीस रुपये सालियाना ३ निर्धन से एक रुपया ४ मनुष्य प्रति ५ भंगी  
 [चांडाल] घन लेता था ॥ १३५ ॥ ६ इन भंगियों में एक नाई ७ हाकिम  
 [अद्वार] था ८ मध भंगी [चांडाल] उसका कहना करते थे ९ आगे करके  
 १० मवार लोकर ॥ १६१ ॥ ११ स्वामी [मालिक] कहै तिस प्रकार १२ ऊपर  
 फर्हाइ सीति से १३ से ॥ १६७ ॥ १४ यह कर लेकर कंठ में पत्र बांध देने  
 १५ एक सभ गक उसको चांडाल छोड देत थे १६ दिन प्रति १७ उपद्रव  
 ॥ १६८ ॥ १८ घना पत्र चाली का १९ रोक कर

स्वपचन प्रनति करहिं हिंदू सब, तदपि वंड अप्पहिं छुट्टहिं तब १६९  
दिल्लिय यह दिनप्रति दुस्सह दुख, सब कर दयें विना न लहें सुख ॥  
कूरम नृप यह माफ करायो, लिखित लिखाय साह सन लायो १७०  
छाप वजीर करैं नहिं उद्धत, बहुत बेर सुनि टारि गयो वैत ॥

द्विज इक दया बहादुर नागर, सा जावत दक्खिन सूबापर ॥ १७१ ॥

जाको मनसुव सत्त ७६जारी, तीन अयुन ३०००० भट संग तुखारी ॥

वासों मिलि कूरम यह अकखी, रहैं काँनि हिंदुन तब रकखी १७२

कहि द्विज करन सिक्ख हम जैहैं, तब छपाय बल करि दैल लैहैं ॥

जो वजीर सम्मुह पिल्लै दल, तो तुन करहु सहाय खंडि खल १७३

यह कहि विप्र तास गृह पत्तो, संग सबहि सुभटन अनुरत्तो ॥

वह वजीर बरखान मुहुम्मद, हुसन अली सुहन्यौं जिहिं सय्यद १७४

मद १५द२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सुभट संग सहँसन तूरानी, इम वरजोर रहैं अभिमानी ॥

यह द्विज बीर गयो तस आलप, रोके भट सु रुकेन बड़े रंय १७५

दै पय खान मुहुम्मद गदिय, इहिं दैल छाप करहु यह बहिये ॥

लखी वजीर छाप यह लैहैं, जोर करैं अतिबल हनि जैहैं ॥ १७६ ॥

इम विचारि पत्र सु छप्यो उन, हटि भग्गो तवतैं दुख हिंदुन ॥

सक गुन अष्टसत्त इक १७८३ अंतर, किय वरजोर समुँद सु काँगर १७७

यह जयसिंह अपूर्व किन्नी, नागर किति वंदि इम लिन्नी ॥

वहु अैसी किन्नी कूरम वरैं, कहि साहहि मिटवाय गया कर १७८

[ पट्पात ]

१ तोभी ॥ १३६ ॥ १७० ॥ २ घानी ॥ १७१ ॥ ३ घोडों के नवार ४ अइरा १७२ ॥ ५ पत्र

६ सन्मुख मेना भंजें तो ॥ १७३ ॥ ७ वजीरों में अष्ट ॥ १७४ ॥ ८ उमके घर

१७५ घेग से ॥ १७५ ॥ १० इस पत्र पर छाप करो यह ११ कहा ॥ १७६ ॥

उस १७७ को १७८ (छाप) सहित किया ॥ १७७ ॥ १४ अष्ट ॥ १७८ ॥

कौटिके अरु कांदविके द्रव्य विक्रय ढिग धारै ॥

अनुक्रम आपन अर्वालि क्रेय निज निज बित्थारै ॥

सोहू साहहिं अक्खि प्रबल मेटी कूरमपति ॥

इम करि किंति अनेक साह सेयो नय सम्मति ॥

लहि धरम मग्ग मनुमत समुभि श्रुति निदेस कछु अनुसरिय ॥

पट्ट बुद्धि भयो इहिं समय पै कहिं हैं देस १० अनुचित करिय ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप-  
तिबुधसिंहचरिते उदयपुराधीशारांशासंग्रामसिंहरामपुरविजयन १  
कोटाधीशमहारावभीमसिंहस्य वल्लभसंप्रदायानुयायिताहेत्वन्तर्हि-  
तत्वकारणाभरणप्रख्यापन २ महारावमरणाज्ञानकोटाहरणहेतु-  
बुन्दीनगरसालमसिंहकोटानगरगमन ३ अकस्माद्रात्रिसमयगोकु-  
लागतभीमसिंहमरपरजितसालमसिंहपलायन भीमसिंहबुन्दीह-  
रण ४ आमैराधीशजयसिंहस्ययोधपुराधीशाजितसिंहकनीविवाह-  
न ५ कोटामहारावभीमसिंहदलावरखांसमरमरण ६ पुनर्बुधसिंहा-

१ लट्टीक [कस्तूरी] और रकंदोई हलवाई ३ बेचने की वस्तु पास पास रखते थे  
अर्थात् मांस और मिठाई पास पास बिकती थी अनुक्रम से ४ बाजार में ५ पंक्ति  
चांधकर ६ अपनी अपनी बेचने की वस्तु को फैलाते थे ७ कीर्ति ८ मनु के  
मत [मनुस्मृति] को समझकर ९ कुछ वेद की आज्ञा के साथ चला १० पर-  
न्तु ११ जयसिंह ने दश बातें अनुचित कीं सो आगे कहेंगे ॥ १७९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के पति बु-  
धसिंह के चरित्र में उदयपुर के महाराणा संग्रामसिंह का रामपुरा विजय  
करना १ कोटा के महाराव भीमसिंह का वल्लभ मत धारण करके पड़दा में  
रहने के कारण मरना प्राप्त होना २ महाराव को मराहुआ जानकर कोटा  
लेने के अर्थ बुन्दी से सालमसिंह का कोटे जाना ३ गोकुल से अचानक रा-  
त्रि के समय आये हुए भीमसिंह से सालमसिंह का पराजित होकर भाग-  
ना और भीमसिंह का बुन्दी लेना ४ आमैर के राजा जयसिंह का जोधपुर के  
राजा अजितसिंह की पुत्री से विवाह करना ५ कोटा के महाराव भीमसिंह  
का दलावरखां के युद्ध में दक्षिण में मारा जाना ६ बुन्दी का फिर बुधसिंह

धिकारबुन्दोगमन ७ अर्जुनसिंहकोटापट्टप्रापणा ८ जयसिंहमारणा  
 र्थसयवनेन्द्रप्रयाणा कर्तृसद्यदहुसनअलीछलमारकयवनेन्द्रमुहुम्ह-  
 दशाहपुनर्दिल्लीगमनजयसिंहार्थाकबरपुराधिकारसमर्पणा ९ मरुदे-  
 शोपरियवनेन्द्रसेनायानभीतपलायिताजितसिंहनिजयेष्टात्मजाभ-  
 यसिंहदिल्लीप्रेषणा १० यवनेन्द्रनिदेशनिजानुजवखतसिंहकरमारित  
 जनकाजितसिंहाभयसिंहयोधपुरपट्टाधिगमन ११ गृहीतयनेन्द्राज्ञा-  
 भयसिंहनिजानुजवखतसिंहार्थराजाधिराजपदसहितनागोरदंगरा-  
 जप्रदान १२ अभयसिंहस्य जयसिंहकनीपाशिग्रहणा १३ जय-  
 सिंहस्यानुचितहिन्दुकरमोचन १४ जयसिंहानेकप्रशंसनीयकार्य  
 गणानासहितदनुचितदशकार्यप्रदर्शनप्रतिज्ञानं षड्विंशो मयूखः  
 ॥ २६ ॥

आदितश्चतुःषष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६ ॥

[ दोहा ]

इत कोटा अर्जुन नृपति, पाया त्रिभ्वरख प्रान ॥

के अधिकार में होना ७ कोटा में अर्जुनसिंह का गद्दी बैठना ८ जयसिंह को  
 मारने के लिये बादशाह सहित चढाई करनेवाले सय्यद हुसनअली को छल  
 घात से मार कर बादशाह मुहुम्मदशाह का पीछा दिल्ली जाना और जयसिं-  
 ह को आगरे का सूबा देना ९ मारवाड़ पर बादशाही सेना जाने के कारण  
 डरकर भागेहुए राजा अजितसिंह का अपने बड़े पुत्र अभयसिंह को दिल्ली  
 भेजना १० बादशाह की आज्ञा से अपने छोटे भाई वखतसिंह के हाथ से  
 पिता अजितसिंह को मरवाकर अभयसिंह का जोधपुर की गद्दी पर बैठना  
 ११ बादशाह की आज्ञा लेकर राजा अभयसिंह का अपने छोटे भाई वखत-  
 सिंह को राजाधिराज की पदवी के साथ नागोर का राज्य देना १२ राजा  
 अभयसिंह का राजा जयसिंह की पुत्री से विवाह करना १३ जयसिंह का  
 हिन्दुओं के ऊपर से अनुचित कर का छुड़ाना १४ जयसिंह के अनेक प्रशं-  
 नीय कार्यों की गणना के साथ उनके दश अनुचित कार्य बताने की प्रतिज्ञा  
 का छड्डीसवां २६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ चौसठ २१४ म-  
 यूख हुए ॥

१ तीन वर्ष जीवित रहा



स्याम रू दुज्जनसल्लके, भो भू हित धमसान ॥ १ ॥  
 अग्रज स्यामहिँ मारिकेँ, भो नृप दुज्जनसल्ल ॥  
 बुंदीपर दावा विरचि, हठि सु विचार तहल्ल ॥ २ ॥  
 इत दिल्लिय कूरम अधिप, साह त्रिश्हाँयन सेय ॥  
 सक चउ४वसु सत्रह१७८४समय, आयो निल्लिय अजेय ॥३॥  
 करि असाँत्य नगराज दिव, बुँदिय कुम्म पठाय ॥  
 बुंदीपति इहिँ पर विमर्न, रक्खत विरस रिसाय ॥ ४ ॥  
 कछवाही प्रति नृप कहिय, अंबुज प्रबोधहु आज ॥  
 राज तुम्हें जो दव्यनाँ, तो रक्खहु नगराज ॥ ५ ॥  
 भ्रातहिँ इम रानी भनत, कहयो तमकिँ कछवाह ॥  
 भगिनी तुमगी भुम्मिकी, चित्त न रक्खत चाह ॥ ६ ॥  
 जामिपँ अलस प्रमाद जुत, अरु तुमगी मति एह ॥  
 गेह द्विर भूपन विगरते, विगरयो इक्कशहि गेह ॥ ७ ॥  
 हम जान्योँ विगरत बिभव, लेंहें अबहु सुधागि ॥  
 तुमगी मति भ्रम साँहिँ तो, हमहु दयो हित टारि ॥ ८ ॥  
 यह कहि नृप जयसिंह तत्र, लिय नगराज बुलाय ॥  
 रंच सिराही राँगिनी, इहिँ पर बुँदिय गय ॥ ९ ॥  
 चुंडाउति उर जो भयो, कुमर पदम अभिधान ॥  
 आर्मय बस तिहिँ इन दिनन, किन्न महाप्रस्थान ॥ १० ॥  
 नाथाउत कूरम नृपति, बुँल्लयो विविध रिसाय ॥  
 राजकाज लग्गो करन, बुँदिय सालम आय ॥ ११ ॥

१ स्यामसिंह और दुज्जनशाल के भूमि के अर्थ २ युद्ध हुआ ॥ १ ॥ ३ बड़े भाई स्यामसिंह को ॥ २ ॥ ४ चादशाह की तीन वर्ष सेवा करके ५ अपने घर (आमैर) आया ॥ १ ॥ ६ प्रधान (कामदार) ७ जयसिंह ने ८ उदास ॥ १॥ ९ बुधसिंह ने कहा १० छोटे भाई (जयसिंह) को समझाओ ॥ ९ ॥ ११ क्रोध करके १२ बहिन ॥ ६ ॥ १३ बहिनोई ॥ ७ ॥ ८ ॥ १४ रानी को ॥ ९ ॥ पद्मसिंह १५ नामक १६ रोग के वश १७ परलोक गया ॥ १० ॥ १८ बुलाया ११ ॥

कछवाही सन याहिपर, कछु प्रसन्न बुंदीस ॥

चुंडाउति रठोरि सिंग, यहहि रही बनि ईस ॥ १२ ॥

दिल्लीसन बुंदीस जब, दुंडाहर धर आय ॥

चुंडाउति रठोरि तव, लिन्नीही बुलवाय ॥ १३ ॥

कछवाहीके डर दुहुँनर, रक्खि \*निवाई नैर ॥

पटरानीके बचन बसि, अप्प रहिय आमैर ॥ १४ ॥

नाम भावानीसिंह निज, पटरानी किय पूत ॥

औरस वो कृत्रिम यहै, सु हैम न जान्यौं सूत ॥ १५ ॥

पादाकुलकम् ॥

सिख तव रानी सुतहिँ सिखावहिँ, पति ढिग भोजन काल पठावहिँ

अरज कुमार असनहित अकखहिँ, भिन्न थाल भोजन तवरक्खहिँ १६

उर भ्रम सवन यहै लखि आन्यौं, पै काहू न तत्र पहिचान्यौं ॥

छित्तरसिंह इंद्रगढ स्वामी, नृप ढिग मिलन आय भट नामी १७ ।

भुज्जन नृप बेठो छित्तर सहँ, रानी तवहु सुकलयो सुत वह ॥

छित्तर लग्गिताहि वैठावन, दिष तव नृप उत्तर छल दावना १८ ।

खलुँ सुर अर्चन कछुक रहयो खिल, करि वैह इकथाल भुज्ज-

हिँ कल ॥

दिन प्रति इम बढि बढि भ्रम दोरयो, सोतिन आदि सवन मन

मोरयो ॥ १९ ॥

रानी अब नृप सीस रिसावैँ, पुत्रहिँ असनकाल न पठावैँ ॥

॥ १२ ॥ १३ ॥ \* निवाई नामक नगर में ॥ १४ ॥ १ कछवाही ने रकछवाही के

उदर से उत्पन्न हुआ था या करतवी (बनावटी) था सो ३ ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल)

कहते हैं कि यह हमने भी नहीं जाना ॥ १५ ॥ ४ भोजन करने के अर्थ ५ जु-

दे थाल में ॥ १६ ॥ १० ॥ ६ भोजन करने को ७ छित्तरसिंह के साथ ॥ १८ ॥

८ निश्चय ही ९ देवपूजन (कुमार के अर्थ देवताओं की कबूलायत करी थी सो)

करना १० वाकी है सो ?? वह पूजन करके १२ एक थाल में कुमार के साथ

१३ निश्चय ही भोजन करेंगे ॥ १९ ॥ १४ भोजन के समय

नृप जयसिंह यहँ नहि जानैँ, मिथ्याही भगिनी रिस मानैँ ॥२०॥  
 प्रीति दिखाय रहयो नृप उप्पर, अरुचि धरैँ रानीपर अंतर ॥  
 \*कुम्माहँ नहिँ बुंदीस कहावैँ, †पुत्तहिँ लाखि ‡रंतत दुख पावैँ ॥२१॥  
 सक चउ४बसु सत्रह१७८४संबच्छरैँ, घल्लपो यह बिग्रह बुंदियघर ॥  
 लोकहु बहु बदनीति मचाई, सुनि सुनि सब जयसिंह पचाई ॥२२॥

( पट्टपात् )

बुंदी लोकन बहु अनीति आमैर मध्य क्रिय ॥  
 सठ नाजर किसतूर नगर कुतवाल मारि लिय ॥  
 पकरि पकरि परदार जार बहुतन गहि रक्खी ॥  
 मार लूट मचवाय नगर लज्जा सब नकखी ॥  
 सुनि सुनि अनीति कूम्स सहिय कहिय कछु न बुंदीस प्रति ॥  
 जिम जिम सही सु तिम तिम जुलम अनयै प्रचारयो नरनअति ॥२३॥

( दोहा )

दिन दिन अत्र कूम्स हुंमन, कहयो कछूहुन जाय ॥  
 अंधु छाँह जिम कछु अनख, राखी हृदय समाय ॥ २४ ॥  
 सुता शान संग्रमकैँ, ईडरपति भानेज ॥  
 स्वसाँ सहोदर नाथकी, उपमम उचित अजेज ॥ २५ ॥  
 लौ चर ताके लौंगली, आये जैपुर अंत्य ॥  
 सुभट केसरीसिंह पुर, सँलूमरिप के सत्थ ॥ २६ ॥  
 सगपन ईश्वरिसिंहसाँ, कूरम सुतसाँ ठानि ॥  
 कछवाही भ्राताहिँ कहयो, मम सुत व्याह प्रमानि ॥ २७ ॥

॥ २० ॥ \* जयसिंह को † पुत्र को ‡ निरंतर ॥ २१ ॥ १ सम्बत्सर (वर्ष) में ॥ २२ ॥ २ पराई स्त्रियों को ३ अनीति ॥ २३ ॥ ४ उदास ५ कुए की छाया के समान ॥ २४ ॥ ६ सगी बहिन ७ नाथसिंह की, जिसको मेवाड़ में नाथजी कहने हैं ८ विवाह के उचित ९ विलंब रहित शीघ्र ॥ २५ ॥ १० ना-रियल ११ यहां १२ सल्लुवरके पति के साथ ॥ २६ ॥ २७ ॥

भ्रात स्वीये भानेजहू, व्याह उचित अब एह ॥  
करिये सगपन रानके, कुमर सुता तस गेह ॥ २८ ॥  
( गीर्वाणभाषा )

( इन्द्रवज्रा )

शुत्वैवमाहूय सलूमरीशं चुण्डाउतं केसरिसिंहसंज्ञम् ॥  
राणेशसामंतचयोडुचन्द्रं प्रोवाच हुंढारधराधवस्तत् ॥ २९ ॥

[ स्रग्धरा ]

बुंदीधीशात्मजोपञ्ज्वलनकुलमणिर्भागिनेयोऽस्मदीयो,  
युष्मज्जामातृभावंगमितभुचित इत्येवमालोच्य तस्मात् ॥  
अस्मायष्टाऽब्दकायाप्युदयनगरनाथेन पट्टायनी सा,  
राणेशेनादिराज्ञा लवजननभृता संविवाहया स्वपौत्री ॥३०॥  
( स्रग्विणी )

इत्थमाकर्ष्य बुन्दीनरेशस्तदाऽऽहूय चुण्डाउतम्प्रावदत्स्वम्मतम् ॥  
राणाराजा ध्रुवनप्त्रिकोद्वाहकृन्नोररीकार्यमस्मन्निदेशं विना ॥ ३१ ॥  
प्रायोदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

( दोहा )

क्रूरमपति यह बत्त सुनि, संभर भूर्प समीप ॥

१ हें भाईरतुम्हारा भानजा भीरराणा के कुमर के पुत्री है ॥२८॥ऐसा सुन कर केसरीसिंह नाम सलूमर के पति को बुलाया जो राणा के तारों रूपी उमरावों में चन्द्रसा रूपी था उससे हुंढाहड़ के पति ने विवाह सम्बन्धी वार्ता कही ॥ २९ ॥ यह अग्नि वंश का मणि बुन्दी के पति का पुत्र और हमारा भानजा है, इसकारण से निश्चय करके तुम्हारा जमाई होने के योग्य और उचित है सो विचारो इसका शरीर आठ वर्ष का है और वह उदयपुर के पति की कन्या छः वर्ष की है महाराणा लव के वंश को धारण करनेवाले आदि राजा हैं, सो अपनी पोती को अच्छे प्रकार से विवाहने योग्य हैं ॥ ३० ॥ इस प्रकार सुन कर बुन्दी के राजा ने उस सलूमर के पति चुण्डाउत को बुला कर अपना सिद्धान्त कहा कि मेरी आज्ञा के बिना राणा की पोती के विवाह का कार्य स्वीकार मत करना ॥ ३१ ॥ ४ राजा बुधसिंह के पास

कूरम पुच्छन मुक्कलयो, \*कुंभानी भट दीप ॥ ३२ ॥

[ पटपात ]

दीपसिंह कछवाह जाय बुंदीस निकट तब ॥

यह सगपन अवरोध संधि अंजलि पुच्छयो सब ॥

कहिय बुद्ध सुनि कुमार आहिँ मम जात नाहिँ यह ॥

रानी कृत्रिम रचिय सोति सुत जानि गव्व सह ॥

जो चहत भूप जयसिंह अब वंस बरनसंकर करन ॥

तो उदयनैर व्याहहु सुतहिँ निर्गमरीति यह उचित नन ॥ ३३ ॥

दोहा ॥

यह कहि मुद्रा रंजतमय, सत्तरि सँहस ७०००० मँगाय ॥

दिन्नी कूरम दीप हित, न्याय तथा अन्याय ॥ ३४ ॥

न लिय दीप तब कहिय नृप, जंपि सपथ छल जोरि ॥

हम थिति रक्खहु सक्षय हित, लैहँ मंगि बहोरि ॥ ३५ ॥

दीपसिंह जान्योँ बहुरि लैहँ द्रव्य मँगाय ॥

पत्तो पुनि नृप पास पै, जुलम कहयो नहि जाय ॥ ३६ ॥

कूरम नृप सुभटहिँ कहयो, पुच्छी सो कहिदेहु ॥

कहिय दीप तिन अलस करि, अबही कहयो न एहु ॥ ३७ ॥

अक्खिय तब जयसिंह यह, रखत जामि पर रीस ॥

कुमरहिँ ईम कृत्रिम कहत, बिरचि अनर्थ बुंदीस ॥ ३८ ॥

यह कहि बुंदी ईस प्रति, कहि पठई कछवाह ॥

मम जनपद अब रहहु मति, चलाहु जैतय चित चाह ॥ ३९ ॥

\*कुंभाडत शाखा के कछवाह उमरावाँ दीपसिंह को भेजा ॥ ३२ ॥ इरोकने का कारण § हाथ जोड़ कर ॥ यह कुमार मुक्त से उत्पन्न हुआ नहीं है + सौत को पुत्र वाली समझ कर गर्भ सहित १ वेद की रीति से यह उचित नहीं है ॥ ३३ ॥ २ चाँदी के रूपये ३ कछवाह दीपसिंह के अर्थ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ४ गया ५ परन्तु वहाँ जाकर यह जुलम की वार्ता नहीं कही ॥ ३६ ॥ ६ उमराव को ॥ ३७ ॥ ७ बहिन पर ८ इसकारण ९ अनीति ॥ ३८ ॥ १० मेरे देश में ११ जहाँ जी-

गीर्वाणभाषा ॥

इन्द्रवज्रा ॥

श्रुत्वेति बुन्दीनरपः प्रमादी कूर्मेश्वरम्प्रत्यवदह्वलेन ॥

युष्माभिरीहे प्रथमं रहस्यं तद्युष्मदुक्तं सकलं करिष्ये ॥ ४० ॥

अनुष्टुप् ॥

रहस्याहूय बुन्दीशं जयसिंहस्तदा नृपः ॥

पपच्छ जामिजोदन्तन्नम्प्रो नीतिपरायणाः ॥ ४१ ॥

शुद्धप्राकृतभाषा ॥

आठ्या ॥

सोऊगा चविउ रणगा रसालं दुष्टकुलं कखु चिय होइ ॥

गागाभे औरसविट्टो राणीए कित्तिमो किहो ॥ ४२ ॥

गीर्वाणभाषा ॥

शालिनी ॥

शृश्वन्नित्यङ्कूर्मराजो महात्माप्यामर्षी प्रोन्नद्धभोगोवसर्पः ॥

तर्जन्नुग्रो जामिपम्प्रत्युवाचास्मज्जामेये ऽनौरसे कोत्र हेतुः ॥ ४३ ॥

चाहे वहां जग्रो ॥ ३६ ॥ यह सुन कर उन्मत्त बुन्दी के राजा ने कछवाहों के पति को पत्र से उत्तर दिया कि मैं पहिले आपके पास एकांत चाहता हूं कि-र आपका कहा हुआ सब कहूंगा ॥ ४० ॥ तब बुन्दी के राजा को एकांत में बुला कर उस नीतिनिपुण जयसिंह ने नम्र होकर भानजे का वृत्तान्त पूछा ॥ ४१ ॥

संस्कृत अनुवाद ॥

श्रुत्वा ऊचे राज्ञः शालं दुष्टं कुलं खलु एव भवति ॥ नन भृत औरसपुत्रो रा-  
ज्या कृत्रिमः कुतः ॥ ४२ ॥

भाषानुवाद ॥

यह सुन कर राजा बोला कि हे साला मेरा श्रेष्ठकुल दुष्ट (दूषित) होआवे-  
गा क्योंकि यह औरस पुत्र नहीं हुआ है राणी ने कृत्रिम किया है ॥ ४२ ॥

इस प्रकार सुन कर महाशय कछवाहों के राजा ने क्रुद्ध होकर फण उठाये  
हुए सर्प के समान उग्र तर्जना करके वहिनोई (बुधसिंह) से कहा कि हमारे  
भानजे के अनौरस होने में यहां क्या कारण है ॥ ४३ ॥

प्रायोदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ।

(षट्पात्)

कह्यो प्रकट कछवाह प्रीति तुमरी न जाँमिपर ॥

सेवत श्रीयोविंद बीज इत्यादि कउल्लवर ॥

चुंडाउति पर चित्त तौस जो हाँहिँ तनय अब ॥

दैहो ताँकँहँ राज्य सोधि हमहू लिन्नी सब ॥

बसुंवरस पालि पुत्रहिँ सविधि धिक मन सिसु मारन धरिय ॥

अभिँसाप अप्प अप्पत अब सु किन अलीकँ जनमत करिय ॥४४॥

दोहा ॥

संभर अक्खिय एह सुनि, हमहिँ कालिका आन ॥

कछु करि संकट टारिहौ, सो सब करहिँ प्रमान ॥ ४५ ॥

कूरम अक्खिय कउल्ल तुम, संपथन नहिँ विस्वास ॥

लिखि स्वहँथ अप्पहु लिखित, तब लौँहँ अमुताँस ॥४६॥

चुंडाउति रठोरि कै, निपजहु पुल्ल निसंक ॥

वाहि न दैहँ राज्य अब, अवरहिँ लौँहँ अंकँ ॥ ४७ ॥

( षट्पात् )

सुनत एह बुंदीस कूर निज हँथ लिखित किय ॥

चुंडाउति रठोरि जनित पैहँ नहिँ बुंदिय ॥

तुम कूर अप्पहिँ ताहिँ करहु अप्पनँ मन इच्छित ॥

कहिँहो जिहि कछवाँह सूनु थप्पहिँ करि सिच्छितँ ॥

१बहिन पररकारण ३हे वाममार्गियों में अष्ट४उस चुंडाउति के अब आप ५मि-  
थ्या दोष देते हो लो अन्मते ही वनाश क्यों नहीं करदिषा ॥४४॥४५॥ ७तुम वा-  
ममार्गी हो इसकारण तुम्हारे सौगनों का विश्वास नहीं है ८ अपने हाथ से  
लिखाषट लिखकर दो ९ तब उस लड़के के प्राण लेवेंगे ॥ ४६ ॥ १० दूसरे को  
गोद लेवेंगे ॥ ४७ ॥ ११ कूड़ (मूर्ख) ने यह लिख दिया कि १२ चुंडाउति और  
राठोड़ी के पुत्र लेंवेंगे लो हम तुम्हारे हाथ में देवेंगे फिर तुम १३ अपना मन  
का चाहा करना १४ हे कछवाह १५ सिच्छित

जयसिंह का जयपुर बसाना] सप्तमराशि-सप्तविंशमशुख (३१०१)।

दलं दियउ एह जयसिंह कर सैकखी लिखि हहुन सबन॥  
कोऊन लिखत औसी कुबिधिं लिप्प्यो जिम संभर लिखन ४८

( शुद्धप्राकृतभाषा )

इम लिहिअं कत्तु तदो प्पिअवयणोहिं शिहाय संबन्धम् ॥  
रगणा जयसिंहाणं सुज्जकुमारी शिअप्पजा दिद्धा ॥ ४९ ॥

( पट्टपात् )

याहि बरस जयसिंह नगर जयपुर बसवायो॥

सित सहस्रं द्वादसिय १२ मकर रवि लगन मिलायो ॥

सिलप तंत्र अनुसार सबहि व्यवहार सधाये ॥

बारह १२कोस विंधार विविध प्रकारं बधाये ॥

रचि जुकति दम्मं कोटिन खरचि पुर अपुब्बं किन्नो प्रकट॥

हिंदुवस्थानं दूजो नहिन सहर प्रातिविंबक सुघट ॥ ५० ॥

गीर्वाणभाषा ॥

भुजङ्गप्रयातम् ॥

विधायैवमग्रयम्पुरं कूर्मराजः श्रुतीर्धीर आसेठ्य लब्ध्वा स्मृतीश्च॥  
द्विजेन्द्रान् समाहृत्य धर्मानुगस्तत्सवर्णाश्रमश्रेय आविश्चकार ५१

१ पत्र २ साक्षी ३ बुधसिंह ने लिखा जिसप्रकार ॥ ४८ ॥

संस्कृत अनुवाद ॥

एवं लिखितं कृत्वा तदा प्रियवचनैर्निधाय सम्बन्धम् ॥ राज्ञा जयसिंहाय  
सूर्यकुमारी निजात्मजा दत्ता ॥ ४९ ॥

॥ भाषानुवाद ॥

तब ऐसा लिखित करके प्रिय वचनों से सम्बन्ध स्थापन करके उस राजा  
(बुधसिंह) ने जयसिंह को सूरजकुमारी नाम अपनी पुत्री दी ॥ ४९ ॥

४ पौष सुदि बारस ५ शिल्प शास्त्र के अनुसार ६ विस्तार ७ कोट ८ युक्ति  
९ रुपये १० अपूर्व ११ हिन्दुस्थान में १२ इसके सुडोल प्रतिबिंबवाला  
॥ ५० ॥ धर्म को धारण करनेवाले कछुवाहों के राजा जयसिंह ने इसप्रकार  
प्रधान नगर [जयपुर] बसाकर वेद विहित कर्म करके स्मृतिशास्त्र पाकर ब्रा-  
ह्मणों को एकत्र करके धर्म शास्त्र की नर्यादा से चलकर चारों वर्ष और आ-  
भम के कल्याणकारी मार्ग को प्रकट किया ॥ ५१ ॥ यह अग्रणी राजा बुद्धि



धिपारत्न १४ विद्याः समाकर्ण्य धौर्यस्ततो नीतिमेत्यप्रकृष्टाः कलाश्च ।  
 यतद्वृद्धराज्यांगसप्तोपपुष्टो जनेनाननूतान्समाक्रम्य तस्थौ ॥५२॥  
 मुखम्पुण्यभूमेश्वराः प्रक्षयमाणा वजीरश्च बहुद्विवेगत्र जग्मुः ॥  
 विहायैव तन्मलेच्छपोप्यन्यभूपानियायोच्चमालंबमामैरमौलिम् ५३  
 विधायाऽग्निहोत्राऽध्वराद्येकयज्वा नियम्याऽप्यधर्महृषीकेशभक्तः ॥  
 सितारेशदिल्लीशसंस्पृष्टमंत्रः कृती पुण्यभूमौ बभूवाप्रघनामा ॥५४॥  
 कृतो धासखः खानदोराऽभिधेन प्रशास्यैव दिल्लीन्द्रसेनाधिपेन ॥  
 महात्मा स विष्वात्मजः कूर्मगजो रराजाखिलेष्वर्यमैको यथाहि

( कामक्रीड़ा )

तंत्रावापोपेतं स्कन्धावारं सर्वोच्चो कुर्वन्,  
 वत्राज श्रीविष्णुत्रातो नीत्या दिल्लीशौन्मुख्यम् ॥  
 आन्वीक्षिक्या धर्मार्थार्थी चक्रे राज्यं कृत्वाग्नि,  
 भोजाचारं भजे भूम्युभवाशीर्भाजदूभूभर्ता ॥ ५६ ॥

से चौदह विद्याओं को पह नीति शास्त्र को प्राप्त हो चौसठ कलाओं को सीख यत्न करते हुए और बड़े बड़े राज्य के सातों अंगों से पुष्ट होकर अपने से न्यून नहीं ऐसे राजाओं को देखाकर रहने लगा ॥ ५२ ॥ आर्यावर्त के राजा अथवा सुह ताकते थे और बड़े बड़े वजीर उसकी बुद्धि के वेग को नहीं पट्ट-चते थे बादशाह भी दूसरे राजाओं को छोड़कर आमेर के सुकूट (जयसिंह) को ऊंचा [बड़ा] आलंबन समझते थे ॥ ५३ ॥ नित्य यज्ञ करके नैमित्तिक यज्ञ का एक ही कर्ता पापों का निवारण करके ईश्वर का भक्त जिससे सितार और दिल्ली के पति सत्ताह पूछते थे ऐसा चतुरों का अग्रणी (जयसिंह) आर्यावर्त में हुआ ॥ ५४ ॥ बादशाह के सेनापति खानदार्गों ने बड़ी नम्रता के साथ उस राजा को अपना मंत्री (खलाहकार) बनाया. विष्णुसिंह का पुत्र महात्मा वह कलवाहों का राजा सब में ऐसा प्रकाशमान हुआ कि जैसे दिन में अंकला सूर्य होता है ॥ ५५ ॥ राज्य वृद्धि और शत्रु वध करने की चिन्ता सहित, राजधानी को सब से उच्च बना कर श्रीविष्णुभगवान् से रक्षित जयसिंह नीति से दिल्लीश के सम्मुख गया और ब्राह्मणों के आशीर्वाद से राज नीति के अनुसार, धर्म और अर्थ [पुरुषार्थ] को चाहता हुआ वह तंज-स्की राजा शत्रुओं का नाश करके सोज के सुमान राज्य करता था ॥ ५६ ॥

( नकुटकम् )

मतिरुदुशारा उलवशादारिद्रतमिश्रहरिः,  
समिदतलरुष्टगर्णवविलङ्घन एकतरिः ॥  
जयनयधार्यकार्यमननार्थ उदग्रनाति,  
भुवि यशसा रराज जयसिंह इलाधिपतिः ॥ ५७ ॥

प्रायेदेशीया प्राकृती मिथितभाषा ॥

[ पट्पात ]

इम कूगम जयसिंह हिंदु सिञ्चन उप्पर हुव ॥  
जाप धरम श्रुति जजन भूरि अध्वरं विंथरि भुव ॥  
निंदत निर्गम पिछानि जार तुरकान प्रजारन ॥  
सहर सितागधीस मंत्रि बुल्लयो तिन मारन ॥  
साहू नरेस लहि तव समय दिल्लीपति उप्पर दुसह ॥

सिंधिया बहुरि हुलकर सुभट्ट पिछे दुवरं दल अमित मह ॥ ५८ ॥  
दोहा ॥

नृप साहू नवलकख ९००००० दल, सहर सिताग ईस ॥  
पिछे हुलकर सिंधिया, दब्वन भुव दिल्लीस ॥ ५९ ॥  
इन अवरंगाबाद लारि, पहिलौं अमल प्रचारि ॥  
वह नागर सूबा अधिप, दयावहादुर मारि ॥ ६० ॥

भूपति राजा जयसिंह अपने यश से पृथ्वी पर प्रकाशता था जो बुद्धि के लि-  
ये चन्द्र रूपा और उत्कट (उग्र) दग्धरूपी अथवा अनीति रूपी अन्धकार का  
नाश करने को सूर्य रूप, युद्ध रूपी अथाह सलुद्र को लांघने के लिये अछिती-  
य नौका [नाव] रूप जय और न्याय से धारण करने योग्य कार्य का विचार  
करने में श्रेष्ठ और बड़े ऊंचे पदवाला शांभावलान हुआ ॥ ५७ ॥ १ वेद २  
देवपूजन ३ बहुत यज्ञ ४ भूमि पर विस्तार [कैला] कर ५ वेद की निंदा करने  
वाले समझ कर यवनों का बल जलाने के अर्थ ६ सिन्धारा के दोनों उमरावों  
को खेज ७ सेना के अत्यन्त उत्साह से ॥ ५८ ॥ १९ ॥ = चहू हिंदुओं के कर  
छुटाने के पत्र पर छाप करानेवाला नागर जाति का ब्राह्मण ॥ ६० ॥

इत \*गुज्जर धर जवन इक, सरबिलंद सप्रसाद ॥  
 सूबापति वह साहको, नगर अहमदाबाद ॥ ६१ ॥  
 सुं बैसु गाम सत्तरिसहस्र ७००००, आयसुं जास अधीन ॥  
 मरहठन सोहू मिल्यो, लिखि पत्रन अघ लीन ६२ ॥  
 उज्जइनी अकबरनगर, अरु पत्तन अजमेर ॥  
 सूबा त्रय ३ जयसिंहको, सो बुद्धत बल सेर ॥ ६३ ॥  
 इत खटकत दिल्ली उदर, साह मुहुम्मद सूत ॥  
 कंटक अरि काजीनको, अनय अस अनुकूल ॥ ६४ ॥  
 मंदं नपुंसक रंत मुदित, यौही पुनि अनुचार ॥  
 रक्त कापिसायन रहत, सचिवहु मंद संमार ॥ ६५ ॥  
 मौजदीनतें इक्कसे, भये पंच ५ दिल्लीस ॥  
 दिन दिन बोरि कुरान दिय, रचिय नबी पर रीस ॥ ६६ ॥  
 इत बुंदिय पति लिखित करि, रचि सालक सन साम ॥  
 विट्टी हित जयसिंह बरि, आरंभिय उपर्याम ॥ ६७ ॥  
 नगर निवाई हितुं लिय, रानी उभय २ बुलाय ॥  
 सुंज्जकुमारि जयसिंहको, अथितें दई परिनाय ॥ ६८ ॥  
 संगानैर समीप यह, बुंदीपति किय व्याह ॥  
 दायज बैसु त्रय लक्ष ३००००० दिय, अधिक दिखाय उछाह ६९  
 सक चउ वसु सत्रह १७८४ समय, तिथि तें परस्य सित आदि ॥

\*गुजरात में सप्रसन्नता सहित ॥ ६१ ॥ १ लो २ धनवान अथवा श्रेष्ठ धनवा-  
 ले ग्राम ३ जिसकी आज्ञा में ४ पाप में ॥ ६२ ॥ ५ आगरा. उस जयसिंह  
 ने ७ चलवान सेना को बुलाई २ ॥ ६३ ॥ ८ काजियों का शत्रु ९ आसक्त  
 ॥ ६४ ॥ १० वह बूख ११ हीजड़ों से रत [मैथुन] करने में प्रसन्न १२ चलन [चरता-  
 व] १३ मद्य में आसक्त १४ उसका वजीर भी सूत्र १५ कासी था ॥ ६५ ॥ १६  
 खुदा [यावनी भाषा का ईश्वरवाची शब्द है] ॥ ६६ ॥ १७ साले जयसिंह से  
 मिलाप [खुलाह] १८ बेटा [पुत्री] के अर्थ १९ विवाह ॥ ६७ ॥ २० से २१ सुरज-  
 कुमारि २२ प्रसिद्ध ॥ ६८ ॥ २३ धन ॥ ६९ ॥ २४ फाल्गुन सुदि एकम

कूरम इम \*जामात किय, पति चहुवान प्रमादि ॥ ७० ॥

पादाकुलकम् ॥

यह विचार संभर उर आयो, कूरम रिस बसि लिखित करायो ॥  
अब रिस गये लिखित मुहिं अप्पहिं, थिर सुत अंक लैन नहिं थप्पहिं  
बिंदी निज यह सोधि बिबाही, सत्य लिखित कूरम यह साही ॥  
औरस सुत होहि सु हम लैहैं, दायदजहि अंक धरि दैहैं ॥७२॥  
मम जामिज कृत्रिम जिहिं मानत, मारहिं तिहिं अब न्याय लि-  
खित मत ॥

जामिप अंक अवर कोउ रक्खहिं, बुंदाउति न पुत्र फल बक्खहिं ७३  
यह जयसिंह नियम अवगाहयो, सत्य लिखित उप्पर दठ साहयो ॥  
बुंदीपति अब दुमन विचारै, हेक न यह कूरम नृप टारै ॥ ७४ ॥  
बुंदी लिखित संग हन बीरी, जुलम भयो बलहिं न अब जोरी ॥  
उर दयितां भव सुत अंकूरी, सुग्गयो नृप लौ इम ठग मूरी ॥७५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपति  
बुधसिंहचरित्रे कोटामहारावार्जुनसिंहसरस्वामारिताम्रजश्यामसिंहदु-  
र्जनशालनृपीभवन १ महाराणा संग्रामसिंहसुताया जयसिंहपुत्रेश्व-  
रीसिंहेन सह संबंधभणान २ बुंदीमहारावगजबुधसिंहस्य स्वात्मज-

\* जमाई १ भूल से [बुधसिंह ने समझा था कि इस संबंध और डायजा देने  
के कारण जयसिंह प्रसन्न होकर मेरे हाथ का लेख भुक्त पीछा दे देवैगा, इस  
भूल से) ॥ ७० ॥ † क्रोध के वश § गोद ॥ ७१ ॥ १ पुत्री २ कछवाहे ने  
इसे बात को पकड़ी कि यह लिखावट असत्य है ३ सपिंडी में से ४ गोद रख  
देवैगे ॥ ७२ ॥ मेरे ५ भानज को ६ लिखावट के मत से ७ बहिनोई की गोद  
॥ ७३ ॥ ८ उदास ॥ ७४ ॥ ९ बुजोई १० प्यारी बुंदावति के उदर में पुत्र के  
जन्म का अंकुर हुआ ११ ठगकीसी सूजी [झूठी आशा] लेकर ॥ ७५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के राजा  
बुधसिंह के चरित्र में कोटा के महाराज अर्जुनसिंह के जने पीछे बड़े भाई श्या-  
मसिंह को मार कर दुर्जनशाल का राजा होना १ महाराणा संग्रामसिंह की  
पुत्री की राजा जयसिंह के पुत्र ईश्वरसिंह से सगाई होना २ बुंदी के महा-

भवानीसिंहकृतिमत्वप्रदर्शनपूर्वकोदयपुरसंबंधनिवारणा ३ भवानी-  
सिंहमारणावस्थायां दत्तजयसिंहचुराडाउतिराष्ट्रकूटीजठरजातजय  
सिंहदत्तदत्तकपुत्रार्थबुंदीराज्यप्रदानप्रतिज्ञाविषयबुधसिंहहस्ताक्षर-  
करणा ४ जयसिंहजयपुरनगरनिर्माणा ५ दिल्लीन्द्रपञ्चयवनेन्द्रनि-  
न्दनजयसिंहमन्त्रागतमहरष्ट्रदिल्लीधराक्रमणा ६ जयसिंहस्य बुधसिं-  
हपुत्रीविवहनं सप्तविंशो मयूखः ॥ २७ ॥

आदितः पञ्चपद्युत्तरद्विशततमः ॥ २६५ ॥

नाराचः ॥

इतैं अरीन जावदारुप नैर रानको हन्यौ ॥

सुनी अवाज कूर्मराज सज्ज भीरैकों वन्यौ ॥

भनंकि भौरं भौर के ठनंकि अंडुं गै गुरे ॥

कुं दार नैन चारके तुखाग सज्ज संजुगे ॥ १ ॥

रावराजा बुधसिंह का अपने पुत्र भवानीसिंह को कृत्रिम यताकर उसके  
उदयपुर संबंध होने को रोकना ३ भवानीसिंह को मारडालने की अवस्था  
में चुंडाउति और राठोड़ी के उदर से पुत्र उत्पन्न होयें उन पुत्रों को जयसिंह  
को देकर जयसिंह के दिये हुए दत्तक पुत्र को बुंदी का राज्य देने की प्रतिज्ञा  
का बुधसिंह का अक्षर करना ४ राजा जयसिंह का जयपुर नगर बसाना ५  
दिल्ली के पांच बादशाहों की निन्दा और जयसिंह भी मलाह से आपछुए म-  
रहटों का दिल्ली की भूमि को दाना ६ जयसिंह का बुधसिंह की पुत्री से  
विवाह करने का सन्मार्गसवां २७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ  
पैसठ २६५ मयूख हुए ॥

इधर महाराजा के १ जावद नामक नगर को राजुओं ने मारा [छेदा] जिसकी  
२ खबर कछवाहों के राजा (जयसिंह) ने सुनी इसकारण ३ सहाय करने को  
सज्जिन हुआ सो ४ भयों का समूह उदर ५ लज्जा के पजकर ६ हाथी गुंडे  
(हाथियों को सज्जिन करते समय उनका जमान पर लेटाकर रज भाड़ते हैं इ-  
सी कारण उनको गुंडना लिया है) = कुलटा (खांटी) ७ स्त्री के नेत्र चलने के  
समान चपल ८ घोड़े सज्जिन होकर एकत्र हुए; अथवा हु (पृथ्वी) जिसको वि-  
दारण करनेवाले "द्विदारणे" इस धानु से दोर जावद का अर्थ विदारण है  
अर्थात् अपने चरणों के आघात से भूमि को विदारण करनेवाले और नेत्रों के

चमू हजार अध्र बान ५० लौ कृपान भानकी ॥  
 रिसाय कुम्भराय यों चलयो सहाय रानकी ॥  
 बुलै नकीब दोयसै २००हुलै हरोल हाँकरै ॥  
 भुकै भैतालि भीर त्यों रुकै समारै साँकरै ॥ २ ॥  
 बजै निसाने नाद सो दिसा दिसान बित्थरै ॥  
 सँकूक दंदसूककी फँटा हजार फुँकरै ॥  
 मवासँ बास आसपास जास त्रास कंपये ॥  
 चकार चीस कैँ पुरीसँ दिक्करीसँ चंपये ॥ ३ ॥  
 चले मतंग अद्रि अंग स्याम रंग सज्जके ॥  
 कुरंगेँ फाँद के चले तुंग जंग कैँज्जके ॥  
 चले दुँबाह के सिपाह स्वामिधर्म संगलै ॥  
 चली सु तोप सडि ६० त्यों चँटडि चक्र चीसलै ॥  
 मिले प्रवीर पैलबाह पत्रवाँद बेधते ॥  
 कमान पँथके कमान पथकी निसेधते ॥  
 भिरे भुँवौल भुम्मियाँ सु भागधेयँ भेटलै ॥

रमान चक्रनेवाले [चपल] नेत्रों का धर्म ही चपल है इसकारण यह दूसरा  
 अर्थ भी संगत है ॥ १ ॥ १ सूर्य के समान तेजवाली अथवा चमकती हुई तर-  
 रारें लेकर २ सेना के अग्रभाग को बहाने की हाक करके ३ वीरों की पंक्ति  
 खर्ता है जिनकी सकहाई [भीड़] से ४ पवन रुकता है ॥ २ ॥ ५ न-  
 डारों का शब्द वज्रकर दिशा दिशाओं में ६ फैलता है जिससे ७ कूक स-  
 हेत ८ शेषनाग के हजार ९ फण फुंकार करते हैं "यहाँ हजार फणों के  
 गेज से सामान्य सर्प शब्द के होने पर भी शेषनाग का ग्रहण है" जिनकी  
 रास से आस पाम के १० चोरों और लटेयों के स्थान धूजते हैं और चीस  
 और ११ लाद [दिष्टा] करके १२ दिशाओं के हाथी १३ दवे ॥ ३ ॥ १४ लि-  
 जों की छलांग भरनेवाले १५ युद्ध के काम के १६ वीर १७ पत्तियों के खिचने की  
 गीस करके [यह चक्र पूर्वक खिचने के शब्द का अनुकरण है] ॥ ४ ॥ अत्यन्त  
 सर १८ वाहों से १९ पत्तियों का बंधन हुए मिले २० धनुष के मार्ग में (यान वि-  
 ताधी गीनि में २१ अर्जुन के धनुष का निबंध करत हुए २२ भुवाल (राजा) औ-  
 र भामिने २३ हासिल गिराज, भेट ले लेकर मिले

कहौं अजुं उन्नयो जु तास फोज भेटलै ॥ ५ ॥  
 फरक्कि केतु गँन यों विजेयें बैन बित्थरी ॥  
 सहाय दें कुम्म सँन रान अँन संचरी ॥  
 सुनी सु रान कान त्यों प्रयानँ सम्मुहो कियो ॥  
 हिले मिले दुहूँ २ नरेस हेत हुल्लस्यो हियो ॥ ६ ॥

[ षट्पात् ]

मिच्छन धाटि प्रपातँ रान जनपँद जावद सुनि ॥  
 पुँनना सँहँस पचास ५०००० बँडै क्रोधन जोधन चुनि ॥  
 आभैरो नरनाह पँत हित चाह उदैपुर ॥  
 दहवारी लग रान आय सम्मुह सुद आतुर ॥  
 महिपाल उभय द्विय लाया मलि सुख सह पत्तन संचरिग ॥  
 करि दल मिलौन कूरम गहिय सुपहुँ रान महलन सरिगँ ॥

[ दोहा ]

सक सर वसु सत्रह १७८५ रँना, लहि कूरम निज भीर ॥  
 अति आदर राँनाँ कियउ, बँडै प्रँणामन हमगीर ॥ ८ ॥  
 इक जँमिप पुनि बैल अतुल, बहुरि बढयो लहि कँल ॥  
 यातँ तँहँ प्रति नम् अति, भयउ रान भूपाल ॥ ९ ॥  
 इक १ थाल किन्नाँ असन, पुँठ्य रीति सब पेलि ॥

१ किसीमेंतेज [पराक्रम] २ नहीं उठा कि ३ उस अर्धसिंह की सेना से टकर लेवै ॥ ४ ॥  
 आकाश में ४ ध्वजा उड़कर ५ विजय करने के वचन फैले ६ राणा के घर में कछ-  
 वाहे की सेना चली ७ महाराणा ने सम्मुख गमन किया ॥ ६ ॥ म्लेच्छों का  
 ८ धाड़ा ९ पड़ना १० राणा के देश में ११ सेना १२ अंधकर क्रोधवाले १३  
 प्राप्त हुआ १४ पुर में गये १५ सेना का सुकाम करके १६ वह प्रभु राणा १७ चला  
 ॥ ७ ॥ १८ विक्रम के शक म सत्रहसौ पिच्छासी के सम्बत् में १९ विशेष  
 नम्र होकर ॥ ८ ॥ २० जाभाता (जमाई) यहाँ 'जामि' शब्द का अर्थ 'पुत्री' है  
 सो ही शब्दार्थ चिन्तामणि कारने लिखा है "जामिः. दुहितरि" वहुत २१  
 सेना २२ समय पाकर ॥ ९ ॥ २३ पहिले की जुदा भोजन करने की रीति को  
 हटाकर

कछु अंतर हिनमैं न किय, हिय तब हिंदुन हेलिं ॥ १० ॥  
 कूरमहू करजोरि कहि, प्रति नति करि पलटाव ॥  
 मन्नहु अप्पन सुमटं सुहिं, जिम सोलह १६ उमराव ॥ ११ ॥  
 मैं इनहूसौं अनुगतम, ममहित नहिं मरजाद ॥  
 विधि सब कहौं बंदगी, पैहौं रान प्रसाद ॥ १२ ॥  
 यह कहि कूरम चमर गहि, कियउ रान सिर उट्टि ॥  
 रचि अंजलि तब रानहू, बरजि निहिहि हित बुधि ॥ १३ ॥  
 इत्यादिक किय अनुगपन, कूरम हित निकरंबं ॥  
 जामिपं बिलु रानहु जप्यो, अवर न मम आलंब ॥ १४ ॥

(षट्पात)

कूरम प्रति दिन इक कहिय सीसोद जोरि कर ॥  
 रामपुरं प संग्राम बदलि अब रहत टेक बर ॥  
 नैकन करत निदेस भुम्भि अदी पुनि भुग्गत ॥  
 सुनि अक्खिय जयसिंह वाहि हनिहौं रन उदत ॥  
 रामपुर देहु मोकहैं नृपति मैं सेवन करिहौं सुदित ॥

कहि यह सलाम जयसिंह किय सुलक लैन लखखन प्रमित ॥ १५ ॥  
 महासुंदरी ॥

सुनि यौं मन रानों खिसानों महा अहिर्ब्रह्मस्त छुछुंदरि वहेनों परयो ॥  
 दुवखेर कही हमरोही हुतो तब दैम्म त्रिलक्ष ३०००००० दैनों परयो  
 सुनि यौंहू सलाम करी जयसिंह नयो तब रानकों नैनों परयो ॥

१ हिन्दुओं के स्वर्ग में (यह महाराजा का विशेषण है) ॥ १० ॥ २ उत्तर में न-  
 अता का पलटा करके ३ आपका उमराव, जिसप्रकार सौलह उमराव हैं ति-  
 सी प्रकार ॥ ११ ॥ इनसे भी अधिक ४ गंवक ५ कलंग ६ प्रसन्नता ॥ १२ ॥  
 ७ हाथ जोड़कर ॥ १३ ॥ ८ सेवकपन ९ हितका समूह १० जमाई के विना  
 ॥ १४ ॥ ११ रामपुर का पति १२ प्रसन्न होकर चाकरी कलंग १३ लाखों की  
 आमद के प्रधानवाला ॥ १५ ॥ छुछुंदर को पकड़नेवाले १४ वर्ष के समान छ-  
 छुंदर को पकड़कर छांडने से सर्प अंधा होजाता है और खाने से मरजाता है  
 १५ रुपये १६ जयसिंह हुका तब राणा को भी रुकना पड़ा



लिय साहकों सेय जो रामपुरा सु कृती कछवाहकों दैनों परचो १६  
(दोहा)

नीति निपुन भुव लोभ लागि, इम कूरम तँहँ आय ॥  
लियउ रामपुर रानसों, करि नुति लिखित कराय ॥ १७ ॥  
रान सचिव काप्रथ तँहँ, कग्गरँ छाप करी न ॥  
तब कूरम गृह जाय तँस, पाई नीति प्रवीन ॥ १८ ॥  
पट्टु प्रपंच इम रामपुर, लियउ नीति लागि लाह ॥  
बहुरि रान सन अनुंग बनि, किय रहस्य कछवाह ॥ १९ ॥  
(षट्पात्)

कहिय मंत्र कछवाह देइव हिंदुन सुभ दायक ॥  
मिटत जानियत मिच्छ निगम निंदक भुव नायक ॥  
कबहु न सुनत कुरान नहिँन कलमाँ निमाज नैत ॥  
काजिन उप्पर क्रुद्ध मुद्धँ नन जात महज्जत ॥  
रत पान कापिसीपन रहत मासूर्बान जानत मँहत ॥  
विधि थप्पि संड मोहँन बहत चित प्रपंच कछुहु न चहत ॥  
अब विचारि हम एह मंत्रिँ बुल्लत मरहठन ॥  
सजि प्रपंच तिन संग वोरि तुरकान हिंदु बँन ॥  
हे नृप हिंदुन हेलिँ अप्प इक १ छत्र रहहु अब ॥

१ वह चतुर कछवाहे को ॥ १६ ॥ २ स्तुति ॥ १७ ॥ राणा के प्रधान बिहारी-  
दास कायस्थ ने ३ पत्र पर छाप नहीं की ४ उस बिहारीदास के घर ५ छाप  
कराई ॥ १८ ॥ ६ खेचक बनकर ७ एकान्त में सलाह की ॥ १९ ॥ ८ भाग्य ९  
वेद की निन्दा करनेवाले १० भूमि के पति ११ भुक्त हैं (यावनी भाषा में पं-  
रनेश्वर के वाङ्मय को कलमाँ कहते हैं अर्थात् धर्मोपदेश को नहीं भुक्त) १२  
गृह १३ सब पीने में १४ यावनी भाषा में प्रीति करनेवाले को आशक और  
जिम पर प्रीति की जाये उसको माजूक कहते हैं उस माजूक को ही १५ पढ़ाई  
जानते हैं १६ नपुंसकों से सैष्टुन करते हैं १७ राज्य प्रबंध को चित्त पर कुछ नहीं  
घातने ॥ २० ॥ १८ सलाह करके बुलाने हैं १९ हिन्दुओं रूपी जल में यवनों  
को डुबोकर २० हे हिन्दुओं के स्वयं

भुग्गहु दिल्लिय भुम्मि सचिव हम करहिं जेर सब ॥  
 मरहठ पार संडहिं अमल अप्पन चम्मलि वार इत ॥  
 यह अक्खि बहुरि कूरम अधिप लियउ हत्थ जामिप लिखित ॥ २१ ॥  
 बोहा ॥

लिखवायो पहिलै लिखित, संभैग्तै जयसीह ॥  
 सो दिखाय संग्रामको, अक्खी सम्मत ईह ॥ २२ ॥

[ षट्पात ]

सुनहु रान संग्राम साल खट हय सत्रह १७७६ जब ॥  
 संभरपतिकैं सूनुं भयो मम जामि जठर तव ॥  
 रखत जामिपर रीस कउल जामिप बिजु कारन ॥  
 कृत्रिम कहि सु कुमार मोहि सौपत अब मारन ॥  
 हम कहिय क्यौं न जनमत हन्यौं अब इहिं हनन प्रपंच अति ॥  
 पापहु तथापि तुम करहु पै मम जनपद अब रहहु मति ॥ २३ ॥  
 उत्तर पुनि उच्चरिय कउल जगदंब संपथ करि ॥  
 मैं नहिं हनन समर्थ अप्प यह हनहु वंस अरि ॥  
 जुलामसीलै तुम जामि कलह हमसह वह कत्थहिं ॥  
 कछु तुमतै नन कहहिं अप्प थप्पत भ्रुति अत्थहिं ॥  
 यह अघ अरिष्ट तसमात अब कूरम जिम तिम सेट करि ॥  
 कहिहो जु सीस धरिहै कथितै नहिं स्वतंत्र रहिहै निवरि ॥ २४ ॥  
 दठ उत्तर सुनि हमहु हेतुं कृत्रिम बिच हेरे ॥

१ चामल नदी के उधर २ चामल नदी के इधर ३ बहिनाई [ बुधसिंह ] की लिखावट हाथ में ली ॥ २१ ॥ ४ बुधसिंह से ५ राय देने की चेष्टा कही ॥ २२ ॥ ६ बुधसिंह के ७ पुत्र ८ बेरी बहिन के उधर से ९ मरे देश में ॥ २३ ॥ १० सौगन ११ समर्थ १२ वंश के शत्रु को (वर्गसंकर होने के कारण यह भवानीसिंह का विशेषता है) १३ जुलाम करनेवाला स्वभाव १४ तुल्यकारी बहिन का १५ आप वेद के १६ अर्थ का स्थापन करते हो इसकारण १७ पाप का उत्पात १८ हे कूरम (जयसिंह) १९ कहना ॥ २४ ॥ उत्तर लड़के के जाली होने के २० कारण

पै' इच्छन तँहँ पत्तँ बहुत ऋतँ माँहि निवेरे ॥  
 कहयो बुद्ध नृप कबहु निकट रानी मम नाई ॥  
 यह जो तो किम अगग भये तदुदरँ दुवर्भाई ॥  
 पुनि कउल एहँ वहाँ हरि प्रनत करँ न अघ इर्म कोप कित ॥  
 वसुटवरस बहुरि न सुन्योँ विरतथ पुनि चुंडाउति अधिक प्रिय ॥२५॥  
 कुंभांनी भट दीप बहुरि पुच्छन पठयो हम ॥  
 रूपय सत्तरि सँहँस ताहि दिन्नैँ प्रछन्नतँम ॥  
 तव मैँ भंडारेजँ छिन्नि भट दीप निकास्यो ॥  
 पंच हेतु इम पाय भगिनि पुत्राहि ऋतँ भास्यो ॥  
 हम तव विचारि बहुवान हठप्रतिबंध अखिखय नीति पर ॥  
 करि लिखित देहु जिम हम कहत कृत्रिम तव मन्नाहि कुमर ॥२४॥

( दोहा )

सीसोदनि ग्धोरि सुत, होहि सु तुमकाँ दैहिँ ॥  
 जुँ तुम अंकँ धरि थप्यहो, सु सुत सन्नि हमलौहिँ ॥२७॥  
 हम जान्योँ यह लिखित हठि, न लिखहिँ बुद्ध नरेस ॥  
 हत्यातँ तव तरहिँ हम, इहिँ भल मारहु एस ॥ २८ ॥  
 लिखि यदैहु दुँकर लिखित, मम कर दिन्नोँ मुँद ॥  
 सब हल्लनकाँ सँखि धरि, बालिँस पुँगैव बुद्ध ॥ २९ ॥

शुद्धप्राकृतभाषा ॥

( अर्थ )

१ परन्तु २ एक भी प्राप्त नहीं हुआ ३ सत्यता में ४ नहीं आई ५ उसके उदर  
 से ६ बुधसिंह तो वामनार्गी और ७ राणी वैष्णव है ८ इसकारण ९ यह झू-  
 ठ वचन ॥ २५ ॥ १० कुंभापत शाखा के उमराव दीपसिंह को ११ अत्यन्त  
 छाने १२ नगर का नाम है १३ अस्य दीक्षा १४ पीला वचन [प्रयुक्त] ॥ २६ ॥  
 १५ जो १६ गौड़ ॥ २७ ॥ २८ ॥ १७ दुष्कर [कठिनाई से किया जावे ऐसा]  
 १८ मुँद १९ लाजि २० लुण्ठी में २१ अष्ट बुधसिंह ने ॥ २९ ॥

संस्कृत अनुवाद ॥

तद्वा लिहि अवकज्जं कज्जं अहोहिं सच्चवयणोहिम् ॥

तिम चेषवि तुहोहिं कज्जाकज्जं वियज्ज सीकज्जम् ३० ।

इन्द्रवज्रा ॥

सोऊणा संगामणारिस्सरोवि होऊणा सक्खी लिहिअम्मि तद्धि ॥

घेत्तूणा णीइं णिअलेहिणीए सो अप्पऊरीकरणां लिलेह ॥३१॥

उपजातिः ॥

खु पाह्सेए विन्दुमईसपट्टे अणोरसो तस्स धियं कुविट्ठो ॥

दिट्ठूणा लेहं बुहसीहकिद्धं संगामराणां लिहिअं मए वि ॥ ३२ ॥

(इन्द्रवज्रा)

ताणां भङ्गाणां विजिसोलहाणां १६ लेहं दले सो इय लोहिऊणा ॥

दिद्धं तदो कुम्मकरम्मि पण्णां लिद्धं हि तद्वा पिहुलं पसाअम् ॥३३॥

प्रायोदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

तस्मात् लिख अपकृत्यं कृत्यमस्माकं सत्यवचनेन ॥ तथैव युष्माभिरपि कार्याकार्यं विचार्य स्वीकार्यम् ॥ ३० ॥ श्रुत्वा सङ्ग्रामनरेश्वरोऽपि श्रुत्वा साक्षी लिखिते तस्मिन् गृहीत्वा नीतिं निजलेखिन्या सोऽपि आत्मोरीकरणं लिखेत् ॥ ३१ ॥ खलु पार्श्वके विन्दुमतीशपत्रे अनौरसस्तस्य बुद्धौ कुपुत्रः ॥ दृष्ट्वा लेखं बुधसिंहकृतं सङ्ग्रामराणेन लिखितं मयापि ॥ ३२ ॥ तेषां भटानामपि च षोडशानां लेखन्दले सहति लेखयित्वा ॥ दत्तं तदा कूर्मकरे पत्रं लब्धस्तस्मादपि प्रचुरः प्रसादः ॥ ३३ ॥

॥ भाषानुवाद ॥

इसकारण से हमारा कृत्य अकृत्य होवे सो आप सत्य वचन से लिखो. तै-से ही आप भी इस कार्य अकार्य का विचार कर स्वीकार करो ॥ ३० ॥ यह सुनकर राणा संग्रामसिंह ने भी उस लिखित पर आप साक्षी होने का नी-ति ग्रहण करके अपनी लेखिनी से स्वीकार लिखदिया ॥ ३१ ॥ निश्चय ही बु-न्दी के पति के पत्र को देखा. उस (बुधसिंह) की बुद्धि में वह पुत्र अनौरस है सो बुधसिंह के किये हुए लेख को देखकर मुझ (संग्रामसिंह) ने भी लिख दि-या है ॥ ३२ ॥ उन सौलह उमरावों से भी उस [संग्रामसिंह] ने वह लेख लि-खवाकर वह पत्र कछवाहे [जयसिंह] के हाथ में दिया जिससे वद्वृत प्रसन्नता हुई ॥ ३३ ॥

( दोहा )

\*सभट रानकी सखिख इम, बहुल प्रपंच बनाय ॥  
 बुद्ध लिखित इदल सिर सबिधि, लिय कूरम लिखवाय ॥ ३४ ॥  
 कछु दिन रहि कोतुक करत, नृप कूरम तिहिं नैर ॥  
 पाय रान सन सिखख पुनि, आयो पुर आमैर ॥ ३५ ॥  
 गो कूरम जब रान गृह, बुद्ध तबहि बुंदीस ॥  
 सह कुटुंब आमैर सन, रचिय प्रयान संगीस ॥ ३६ ॥  
 द्विजवर गुरु जयसिंहको, रतनाकर अभिधान ॥  
 कानीखोह मुकाम तंस, दिन्नै तथ मिलान ॥ ३७ ॥

( षट्पात् )

जिहिं रतनाकर विप्र सुगुन जयसिंह सिखायो ॥  
 स्मृति रु निर्गम खटव, सत्य विविध नृप धर्म बतायो ॥  
 चउदह १४ पुनि चउसष्टि ६४ कला विद्या पट्ट किन्नों ॥  
 जयसिंह गं दारिद्र जोग भूसुर जिहिं भिन्नो ॥  
 धारन कराय सब कुल धरम कलि भूपन सिरमोर किय ॥  
 जिम जिम प्रताप कूरम जग्यो आचारिज तिम अहरिय ॥ ३८ ॥  
 बिनु त्रि३संधयं जलपान जंग्य पंचक ५ बिनु भोजन ॥

\* उमरावों सहित † साजि ‡ बहुत § बुधसिंह के लिखे हुए पत्र पर ॥ ३५ ॥  
 ॥ ३५ ॥ ¶ बुधसिंह ने १ क्रांथ सहित गमन किया ॥ ३६ ॥ २ नाम ३ उसर . र-  
 तनाकर का काशीखोह आस था ४ तहां मुकाम किये ॥ ३७ ॥ ५ वेद ६ जय-  
 सिंह की जन्मपत्नी में दारिद्र योग गया हुआ [प्राप्त] था जिसको ७ इस ब्रा-  
 ह्मण ने मिटाया = कलियुग के राजाओं में ॥ ३८ ॥ ९ तीनों मन्ध्या किये बि-  
 ना जल नहीं पिया १० गृहस्थी के प्रति दिन करने के \* पांच यज्ञ किये बिना

\* पाटो होमश्चातिथानां सपर्या तर्पणे बलिः ॥ एते पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः ॥ इत्यमरः ॥  
 अय्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम् । होमो देवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् ॥ अर्थ—विधि पूर्वक वे-  
 दपठाना ब्रह्मयज्ञ कहाता है, तर्पण करना है सो पितृयज्ञ है, वैश्वदेव का होम है सो देवयज्ञ कहाता है चलि  
 अर्थात् जीवों को अन्न देना है सो भूतयज्ञ कहाता है और घर में आएहुए अतिथि की सेवा करके, खान  
 पानादि से सत्कार करना है सो मनुष्ययज्ञ कहाता है इन्ही प्रतिदिन कियेजानेवाले पांच यज्ञो का नाम महायज्ञ है,

विनु स्मृतीनं व्यवहार ख्यात नय विनु वसु खोजन ॥  
 द्विज सुपात्र विनु दान ध्यान हरि हर विनु धारन ॥  
 विनु विधि काल व्यवाय मंत्र नय विनु अरि मारन ॥  
 विन न्दान निगम पाठन बहुरि विनु प्रपंच संगर विकट ॥  
 इहिं द्विज प्रसाद कूरम इते नन रक्खे निज भुव निकट ॥  
 जब कूरम जोधपुर चलयो व्याहन नय चातुर ॥  
 तब सय्यद डर तकि एव्व पठयो अंतर्हपुर ॥  
 नगर करोली नाह भूप जदुवंस जासभुव ॥  
 द्रंगं बहादुरदुग्ग धीर रक्खयो सु तत्थ धुव ॥  
 अवरोध संग हो द्विज यहहु तिहिं तँहँ दिन्ना देह तजि ॥  
 तब कूरम तार जेठो तनय भूसुर गंगाराम भजि ॥ ४० ॥

दोहा ॥

गंगारामहु अमित मति, भो द्विजराज सुभाय ॥  
 बहु मैख नृप किय जास बल, बलि जैपुर बसबाय ॥ ४१ ॥  
 निर्वसथ कानीखोह तस, रहिय आय बुन्दीस ॥  
 कछवाही आमैर रहि, रचत स्वामिपर रीस ॥ ४२ ॥

(पट्टपात्)

इत कूरम गृह आय कालकोविदं प्रपंचकिय ॥  
 मगहहन छन्न मिलि देई अरजी पुनि दिलिलय ॥

भोजन नहीं किया ? धर्म शास्त्र के बिना जिसका व्यवहार प्रसिद्ध नहीं हुआ  
 २ बिना नीति के ३ धन नहीं लिया. सुपात्र ब्राह्मण के बिना दान नहीं  
 दिया, विष्णु और शिव के बिना ध्यान नहीं किया, उच्चिन समय के बिना ४  
 मैथुन नहीं किया, नीति की सलाह के बिना जन्मको नहीं मारा. बिना स्नान  
 किये ५ वेद का पाठ नहीं किया, बिना ६ रचना [उपद्र] के अपंकर युद्ध नहीं  
 किया ॥३०॥७ कृपा ८ जाने से पहिले ही ९ जानने को १० नगर ११ बहादुर  
 गढ़ नामक १२ जनाना के साथ १३ ब्राह्मण गंगाराम का संवन किया ॥३०॥  
 १४ अपार बुद्धिवाला १५ यज्ञ ॥ ४१ ॥ १६ अ म ॥ ४२ ॥ १७ सनपचतुर

रचत दौरं मरहठ लूट मंडत चम्मलि लग ॥

जो भेजहु बँल बित्त प्रवल हम लरहिँ मंडि पग ॥

सुनि साह पुच्छि सचिवन सबन उचित मंत्र यह उच्चरहु ॥

कथ तँव खानदोराँ कहिय कहत कुम्म जिम तिम करहु ॥४३॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दी-  
पतिबुधसिंहचरिते महाराणासंग्रामसिंहजावदनामनगरधाटीपतनो  
दन्तश्रवणासमकालससैन्यजयसिंहांदयपुरगमन १ महाराणास-  
काशाज्जयसिंहरामपुरप्रापणा २ दत्तकपुत्रबुन्दीदानबुधसिंहलेख-  
विषयसाक्षीकृतमहाराणाजयसिंहजयपुरागमन ३ जयसिंहगुरुर-  
त्नाकरप्रशंसया सह महाराजजयसिंहप्रशंसावर्णनमष्टाविंशो म-  
यूखः ॥ २८ ॥

आदितः षट्षष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६६ ॥

[ दोहा ]

इत कोटापति नृप उमँडि, संभरँ दुज्जनसल्ल ॥

पायो कुम्म जु रामपुर, हठि लुड्यो रन हल्ल ॥ १ ॥

पादाकुलकम् ॥

पंच अठ सुनि ससि १७८५सम्मिमत सक, इक विग्रह कोटा हुव ओचक

१ दौड़ अथवा फैलाच २ सेना ३ धन ४ तहाँ ॥ ४३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दीके भूपति बुध-  
सिंहके चरित्रमें महाराणा संग्रामसिंह के जावद नामक पुर में धाड़ा पढ़नेकी  
खबर सुनने से सेना सहित जयसिंह का उदयपुर जाना १ महाराणा से रा-  
जा जयसिंह का रामपुरा पाना २ दत्तक पुत्र को बुन्दी देने के बुधसिंह के लेख  
पर जयसिंह का महाराणा की साक्षी कराकर जयपुर आना ३ जयसिंह के गु-  
रु रत्नाकर की प्रशंसा के साथ महाराजा जयसिंह की प्रशंसा के वर्णन का  
अठारहसवां २८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ छ्वासठ २६६ मयू-  
ख हुए ॥

५ चहुवाण ६ जयसिंह ने राणा संग्रामसिंह से पाया वह ॥ १ ॥

मेवाउत हड्डा भट \*छित्तर, प्रबल सिपाह बहयो छक उप्पर ॥२॥  
 महाराव भट यहै मत्त मन, घंटीपति राउत्त गिबब घन ॥  
 कछुक बत्त उप्पर वह कोप्यो, लज्ज रु स्वामिधरम सब लौप्यो ॥३॥  
 करउर अग्ग लख्यो जो रनकरि, तिहिँ कबंध जयसिंहहिँ संहरि ॥  
 रत्ति निकसि हड्डा सु बडेरय, रामपुरप संग्राम सरन गय ॥ ४ ॥  
 कोटापति सुनि एह कहाई, सरन न रक्खहु चोर सहाई ॥  
 चंद्राउत सु सुनी न धरी चित, तब धंकि दुज्जनसल्ल बढयो तिता ॥  
 हरिगीतम् ॥

करि हल्ल दुरजनसल्ल नृप तब रामपुर पर उप्परयो ॥  
 बजि नैह मँदल हँदल भँह बँदल ज्यौँ भरयो ॥  
 उडि केतु दंतिन पंति पंतिन सिंधु तंतिन लग्गये ॥  
 नखराल चालन बाजि जालन ज्वाल नालन जग्गये ॥६॥  
 ठननंकि घंटन घोर त्यौँ रननंकि कोचनकी करी ॥  
 सननंकि सँत्तिन नास सास भननंकि पक्खर भल्लरी ॥  
 विरुदैत वीर पटैत कइ कैमनैत सज्जित संक्रमे ॥

\*छीतरसिंह ॥ २ ॥ वहुत गर्व से ॥ ३ ॥ मारकर ॥ ४ ॥ क्रोध करके उधर बढा ॥ ५ ॥ तब राजा दुर्जनशाल हल्ला करके रामपुरा के ऊपर उठा जब ५ भादवा के भरे हुए मेघ के समान ४ पूर्ण शब्दायमान होकर ३ मँदल [ज्यों मृदंग के आकार 'भादल' नाम से बालविशेष प्रसिद्ध है] का २ शब्द हुआ ६ हाथियों पर ध्वजा की अनेक पंक्तियें उडकर ७ तांत के बाजों पर सिंधवी [यङ्गाराग] रागनी लगी ८ नखरावाली ९ चालों से घोड़ों के १० समूह की ११ नालों [खुरतालों] से \* अग्नि जगी ॥ ६ ॥ हाथियों के घंटे और १२ कवचों की कड़ियें बज्जि १३ घोड़ों के नाकों (फुरखों) से श्वास बजकर भालरों के समान पाखरें बज्जि १४ विरुदायें (स्तुति किये) हुए कितने ही १५ पटा फैलनेवाले वीर और कितने ही १६ कमानवाले [धनुप्रधारी] सज्जित होकर १७ चले

\* अग्नि शब्द पुल्लिङ्ग है परन्तु लोकखुटी से जहाँ तहाँ हमने स्त्रीलिङ्ग लिखा है जिसको अशुद्ध नहीं जानना चाहिये, इसीप्रकार देवता और दोहा आदि कितने ही स्त्रीलिङ्ग शब्दों को लोकखुटी के कारण पुल्लिङ्ग करके लिखे हैं उनको भी शुद्ध ही जानें क्योंकि "यद्यपि शुद्ध लोकविद्वद् नो करणाय नाचरणीयम्" यह प्राचीनों का मत है सो ही समीचीन है ॥



रन सैन लखि लागि लैन के गन गैन गिहनके भ्रमे ॥७॥  
 डगमग्गि अद्रिन कूट तूटत सेतु सागर लुप्पयो ॥  
 दैर दिड्ढिदै भुव पिड्ढि कच्छप निड्ढि निड्ढिन रूप्पयो ॥  
 नउवत्ति नादन बीर वादन छोनि छादन वित्थरयो ॥  
 जिम भद्द संबर धूलि डंबर एम अंबर उच्छरयो ॥ ८ ॥  
 फटकारि सुंडिन मत्त गै नभ घत्त पच्छिन के करै ॥  
 जिनि मैन पव्वय प्रान गैव्वय दान निज्झर निज्झरै ॥  
 असवार ताके तुखार के भट चक्रचारै फिरावहाँ ॥  
 अबलों सु सिक्खत पौन पै वह गोन रंचन आवहाँ ॥ ९ ॥  
 तिन धार मार भैघार भार हजार भोग्गप जैक्कयो ॥  
 खुरतार अंग्रन भुम्मि फूटत ज्यों उहुंभरै पक्कयो ॥  
 खुरत्ती सु खिलहत बीर के भुरत्ती सु सिंधुव उच्चरै ॥

१ युद्ध करनेवाली सेना को देखकर ग्रीधनियों के ३ समूह की २ पंक्तियों  
 लगकर ४ आकाश में अमने उड़ने) लगी ॥७॥ पर्वत हिलकर ५ शिखर लूटनेलगे  
 और समुद्र ने मर्यादा छोड़ी ६ भय की दृष्टि देकर भूमि को पीठ पर लिये हुए  
 कच्छप काठिनाई से खड़ा रहा ७ नोवतों के शब्द ८ धारों के वचन ९ भूमि  
 को ढकनेवाले होकर फैले १० भादवे की मेघधारा "यहां शम्बर शब्द सा-  
 मान्य जल का वाचक है परंतु भाद्रपद के योग से मेघधारा का ग्रहण है"  
 के समान धूल [रज] का ११ आडंबर होकर आकाश में उछला ॥ ८ ॥ यस्त  
 हाथी सुंडों को फटकार कर आकाश में कितने ही पक्षियों की घात करते हैं  
 १२ बल के गर्ववाले जिन हाथियों का १३ प्रमाण पर्वतों के समान है उनके  
 डाण (मदधारा) १४ झरणा के समान झरता है कितने ही घोड़ों को १५ वा-  
 गों में उठाकर वीर १६ चक्र के चलने के समान [गोलकुंडा] फिराते हैं उस  
 गति को १७ पवन अब तक सीध्वता है "पवन वात्या(बघूल्या)होकर गो-  
 लाकार फिन्ता है सो माना हमीकी नकल करता है" परन्तु गति कुल भी  
 नहीं आती ॥९॥ १८ उन घोड़ों की गति [दौड़] की मारके १९ अथंकर भार से  
 हजार २० कणों का पति[शेषनाग] २१ गिरा. उन घोड़ों की खुरतालों के २२ अ-  
 र्थांग से पके हुए २३ जमर वृक्ष के फल की भांति भूमि फटी कितने ही वीर,  
 २४ शम्भुभ्रांस के खेल खेलते हैं और २५ वंशियों में बड़े राग का उच्चार करने

किलकारि जुग्गिनि संग ठहै हलकारि भैरव हुंकारै ॥१०॥  
 भट भीमलों निज सीमतैं सुत भीम यों चढि संघरयो ॥  
 लिय घेरि दुग्ग सु रामपुर दल फेरि संगरैं बित्थरयो ॥  
 लागि अग्गिं तोपन काल कोपन नैर लोपन मंडयो ॥  
 खगि गोख जालन सौंध सालन दुग्ग गोलन खंडयो ॥११॥  
 जरि हट्ट पट्टन बट्ट वट्टन धूम धोरनि धुंधरे ॥  
 डुरि ओक ओकन सोक के पुरलोक संसयमें परे ॥  
 धांकार गिरि गिरि जात कहुं छिकि बंप कपिसिरैं उच्छटैं ॥  
 कहुं फुट्टि खोमन तोम गिरि परिखान पूरि सु उप्पटैं ॥१२॥  
 दगि दाव तुट्टि लदाव मंडप धांव गिद्धनि ज्यौं चटैं ॥  
 प्रासाद पत्थर सोर सत्थरैं ठहै धरत्थर के कटैं ॥  
 छकि छिन्न तोपन छूट के परिकूट गोपुरंतैं गिरैं ॥  
 फुल्लिंग फालन जग्गि ज्वालन चित्रसालन के किरैं ॥१३॥

हैं, किलकार करके योगनियें साथ होती हैं और वीरों को ललकार कर भै-  
 रव हुंकार करते हैं ॥ १० ॥ १ भीमसेन के समान वीर होकर अपनी सीमा  
 से महाराव भीमसिंह का पुत्र चढ कर २ चला ३ सेना का घेरा लगा कर ४  
 युद्ध फैलाया ५ काल के कोप के समान तोपों से ६ अग्नि लगा कर नगर का  
 नाश रचा और गोले लग कर झगड़े, जालियें ७ महल और जालाओं को  
 गिराई ॥ ११ ॥ हाटों में चल जल कर मार्ग मार्ग में धुवां की धोर से अंधेरा  
 होगया शोक के साथ ८ घरों घरों में छुप कर पुर के लोग ९ जीवन के संदेह  
 में पड़गये कि जीवित रहेंगे या नहीं १० छोटा कोट गिरता है और कहीं पर  
 ११ बड़ा कोट छिक कर १२ कांगरे उछटते हैं 'जो कोट धीस हाथ से नीचा  
 होवे उसको प्राकार और हलमे बड़ा होवे उसको बंप कहते हैं और मतानर  
 से धूल कोट का नाम भी बंप है' कहीं पर १३ बुरजों के १४ स्तंभ गिर कर  
 १५ स्तंभों को पूरख करके उफलते हैं ॥ १२ ॥ अग्नि लग कर लदाव और  
 मंडप (धुमज) लूट कर उनके १६ पत्थर औधनियों के मखान आकाश में चढते  
 हैं और १७ धारु के साथ धुज कर महलों के पत्थर निकलते हैं, तोपों से कट  
 कर १८ नगर के द्वारों से छूट कर उन के शिखर गिरते हैं और अग्नि लग  
 कर १९ अग्निकण उडने से कितनी ही चित्रशालियों गिरती हैं ॥ १३ ॥

छहरात गोलन थंभ के थहरात छत्रिन छुटिकें ॥  
 छिकि जात छप्पर छज्ज के टिकि जात टप्पर तुटिकें ॥  
 अंगार छार अंगार द्वार बजार बीथिन उच्छरें ॥  
 न गहें निवानन छिज्ज नीर समीरें ग्रीखमलों सरें । १४ ।  
 जरि जात पर परि जात गिद्वनि डोरि तुटत चंगज्यों ॥  
 भरिजात भंडन दंड के गिरिजात केकिय भंगज्यों ॥  
 धकि धाम धामन धुम्मतैं पुररामें बिबभल कुकयो ॥  
 इम हल्ल दुरजनसल्ल करि हरवल्ल भैल्लन भुकयो ॥ १५ ॥  
 दै दै निसैनिन बीर के हमगीर अट्टनपैं चढे ॥  
 के दोरि अररन तोरि अगलैं पोरि मगग लगे बढे ॥  
 वह हड्ड छित्तर आय चैत्वर धीर धारनमें धरयो ॥  
 करि जंग कछु बिधि भरि खगग सु फारि फोजहिं निखस्यो १६  
 संग्राम नृप यह काम सुनि तव रामपुर तजि भज्जयो ॥  
 इत जिति दुरजनसल्ल हँत्तन लुट्टि पँत्तन गज्जयो ॥  
 बरजोर कूरममोरैं को गिनि भीति मानससौं भिरी ॥  
 जयसिंह वह लिय रानसौं इम आन अप्पन नाँ फिरी ॥ १७ ॥

१ गोलोंके गिरने [बरसने]से छतरियोंके थंभ धूज कर छूटते हैं, कितने ही छपरे  
 और छाजे छिकते हैं और कितने २ टापरे लूट कर ठहरजाते हैं दरवाजों के  
 बाहर बजार में और ४ गलियों में अंगारे और ३ भस्म उड़ती है निवाणों  
 में छीज कर पानी नहीं रहा और ग्रीष्मऋतु के समान (गरम) ५ पवन १ च-  
 लने लगा ॥ १४ ॥ जैसे डोरी लूट कर ७ पतंग [कनकडवा] गिरै तैसे पंख ज-  
 ल कर ग्रीधनियें गिरती हैं कितने ही ध्वजाओं के दंड जल कर ऐसे गिरते हैं  
 जैसे मरेहुए ८ मयूर ऊपर से गिरें ९ घर घर जल कर धुवां से घबराया हुआ  
 १० रामपुर युवा इस प्रकार दुर्जनशाल हल्ला करके सेना के अग्रभाग को १  
 भैलने को बड़ा ॥ १५ ॥ १२ बुरजां पर चढे और कितने ही १३ कंवाड़ों को और  
 १४ आगलों (अगला, भागल) को तोड़ कर द्वार के मार्ग लग कर बढे वह  
 हाडा छातरसिंह १५ चौक में आकर ॥ १६ ॥ १६ छातरसिंह के निकलजाने  
 का कार्य सुन कर १७ हाथों से १८ नगर को लूट कर १९ कछुवाहों के पति  
 (जयसिंह) को घलवान जानकर २० मन में भय हुआ [डरा] ॥ १७ ॥

( दोहा )

कोटापति नहिँ अमल क्रिय, कूरम नृप भय भार ॥  
लुट्टि रामपुर \*जाम लग, आयउ अप्प अगार ॥ १८ ॥

[ षट्पात् ]

चंद्राउत सीसोद नृपति संग्रामसिंह इत ॥  
पुर बिंभोली आय रहयो चितत प्रपंच चित ॥  
मातुल हो परमार नाम विक्रम बिंभोली ॥  
इहिँ कारन तँहँ आय खूब भज्जत कटि खोली ॥  
धनकुमारि नाम जननीहु तस ही पीहर इम तत्थ रहि ॥  
दिन कछु बिहाँय दिल्लिय गयो साहसुहुम्मद सरन गहि ॥ १९ ॥

(दोहा)

कछु बसुँ हुंडी नजरि करि, लिय निज भुम्मि लिखाय ॥  
दिय कोटा आमैर दुव, बनि बनि पिसुन वताय ॥ २० ॥  
कछु दिन रहि निज पुर कम्म्यौँ, पटा सुलक सब पाय ॥  
सरनि मध्य जयसिंह सो, मारयो चूक कराय ॥ २१ ॥

(षट्पात्)

तदनंतर संक वान अट्ट सत्रह १७८५ संवच्छर ॥  
अंमा अहर्गन पोस भयउ सुत पुनि कूरम घर ॥  
रानाउति जाँठरज नाम माधव नृप नंदन ॥  
सुनत खवरि जयसिंह घुम्मि मंडिय उच्छव घन ॥  
दिय द्विजन दान रूपय अयुत १०००० कथिते रीति जप जज्ञ करि ॥  
सुत प्रसवकर्म सदिय सकल आमनाय अनुसार सरि ॥ २२ ॥

एक पहर पर्यन्त अघर ॥ १८ ॥ १ मांमां २ बीभोली नामक नगर में इहसकारण ४  
बिता कर ॥ १९ ॥ १ घन ॥ २० ॥ ६ चला ७ मार्ग में ॥ २१ ॥ ८ जिस पीछे ९  
विक्रम के शक के १७८५ के वर्ष में १० अमावास्या के ११ दिन १२ उदर से  
उत्पन्न १३ कहीहुई रीति से १४ जातकर्म १५ बंद के अनुसार चलकर ॥ २२ ॥

(दोहा)

कछवाही भ्राताहिँ कहिय, उदयनैर तुम \*पत्त ॥  
 भामजको संबंध भो, वा नहिँ अक्खहु अत्त ॥ २३ ॥

॥ पट्पात् ॥

कहि कूरम तव कुप्पि §भाम कृत्रिम तिहिँ भाखत ॥  
 हमतैँ ॥इम नहिँ होय बदहु पतितैँ जु करहिँ बत ॥  
 कछवाही सुनि कहिय तुमहु कृत्रिम हम जानत ॥  
 विजयसिंह मम अनुज सत्य पै जग नहिँ मानत ॥  
 यह अक्खि अनुज कटिबंधं गहि खंजरुँ खैंचन करिय कर ॥  
 भंभंति छुराय कूरम अंति आयो बाहिर दै अरर ॥२४ ॥

दोहा ॥

कछवाही पिच्छैँ निकसि, हुँत निज सत्थ बुलाय ॥  
 चहि संपुत्र स्यंदन चली, स्वामी निकट रिसाय ॥ २५ ॥

(पट्पात्)

जामिपैँ प्रति जयसिंह तबहिँ चैर भेजि कहाई ॥  
 पहुँचे सब तुम पास भलैँ विरचहु मनभाई ॥  
 हत्या देत जु हमहिँ ततो हम करहिँ लिखित तकि ॥  
 नतो अप्प गृह जाहु करहु चित चाह पाप पकि ॥  
 यह सुनत भूप पच्छी कहिय अप्प निवेरहु कलह यह ॥  
 हैं सदा लिखित अनुसार हम अवर न मन जानहु असह ॥२६॥  
 सुनत एह जयसिंह मुख्य मंत्रिय राजामल ॥  
 पठयो अक्खि प्रपंच लैन भानेज छन्न छल ॥

\* गये सो ऽ भानजे का ऽ यहाँ कहे ॥ २३ ॥ § बहिनोई [बुधसिंह]  
 इस्तकी करतवी कहते हैं ॥ इत्यकारका १ मरा छोटा भाई २ कमरबंधा पकड़  
 कर ३ शस्त्र विशेष ४ झिठका देकर ५ शीघ्र ६ किवाड़ देकर बाहिर आगया  
 ॥ २४ ॥ ७ शीघ्र ८ अपने साथ को ९ पुत्र सहित १० थ पर चढके १० बुधसि-  
 ह के पास ॥ २५ ॥ ११ बहिनोई बुधसिंह से १२ इत्यकारा भेजकर ॥ २६ ॥

तब खत्री तँहँ जाय कहयो कारण रानी प्रति ॥

सुरभयो कलह समस्त \*अनुज तुम पक्ष करिय अति ॥

कहिहो तँहँहि सगपन करहिँ बुँदासहु नहिँ अब विमन ॥

करि लिखित दिन्न जयसिंह कर किन्न सबहि उररीकरन । २७ ।

पादाकुलकम् ॥

तब रानी नृप हितुँ कहाई, भामज निजहिँ बुलावत भाई ॥

सुरभयो जो विग्रह हित सत्यहि, तो भेजहिँ अप्पन सुत तर्थहिँ ॥ २८ ॥

तब बुँदीस कहयो रानी प्रति, तुमरो अनुज बलिष्ठ बढयो अति ॥

हम सुरभी उरभी सुन चिन्ही, अकखी उन जिमतिम लिखि दिन्ही

यह सुनि जान्योँ साम भयो अब, समुभयो रानी द्रोह मिटयो सब ॥

तबहि भवानीसिंह स्वीय सुन, मातुलँ डिग पठयो खती जुत ॥ ३० ॥

राजामल लै तिहिँ तँहँ आयो, कुम्म सु ताकँहँ हतन कहायो ॥

दुर्ग माँहिँ इक दुर्ग भपंकर, नाम चिल्हटोला काराघर ॥ ३१ ॥

तँहँ चढाय बालक वह मारयो, नृप कूरम काहू न निवारयो ॥

एह कुमार हमहु अनुमान्योँ, पै असत्य सत्य न पहिचान्योँ ॥ ३२ ॥

कुटिल कुसीलँ लखत कछवाही, इम हम मति कृत्रिम अँवगाही

पुनि बुँदीस नष्ट मैति पिकखत, देखि हेतु अवरहु अँत दिक्खत ३३

प्राचीनै न यह कथ इम रक्खी, यतँ हमहु अनिईचय अकखी ॥

\*तुम्हार छोटे भाई [जयसिंह] ने तुम्हारा बहुत पक्ष किया मैं उदास ? अंगी-  
कार [स्वीकार] ॥ २७ ॥ २ बुधसिंह से मेरा भाई जयसिंह ३ अपने भातजे को  
बुलाता है ४ तहाँ ॥ २८ ॥ ५ बलवान् ६ नहीं देखा ॥ २९ ॥ ७ अपने पुत्र को  
मामा के पास राजामल खत्री सहित भेजा ॥ ३० ॥ ८ कैद [जेल]खाना ॥ ३१ ॥  
९ राजा जयसिंह को किसीने नहीं रोका १० ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं  
कि इस कुमार के लिये हमने भी अनुमान किया ॥ ३२ ॥ ११ सुर रक्षमावचा-  
का १२ कृत्रिमपन का ही धाह लिया अर्थात् करतबी ही जाना १३ नष्ट धुन्धि  
वाला १४ सत्य देखना है ॥ ३३ ॥ १५ खपाति लिखनेवाले प्राचीन लोगों ने  
इस कथा को इसीप्रकार रक्खी है ॥ ३४ ॥ १६ इसकारण हमने भी संदेहवा-

\*दुत सुनि सूनु कैद हिय दाही, किन्नौ कलह कुपि कछवाही ३४  
 पति सन कहिय हन्यौ तुम पुत्रहि, यातैं तजिहौ देह अमुत्रहि ॥  
 इम कहि अन्न त्याग अवधारयो, व्याकुल नृप तब सोक बिचारयो ३५  
 मति जड़ भूप कँउल निश्चित मन, नारिन नैक उदास सहै नन ॥  
 बिनयादिक करि कोप बहावै, अंतर तबहि इष्ट सुख आवै ३६।  
 ललना मात्र कहै सु न लुप्यै, करै प्रनति जब जब कोउ कुप्यै ॥  
 यह बुंदीपति सील अपूरब, तातैं करि करि प्रनति कही तब ३७  
 सत्रुन हत्य तुमहि सौँप्यो सुत, अब क्यों रिस हम कियउ कहा उत  
 कहिहो पुनि सोही हम करिहै, असन लेहु इच्छित अनुसरिहै ३८  
 यह सुनि दिय रानी प्रतिउत्तर, कुमर सु मम मंडहु यह कगरं ॥  
 तब नृप लिख्यो कलह दुख टारक, कछवाहीको एह कुमारक ३९  
 कलह उग्र रानी पुनि किन्नौ, निहिनै अन्न दिनन बिच लिन्नौ ॥  
 इत पुनि गरभ धरयो चुंडाउति, होवत जास जग्य जप आहुति ४०।

उति १ हुति २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

अब तक्त कूरम नृप याकँहँ, कब सुत होय मंगिहौं ताकँहँ ॥  
 कुमर भयँ जामिजँ गति कैहौं, दुहितौं जो स्वसुतहिँ तो दैहौं ४१।  
 चोपाई ॥

कूरम इम हेरत जानि कैल, रक्खे भट जामिकँ रक्खवाल ॥  
 घुमडि रहे डेरन जे धेरि, नृप सुत लोभ लयो मन फेरि ४२।

ली ही रक्खी है \* दीप्र पुत्र को कैद सुनकर ॥ १ परलोक के अर्थ २ धारण किये ॥ ३५ ॥ ३ सुख बुद्धिवाला ४ वाममार्ग में मन का निश्चय करनेवाला ५ नहीं चाहता ॥ ३६ ॥ ६ स्त्रीमात्र ७ विशेष नम्रता ॥ २७ ॥ ८ तुम्हारा चाहा हुआ करेंगे ॥ ३८ ॥ ९ वह कुमर मेरा था १० यह पत्र लिख दो ११ टालने [मिलने] वाली ॥ ३९ ॥ १२ कठिनता से १३ कई दिनों में ॥ ४० ॥ १४ भानजे की गति हुई सो ही कखंगा अर्थात् मार डालूंगा १५ बेटी हुई तो अपने पेटे ईश्वरीसिंह को परणादूंगा ॥ ४१ ॥ १६ बालक जन्मने के समय को १७ पहरापत १८ बुधसिंह ने पुत्र के लोभ से जयसिंह से मन फेर लिया ॥ ४२ ॥

[ षट्पात् ]

तदनु ईश्वरीसिंह सुपहु जयसिंह पट्ट सुत ॥

रान कुमर जमतेस सुता व्याहयो हिन संजुत ॥

सर बसु सत्रह १७८५ साल्त माघ मिते लगन मिलायो ॥

जदहि उदैपुर जाय उचित उपयम करि आयो ॥

इत दब्बि सुल्लक मालव कियउ मरहट्टन मंडू अमल ॥

आजलों दूर सुनते इनहिँ प्रबिसन अब लगगे प्रबल । ४३ ।

दोहा ॥

रन अवरंगाबाद रचि, पहिलेँ कटक प्रचारि ॥

दयाबहादुर विप्र वह, सूदापति लिय मारि ॥ ४४ ॥

( षट्पात् )

इहिँ द्विज दिल्लिय अंग मेदि हिंदुन दुख दिन्नों ॥

साह हुकम पुनि पाय कुंच दक्खिन सिर किन्नों ॥

तीन अयुत ३०००० तुंखार सुभट निज संग सिधारे ॥

सहँस बीस २००००० पुनि साह कटक भट दिन्न करारे ॥

कोटा नरेस प्रति पत्र लिखि दुज्जनसल्लहु संग दिय ॥

इन जाय सरित रेवा उतरि कछुदिन पार सुकाम किय ४५

कोटापति करि कपट तथ कछु काल विहायो ॥

द्विज डिग निज दँल रक्खि अप्प कोटा चलि अयो ॥

उत अवरंगाबाद लुट्टि मरहट्ट चलाये ॥

द्विज त्रि ३ बेर दल पिल्लेँ पिल्लि रंचक ठहराये ॥

अति जोर बढिय मरहट्ट अरि तव द्विज सम्मुह भिल्लये ॥

पाँसक कृपान चोपरि प्रथितेँ खेत प्रान पँन खिल्लये । ४६ ।

१ जिस पीछे २ राखा संभ्राससिंह के पुत्र जगतसिंह की पुत्री ३ सुदि ४ वि-  
वाह ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ५ आगे ६ घोड़ों [सवार] ७ सेना ८ मर्मदा नदी ॥ ४५ ॥

९ तहाँ कुछ समय विताया १० अपनी सेना ११ ब्राह्मण तीन वार सेना भेजकर  
१२ लह रूी पासों से युद्धचेत्र लयी १३ प्रसिद्ध चोपड़ में १४ प्राणों का दाव



दयावहादुर वीर बिप्र नागर सूबा पति ॥

खूब झारि रन खगग मारि बहु सत्रु महामति ॥

तिल तिल तेकन तुष्टि बिरचि अच्छरि लगवाँहौं ॥

गंजि अरिन करि गरद मरद पत्तो दिवँ माँहौं ॥

जिम जिम प्रमाद मिच्छन जगिय भोगेन जिम जिम भुल्लये ॥

तिम तिम कटाच्छ तिरछे बिरचि दिल्ली जारन बुल्लये ॥४७॥

( दोहा )

मारि द्विजहिँ संडत अमल, रेवा लंघि रिसाय ॥

मरहठन मालव लयो, उज्जइनी लग आय ॥ ४८ ॥

लै मंडू दसउर लियउ, निज निज थानाँ रक्खि ॥

सूबापति गुजरातको, सोहु मिल्यो हित सँक्खि ॥ ४९ ॥

तबके आवत दक्खिनी, भुव दव्वत बरजोर ॥

अब कूरम कहि सुक्कलयाँ, तजहु रामपुर मोर ॥ ५० ॥

जानि इनहु जयसिंहको, रामपुर सु दिय छोरि ॥

अवर देस उज्जैन लग, बढि बढि लिन्न बहोरि ॥ ५१ ॥

कूरम तब सुक्कलि कैटक, अमल रामपुर किन्न ॥

मरहठन सँन छन्न मिलि, दिल्ली सिर भरदिन्न ॥ ५२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-  
पतिबुधसिंहचरित्रे कोटामहारावदुर्जनशल्यरामपुरलुण्ठन १ राम-  
पुरपलायितदिल्लीगतरावसंग्रामसिंहपुनारामपुरलेखन २ प्राप्तरा-

लगाकर खेला ॥ ४६ ॥ १ स्वर्ग में गया २ भोग आगने में ३ कटाच्छ ॥ ४७ ॥

॥ ४८ ॥ ४ हित की साक्षी [गवाही] से ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५ अन्य ॥ ५१ ॥ वसना  
भेजकर ७ से ८ भाग ॥ ५२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के भूपति  
बुधसिंह के चरित्र में कोटा के महाराव दुर्जनशल का रामपुर को लूटना ?  
रामपुर से भागे हुए राव संग्रामसिंह का दिल्ली जाकर पीछा रामपुरा लि-  
खाना, २ जयपुर के राजा जयसिंह का रामपुरा भाकर पीछे आते हुए राव

मपुरप्रत्यागच्छजयपुराधीश जयसिंहस्य रावसंग्रामसिंहच्छलाघात-  
 मारणा ३ जयसिंहकनिष्ठसूनुमाधवसिंहजनन ४ जयसिंहस्य स्व-  
 भागिनेषब्रुन्दीपट्टराजकुमारभवानीसिंहमारणा ५ जयसिंहपट्टकुमा-  
 रेऋवरीसिंहादयपुत्रविवाहन ६ गृहीतो जयनीकमहरद्वदशपुरपुराव-  
 ध्याक्रमणावर्तानमेकोनत्रिंशो मयूखः ॥ २९ ॥

आदितः सप्तपष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६७ ॥

[ दाहा ]

अभयसिंह मरुईस इत, मरुधर राज जमाय ॥

स्वामिधरम बेहि साहको, अतिजव दिल्ली आय ॥ १ ॥

इत नृप कानीखोह रहि, तज्यो वचन गहि गाढ ॥

सक खट वसु सत्रह १७८६ममय, आयउ अब आपाढ ॥२॥

[ पट्पात ]

असित पकख आपाढ मास सनिवार चउदहसि १२ ॥

चुंडाउति उर कुमर भयो दहमास जठर वसि ॥

धात्रेयी नृप निकट उलवँ सहितहि गहि आन्यो ॥

बुल्ली नीति विचारि जनन अवलग नहिँ जान्यो ॥

पै अब न छन्न रक्खन उचित कोउ न पुनि काहिँ कुमरा ॥

॥ ३ ॥

अगँ जबहि \*भीम लुट्टी भुव, तनया तब सूरजकुमारि हुव ॥  
 गिपुंभयसौं सुत सुत करि राखी, भावतसिंह भये सुत भाखी ॥ ४ ॥  
 जँहँ सुताहिँ सुत सुत कहि ठानँ, तिहिँ पुनि सुता कहँ जग मानँ ॥  
 सुतहिँ सुता कहि कहि जँहँ रक्खहिँ, ताहिँ बहुणि कोउ न सुत अरखहिँ  
 हुव संतान सबन यह जान्यौं, पुत्री सुत अबहि न पहिचान्यौं ॥  
 पैँ लुन्नै रक्खै नहिँ भल मत, खपति कियँ कूरम इहिँ संगत ॥६॥  
 हमरी मति सु फुँरत प्रकटावन, पुनि कहिदो सु करहिँ किँ करपन ॥  
 धात्रेयँ जु अनिरुद्ध नरेसह, देवकरन अभिधान हुतो वह ॥ ७ ॥  
 ताकी इहिँ तनया धालेई, कोबिदँ नीति कही इम केई ॥  
 सुहि पुनि नाजर अमर सुनाई, वंठहु सुत भँव प्रकट बधाई ॥८॥  
 भावसिंह नृपको यह नाजर, बय नँय बृद्ध रु राजकाज बैर ॥  
 अगँ नृप अनिरुद्ध समय जब, अंतहपूर कोउ बेलँ चलयो तवा १  
 खिविका छोरि अँपुबब सयानी, रथहि चढी राजाउति रानी ॥  
 चिकन ओट कछु लखत प्रपंचकँ, बाहिर कढी अंगुली रंचकँ ॥  
 कहि तब नाजर अमर करौंरी, छँरी तीन३ अंगुलि पर मारी ॥  
 उपासँभँ अनिरुद्ध भूप द्विय, नाजर तबहि जोरि कर अखिखय ११  
 दासी जन अंगुलि में मानी, रानी रथ आरूढ न जानी ॥

है ॥ ३ ॥ \* कोटा के महाराव भीमसिंह ने १ पुत्री १ शत्रु के इस भय से कि  
 अब इनके पीछे कोई पुत्र नहीं है इसकारण बूढ़ी को दवालेना चाहिये २ यह  
 कह कर प्रसिद्ध किया कि भावतसिंह नामक पुत्र हुआ है ॥ ४ ॥ ३ जहाँ पु-  
 त्री को ही पुत्र पुत्र कहकर रखते हैं ४ तो पुत्र को ५ पुत्री कहकर रखेंगे  
 तो ६ उसको फिर कोई पुत्र नहीं करेगा ॥ ५ ॥ ७ परन्तु ८ प्रसिद्ध करने से  
 ९ जयसिंह इसको मांगता है ॥ ६ ॥ १० हमारी बुद्धि प्रसिद्ध करने में ही च-  
 लती है ११ नौकरपन के कारण १२ घाघभाई १३ नाम ॥ ७ ॥ १४ वेटी १५ नी-  
 ति चतुर ने कई वार्ता कही १६ पुत्र के जन्म की ॥ ८ ॥ १७ अवस्था और  
 नीति दोनों में बृद्ध १८ अष्ट १९ जनाना २० किसी जाग में ॥ ६ ॥ २१ अपूर्व  
 २२ शहर आदि की रचना देखने को २३ थोड़ी सी ॥ १० ॥ २४ करड़ी (कहि-  
 न) २५ छड़ी २६ ओलं मा ॥ ११ ॥

यातँ रही अंगुली अकखँय, नहिँ तो लैतो कट्टि रीति नैय ॥ १२ ॥  
 असो तुँजक हुतो वह नाजर, किन्नों तिहिँ यँहँ अरज जोरि कर  
 बुंदिय जो बारिधिँ बिच बोरहु, छन्नँ रक्खि ततो नैय छोरहु ॥ १३ ॥

( षट्पात् )

सुँ सुनि भूप बुंदीस कुमर जाहिर तब किन्नों ॥  
 हुँदुभि बज्जिग द्वार द्रव्य विप्रन बहु दिन्नों ॥  
 गँ कन अरु नेवंगिन कुम्म नृपसाँहु कहाई ॥  
 सत १०० सत १०० रूपय सबन दई जयसिंह बधाई ॥  
 बुद्धँहि कहाय पठई बहुरि साँपहुँ अब हम हत्थ सुँव ॥  
 गहिँ लिखित रीति लिखि बंधुँगन धारहु अवरहि अँकँ धुव १४

[ दांहा ]

कहि पठई बुधसिंह तब, पच्छी वँयाज बिसास ॥  
 करन देहु जाँतक करम, पुनि भेजहिँ तुम पास ॥ १५ ॥

( षट्पात् )

जातकरम सब करिय तँनय उच्छव तदनँतर ॥  
 सुन्यौँ कुमर संसार नाम उम्मेदसिंह वर ॥  
 बहुरि कुम्म इक बनिकँ सचिँव पठयो हीरामल ॥  
 कहयो देहु सुहिँ कुमर छोहँ तब कियउ रँयात छल ॥  
 अक्खिय रिसाय बुंदिय अधिप पुत्रहु कहिँ मंगे मिलत ॥

१ ज्य रहित २ न्याय की रीति से अंगुली काटलेता ॥ १२ ॥ ३ प्रबंधकर्ता  
 (यह घावनी शब्द अनेकार्थ वाची है, जिसके अर्थ दबदबा शान शोकत प्रव-  
 न्धकर्ता आदि कई हैं) ४ समुद्र में डूबना होवे तो ५ नीति ॥ ११ ॥ ६ सो  
 ७ नगारे बजे ८ ज्योतिषियों और ९ नेग पानेवालों ने जयसिंह से भी १०  
 बुधसिंह का ११ सुन [पुत्र] १२ लिखावट की रीति से भाइयों के समूह में  
 से १३ निश्चय किल्लीको गोद रखला ॥ १४ ॥ १४ छल से विश्वास देकर कह-  
 लाई १५ जन्म समय के वेद विहित कार्य ॥ १५ ॥ १६ पुत्र के उत्सव का १७  
 जिस पीछे १८ बनिया १९ क्रोध करके २० प्रसिद्ध

बरजोर लोहो हो तुम प्रबल हम रन इच्छतं स्वर्ग हत ॥१६॥  
 सुनत एह जयसिंह घल्लि कर मुच्छ रिसायो ॥  
 पन्नैग पय दब्बयो किं छुं धित सद्बूल खिजायो ॥  
 तमकि भूप ततकाँल सचिव राजामल बुल्लयो ॥  
 कहयो कहा करतव्य खिज्जि अब उन छल खुल्लयो ॥  
 करि उचित लोहो खत्री कहिय गृहबाँसिन इन इनहु नैन ॥  
 इच्छितहिँ राज बुंदिय अपि प्रथितं निबाहहु लिखित पैन ॥१७॥  
 (दोहा)

तब छित्वर प्रति इंद्रगढ, कुम्म लिखी यह चाहि ॥  
 देवसिंह भैजहु कुमर, बुंदी अप्पहिँ ताहि ॥ १८ ॥  
 प्रथम राज तुमकाँ मिलत, जो यह तुमहिँ रुचै न ॥  
 तो हम अवरहिँ अप्पिहैं, बदहु न पिच्छैँ वैन ॥ १९ ॥  
 छित्वरसिंहहु तबहि लिखि, पठई कूरम गेह ॥  
 हम किंकर बुंदीसके, अनुचित करहिँ न एह ॥ २० ॥  
 अवरहुँ गोपीनाथ कुल, नटयो अनुक्रम पाय ॥  
 बुंदीतैँ कूरम तबहि, सालम लिन्न बुलाय ॥ २१ ॥  
 कहयो धरहु तुमरो कुमर, बुंदी गहिय बीर ॥  
 लखहु एह जामिर्प लिखित, हम सहाय हमगारि ॥ २२ ॥  
 सठ सालम यह लोभ सुनि, बुल्लयो कुमर प्रताप ॥

१ युद्ध करना चाहते हैं २ तरवार भारकर ॥ १६ ॥ ३ सर्प को पैर से दबाया  
 ४ लिधों ५ शूखे सिंह को क्रोधित किया ६ क्रोध करके ७ तुरन्त ८ बुलाया  
 ९ क्या करना चाहिये १० अपने घर में वास किये हुआओं को ११ मारो मत  
 'यहां अधिक निषेध के लिये दो नकारों का प्रयोग है सो अन्य स्थानों में भी  
 जहां 'नन' शब्द आवै वहां अधिक निषेध समझना चाहिये' १२ चाहे जिस  
 को बुंदी का राज्य देकर १३ प्रसिद्ध लेख [लिखावट] की १४ प्रतिज्ञा निधा-  
 हो ॥ १७ ॥ १५ छीतरसिंह के नाम १६ जयसिंह ने ॥ १८ ॥ १६ ॥ २० ॥ १७  
 सालमसिंह को ॥ २१ ॥ १८ वहिनोई [बुधसिंह] की लिखावट ॥ २२ ॥ १९ बुलाया

नय बिचारि सोहू नटयो, उच्चरि दुर्दित अमाप ॥ २३ ॥  
जड़ सालम बुल्लयो जबहि, मध्यम कुमर दलेल ॥  
करउरतें आयो कुटिल, मन इच्छित लहि मेल ॥ २४ ॥  
अभयसिंह इत मरुअधिप, बखसि साह बसु ज्ञात,  
सरबुलंद सिर मुकल्लयो, दै सूबा गुजरात ॥ २५ ॥  
दिल्लीतें मारव नृपहु, आयो जैपुर अंत्य ॥  
बरखनलग जैपुर बस्यो, हो जयसिंहहु तत्थ ॥ २६ ॥  
तब दरकुंचन आय तँहँ, मरुपति दिन्न मिलान ॥  
इहिं सुनि कारीखोइतें, चढि आयो चहुवान ॥ २७ ॥  
मरुपतिसौं अति हेत मिलि, कहि सब लिखित कुंकाम ॥  
जयनिवास उषवन निकट, क्रिप बुंदीस मुकाम ॥ २८ ॥  
मुक्तादाम ॥

मिले मरुभूप रु बुद्ध विनोद, परस्पर डेरन आय प्रमोद ॥  
सु द्वैशकरि गोठिनं जिम्मन साजि, दये लिय दोउन र्थीरन बाजि २९  
मरु प्रभु डेरन कुम्महु आय, सुंतापति जानि मिलयो सरसैाय ॥  
कहयो करि पावन जैपुर जेवँ, मँमालय भोजन "कँ चलिये वँ ३०  
कहयो मरुभूपहु यौं सुनि तत्थ, चलैं हम बुद्ध बैलापति सत्थ ॥  
ठगे इनकौं तुम जानि प्रमत्त, हमँ इनतें हित हेपँ न अत्त ॥ ३१ ॥  
यहै सुनि कूरम अखिय एह, चुकयो मिलि जामिपतें यहदेह ॥  
यहै कहि लौ मरुभूपहिं जाय, दई बिनु जामिपँ गोठि जिमाय ॥ ३२ ॥

१ पाप ॥ २३ ॥ २ दल्लसिंह को ॥ २४ ॥ ३ बादशाह ने धन का सबूत देकर  
॥ २५ ॥ ४ मारवाह का राजा ९ यहाँ ३ कई वर्षों से वास किया हुआ ॥ २६ ॥  
७ मुकाम ॥ २७ ॥ ८ जयसिंह को लिखावट कर देने का खोटा कार्य कर  
कर ६ वाग के समीप ॥ २८ ॥ १० गोठें ११ हाथी घोड़े ॥ २९ ॥ २ अर्पणा  
पुत्री का पति जानकर १३ रस युक्त [प्रसन्न होकर] १४ शोभा १५ मेरे घर १६  
भोजन करने पर १७ लय चलिये ॥ ३० ॥ १८ यह युधसिंहका विजयपत्त है १९  
त्याज्य नहीं है ॥ ३१ ॥ २० यहिनोई से थक देह मिल चुका अर्थात् अब कभी  
नहीं मिलसक्ता "यह काहु भापा का कथन है" २१ बिना युधसिंह के ॥ ३२ ॥

चलो लहि कूरम सिकख कबंध, बधो नृप बुद्धहि फेरि प्रबंध ॥  
 रहो तुम कूरमकी यह जानि, कछू करिहै मम भद्र प्रमानि ॥३३॥  
 सु तो सब गो तुमरी लिपि संग, अबैं नैन रक्खहु राज्य उमंग ॥  
 चलो मम सत्थहि जो चहुवान, ततो इन्ह ठिल्लहि लै तुम थान ३४  
 यहै हु न मन्निय बुंदिय ईस, रची मरुभूपतिहू कछु रीस ॥  
 क्रम्यौ करि कुंचन धन्व कबंध, रच्यो धर गुंजर लैन प्रबंधाशु ॥  
 इतैं सठ संभर मोह अरोहैं, क्रम्यौ निज डेरन कानियखोह ॥  
 दई पुनि बुद्धहि कुंम कहाय, भयो सुत औरस सौंपहु भाया ३६  
 रु लै सुत सालम अंक दलेलैं, मनौ इहिं पुत्र गिनौं लहि मेल ॥  
 न मन्निय फेरिहु बुंदिय नाह, कुप्यो गहि सुच्छ तबै कछवाह ३७  
 दलेल बुलायउ सालम नंद, मिल्यो नृप कूरम प्रीति अमंद ॥  
 वरव्वर गदिय पै बइठारि, कहयो तुम बुंदिय भूप हैकारि ॥३८॥  
 अबैं तुमकों दुहिता हम अप्पि, थिरां निज भुग्गन भेजहि थप्पि ।  
 बिराजहु बुंदिय गदिय जाय, सबै हम रैन समेत सहाय ॥३९॥  
 रहयो अभिसेक सुतो लहि कौल, सबै सधिहै पुनि सत्रुनसाल ।  
 यहै कहि सालमसिंह बुलाय, प्रबोधितैं बुंदिय दिन्न पठाय ॥४०॥  
 कहयो बुधसिंहहिं आन न देहु, सबै तस राज्य रजु करिलेहु ॥  
 सज्यो तब सालम बुंदिय सीस, हराम तजी नय धर्म हदीसैं ४१  
 (दोहा)

१ बुधसिंह से कहा २ कल्याण ॥ ३३ ॥ ३ लिखावट के साथ ४ नहीं  
 ५ जयसिंह को हठाका ॥ ३४ ॥ ६ चला ७ मारवाड़ से ८ गुजरात की भूमि  
 लेने का ॥ ३५ ॥ ९ बुधसिंह १० अज्ञान [शूल] पर सवार होकर ?? ज-  
 जसिंह ने कहलाया १२ लिखावट की रीति पूर्वक ॥ ३६ ॥ १३ सालमसिंह के  
 पुत्र १४ दलेलसिंह को मोद लेकर पुत्र मान कर रहो ॥ ३७ ॥ १५ बहुत प्रीति  
 से १६ ललकार करके कहा ॥ ३८ ॥ १७ अपनी [बुन्दी की] भूमि भोगने को  
 १८ उदयपुर के राणा सहित ॥ ३९ ॥ १९ समय पाकर २० समझाकर ॥४०॥  
 २१ उस हरामी ने नीति और धर्म की २२ सीमा [मर्यादा] छोड़ दी ॥ ४१ ॥

यह सुनि कानीखोहतैं, बुद्ध नरेसहिँ छोरि ॥

मुरि मुरि सालममैँ मिले, बहु भट सचिव बहोरि ॥ ४२ ॥

पद्धतिका ॥

इक बनिक नाम बानाँश्अधर्म, किय मुख्य सचिव जोरत कुकर्म  
यह जोधराज \*जामिज अनीति, पलटयो सठ सालमपैँ सप्रीति ४३  
सुखरामरनाम कायत्थ स्वान, भरि लोभ चोधरी उदयभान ३ ॥

नागर द्विज इक जगदीसधनाम, हड्डा पुनि भिंतुवपहुव हराम ४४  
भट अनर्यं पुंज हड्डा भवानद, थित नैर दुधारी जारा थान ॥

पुनि धाइभ्रात सुभराम पाप, मुरि कियउ दुष्ट सालम मिलाप ४५  
अरु सठ अलोदपुर पति अमान, मातुल सु महारामाँभिधान ७ ॥

इत्यादि सचिव भट सठ अनेक, टरि टरि सालम बिच गय सटेक ४६  
इत किय प्रपंच कछवाह राय, दिल्ली सु अरज पठई लिखाय ॥

बुंदीस बुद्ध आलस बहंत, चित अब न साह सेवन चहंत ॥४७॥

नहिँ पुत्र आहि इनके निकेत, तंसमात भ्रातर्जहिँ राज्य देत ॥

मुहुकम्म बंस सालम अठेल, बर कुमर तास मध्यम दलेल ॥४८॥

अति गुन प्रपंच रन पटु उदार, विक्रांतं सुभग बर मति बिचार ॥

बुंदीस राज्य अब देत ताहि, अरु मरुप रान हम मतिहु आहि ४९  
तसमांत पटा मुद्रितं कराय, मम निकट देहु हजरत पठाय ॥

सुनि साह मुहुम्मद अरज एह, लिखवाय पटा पठये सनेह ॥५०॥

बुंदिय दलेलसिंहहिँ समप्पि, बुधसिंह पट्ट इहिँ देहु थप्पि ॥

तुम जाहु कुँम्म मालव सु देस, आवत गिनीमँ रोकहु असेस ५१  
पठये हम रूपपय त्रि ससि १३००००० लक्ष, इन वल अनीकँ विरच-

\* भानजा ॥४३॥ ४४ ॥ १ अनीति का समूह ॥ ४५ ॥ २ नाम ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ३  
है ४ घर में ५ इसकारण से ६ भतीजे को ॥ ४८ ॥ ७ वीर = मेरी सलाह भी  
है ॥ ४९ ॥ ९ इसकारण से १० छाप कराकर ॥ ५० ॥ ११ हे जयसिंह १२ सप्त  
शतकों को ॥ ५१ ॥ १३ सेना



हु अपकख ॥

उज्जैन वार आवन न देहु, लागि पिडि समस्तन मारि लेहु ॥५२॥  
कूरम नरेस तव भुज भरोस, हैं हम निचिंत अति मुदित होस ॥  
इम लिखि पठाय फरमान साह, कछवाह बांचि मंडिय उछाह ॥५३॥

॥ षट्पात् ॥

बांचि साह फरमान हरखि जयसिंह महीपति ॥  
रूपय तेरह १३लकख पाय मंडिग दैल दुम्मति ॥  
मनतैं मिलि दक्षिखनिन अकिख उप्पर साहायस ॥  
क्रिय मालव पर कुंच बुत्थि आमिखै जिम बायस ॥  
संगहि दलेल सालम सुवन लै मंडिग दक्षिखन चलन ॥  
बुंदीस इत सु बिगरघो विविध मन्नि न उग्गन अत्थमन ॥५४॥  
क्रिय बुंदीस विचार जान मालव सालर्क जिय ॥  
बिजयसिंह निज अनुज कुम्म कारागृह रुक्किय ॥  
जाहि कहि बरजोर थिरहि जैपुर नृप थप्पहि ॥  
करि फोजन एकत्त योहि दारिद अब अप्पहि ॥  
यह क्रिय प्रपंच बुधसिंह इत सो सब नृप जयसिंह सुनि ॥  
वह बिजयसिंह सोदर अनुज पठयो हनि करि अनय पुनि ५५  
धरमधौर जयसिंह करम अनुचित यह किन्नो ॥  
बिजयसिंह हनि अनुज भेजि जामिपे डिग दिन्नो ॥

१ मरहटों का पक्ष नहीं करनेवाला ॥५२॥५३॥ २ सेना ३ दुर्मति (बादशाह से रुपये लेकर उसीके अबु मरहटों से मिल जाने के कारण वह विशेषण दिया है) ४ बादशाह की आज्ञा ५ मांस के टुकड़े पर ६ काकपत्ती की भांति ॥ ५४ ॥  
७ बुधसिंह ने ८ अपने साल (जयसिंह) के मालके में जाने के विचार से ९ जयसिंह ने अपने छोटे भाई बिजयसिंह को १० कैद कर दिया था ११ जयसिंह को १२ सगे छोटे भाई का १३ अनीति करके सारकर बुधसिंह के पास भेज दिया ॥ ५५ ॥ १४ धर्म को धारण करनेवाले १५ बुधसिंह के पास

कहि पठई पुनि कुम्भ जाँमि भात रू तव सालक ॥

आयउ यह मम ईसँ प्रथित डुंढाहर पालक ॥

इहिँ विधि कहाय वह निज अनुज कँठक बुद्ध डिग दगध किय ॥  
पुनि लिखि पठाय बुँदिय पुरहि प्रति सालम यह मंत्र प्रिय ॥५६॥

(दोहा)

हम जावत मालव पहुसि, मिलि रुक्मन मरहठ ॥

बुँदिय धर तुम जतन बल, करि रक्खहु नहिँ कँठ ॥५७॥

साह सुहुम्मद तुमहि सब, बुँदिय धर दिय बीर ॥

सठ बुद्धहिँ देहु न धसन, हड्डन पति हमगीर ॥ ५८ ॥

सालम प्रति यह लिखि सबल, लौ निज संग दलेल ॥५९॥

मालव उप्पर उप्परयो, मरहठन हिय मेल ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप-  
तिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहपुत्रोम्मेदसिंहजयसिंहयाचन १ बुधसिंह-  
पुत्रदाननिषेधबुधसिंहदत्तकीकृतकरवरपतिसालमसिंहमध्यात्मजद-  
लेलसिंहार्थजयसिंहबुन्दीसमर्पणा २ प्रदत्तानल्पवित्तमरुधराधीशा-  
भयसिंहयवनेन्द्रसुहुम्मदशाहाहमदावादोपरिप्रस्थापन ३ प्रेषितप्रा-

१ जयसिंह ने २ बहिन [कुछवाही] का भाई और तुम्हारा साला ३ मेरा पति  
[जिसको तुम मेरा स्वामी बनाना चाहते थे वही] ४ प्रसिद्ध डूँडाड़ देश की  
पालना करनेवाला ५ बुधसिंह की सेनाके पास जाया ६ यह प्यारा मंत्र  
॥ ५३ ॥ ७ कष्ट नहीं है अर्थात् बादशाह की आज्ञा मंगवा देने के कारण अब  
बूंदी की भूमि का यत्न करना कुछ कठिन नहीं है ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ८ सेना सहित  
॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणे के सप्तम राशि में बूंदी के भूपति-  
बुधसिंह के चरित्र में बुधसिंह के पुत्र उम्मेदसिंह के जन्म होमे पर उसको  
जयसिंह का मांगना १ पुत्र के देने से बुधसिंह के नाहीं करने पर करवर के  
पति सालमसिंह के मध्यम पुत्र दलेलसिंह को बुधसिंह की माँद रखकर रा-  
जा जयसिंह का उसको बूंदी देना २ मारवाड़ के राजा अभयसिंह को बह-  
त बन देकर बादशाह सुहुम्मदशाह का अहमदाबाद भेजना राजा ३ जयसि-

र्थनापत्रजयसिंहदलेलसिंहार्थबुन्द्याधिकाराज्ञापत्रलेखन ४ मरहट्ट-  
वारणार्थोज्जयिनीप्रस्थातृजयसिंहस्य स्वानुजविजयसिंहमारणां  
लिंशो मयूखः ॥ ३० ॥

आदितोऽष्टषष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६८ ॥

दोहा ॥

सक खट बसु सत्रह १७८६ समय, उज्जं मास अवदांत ॥  
कूरम मालव कुंच किय, मनसिज तिथि १३ उमहात ॥ १ ॥  
सुता भनाय अधीसकी, बुंदिय पति लघु वाम ॥  
संगानैर समीप सो, ही असती रु हराम ॥ २ ॥  
सस्सू यह जयसिंह की, सुज्जकुमारि प्रसूति ॥  
पलटाई कूरम नृपति, अब नवीन रचि ऊंति ॥ ३ ॥

पञ्चकटिका ॥

रठोरि निकट जयसिंह राय, पहु दिय दलेलसिंहहिं पठाय ॥  
कहि यह सु पुंणय तुमरो कुमार, इहिं गिनहु राज्य थंभन उदारा ॥ १ ॥  
सुनि यह दलेल सन अति कंसूर, कहि पुत्र मिली रठोरि कूर ॥  
इम कूरम संगानैर आय, सस्सू पलटाई छल सहाय ॥ ५ ॥

ह का बादशाह को अरजी देकर दलेलसिंह के नाम पर बूंदी का फरमान मं-  
गाना ४ मरहट्टों को रोकने के अर्थ बलीण जाते हुए राजा जयसिंह का अ-  
पने छोटे भाई कैदी विजयसिंह को मारने का तीसवां मयूख समाप्त हुआ  
और आदि से दोसौ अड़सठ २१८ मयूख हुए ॥

१ कार्तिक के २ शुक्ल पक्ष में १ कामदेव की तिथि [ज्योतिषियों में त्रयोदशी  
तिथि का स्वामी कामदेव है] ॥ १ ॥ ४ बुधसिंह की छोटी स्त्री ५ कुलटा [य-  
हां अत्यन्त कुलटा होने के कारण असती, और हराम एकार्थ वाची दो श-  
ब्दों का प्रयोग किया है] अथवा पति से विरुद्ध होने के कारण हराम पद दि-  
या है तो यह अर्थ है कि वह कुलटा और स्वामी हरामी [अधर्मिणी] सांगा-  
नेर के समीप थी ॥ २ ॥ ६ सूर्यकुमारी जननेवाली ७ क्रीड़ा [नया खेल रच-  
कर] ॥ ३ ॥ ८ राजा दलेलसिंह को भेजा ९ यह तुम्हारा धर्म पुत्र है ॥ ४ ॥  
१० बड़े अपराध सहित था तो भी ११ साम्राज्य को ॥ ५ ॥

इम दुव २दलेल कूरम \*अमान, मिलि नैर निवाई दिय ँमिलान ॥  
 बुंदिय लिखि पठई पुनि बिचारि, सालम तुम मंडहु घर संहारि ६  
 हम मिलन प्रथम आवहु हजूर, पुनि भुग्गहु बुंदिय ँकटक पूर ॥  
 सुनि यह सठ सालम अनय सोम, कूरम ढिग आयउ मिलन काम ७  
 मिलि उभयरगाम झुड़वा मिलान, दिय कुम्म सालमहिँ सिक्खदान  
 काहि जावहु बुंदिय तुम निसंक, अब तव कुमार सिर पैट्ट अंक ८  
 इहिँ लौ हम मालव जात आज, सूवा अवंति रक्खन समाज ॥  
 सालम तुम जावहु गृह सधीग, बुद्धहि नन प्रविसन देहु बीर ॥ ९ ॥  
 यह अक्खि सालमहिँ सिक्ख अप्पि, मालव चलि कूरम कुंच मप्पि  
 दल भरन भुम्मि फुट्टत दारि, चंचल मतंग हल्लिय चिकारि ॥ १० ॥  
 बहि सजव तरारन लेत बाजि, उद्धत भट मंडन कपट आजि ॥  
 रचि इम दरकुंचन कूर्मराज, कोटा धर संकामि प्रथित काज ॥ ११ ॥  
 नदि कुसक तीर परि दल अनंत, दिस दिसन फुट्टि गय यह उदंत  
 कोटा नृप दुज्जनसल्ल कूर, हित सचिव दोय २पठये हजूर ॥ १२ ॥  
 नागर द्विज बेणीराम नाम, रन चतुर व्यास दोलत्तराम ॥  
 इम दुव पठाय कूरम अनीकं, कोटस रचिय प्रैनतिय कितीक १३

[ षट्पात् ]

कुसक छोरि पुनि कुंच करिय अगै नृप कूरम ॥  
 सिंधु सरितं निर्वसथ बडोद किय तहँ मुकाम क्रम ॥  
 उज्जइनीके अनुग गोड़ १ उम्मट संभैर गन ३ ॥  
 अरु कबंध ४ कछवाह ६ सुपहु खिच्चिप ७ सुनि सेवन ॥

\*अमाप (अत्यन्त) ँमुकाम ॥ ६ ॥ ँपूर्ण सेना से अनीति का मिलाप करने का  
 ॥ ७ ॥ २ बुन्दी के पाट का लेख ॥ ८ ॥ ३ बुधसिंह को कदापि मत घुसने देना ॥ ९ ॥  
 ४ सेना के भार से ५ चीत्कार शब्द [चीसली] करके ॥ १० ॥ ६ वेग सहित  
 ७ सेना के उद्धत वीर मार्ग में कृत्रिम युद्ध करते जाते थे ८ चला ९ प्रसिद्ध  
 कार्य के लिये ॥ ११ ॥ १० वृत्तान्त ॥ १२ ॥ ११ कछवाहे की सेना में १२ वि-  
 शेष नम्रता ॥ १३ ॥ सिंधु नामक १३ नदी १४ ब्राह्म १५ सेवक १६ चहुवाण

सूबाधिनाथ कुम्हड़िं सलुकि नृप ये सब आयउ निकट ॥  
सजि सजि मिलाप जयसिंहसन किय लासन सुँशि सिर करैट १४

( दोहा )

निज गढ सोपुर गोड़ नृप, उस्मट पट्टनि ईस ॥  
कोटापति चंडासि कुल, संभरवार बलीस ॥ १५ ॥  
गढँराघव बजंगगढ, ये सिद्धिम चहुवान ॥  
नरउरपति कछवाह नृप, सुत गजसिंह सयान ॥ १६ ॥  
पति ईडर रतलामपति, दुव रहोर दलेस ॥  
इत्यादिक उज्जैनके, आये अनुगं असेस ॥ १७ ॥

( पादाङ्गुलकम् )

सूबाधुंग नृप समय सयाने, मिलि जयसिंह सबहि सनमाने ॥  
अरु कोटस पटालाय आपो, भीम जनकै भव सोक भुलायो ॥ १८ ॥  
जान्यो दई दलेलहिं बुँदिय, होय यहै इनकै स्वीकृत हिय ॥  
इम विचारि कोटा अपनायउ, बहु मुद डेरन जाय बढायउ ॥ १९ ॥  
जयहरि लौ इम सवन बडे जैव, मंडुवपुर प्रविश्यो धर मालव ॥  
प्रकट दिखात साह किं करपन, मिलयो कितव अंतरँ मरहठन २०  
कछुदिन संभर वयाज तँहँ कहे, बँहुल पिक्खि दक्खिन दल बहे ॥  
लुँबि कटक अप्पन लुटवायो, मरहठन कँहँ विजय मिलायो २१  
कछु धन बसन्नि निवेदन किन्ने, लोभ लुन्न तिनके बचँ लिन्ने ॥

१ नृवा का पति [ग्वापी] २ ममीर ३ जैमे अकृश का ५ अपने मस्तक पर हाथी सहन करे नैमे ॥ १४ ॥ ६ चहुवान ॥ १५ ॥ ७ राघवगढ ॥ १६ ॥ ८ जेना के ईश ९ भेवत ॥ १७ ॥ १० नृवा के साथ चलनेवाले ११ पिना भीमसिंह के शरने का शोक मिटाया ॥ १८ ॥ १९ कोटावालों को स्वीकार होजावे इसकारण १३ कोटि का अपना किया ॥ १९ ॥ १४ जयसिंह १५ जीवता से १६ प्रवेश १७ छुटी १८ भीमर के मग ने आदलों ने मिला हुआ था ॥ २० ॥ १९ युद्ध के भिन्न २० चहुन देणका २१ उल्ल [जयसिंह] लोभी ने अथवा लोभक-रते अपनी सेना को लुटवाई ॥ २१ ॥ २२ पत्त्र २३ अथवा

वहे कूरम इम साह हरामी, किय मरहट्ट मेल भुव \* कामी ॥२२॥  
( दोहा )

तदनंतर करि सिक्खगो, कोटापुर कोटेस ॥

अवर ग्हे हाजरि अखिल, नरउर आदि नरेस ॥ २३ ॥

इतिश्रां वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमशौ बुन्दी-  
पतिबुधसिंहचरिते जयसिंहकांटागमनपूर्वकोजयनीगमन १ मण्डू-  
पुरमरहट्टमिश्रितकपटिजयसिंहस्वानीकलुगहनमेकात्रिंशो मयू-  
खः ॥३१॥

आदित एकोनसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २६९ ॥

( षट्पात् )

इत बुंदिय अवनिस चाहि बुद्धह नृष चलिय ॥

कानीखोह भुकाभ छोरि बुंदिय दिस छलिय ॥

रस बसु सन्नह १७८६सरत पाय अगहन सित पंचगि ॥

किय स्वदेसपर कुंच भुलि ज्यो सृगथल जल भ्रमि ॥

चैट्टसू निवाई मग्ग चलि भगवतगढ भोगे रहिय ॥

इत सुनि उदंत सालम यह गु बुंदियतजिसभुह बहिया ॥

उग्र अधिक कछवाह समय सरधि रु सर साहस ॥

दठ गुंन साह निदेस चाप चतुंग रंगरस ॥

\* भूमि की कामनावाला ॥ २२ ॥ † जिसपीछे ॥ २३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के पतिबुधसिंह के चरित्र में राजा जयसिंह का कोटे होकर उज्जयिनी जाना ? मण्डू-  
पुर में बहनों से मिलकर छली राजा जयसिंह का अपनी सेना को लुटवाने  
का इकतीसवां १? मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ उनहत्तर २६९  
मयूख हुए ॥

१ बुन्दी का राजा २ बुधसिंह ३ उक्तता [यहां] ४ नस्वत् ५ सृगृष्णा के जल  
से भ्रम कर लुगन्धन में जावे जैसे ६ चाटपू ७ समाचार ८ सालकसिद्ध ॥१॥  
जयसिंह तो उग्र ९ जिकारी और समय है जो ८ नाथा है जिसमें दठ है जो  
ही वाण है वादशाह का आज्ञा ही दठ प्रत्येक है ? बुद्ध के रसवाली सेना है

वन हड्डोतिय विकट स्वान सालम दलेल सह ॥

लिखित बागुरा लागि गाढ मत कँउल फंद ग्रह ॥

मुद्वपन अलस लहि मोह मन बुद्ध सु मंत्र विवेक विन ॥

उनमत्त एँन संभर अधिप इच्छत जल बुंदिय इरिन ॥ २ ॥

[ दोहा ]

सुनि इत आवत संभरहि, बनि सालम बुंदीस ॥

लौ दल सम्मुह उल्लटयो, स्वामि हराम सँरीस ॥ ३ ॥

लहि सीमा बुंदिय मुलक, अड्डो ठड्डो आय ॥

यह सुनि सठ बुंदिय अधिर्प, बाम मुखो बिहसाय ॥ ४ ॥

जैतसिंह जाजव जयी, दिल्लिय रन अँसु दिन्न ॥

तास देवसिंहह तनय, भकति स्वामि रस भिन्न ॥

नगर पलौधी धाम निज, वैरिसल्ल भव बंस ॥

कुसथल पंचोलास पुनि, ये दुव पुर उँतंस ॥ ६ ॥

साह समपे संभरहि, चोवनगढ गहि बाँह ॥

कुसथल पंचोलास ए, उभयइजाफाँ माँहि ॥ ७ ॥

तब संभर दिय जैत हित, कुसथल पंचोलास ॥

सद्यद सँन दिल्लिय समर, विरच्यो जिहिँ दिवँ बास ॥ ८ ॥

तास देवसिंहह तनय, स्वामिधरम रत सूर ॥

ताके पुर कुसथल तबहि, आयउ बुद्ध जरूर ॥ ९ ॥

सो ही धनुष है हाडोती देश रूपी विकट वन और सालमसिंह सहित दलेल-सिंह ही श्वान [कुत्ते] हैं. बुधसिंह ने जयसिंह को लिखावट कर दी वह लिखावट ही १ वागर (फंदा) है जिसमें २ बाममार्ग की दृढता ही फंदों की गाँठें हैं मन पर मूर्खपन और आलस्य रूपी मोह लेकर ३ बिना सलाह और बिना विचार का वह चहुवाण राजा बुधसिंह रूपी उन्मत्त ४ मृग बुंदी रूपी ५ ऊपर भूमि [मृगतृष्णा] का जल चाहता है ॥ २ ॥ ६ बुधसिंह को ७ क्रोध सहित ॥ २ ॥ ८ बुधसिंह ॥ ४ ॥ जाजव के युद्ध में ९ जय पानेवाला १० मारागया ११ भीगा हुआ ॥ ९ ॥ १२ नगरों के मुकुट ॥ ६ ॥ १३ सिंघाय (तरफा) में दिये ॥ ७ ॥ १४ से १५ स्वर्ग को गया ॥ ८ ॥ ९ ॥

विष्णुसिंह तनया बहुरि, अनुपम तनया आय ॥  
 ये संगहि रानी उभय२, पति प्रमत्त गति पाय ॥ १० ॥  
 पुरवाहिर पृतना परिगै, घन जिम डेरन घेर ॥  
 देवसिंह महिमानि दिय, बुद्धिगै गोठि द्वि२घेर ॥ ११ ॥  
 परि डेरन लग पांमरे, धाम स्वीय पधराय ॥  
 निज सरबस्व निवेदयो, देवसिंह हित दाय ॥ १२ ॥  
 यह सुनि पुर बलवन अधिप, अभयसिंह अति धीर ॥  
 निज दल सजि आयउ निडर, बुंदियपति ढिग वीर ॥ १३ ॥  
 अभयदेव ये भट उभय२, वैरिसल्ल भव वंस ॥  
 सम्मलि हुव बुंदीसकै, देह अरपि सजि दंस ॥ १४ ॥  
 यह उदंत सुनि इंद्रगढ, सुभट इंद्रसल्लोत ॥  
 देवसिंह छित्तर सुवन, आयउ दल उद्योत ॥ १५ ॥  
 कछु किसोर बय बसि कछुक, कूरम भय लहि कूर ॥  
 देव पृथक डेरा दये, दल संभरं तजि दूर ॥ १६ ॥  
 इत सठ सालम पिडि परि, कृतघन चिंति कुकाम ॥  
 पत्तनं पंचोलास ढिग, किन्ने लरन सुकाम ॥ १७ ॥  
 कुल बंधव मुहुकैम्मके, मिलि सब सालम माँहि ॥  
 पट्टोलीपुर पति प्रथितं, मिलयो जवान सु नाँहि ॥ १८ ॥  
 तोप इक १ जंबूर सत १००, द्वैसत १०० सजि बंदूक ॥  
 मिलयो आनि बुधसिंहमै, अलुचर धरम अचूक ॥ १९ ॥  
 त्योंही इक १ नगराज तँहँ, मुहुकम वंस वतंस ॥  
 सालममै न मिलयो सुभट, पट्टु बिख्यात प्रसंस ॥ २० ॥

१विष्णुसिंह की पुत्रीरवेधम के रावत अनोपसिंह का पुत्री ॥ १० ॥ २पडाव से  
 (सेना का डेरा) हुआ ॥ ११ ॥ ४ पाँवडे (पगसंडे) ५ अपन स्थान पर ६स्नेह की  
 रीति से ॥ १२ ॥ १३ ॥ ७ कवच लभकर ॥ १४ ॥ ८ वृत्तान्त ॥ १५ ॥ ९ देव-  
 सिंह ने १० बुधसिंह की सेना को दूर छोडकर ॥ १६ ॥ ११पुर ॥ १७ ॥ १८मो-  
 कमासिंह के कुल के दाडे १९ विदित ॥ १८ ॥ १९ ॥ १४ मुकुट ॥ २० ॥



## [पट्टपात ]

सुनि ईत रन जयसिंह भीर सालम दल भेजिय ॥  
 तीन सहस्र ३००० तुक्खार पंचउमराव सुख्य प्रिय ॥  
 ईसरदापुर ईस नाम कोजुवशिसंक नर ॥  
 सारसोपपुर स्वामि बिदित फतमल्लरबीरबर ॥  
 साँवल ३सुहाड़पुर पति सबल प्रबल अचल ४नानेड़ि पति ॥  
 बहादुरसिंह ५कूरम बहुरि बुद्धानीपुर पति बिमति ॥ २१ ॥

## [ दोहा ]

ब्रजभुव बासी सुभट वलि, नरुव बंस कछवाह ॥  
 नामधेय सिरदारशनिज, सो दिय संग सिपाह ॥ २२ ॥  
 पृथ्वीसिंह २रु कनक ३पुनि, उभय नरुव अवतंस ॥  
 घासीराम ४रसोरपति, वलि भट कूरम वंस ॥ २३ ॥  
 सेरसिंह शिखिय सबल, पुनि जहव परतापर ॥  
 हरिशोवर अल्ला हुकम १, मारन करन २मिलाप ॥ २४ ॥  
 उदयसिंह ३पुनि रूप २अरु, जोध ३सुरत ४भट जत्य ॥  
 सालम हित कूरम सजे, सोलंखी चउ ४सत्य ॥ २५ ॥  
 आमैर पं पठये इते, लारि बुंदिय भुव लैन ॥  
 विप्रह बहुरि प्रवास वसि, सब रद्विगय ढिग सैन ॥ २६ ॥  
 नरउरपति गजसिंह सुवै, जयसिंहहिँ तँहँ जंपि ॥  
 समर प्रपंची मम सचिव, चाहत जय अरि चंपि ॥ २७ ॥  
 भेजहु तिहिँ इनसंग भल, कूरम तब सुसिकाय ॥  
 संगहि दिय नरउर सचिव, नाम सु खंडेगाय ॥ २८ ॥

१ ब्रज युद्ध लुनकर २ घोड़े (घोड़ों के सवार) ३ विजय बुद्धिवाला ॥ २१ ॥ ४  
 ब्रज की भूमि में रहनेवाले उमराव ५ फिर ६ नरु के वंश का [नरुका] कछ-  
 वाहा ७ नाम ॥ २२ ॥ नरुकों के २गुकुट ३ पुनि ॥ २३ ॥ १० बुधसिंह को मारने  
 और ११ सालमसिंह से मिलान करने का ॥ २४ ॥ २५ ॥ १२ आमैर के पति ने  
 १३ मरहों से युद्ध और १४ विंश में चलने के कारण ॥ २६ ॥ १५ सुत १६ दवाकर

(षट्पात्)

सुभट मानसिंहोत कलह इम पंचमुख्य क्रिय ॥  
 अवरहु सुभट अनेक सेन सम्मलि हुंत सज्जिय ॥  
 करि यह दल दगकुंच मुलक मालव तजि मंडुव ॥  
 जुरि आयउ जंघाल भीर सालम कुसथल भुव ॥  
 करि दल मिलान सालम कटक हड्डन पति दिग मिलन हित ॥  
 इन पंचभटन आय रु काहिय बुद्ध श्रवन धारहु विदित २९

( दोहा )

अभयसिंह बलवन अधिप, पट्टनि भर्जिग एह ॥  
 भीम हितु अति मन्नि भय, दुल्लभ मन्नत देह ॥ ३० ॥  
 जाके बल जयसिंहतै, अव रन रचहु न एहु ॥  
 दिनप्रति रूपय दौयसत २००, रहि वृंदावन लेहु ॥ ३१ ॥  
 नहिं बुल्लयो बुंदिय नृपति, क्रम सब सहित कुवैन ॥  
 राजाउत पंचन सरिस, निठुर दिखाये नैन ॥ ३२ ॥

( षट्पात् )

कूरमपति भट कुबच प्रकट सुनि सुनि बलवन पति ॥  
 अभयसिंह अति बीर भयउ धकि प्रलय रुद्र भति ॥  
 करखि मुच्छ डसि अधर निरखि पंचनउफनायो ॥  
 पन्नगं पय चंप्यो कि मत्त सृगराज खिजायो ॥  
 बुल्लयो विदित भुज ठोकि बल गल्ल बजत गोदर डरै ॥  
 बुधसिंह आन कूरम बल्लहिं केहरि हम गंडुरिकरै ॥ ३३ ॥

( दोहा )

॥ २७ ॥ २८ ॥ ? य मानसिंहोत राजावतों के नाम से प्रसिद्ध हैं २ शीघ्र ३  
 शीघ्र चलनेवाले ४ सालमसिंह की सेना में ५ हे बुधसिंह सुनों ॥ २९ ॥ ६  
 पाटन के युद्ध में भगा था ७ कोटा के राजा भीमसिंह से ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ८  
 रीस (कोध) सहित ॥ ३२ ॥ ९ भांति १० मर्प को पैर से दबाया ११ बुधसिंह के  
 सौगन है कि १२ कछवाहे की सेना को हम सिंह होकर १३ गाडर (भेड़) के स-

ज्ञातन अग्नें हस भजत, गृहे रन अनुचित गाय ॥  
 अद्वयते रन आहुरत, पञ्चये हहन पाय ॥ ३४ ॥  
 हस हकापि वलवन अधिप, सुरि उद्विग गहि मुच्छ ॥  
 फटाटोप मंडिग मनहुं, पन्नेग दच्चत पुच्छ ॥ ३५ ॥  
 तव कूरम कुभटन तैसकि, मजिय जाय निज सेन ॥  
 जुत सालम सब इक जुरि, लगि दल वंधिष लेन ॥ ३६ ॥  
 देवसिंह छिस्वर सुवन, इंदगहप सुनि एह ॥  
 भोरु पन्नि जगसिंह भय, गयो सपरिंकर येह ॥ ३७ ॥  
 हृदयनगयन हरिय कुल, ए वंधुव उमगाव ॥  
 करन शीर वुंशीगर्का, हुत आये रन दाव ॥ ३८ ॥  
 हह गेव सामंत हर, साधव हर भट नोर ॥  
 कुल वैद्यन अरु नाथ कुल, ये भालुक नृप ओर ॥ ३९ ॥

शुद्धप्राकृतभाषा ॥

(आख्या)

विद्वद्विशोद्विपगी अनाग्रं वुंशीसपद्वं पिरुच ॥  
 सालमउत्तपथावो जिष्टो गिलेष्टो वुंशेसा भूवडसा ॥ ४० ॥  
 जायो देशीया प्राकृती मिथिनभाषा ॥

मान ३०३ ॥ ३३ ॥ १ घर का गुज अनुचित फलकर २ हाहाओं के भेर पर्याप्त  
 से जानता है ॥ ३४ ॥ ४ मानों सर्प ने एक दयाते ही ३ फल का घाटोप (हल)  
 क्या है ॥ ३५ ॥ ५ भोर करके ६ सेना की पंक्ति (परेड) घांभी ॥ ३६ ॥ ७ घर-  
 मानों का एक घर गया ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ८ बाटखोत खाला के संसोक्षकी? सुभान-  
 का ही ओर ॥ ३९ ॥

संस्कृत अनुवाद

विद्वद्विशोद्विपगी अनाग्रं वुंशीसपद्वं पिरुच ॥ सालमपुत्रभाषा: वंधेष्टो  
 मिथिनं सुवनं भूवडसा ॥ ४० ॥

एतेषु श्लोकानां के अर्थों - १) जानसंवाला हॉरि भाई को सुन्दीश के पाठ का  
 यति केवल कर का लखसिद्ध का क्या पुत्र प्रभापसिद्ध राजा सुधसिद्ध से मित्रा (वध)

(दोहा)

राजसिंह अन्वये रतन, बंधव निज बरवीर ॥

दोलतसिंहहु सज्जि दल, भट आयउ नृप भीर ॥ ४१ ॥

हाजरि भट प्रथमहि हुने, महारिंह कुल मोर ॥

असित पक्खके इंदु जिम, लग्यो घटन दल ओर ॥ ४२ ॥

दस हजार पृतना बदलि, सब हुव सालम संग ॥

दस हजार १०००० नृप निकट दल, रहिय रचावन रंगों ॥ ४३ ॥

उभय पक्ख अरि मित्र तजि, समय जोर दरसाव ॥

रहिय इंद्रगढ आदि बहु, उदासीन उमराव ॥ ४४ ॥

सालम ढिग तेरह सहस्र १३०००, नृप ढिग दस निरधार ॥

इत कृप्यो बलवन अधिप, भुज धरि बुंदिय भार ॥ ४५ ॥

बुद्ध नृपति बरजत रह्यो, दोउन संपथ दिवाय ॥

दडे भज्जन नाँ सुनै, लग्यो अंदर लाय ॥ ४६ ॥

अभयसिंह अरु देव इत, अरु कछु संभरं सैन ॥

जिहिं बिच जे भट सज्ज क्रिय, बरनत तिन्ह कवि बैन ॥ ४७ ॥

महाराम मातुल कुलज, मुरयो जु सालम मेल ॥

वाको सुत संग्राम १ इत, सोहि सज्यो गहि सेल ॥ ४८ ॥

प्रेमसिंह २ सज्यो प्रथिते, नाथाउत रन नूर ॥

बखतसिंह ३ जगभानु ४ बैलि, सजे हड अति सूर ॥ ४९ ॥

साँवलदास ५ सजोर सजि, गोर ६ वंस उजियार ॥

जोरावर ६ कछुवाह जुगि, परसुराम ७ परिहार ॥ ५० ॥

बरजत नृप बुंदीसकै, सहठ दिवावत साँह ॥

१ वंश ॥ ४१ ॥ २ कृष्ण पक्ष के चंद्रमा के समान ॥ ४२ ॥ ३ सेना ४ बुधसिंह के पास ५ युद्ध करने को ॥ ४३ ॥ ६ दोनों पक्षवालों से शत्रुता और मित्रता छोड़कर ७ तटस्थ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ८ सौजन्य दिलाकर ॥ ४६ ॥ ९ बहुवाण्य सेना ॥ ४७ ॥ १० बुधसिंह के मामा के कुल में उत्पन्न ॥ ४८ ॥ ११ प्रसिद्ध १२ पुनि ॥ ४९ ॥ १३ गौड़ वंश का प्रकाशक ॥ ५० ॥ ५१ ॥

अभयदेव संगहि इते, भटन तनंकिय भौहँ ॥ ५१ ॥

देवसिंह अभमल्ल दुव, दुल्लह ललित उदार ॥

अच्छरि दुल्लहनि अहरिय, जन्प इते जुद्धार ॥ ५२ ॥

अवर भटन पिक्खयो सभय, सालम अद्युत अनीक ॥

छोरहु नृपदि न इक्क छिन, को जानैं वं कित्तीक ॥ ५३ ॥

जो भूपहु सिर घात जड़, कूरम घल्लहिँ कूर ॥

तो सब स्वामि समीपही, सज्जुन गंजहिँ सूर ॥ ५४ ॥

स्वामिदये न लरन संपथ, बेलि नृप तजन न बेस ॥

नय विचारि इम इन निकट, सकल रहे सुभटेस ॥ ५५ ॥

वीर जिते पहिलैं बदिँय, तिन नैन मन्निप भौहँ ॥

अथयसिंह संगहि उठिय, भयद फुरावत भौहँ ॥ ५६ ॥

कहि कुबैन उठि कूरमन, निजदल पिल्लिय जाय ॥

यह सही न बलवन अधिप, लगिय सोरविच लाय ॥ ५७ ॥

अभयसिंह अरु देव इत, कुप्पि चलिय जिम काल ॥

सिर धैरसत अँजलोकसौं, पय परसत पायालैं ॥ ५८ ॥

सालम अरु कूरम सुभट, जुरि इत प्रबल जरूर ॥

बुँदिय दल सिर बग्गलैं, सकल चढे बढिँ सूर ॥ ५९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दीप-  
तिबुधसिंहचरित्रे ज्ञातदक्षिणगतजयसिंहत्यक्तकाणीखोहग्रामबुध-  
सिंहबुन्दीदिग्गमन १ आत्तसैन्यसालसिंहबुधसिंहसंमुखसरणा २

॥५२॥?जानैनी२ अवा॥२॥३मारंगे॥०४॥४सौगन२पुनि३उत्तम नहीं है॥५६॥७कहे  
८सौगन नहीं मानेभय देनेवाले॥७६॥१०अपनी सेना को भेजा ॥५७॥ मस्तक  
१२ब्रह्मलोक से?११घिनता है और पैर१३घाताल का स्पर्श करते हैं ॥५८॥५९॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के ऋषिपति  
बुधसिंह के चरित्र म राजा जयसिंह को दक्षिण में गया हुआ जान कर राव-  
राजा बुधसिंह का काणीखोह नामक ग्राम को छोड़ कर बुन्दी की ओर आ-  
ना १ सालमसिंह का बुन्दी से सेना लेकर बुधसिंह के सम्मुख जाना २

बुधसिंह और सालमसिंहके युद्धकाप्रारंभ]सप्तमराशि-द्वात्रिंशमयूख ३१४७)

सालमसिंहसहायजयसिंहसैन्यसहितजयपुरसामन्तपञ्चककुसथ-  
लारूपनगरनिकटसालमसिंहसंमिश्रणा ३ प्रत्यहद्विशतमुदासद्वयपूर्-  
वकबुधसिंहवृन्दावनवासार्थजयपुरसामन्तभखान ४ जयसिंहभी-  
तित्यक्तबुधसिंहकतिपयबुन्दीसैन्यसालमसिंहमिलनकतिपयसाम-  
न्तोदासीनभावतटस्थतासादन ५ सालमसिंहसैन्यभीतबुधसिंहस्य  
शुद्धाकरणाथम्बसामन्तशपथदापन ६ देवसिंहाभयसिंहादिकतिप-  
यसामन्तशपथभंगपूर्वकसमरसज्जभवनवर्णनंद्वात्रिंशोमयूखः ॥३२॥

आदितः सप्तयुत्तद्विशततमः ॥ २७० ॥

[ दोहा ]

सक हय बसु सत्रह १७८७ रामय, माधव दरस ३० मिलाप ॥  
घटिय रुद्र ११ रबिके चढन, उलटि समुद्रन आप ॥ १ ॥

[ दुर्भिला ]

दुव सेन उदगगन खगग समगगन अगग तुरगगन बरग लई ॥  
मचि रंग उतंगन दंग मतंगन सजिज रनंगन जंग जई ॥

सालमसिंह की सहायता पर राजा जयसिंह की भेजी हुई सेना सहित जयपु-  
र के पांच उमरावों का कुसथल नामक नगर के समीप सालमसिंह के सा-  
मिल होना ३ जयपुर के उमरावों का प्रतिदिन दोसौ रुपये लेकर वृन्दावन वा-  
स करने की बुधसिंह से कहलाना ४ जयसिंह के भय से बुन्दी की बहुधा  
सेना का बुधसिंह को छोड़ कर सालमसिंह में मिलना और कितने ही उम-  
रावों का उदासीन भाव से तटस्थ रहना ५ सालमसिंह की सेना से डरे हुए  
बुधसिंह का अपन उमरावों को नहीं लड़ने के सौंगन दिलाना ६ देवसिंह  
और अभयसिंह आदि थोड़े से उमरावों का सौंगन नहीं मान कर युद्ध के  
अर्थ तैयार होने का बत्तीसवां मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ सि-  
त्तर २७० मयूख हुए ॥

१ वैशाख मास की २ अमावास्या के मिलने पर ग्यारह घड़ी दिन चढ़े पर समु-  
द्रों का ३ पानी उलटा ॥ १ ॥ ४ उदग्र [उल्लूकने हैं अग्रभाग जिनके एंसे] ख-  
ल्ल लेकर दोनों सेना के ५ सब लोंको ने घाड़ों की बागें आगे लीं अर्थात् घोड़े  
उठाये उस युद्ध में युद्ध जीतनेवाले सजे हुए जंचे हाथियों का ६ युद्ध हुआ

लागि कंप लजांकन भीरु भजाकन बाक कजाकन हाक बढी ॥  
 जिम मेह ससंबर यों लागि अंबर चंड अडंबर खेहचढी ॥२॥  
 फहरकि दिसान दिसान बडे बहर्गकि निसान उडै बिथरै ॥  
 रसना अहिनापककी निकसै कि परा भल होरियकी प्रसरै ॥  
 गज घंट ठनंकिय भेरि भनंकिय रंग रनंकिय कोच करी ॥  
 पखरान अनंकिय वान सनंकिय चाप तनंकिय ताप परी ॥ ३ ॥  
 धमचक्र रचकन लागि लचकन कोल मचकन तोल कढयो ॥  
 पखरालन भार खुभी खुरतालन ँपाल कपालन साल बढयो ॥  
 डगमगिग सिलोच्चैय शृंग डुले भ्रगमगिग कृपानन अंगिग करी ॥  
 बजिखल्ल तवल्लन हल्ल उभल्लन भुम्मि हमल्लन घुम्मि भरी ॥४॥  
 मचि घोरन दोर दुश्ओर सँमीरन जोर उमीरन घोर जस्यो ॥  
 अभमल्ल उछाहन हड्ड हठी कछवाहन गाहन चाह क्रम्यो ॥  
 सुर्वे जैत इतै भट देव सही करि स्वामि महीहित संग सज्यो ॥

जिस से १ लज्जित होनेवाले और भागनेवाले कायरों को कंप [धुजनी] लग  
 कर २ युद्ध करनेवाले वीरों के वचनों की हाक बढी और ३ जल सहित मेघ  
 के समान भयंकर आडंबर से आकाश में खेह [रंजी] चढी ॥ २ ॥ ४ घडी  
 धजायें और छोटी ध्वजायें फरक फर दिशा दिशा में उड कर फैलीं सोमा-  
 नों ५ क्षेपनाग की जिह्वा निकलती है अथवा होली की झाल फैलती है  
 उम शुक से हाथियों की घंटा ६ नाथत और ७ कन्यों की कड़ियें पर्जी ८  
 घोड़ों की पावरों का भणकार चाणों का भणकार और धनुषों के खिचने से  
 भय हुआ ॥ ३ ॥ उस युद्ध में टकर लेने से भूमि में लचक लग कर भूमि को  
 धारण करनेवाले ९ चाराह के झुकने का तोल कहा १० पाखरों वाले घोड़ों  
 के भार से खुभी खुरतालों से ११ क्षेपनाग के कपाल में साल बढा १२ पर्वत  
 तिन कर उनके शिखर डुलने लगे और १३ तरवारों से चमकी हुई १४ अग्नि  
 गिरी, उम हल्ले के बहाव में जाल के ऊपर १५ तवल्ल (कुठार विशेष) थज  
 कर भूमि हमल्लों से घूमने लगी ॥ ४ ॥ घोड़ों की दौड़ से दानों और का १६  
 पवन चल कर अमीरों [सरदारों] का भयंकर चल जमा उस समय हठवाला  
 हाहा अमरसिंह कछवाहों को मारने की चाह से १७ चला इधर जैतसिंह का  
 १८ पुत्र देवसिंह निरपय ही अपने १९ स्वामी [बुधसिंह] की भूमि के अर्थ स-

दुहुआर कुलाहक तोप दगी लागि भई बलाहक नंद लज्यो ॥५॥

उततै कछवाहन उग्र उछाहन बेग सु बाहन बग लई ॥

बनि बुंदिय बालम जंग सु जालम संगहि सालम दौर दई ॥

परि रिद्धि कृपानन चंड चुहानन गिद्धि उडानन गूद गहँ ॥

गन धीर गुमानन पीर प्रमानन वीर कमानन तीरबहँ ॥ ६ ॥

बढि बुत्थिन बुत्थि छई बसुधां लागि लुत्थिन लुत्थि परै प्रजरै ॥

घटै सेल घमाकन रंग रमाकन हड्ड सु हाकन होस हरै ॥

लाखि खगग उदगगन मगग लगी जुरि अछरि जगग प्रजापतिज्यौं

गलबाहँ करै करि बीर बैरै गमनै गन गैवरकी गतिज्यौं ॥ ७ ॥

छननंकि उडानन बान छये ठननंकि गयंदन घंट घुरे ॥

फननंकि दुँबाहन टोप फटे रननंकि सिपाहन कोचै रुरे ॥

डुलि भैरुव डैरुवतै डहँकी डरि डाकिनि साकिनि चाँकिचली ॥

जिजत हुआ उस समय दोनों ओर १ कोलाहल करनेवाली अथवा खांटा ला-

भ करने (भारने) वाली अथवा कु (पृथ्वी) का लाभ करनेवाली तोपें चलीं जि-

नसे २ भादवा के ३ मेष की ४ गर्जना लज्जित हुई ॥ ५ ॥ उधर से बड़े उत्साह

वाले कछवाहों ने ५ घोड़ों की शीघ्र बागें उठाईं और उनके साथ ही युद्ध में

जुलम करनेवाला सालमसिंह ६ बुन्दी का पति बन कर ७ दौड़ा. भयंकर चु-

हाणों के खड्गों के ८ निरंतर प्रहारों से उडते हुए भीलों ने गूद ग्रहण किया.

धीर लोगों के ९ समूह के घमंड की पीड़ा का प्रमाण करने के लिये वीरों की

कथाओं से तीर बहते हैं ॥ ६ ॥ जिनसे बूथें [मांसके टुकड़े] बढ कर १० भूमि

ढक गई और ११ लोथ (मृतक शरीर) पर लांथ गिर कर जलने लगी १३ यु-

द्ध में क्रीड़ा करनेवाले वीरों के १२ शरीरों पर भालों के घमाके होकर हाडा

लाशियों की हाक उनकी चाहना मिटाते हैं १४ उदग्र तरवारों को देख कर

अप्सरायें १५ जिसप्रकार दक्ष पजापति के यज्ञ में गईं तिसप्रकार इस युद्ध

के मार्ग में लगीं, वे गलबाहीं करके वीरों को बरती हैं और उनका समूह

१६ हाथियों की चाल के समान चलता है ॥ ७ ॥ छनक शब्द करके उडने वाले

वाण क्रागये और ठनक शब्द करके १७ हाथियों के घंटे वजे फनक शब्द करके

१८ वीरों के टोप फटे और रणक शब्द करके १९ सिपाहों के कवच वजे भैरव

के डैरु से २० चमकी हुई डाकिनियें और साकिनियें (देवी की दासी विशेष)

डर कर इधर उधर डुल कर चाँक कर चलीं



नचि नारद \*नञ्चविसारद वहाँ विविंवारद भाँति मिले खुरली ॥८॥  
 कटि खग कलापं रु दंत कटें कटि कुंभं मउत्तिन मेह फुरें ॥  
 तरितां तंजु तेग तहाँ तरकैं घन गज्ज मतंगज गज्ज घुरें ॥  
 बंक पंतिय दंतिय दंत बडे चहुँओर अचानक अँभ चडे ॥  
 कटिकैं उडि चातक घंट कडे प्रति पक्खर भेक अनेक पडे ॥९॥  
 यह आनि सुर्माकरमें बरखा बडे माधवंमास अँमा बिथुरयो ॥  
 लाखि नायक सूरन हूरन हूरन अंगनं अंग अनंगं फुरयो ॥  
 इत सूरन चंदन अँस्र चडे रस कैं इत हूरन राग रचे ॥  
 उमहे इत सिंधुनकी ध्वनितें समुँहें उत सिंजितें सह मचे ॥१०॥  
 इत डाकिनि दूति कँजाकिनि ओ इत साकिनि नाकिनि या  
 ससखी ॥

सब हूर सुहागिनि इक अभागिनि बुद्ध विभागिनि सो बिलेखी ॥

\*नाचने में चतुर नारद नाचा और दाँ मेघों के समान शस्त्र चिन्हा जाननेवाले  
 वीर मिले ॥ हाथियों के कलावे [गरदन] कट कर दंत निकलते हैं और रकुंभस्थल  
 कट कर भोटियों का मेह होता है ३धीजली के विस्तार वाले खड्ग चलते हैं और  
 रमेघ की गर्जना के समान हाथी गर्जना करते हैं ५धुगलों की पंक्ति के समान  
 ५ हाथियों के दंत कट कर अचानक चारों ओर ७ आकाश में चढते हैं और  
 हाथियों के घंटे कट कर चातक [पपीहा] के समान निकलते हैं और पाखरों  
 रूपी अनेक मीडक बोलते हैं ॥ ९ ॥ इस प्रकार ८ पुष्पों की खान ऐसी वसंत  
 ऋतु में ९ वैशाख मास की १० अमावास्या के दिन वर्षा बढी, जहाँ ११ वी-  
 रपतियों को देख कर १२ अप्सरा अप्सरा प्रति १३ प्रत्येक अंग में १४ कामदे-  
 व बढा इधर वीरों के चंदन रूपी १५ रुधिर चढा और उधर प्रीति करके अ-  
 प्सराओं ने गाना रचा इधर वीर लोग १६ सिंधवीरागनी [बडाराग] की ध्व-  
 नि पर उत्साहित हुए और उधर १७ सम्मुख [अप्लगाओं में] १८ भूषणों  
 का शब्द हुआ ॥ १० ॥ १६ युद्ध कराने वाली इधर डाकिनी और इधर सा-  
 किनी दोनों लखियों सहित २० अप्सराओं ने यात्रा की. यहाँ 'य' शब्द या-  
 त्रा वाचक है यथा 'या यात्रायाम्' इति शब्दार्थवितामणौ ॥ वे सब हूर सुहा-  
 गिनी हुईं उनमें जो बुधसिंह के २१ वंश में आईं वही एक अप्सरा दुहागिनि  
 रही सो २२ रोई (बुधसिंह डर कर युद्ध में नहीं आया इसकारण उसके वंश  
 में आई हुई अप्सरा ही निर्भाग्य रही) उस अभागिनी ने

हुंत हार सिंगार बिगारि दये धुपि अंजन रोदन वारि बटयो ॥  
 कर कंकन फोरि मगोरि कंलापहिं छोरि अंलापहिं ताप सहयो ११  
 यह आइय डाकिनि की सिखई धंवहीन भई अब छोह छई ॥  
 अति आरति अच्छरि की लखिके हसि डाकिनि डिंडिम डक दई ॥  
 सहनाइय सुंडिन की करिके गन बावन ५२ गावन में गैहके ॥  
 कटि मुंड रु रुंड किरै १२ इतको चै उर छि ६४ न रुंड नचै चहके ॥१२॥  
 पखरांल तुरंगन पूर किते नखगोल कुसंगन फाल मचै ॥  
 भट वार कटारन पार करै अंसि आर अंगारन मार मचै ॥  
 फटकारि मतंगज सुंडि फिरै कटकारि जुहानन रुंड कंमै ॥  
 हलकारि चुरेलिनि होस हरै ललकारि भयंकर भून अमै ॥१३॥  
 खंग धारन धार खिरै खटके पलवारिन रुंड कटै रूपटै ॥  
 खुरतारन भार खुदै पहुमी असवारन वार दटै दपटै ॥

१ शीघ्र हार शृंगार बिगाड़ दिओ और ३ रांमे का पानी (अशु बहने से उत्पन्न) क-  
 ज्जल धुप गया, हाथों के कंकनों को फौड़ कर ४ कटिमंखला (कण्णगती) को मरो-  
 ड (तांड) कर और ५ गाना छोड़ कर दुःख सहा ॥ ११ ॥ यह अप्सरा ६  
 डाकिनी के सिंगाने से बुधसिंह को बरने को यहां आई थी जो ७ फनि से  
 हीन होकर ८ अत्यन्त क्रोध में हुई इस अप्सरा की अत्यन्त ९ पीड़ा देख कर  
 डाकिनी हस कर अपनी डिमडिमी [वाच विशेष] बजाई धौर उधर हाथियों  
 की कटी हुई १० सुंडों की सहनाइये बना कर बावन और ध गाने में ११ प्रसन्नता  
 की बोली बोलते हैं, रुंड और सुंड कट कर १२ गिरते हैं और इधर १३ चौंसठ  
 योगिनियों का रुंड नच कर बोलते हैं ॥१२॥ कितने ही १४ पाखगं बाले घोड़ों  
 का समूह १५ नखरा करनेवाले १६ हिरणों की छलांगें अगते हैं वीर लांग वार  
 से कटार पार करते हैं और १७ तरवारों की उयाला से अंगारों की मार मच-  
 ती है १८ हाथी रुंड को फटकार कर फिरते हैं और १९ संना के जघु जुहाणों  
 के समूह २० चलते हैं उन जुहाणों की हलकार [ललकार] जुड़ेलों की चाट को  
 मिटाती है भयंकर ललकार से भून फिरते हैं ॥ १३ ॥ २१ तरवारों की धार  
 पर तरवार की धार लग कर खिरती और खटकती है और २२ नांम ज्जाने  
 वालों का समूह शीघ्रता से रूपद्रवे हैं घोड़ों की खुरतालों से भार से जूमि  
 खुदती है और असवार अपने वार से २१ दौड़ते और दमाने हैं कितने ही वी

उपकारन कार किते उँमहे सिव धारन काज गहँ सिरकाँ ॥  
 दल मारन मार मिले हुँवघाँ मद बारन बार चले चिरकाँ ॥ १४ ॥  
 घमसानन बान उडाननलै अरि प्रानन पीवत काल अही ॥  
 चहुवाननके करकी उपमा पवमान न मानस वहाँ निवही ॥  
 करवाँलन चंड उडी चिनगी भट जालँन भीर भिरै भुँगसँ ॥  
 बढि ज्वाल करालन लोक बँरँ दिक्पाल कपालन साल बसँ ॥  
 गजराजन ढाल डहँ डरवाँ रँत भाजन घाय भँरँ भभकँ ॥  
 लागि लाजन सूर लरँ लटकँ छटकँ भुव काँजन लोहँ छकँ ॥  
 कटि कालिक पीहँ किरँ कालिमँ फटि मस्तक खंड उडँ फँबिकँ  
 जिम सैलनशुंग खिरँ बिखरँ प्रतिमँल्ल पुरंदरके पबिकँ ॥ १६ ॥  
 मथि मथँनि मँथ गहँ गतिसँ गन गिद्धनि गोदँ गिलँ गँहकँ ॥  
 मनु ग्वालनि मँटँ दही मथिकँ नँवनीत निकारन वारनकँ ॥

र उपकार के १ कास पर २ उत्साह युक्त होते हैं और शिव को धारण  
 कराने को मस्तक उठाते हैं सेना को मारने की मार से ३ दोनों ओर से  
 मिले और ४ मस्त हाथियों के मद का पानी बहुत समय तक चला ॥ १४ ॥  
 ५ युद्ध में उडान लेकर बाण ६ काले सर्पों के समान शहूओं के प्राण पीते  
 हैं. वहाँ पर चहुवाणों के हाथों की उपमा ७ पवन और ८ मन से भी नहीं  
 निभी ९ खड्गों से भयंकर अग्निकण उड़कर १० वीरों के समूह से भिड़कर  
 ११ जलते हैं भयंकर ज्वाला बढकर लोक १२ जलते हैं और दिग्गजों के क-  
 पालों में शाल बसते हैं ॥ १५ ॥ हाथियों के ऊपर से १३ बड़े झंडे गिरकर प-  
 डते हैं और भरेहुए घाव १४ रुधिर के पात्र होकर उझलते हैं भागने की ल-  
 ज्जा लगकर सरवीर लडकर लटकते हैं और १५ भूमि के अर्थ गिरकर १६ श-  
 ख्यों से छकते हैं १७ कलेजा और १८ प्लीहा [तिल्ली] कटकर १९ युद्ध में २०  
 गिरते हैं और जिसप्रकार २१ शत्रु २२ इन्द्र के २३ वज्र से पर्वतों के शिखर  
 खिर खिरकर बिखरँ तिसप्रकार फटे हुए मस्तकों के टुकड़े उड़कर २४ शोभा  
 देते हैं ॥ १६ ॥ २५ बिलोवणी रूपी २६ मस्तक को लेकर ग्रीधनियों का समू-  
 ह उनको मथकर २७ भोजी [मस्तिष्क] खाकर २८ प्रसन्नता की बोली बोलती  
 हैं सो मानों ग्वालनी दही के २९ मटके को मथकर ३० मक्खन निकालने में

चहि मार दुधारं चलों चमकैं असवार तुखारं कटैं उलटैं ॥  
फटि मक्कुन ऊरुं फटैं उछटैं कटि बाहुलं बाहुलं बाहु कटैं ॥१७॥

( दोहा )

इहिं रन बिच बलवन अधिप, अभयसिंह अति वीर ॥  
फतमल्लहिं खोजन फिरत, हुलसि हड्ड हमगीर ॥ १८ ॥  
जबहि पंचपुजयसिंहके, ये कूरम उमराव ॥  
बुंदीपति अगैं बिदित, बुल्ले कुबचं वढाव ॥ १९ ॥  
इनहूमैं फतमल्ल पँहैं, सारसोप पति मूर ॥  
कहि कातरं अभमल्लकों गहयो बहुत मगरूर ॥ २० ॥  
इहिं कारन अभमल्ल अब, तिहिं हेरत गहि तेग ॥  
दुरयो कहाँ कूरम दँरित, वीर बतावहु बेग ॥ २१ ॥

( पट्टपात् )

जिम नागंहिं खगगींज सृगहिं सृगगींज महावन ॥  
जंभहिं जिम जंभारि मधुहिं मानहुं मधुसूदन ॥  
पानी जिम पावकंहिं तुनहिं पावक जिम तक्कत ॥  
सजव कपोतहिं सेनैं हनन हेरन जिम हक्कत ॥

विलंब नहीं करती है. मारना चाहकर दो ? धारोंवाले चमकते हुए खड्ग चलते हैं जिनसे सवार और घोड़े कटकर उलटते हैं उन खड्गों से ३ जंघात्राण कटकर ४ जंघायें कटकर उछलती हैं और ५ दस्ताने [पाहुत्राण] कटकर ६ बहुत बाहु कटते हैं ॥ १७ ॥ १८ ॥ ७ खोले वचन ॥ १९ ॥ ८ कायर ॥ २० ॥ ९ डरकर ॥ २१ ॥ जिस प्रकार १० सर्प को ११ गरुड़ और सृग को बलवान् १२ सिंह. जंभासुर को जैसे १३ इन्द्र और जैसे मधु दैत्य को १४ विष्णु भगवान् १५ अग्नि को जैसे पानी और तृणों को जैसे अग्नि, कबूतर को जैसे घेगवान् १६ शिकरा (बाज पत्नी) मारने को हैरकर \* चलै तैसे अथवा

\* इस छन्द में "हनन हेरत जिम हक्कत" इस क्रिया पद के आये पीछे फिर उपमा दी है सो समाप्तपुनरात्त दोष है परन्तु क्रिया के आये पीछे एक ही उपमा फिर दी जावे वहां यह दोष होता है किन्तु क्रिया आये पीछे फिर अनेक उपमा आजाये वहां यह [समाप्तपुनरात्त] दोष नहीं रहता सो ही यहां जानना चाहिये ॥

आखुहिं विडाल तिमिरहिं अरुन नर रंकहिं दारिद्रानिभ ॥  
 फतमल्ल रूप पौमिनि फिरत इम हेरिय अभमल्ल इहाँ२२  
 ( दोहा )

समुख पिक्खि फतमल्लसौं, इम अक्खिय अभमल्ल ॥  
 गीदर गाल वजायकै, अब किन करत उभल्ल ॥ २३ ॥  
 इम हकारि बलवन अधिप, मंडत वानन मेह ॥  
 उफनावत आयो उमँडि, दंस न मावत देह ॥ २४ ॥  
 ( पट्टपात )

पय दव्वत अहि पुच्छ सुच्छ अँचत मयंदं जिम ॥  
 सोर मनहुँ सारौंत अँगि लगगत प्रचंड इम ॥  
 हेलिं मयूख हजार १००० जेठ दुपहर जनु जग्गिय ॥  
 प्रलय उग्र जिम प्रथित लाय अंखिन अति जग्गिय ॥  
 कानन प्रमान वानन करखि कूरम देह सु सेह किय ॥  
 मदमत्त लाखहु हड्डे मरद गड्डे पँद अंगद गतिय ॥ २५ ॥

[ मुक्तादाम ]

जुरयो अभमल्ल इतैं रुपि जुद्ध, अरयो फतमल्ल उतैं कँलि क्रुद्ध ॥  
 उभै निज स्वामिनकी भुव आस, तकावत अकहिं चकँ तमासा२६।  
 उभै रन दच्छ वडे उमगाव, उभै उमँडे रसवीर उगाव ॥

१ चूहे को २ बिल्ली ३ अंधेरे को ४ सूर्य ५ रंक मनुष्य को दरिद्र हेरे तैसे फतहसिंह रूपी  
 ५ हथनी को अथवा पक्षिनी (कमलनी) को अभयसिंह रूपी वेदाधी ने हेरा ॥ २२ ॥  
 ॥ २३ ॥ ७ कवच में ॥ २४ ॥ ८ सूर्य ९ सिंह १० रजक का चारुद [तांडादार  
 चंद्रक के कान में डालने के लिये चारुद को डुबाकर करके तेज करते हैं उसको  
 'सापात' कहते हैं और मतान्नर से जामकी [तांडा] को भी सापात कहते  
 हैं जो हिमालयभाषा में प्रसिद्ध है; अथवा रजक और सावाग दोनों ही चारुद  
 के नाम हैं जो अत्यंत प्रवृत्ता दिग्बाने के अर्थ दीप्ता के अर्थ में एकार्थवाची  
 दो अर्था का प्रयोग किया है] ११ अग्नि १२ सूर्य १३ प्रलय का शिष्य जैसे  
 प्रसिद्ध है १४ अंगद के समान चरण रोपे ॥ २५ ॥ १५ युद्ध में क्रुद्ध होकर १६  
 सेना का तमासा ॥ २६ ॥

उभै जय थप्पनहारि उथाप्पि, उभै उफनार्य कुबैनन अप्पि ॥ २७ ॥  
 उभै दल दुल्लह सज्जित अंग, उभै भैर अँचत सुच्छ अमंग ॥  
 उभै अञ्जुरूप रिक्कावत रंभ, उभै रन अंगनके जय खंभ ॥ २८ ॥  
 उभै सिव दारिद्र मिट्टनहार, उभै पल्लचारनके उपकार ॥  
 उभै अमकावत खग्ग उदग्ग, उभै चलि प्रेत हसावत अग्ग ॥ २९ ॥  
 उभै भँवतें तजि मोह अँलुद्ध, उभै मन वृत्ति लयावत उँद्ध ॥  
 उभै तुम वाहहु वाहहु अक्खि, उभै करि सूरजकोँ निज सँदिख ३०  
 उभै कनकाचली पायन बंधि, उभै दँम उच्चत सँहरि संधि ॥  
 उभै तुलसी धरि मस्तक आय, उभै जल गंग उमंग अचार्य ॥ ३१ ॥  
 उभै वृखँजानि जुगे इक धेनुँ, उभै करिराज कि इकक करेनुँ ॥  
 उभै इक सिंहनि ज्यौँ बनईसँ, जुगे इम क्रूरम हहु जपीस ॥ ३२ ॥  
 मिले पहिलें हुव तीरन मार, कढे सर दोउनरभेदि करार ॥  
 चटइहिँ चंड प्रतंचन चाप, उहँ सलँभा जिम रोपँ अमाप ॥ ३३ ॥  
 जहाँ करि बानन यौँ रन जोर, मिले पुनि सेलन द्वैरभट मोर ॥  
 सु कंकटँ भेदि कढे घँट सारि, किधो तरु तेजँन अँग्ग कुदौँरि ३४  
 चली अभमल्ल बरच्छिय अच्छ, पग्यो छिदि क्रूरम बैँजि दुपच्छ ॥  
 वहाँ हय और चढ्यो कछवाह, रूप्यो अभमल्लहु पँबबराह ॥ ३५ ॥

१ बहे ॥ २७ ॥ २ भइ ३ अपने सदृश ४ रंभा नामक अप्सरा को 'द्विगल भा-  
 षा में सामान्य अप्सरा को भी रंभा कहते हैं' ॥ २८ ॥ ५ शिव का स्वस्तकोँ  
 रूपी दरिद्र मिटानेवाले (साँस खानेवालों के ७ उदग्र (उद्वलने) हुए अग्रमा-  
 ग वाला ॥ २६ ॥ ८ संसार से ६ निर्लोभी १० ऊपर ११ साक्षी ॥ ३० ॥ १२  
 सुमेरु पर्वत को १३ दंड देने में १४ नीति के प्रथम संधि गुण का संहार करके  
 १५ पीकर ॥ ३१ ॥ १६ वृषभ १७ गऊ पर १८ हथिनी पर १९ सिंह ॥ ३२ ॥ २०  
 टीडियों के समान २१ बाख ॥ ३३ ॥ २२ क्रूर को और २३ शरीर को फोड़  
 कर २४ मानों वाँस के वृक्ष का २५ अग्रभाग २६ भुक्ति को फोड़ कर निक-  
 ला ॥ ३४ ॥ २७ कछवाहे का घोड़ा दोनों षालू से छिद कर गिरा २८ पर्वत की  
 भांति ॥ ३५ ॥

बराच्छिन जंग अपुव्व बिधाय, लई अब खापनतें हिमलाय ॥  
 किधौ धनतें कढि बिज्जु कराल, किधौ बिलतें किल कुंडलिकाल ३६  
 किधौ नभतें ससि द्वैज कला कि, कढी जमके मुखतें दसना कि ॥  
 हली कि हुंतासनतें कढि हेति, मयूख नभोभनितें अथवेति ॥ ३७ ॥  
 कढी ध्वनि वैयाकृतितें कि सकास, कढे मत गोतमतें कि समास ॥  
 कटाच्छ किधौ कुलटा दग कुंज, पयोभव कोरकतें अलि पुंजा ३८  
 कलिंकेकतें निकसी जमुना कि, प्रजापति तें परिपूरि प्रजा कि ॥  
 गुनलैपतें कि चले महदादि, महानटकी जटतें प्रमथादि ॥ ३९ ॥  
 हिमालयतें जिम गंग हिलोर, किटीश्वरके मुख दंतुलिकोर ॥  
 अनंतक आननतें जिम जीह, सटांधुनि थंभदितें नरसीह ॥ ४० ॥  
 नवोढनके उरतें कि उरौज, उदैगिरितें कि दिवाकरौओज ॥  
 कि अंजनिके उरतें हनुमान, परासरनंदनतें कि पुरान ॥ ४१ ॥  
 सुराधिपके करतें जिम संबै, कढे धनु गाँडिवतें कि कलंब ॥  
 सही कपिलाननतें जलुं साप, लयांभन गायनतें कि अलाप ॥ ४२ ॥

अपूर्व सुख १ करक २ स्यानों में से ३ ठंडी अग्नि ली (यह तरवार का विशेष-  
 ण है) ४ मेष से विद्युत् [विजुली] की क्रांति ५ विश्वयन्काला सर्प [यह आं-  
 धी हुई तरवार की उपमा है] ॥ ३३ ॥ ७ दोज के चंद्रमा की कला [जहाँ जहाँ  
 अकेला 'कि' आवै वहाँ किधौ, किना स्यानों अर्थ जानना चाहिये. प्रत्येक स्थान-  
 न पर इसका अर्थ लिखने से विस्तार होता है] ८ दाह ९ अग्नि से १०  
 ज्वाला [भाल] ११ अथवा ११ सूर्य से किरणें प्रकाश करै जैसे ॥ ३७ ॥ १३  
 व्याकरण की १४ समीपता से शब्द कहे जैसे १५ नेत्रों के कौनों से १६ कम-  
 ल की कली से १७ भ्रमरों का समूह ॥ ३८ ॥ १८ पर्वत विशेष १९ जमुना  
 नदी २० ब्रह्मा से परिपूर्ण प्रजा निकले तैसे २१ स्वत, रज, तम, इन तीन  
 गुणों से महदादि चौधीस तत्व निकले तैसे २२ शिव की जटा से २३ गण  
 निकले जैसे ॥ ३९ ॥ २४ वाराह के मुख से २५ शेषनाग के मुख से २६ गरुड-  
 न के केश धुजा कर थांभे से २७ वृसिंह निकले ऐसे ॥ ४० ॥ २८ कुच २९  
 सूर्य का तेज ३० वेदव्यास से ॥ ४१ ॥ ३१ इन्द्र के हाथ से ३२ वज्र ३३ पाण ३४ क-  
 पिलदेव के मुख से ३५ मानों आप निकला ३६ लय फाँ जानने वाले कलावंत  
 से ॥ ४२ ॥

धपी जनु नीरदतै जलधार, महाबल माधवतै मनु मार ॥  
 त्रिलोचनके करतै कि तिसूल, मउत्तिय सुत्तिपतै कि अमूला४३।  
 कढे इम दोउनखापन खग्ग, मिले प्रलयानल व्हे रन मग्ग ॥  
 उभै करि लाघव दाव दिखात, परस्पर देत प्रहार निपात ॥ ४४ ॥  
 उभै फिरि मंडल टारत वार, मचावत भार दुधारन मार ॥  
 दई धपि संभर दाहिन अंसं, पर्यो कटि कूरम ख्यातै प्रसंसा४५  
 ( दोहा )

हठि कूरम फतमल्ल हनि, अभयसिंह चहुवान ॥  
 कूरम कोजुवरामकाँ, पिकखत गाहक प्रान ॥ ४६ ॥  
 ईसरदा पुरपति अतुल, वह कोजुव कछवाह ॥  
 अप्पहिं खोजत इक्खिकै, अभिमुख रत्तिग उछाह ॥ ४७ ॥  
 मिलि दोउनकिन्नी मुदित, नागफेन मनुहारि ॥  
 अक्खी पुनि अभमल्ल इम, कूरम सुनहु हकारि ॥ ४८ ॥  
 सब तुम मिलि हमरे सुनत, भूपहिं डारी भीति ॥  
 तुमहूम फतमल्ल तँहँ, अक्खी अधिक अनीति ॥ ४९ ॥  
 काकोदरहिं कुापयकै, कोउन जियत सकोप ॥  
 फनन हन्याँ फतमल्लकाँ, अब तव सिर आँटोप ॥ ५० ॥  
 फबतै वान फतमल्लके, छत्ति अभय छँत छेक ॥  
 जनुँ छानन जय अरु अजय, बन्याँ तितैउ सविवेक ॥५१॥

मानों २ मेघ से ३ जलधारा १ दौड़ी. बड़े बलवान् ४ श्रीकृष्ण से मा-  
 माँ कामदेव ५ शिव के हाथ से ६ जिसप्रकार सीप से जाती निकले तिस  
 प्रकार दोनों ने म्यानों में से तरवार लेकर ॥ ४३ ॥ ७ प्रलय की अग्नि के  
 समान ८ शीघ्रता से ॥ ४४ ॥ ९ चक्राकार (गोलकुंडा) १० दौड़के बलवा-  
 ण ने दहिने कंधे पर दी ११ प्रसिद्ध प्रशंसावाला ॥ ४५ ॥ १२ सामने  
 ॥ ४७ ॥ १३ अफीम की ॥ ४८ ॥ १४ भय ॥ ४९ ॥ १५ सर्प को क्रोधित करके  
 १६ फणों से उडवाव ॥ ५० ॥ अभयसिंह की छाती में १७ धारों के छिद्र करके  
 फतहसिंह के बाण ऐसे १८ शोभा देते हैं २० मानों इस युद्ध के जय और अज-  
 य छानने के लिये विचार पूर्वक २१ चालनी [खरखी] बनी है ॥ ५१ ॥



यातैं कोजुवराम अब, मिलि बुल्लयो रन माँहिं ॥  
जिनके वानन तुम छिदे, तिनतैं गब्वहुं नाँहिं ॥ ५२ ॥

[ षट्पात् ]

यहै सुनत अभमल्ल खगग कोजुव सिर झारिय ॥

सजि कोजुव इत संगि दृहु उर तकि प्रहारिय ॥

याके खगग उदगग कट्टि बाहुल्ल कर कट्टयो ॥

वाकी संगि अपुब्व चक्खि हिय रौळक चट्टयो ॥

अरि तब सिराहि बलवन अधिप पुनि असि झारिय मत्थ पर ॥  
कटि टोप सीस कट्टिय सकल मनहुं बिरबंधव बंदि घर ॥ ५३ ॥

(दोहा)

कोजुवराम सु सिर कटत, वेग वसन सन बंधि ॥

कर इक्कशहि असिबर करखि, सिर झारिय जय संधि ५४

कोजुवको दक्खिन कर सु, इम कट्टयो अभमल्ल ॥

यातैं गहि कर वाम असि, झारी बहुरि उभल्ल ॥ ५५ ॥

टोप कट्टि तिगछी तरकि, तुट्टि परिय तरवारि ॥

अक्खिय तब अभमल्ल इम, बाहु नैक विचारि ॥ ५६ ॥

जिहिं करतैं असिबर जुगत, तिरछी तरकत तुट्टि ॥

जनि ताकाँ हरखैं जननि, क्यौं बहु थालन कुट्टि ॥ ५७ ॥

कहि इम कोजुवगम पर, असि झारिय अभमल्ल ॥

सिव गहि लित्रौं उडत सिर, ढरथी यहहु रनल्ल ॥ ५८ ॥

ईसरदाके पतिहिं इम, बलवन पति हनि वेग ॥

साँवलदास सुहाड पति, तक्कयो झारत तेग ॥ ५९ ॥

सर्व मत करो ॥ ५२ ॥ कोजुराम के मस्तक पर ३ दस्ताना काट कर ४ पीठ को ५ मानों दो भाइयों ने घर का पंड किया ॥ ५३ ॥ बल्ल व से शीघ्र यांच कर ७ श्रेष्ठ तरवार खेंच कर ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ६ वह युद्ध की दाल ८ गिरा ॥ ६० ॥

(सुक्तादाम )

चयी यह दूतन भूतन चारों, सुनी सब कूम्भ साँवलदास ॥  
 उदायुध उग्र दिवाकर अंस, रहैं इतनी सहि क्यों रघुवंस ॥६०॥  
 मिलयो अभमल्लहु उद्धत मान, धपावत धारहैं दे बलिदान ॥  
 धर्यो कुवलाश्व कि धुंघुंहे धागि, किधों रन रावन राम हकारि ६१  
 किधों बलपैं बल बासव क्रुद्ध, जटासुगपैं कि लृकोदर जुद्ध ॥  
 कुं अर्थ भ्रमावत हथ कृपान, दिखावत संकमको अति दान ६२  
 सुहाडपैं हू इततैं गहि संगि, मिलयो अभमल्लहिं मल्ल उमंगि ॥  
 नची तैंह तालिन चांसठि ६४ नारि, रची इस हहु रु कूम्भ रारि ६३  
 जहाँ तैंह आवहिं आवहिं जाप, जहाँ तैंह खूटत खगगन खापैं ॥  
 जहाँ तैंह प्रेत डकारत जोर, जहाँ तैंह घायन घायल घोर ॥६४॥  
 जहाँ तैंह नारदको अति नद्य, जहाँ तैंह सूरन हूरन सद्य ॥  
 जहाँ तैंह भूतन भूख प्रकास, जहाँ तैंह गिद्धिनि गूद विलास ६५  
 जहाँ तैंह डाकिनि डिंडिम डक्क, जहाँ तैंह धारनकी धमचक्क ॥  
 जहाँ तैंह हथिन चैंड चिकार, जहाँ तैंह फेगविकॉन फिकार ६६।  
 जहाँ तैंह फुटत भू अति जोर, जहाँ तैंह अंबक तंडैव तोर ॥  
 जहाँ तैंह दिग्गज कातर गज, जहाँ तैंह सोहत सूरन सज्ज ॥६७॥  
 जहाँ तैंह कातर कूकत कूक, जहाँ तैंह चाहत चंचल चूक ॥  
 जहाँ तैंह फुटत फलिन मत्थ, जहाँ तैंह सूरन हूंगन हत्थ ॥ ६८ ॥

दूतों रूगी भूतों ने यह २ नवबर १ कही ३ ऊंचे किये हैं शत्रु जिसने ४ सूर्यवंशी  
 ॥ ६० ॥ मानां ९ कुवलाश्व नामक राजा ७ धुंघु नामक राजस को दख कर  
 ९ दौड़ा ॥ ६१ ॥ = बलवान् इन्द्र क्रोधित हुआ ९ भीमसेन का युद्ध १० भूमि  
 के ११ अर्थ हाथ में तरवार फिरोता हुआ ॥ ६२ ॥ १२ सुहाड़ का पति १३  
 छच्छे उत्तनाह से मित्रा १४ वहाँ पर तालिये देकर चौंसठ योगनिये नचीं  
 ॥ ६३ ॥ १५ तरवारों से म्यान खूटने हैं ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ १६ तरवारों की  
 धाराओं की. हाथियों की १७ भयंकर चीस १८ फेरियों [स्मालनियों] के फटकार  
 ॥ ६६ ॥ १९ भूमि २० तामे [बाघ विशेष] २१ लृप्य की रीति के. दिग्गजों की २२  
 कायर गर्जना ॥ ६७ ॥ २३ छलघान २४ हाथियों के साथ २५ अप्सराओं का हाथ  
 [हथलेवा जुड़ता है]

जहाँ तँहँ खगगन खंडे खिरंत, जहाँ तँहँ गैवर गंज गिरंत ॥  
 जहाँ तँहँ जुगिनिको जपकार, जहाँ तँहँ रुंडन मुंडन मार ॥६९॥  
 जहाँ तँहँ साकिनि सोरें सुनाव, जहाँ तँहँ पंडित जंग प्रभाव ॥  
 जहाँ तँहँ हथिन बँथन जुष्टि, जहाँ तँहँ तेग तरकत तुष्टि ॥ ७० ॥  
 जहाँ तँहँ सोनित साँ बढि साँद, जहाँ तँहँ प्रेतन भँच्छ प्रमाद ॥  
 जहाँ तँहँ चाल चुरैलिनि चाँकि, जहाँ तँहँ भैरव भैरव भौँकिं ७१  
 जहाँ तँहँ हड्डन जालम जोर, इतँ तँहँ दुस्सह कूरम ओर ॥  
 सुहाड़ैप कूरम साँवलदास, मिल्यो अभमल्लहिं पुंजँ प्रकास ॥७२॥  
 कहँ दुव बाहहु बाहहु कथ, रचँ रन त्यौ रवि रुकत रथ ॥  
 सँरँ जलजंत्र कि घायन सोनँ, जुँरँ इन दोउनतँ तँहँ जोन ॥७३॥  
 लरँ अभमल्ल सु बुंदिय लाज, करँ उत कूरम जैपुर काज ॥  
 बहँ असि बान बरच्छिन ब्रातँ, परँ मनु भद्व विज्जुव पातँ ॥७४॥  
 थैइ थैइ नच्च कबंधन थूलँ, बनँ तँहँ कातरँ पत्त बँधूल ॥  
 मलंगत भैरव सोनितँ मत्त, छलंगत गिद्ध बनँ सिर छँत्त ॥ ७५ ॥  
 नचँ निकसे हियँपँ कढि नँन, सँरोज कि सोन सिलीमुख सँन ॥  
 कढँ फाटे बुँकन टुकक बिकास, मनौ सुमँ किँसुक माँधव मास ७६

१ टुकड़े-रहाधियों के समूह-जय हो जय हो ऐसा शब्द ॥६९॥ ४ कोनाहल-बाधों  
 से [दोनों हाथों को फैला कर अंक में भर कर बाहु बुद्ध होता है] लड़-  
 ते हैं १ तरवारें फिसल कर तूटती हैं ॥ ७० ॥ ७ लोही का फीचड़ ८ खा-  
 ने का ९ भयंकर १० गाजते हैं ॥ ७१ ॥ ११ जुद्ध करनेवाला १२ वह जुद्ध  
 कछवाहों की तरफ नहीं सहने योग्य है १३ सुहाड़ का पति १४ प्रकाश का स-  
 मूह ॥ ७२ ॥ १५ फुंदारा चले जिस प्रकार १६ घाबों से रक्त बलता है ॥ ७३ ॥  
 १७ समूह ॥ ७४ ॥ १८ बिना मस्तक वाले क्रियावान् शरीरों का १९ समूह २० का-  
 घर २१ बगूले (वातु के गोटे) के पत्तों के समान २२ रक्त से मस्त होकर २३  
 बत्र ॥ ७५ ॥ २४ छाती पर नेत्र निकस कर नाचते हैं सो मानों २५ लाज  
 कमल पर २६ अथवा शयन करते हैं २७ चुकों (गुड़दों) के टुकड़े होकर फट कर  
 निकलते हैं सो मानों ३० वैशाख मास में २९ दाक के (केसूला के) २८ पुष्प  
 फूल हैं ॥ ७६ ॥

उडैं सिर अंबर पच्छिन पेलिं, करैं जनु कालिय कंदुक केलि ॥  
 उछट्टहिं डालनमें कठि अंत, भुजंग टिपारनमें कि भ्रमंत ॥७७॥  
 हूरैं सिर अद्द फटयो इहिं शरि, दयो जनु जुग्गिनि खप्पर डारि॥  
 सिखा कटि सूरनकी फहरात, किधौं जयकेतु प्रभंजन पात ॥७८॥  
 किं रैं फटि टोपनतैं करवाँल, फँटा बिनु लेत भुजंग कि फाल ॥  
 सुहावत के अरि नकक समूल, फबैं इसँभाव मनौ तिलफूल ७९  
 लगैं असि ओठ अरैं कटि लाल, पके जनु विंबं कि पुंज प्रवाल  
 उडैं कटि दंतन ओघ अखंडैं, खिरैं फटि हीरनके जिम खंडा ॥८०॥  
 किं रैं सह मुँति प्रहारनैं कान, बनैं सह मुत्ति सु सुँति बिधान ॥  
 जहाँ अरि हत्थ गिरैं अति जुद्ध, किधौं फन पंचकके अहिं छुड ८१  
 तिरैं बहु खेटैंक सोनितैं ताल, मनौ कि सरस्वति कच्छप माल ॥  
 भुक्रैं बहु सूर अटककन अरार, गिरैं जिम आसव मत्त गमार ८२

पक्षियों को २ हटाकर आकाश में? मस्तक उडते हैं सो ३ जानों  
 कालिका गैद ४ खेलती है, ढालों के ऊपर ५ आँतें गिरती हैं सो जानों  
 टिपारों में ६ सर्प फिरते हैं ॥ ७७ ॥ इस युद्ध में आधा फटा हुआ मस्तक  
 ७ गुड़ता [लुढ़कता] है सो जानों योगिनी ने खप्पर डाल दिया है ८ वीरों  
 की चोटिये कट कर उडती है सो जानों ९ विजय की ध्वजा १० पवन से  
 पडती है ॥ ७८ ॥ टोपों के ऊपर से लूट कर ११ तरवारें १२ गिरती हैं सो जानों  
 १३ बिना फण सर्प उछलते हैं १४ मूल सहित नासिका कट कर ऐसी  
 दीखती है कि जानों १५ आसोज मास में तिलों के फूल शोभा देते हैं ॥७९॥  
 १६ तरवार लग कर लाल होट कट कर गिरते हैं सो जानों १७ विम्बफल (रक्त  
 फल विशेष) और १८ बूँगों (नग विशेष) का समूह है १९ बिना लूटे हुए दांतों  
 के समूह कट कर उडते हैं सो जानों हीरों के टुकड़े होकर खिरते हैं ॥८०॥ २२  
 प्रहारों से २३ मोतियों सहित कान २० गिरते हैं सो विधान पूर्वक मोतियाँ स-  
 हित २४ सीपें बनती हैं ॥ ८१ ॥ उस २५ रुधिर के तालाव में बहुत २४ ढालें  
 तेरती हैं सो जानों २६ सरस्वती नदी में कच्छपों की पंक्ति तिरती है (सरस्व-  
 ती नदी के पानी का रंग लाल प्रसिद्ध है) २७ तरवारें चला कर 'डिंगल भाषा  
 में तरवार के एक बार में दो टुकड़े होजावें उसको अटका कहते हैं परन्तु  
 लौकिक में इसकी खड़ी खड्ग में होगई है इसी कारण यहां तरवार लिखा है'

डरावत डाकिनि दंत दिखाय, जरावत साकिनि लावत लाय ॥  
 तिन्हें भट नाटकके नट तोर, गिनँ रस अद्भुतही नहिँ घोरै ॥८३॥  
 गिरँ कहँ भज्जतँ भीरुन सीस, उठावत पूर्व बिहावत ईस ॥  
 गिलँ तिनको नन गूदहु गिद्ध, बुरे इमँ जे कि मरे भय बिद्धा ॥८४॥  
 मिले दुवर्ष्या गतिके रन माँहिँ, जचँ जुरनाँ तँहँ नाँहिँ सु नाँहिँ ॥  
 लगी गर बुंदिय जैपुर लाज, करँ नहिँ अग्घ सरँ नहिँ काज ॥८५॥  
 भयो बल साँवलको बँल भाव, दयो अभमल्ल पुगँदँर दाव ॥  
 चली पबिकी छवि ते असि चंड, खुल्यो सिर साँवल ज्यौँ गिरि खंड ॥८६॥  
 (षट्पात)

अभयसिंह सुत अत्थ प्रबल सुगतेस १२ पूरन २ ॥

दासी औरस दुव र्हि चले चाहत अरि चूरन ॥

सारसोपके सुभट बह्नि पहंचे सुहाड़ बँल ॥

भट साँवल के भंजि दबि नाँनेड़ि दयो दँल ॥

इन्ह इनत पिक्खि कूरम अचलँ दोउन ३ भुगगन हूर दिय ॥

उभँ पुत्र भरत अभमल्ल अब लरि अचलेस समीप लिय ॥८७॥

अचलसिंह तरवारि परिय अभमल्ल बाँजि पर ॥

भरत खंथ हय भुक्किय इनहु भारिय इहिँ अवसर ॥

सुर अचलको सीस तगकि तुट्यो अमि उच्छट ॥

॥ ८२ ॥ १ अग्नि लाकर वीर लोग उसका नटों के २ खंड की भांति अद्भु-  
 त रस ही मानते हैं ३ भयानक रस नहीं गिनते ॥ ८३ ॥ ४ भागते हुए  
 फिर कायों के मस्तक समझ कर ५ छोड़ देते हैं, और वे भय से विंध कर  
 मरे ६ इसकारण बुरे हैं अथवा उन का स्वाद मजा) बुरा है ॥ ८४ ॥ ७ वहाँ  
 बहुत कायों के महंतक गिरते हैं जिनको पहिले तो महादेव उठालेते हैं परन्तु  
 नहीं करने की ही नहीं थी ८ प्राणों का आघ नहीं करते अथवा पाप नहीं  
 करने ॥ ८५ ॥ साँवलदास का बल राजा ९ बलि की भांति होगया उस समय  
 अभयसिंह ने १० इन्द्र के समान दाव दिया ११ वज्र की छवि से तरवार च-  
 ली ॥ ८६ ॥ १२ सुहाड़ की सेना में १३ नानेड़ी की सेना को १४ अचलसिंह ने १५ दो-  
 नों ॥ ८७ ॥ १६ घोड़े पर

लियउ भेलि लागि लाह नञ्चि बहु मंडि \*महानट ॥  
 अचलहिं विदारि अभमल्ल इम सुतन बैर कछयो सकल ॥  
 बिनु वाजि जाय गंजपो बलिय बुद्धानीपुर पति प्रबल ॥८८॥  
 दोहा ॥

बीर बहादुरसिंह तब, बुद्धानी पुर नाह ॥  
 अथ रहित अभमल्लको, इक्खत रचित उछाह ॥ ८९ ॥  
 बेग हयहिं अपटाय बलि, सम्मुह आरिय संगि ॥  
 अभमल्लहिं यह लगिय इम, अंग सिर पँबि कि उमंगि ९०  
 ॥ पट्टपात् ॥

लगत संगि अभमल्ल छति फुट्टन नन छोहिंउ ॥  
 विरचि बँपा बखसीस डंकि कूरम दल डोहिंउ ॥  
 बिनाँ तुरग हठ बंधि तुमुल कोऊ नहिं तक्त ॥  
 यह अचिर्ज सहि संगि बढयो सम्मुह अय बँक्त ॥  
 जिम तुँला दंड खंभहि जुरत उर प्रविद्ध अभमल्ल इम ॥  
 बुद्धानि नगर ईसहिं सविधि तुँलिल पटक्किय अवनि तिम ९१  
 [ दोहा ]

परयो बहादुरसिंह इत, इत सु परयो अभमल्ल ॥  
 इम कूरम भट पंचप अरि, हनि सुतो हरवल्ल ॥ ९२ ॥  
 पञ्चभटिका ॥

चहुवान देवसिंहहिं विचारि, सिरदार कुम्म नारव सम्हागि ॥  
 नाथाउत चालुक प्रेम नाम, किय आहव नरउर सचिव काम ९३  
 संग्राम नाम चालुक्य संग, जुरि करनसिंह कछवाह जंग ॥

\* शिव ने ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ १ परछी २ पर्वत पर ३ बज्र । ९० ॥ ४ मूर्कित नहीं  
 हुआ ५ मंजा ६ कूद कर ७ मथा = आश्चर्य है कि वाड़ी को सहन करके ९  
 पोलता हुआ १० तफ़्फ़ी की डांडी किसी खंभे से बांधी जावे तैसे ११ बेधन  
 होकर १२ तोल (डंठा) कर भूमि पर पड़की ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ १३ नरुका १४  
 सोलंखी १५ कार्य ॥ ९३ ॥

परिहार\*परशुधर बल अचंड, जिय जोध चालुकहिं दुसह दंड ९४  
 गंजन अरि साँवलदास गोर, उडि रूपसिंह चालुक्य अोर ॥  
 जोरावर नारव कुम्म जत्थ, गुरतेस बीर चालुक्य सत्थ ॥ ९५॥  
 बखतेस हड्ड असि करत बाह, बलि उदयसिंह चालुक्य चाह ॥  
 जगभालु हड्ड अति मैचित्र जंग, सजि कूरम पृथ्वीसिंह संग ॥ ९६॥  
 ( दोहा )

इम बुंदिय आमैर भट, रचिग परस्पर रारि ॥

जुद्ध मिले जल इदुद्ध जिम, अड्डवन बग्ग उपारि ॥ ९७ ॥

[ मुक्तादाम ]

चली असि बान बरच्छिन चोट, लगे कति लेत कबुत्तर लोट ९८  
 उलट्टिय सत्त समुद्रन आप, प्रकट्टिय कूरमको यँहँ पाप ॥  
 थरकिय त्यों अतलादिक थान, लरकिय सेस फटा लचकान ९९  
 तरकिय कच्छप पिड्डि सत्रास, वनँ जनु अंडकटाह विनास ॥  
 टिकयो किरि तुंडहिं दंतुलि टारि, चिकयो दिक्कुंजर पुंज चिकारि  
 छुटँ सिर छत्तिं छत्तिन छेकि, कडँ बनतँ जिम कुकत केकि ॥  
 करकहिं कोचनको असि कट्टि, फरकहिं विजुव ज्यों घन फट्टि १०१  
 खरकहिं ढालनके कटि खंड, दरकहिं तालनसे ध्वजदंड ॥  
 छरकहिं छोनियँ छिंछिन रँत्त, बरकहिं बाहुल टोप विघँत्त ॥ १०२ ॥  
 भरकहिं इकहिं इक भटकि, थरकहिं रंड लरकहिं थकि ॥  
 गरकहिं खँजर पँजर गोदि, जरकहिं जोर महाभट मोदि ॥ १०३ ॥

\* परशुराम ॥ ९४ ॥ नरुका कछवाह ॥ ९५ ॥ आशचर्य युक्त युद्ध करनेवाला  
 ॥ ९६ ॥ इदुद्ध ॥ घोड़ों की चामें उठा कर ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ १ जल २ जयसिंह  
 का ३ कण ॥ ९९ ॥ ४ मानों ब्रह्मांड का विनाश (प्रलय) होपेगा ५ धाराह का  
 मात्र ६ दिग्गजों का समूह चीसली करके हटे ॥ १०० ॥ चन्द्रियों की छातियों  
 को फोड़कर नमयूरकनधों को काट कर १० खड्ग ११ यिजुली ॥ १०१ ॥ १२ ताड़ वृक्ष  
 के समान १३ भूमि को १४ रक्त की झींझों (पिचकारियों) से १५ दस्ताने १६  
 विशेष घात से ॥ १०२ ॥ १७ शस्त्र विशेष [एक प्रकार की छुरी] १८ क्षरीर  
 को ग्राह कर १९ प्रसन्न होकर गिराते हैं ॥ १०३ ॥

हाडों और कछवाहों का युद्ध] सप्तमराशि-त्रयस्त्रिंशमयुद्ध (३१६५)

प्लवंगेन प्रोथे सनंकिय स्वास, भनंकिय भेरि बलाहक भास ॥

रनंकिय कोचन रोचन रुंड, भनंकिय अक्खर पक्खर झुंडा १०४।

खनंकिय हँडुन हँडुन खग्ग, फनंकिय फेनिल सेस समग्ग ॥

छनंकिय बान उडानन छूट, ठनंकिय घंट करी कटिकूंट १०५।

इतै तँह देव उतै सिरदार, हमल्लन भल्लन देत प्रहार ॥

उभै २ ऋपटावत सत्तिनै मूर, उभै अधिबीर महा ममरूर ॥ १०६।

( दोहा )

महाचंड अरु चंड मनु, दोऊ भट जम दास ॥

असु दल गाहक अंकुरे, रन मारी भव रास ॥ १०७ ॥

[ षट्पात् ]

देवसिंहके सुभट हनिय सिरदारसिंह खट ६ ॥

नारवके रन रूपि देव सद्धिय द्वादस भट ॥

द्विगुन जोर लखि दुतहि अक्कै पहिले तिन्ह अंदरि ॥

अरु मंडल भिर्देवाय प्रथम पठये स्वधर्म परि ॥

हाकिनि पिसाच यह कूक दिय सु सुनि सोर नारव सुभट

दस १०मान उग्र अडे दुसह बहुरि आनि ठँडे बिकट १०८।

१ घोड़ों के २ फुरणों [नासिक. गों] से ३ नोबत ४ मेष की शोभा से बजी ५ कबचों से शोभायमान धड़ ६ नहीं गिरे हुए अर्थात् हाथी घोड़ों पर लगे हुए पाखरों के समूह बजे ॥ १०४ ॥ ७ हाडा ऋषियों के खड्ग शरीर के हाडों पर बजे; या हड्डों के शस्त्र हाडाओं पर ही बजे [क्योंकि यहाँ दोनों ओर के युद्ध करने वाले हाडा ही थे] ९ भागों सहित शेष के सब फल फेन [भाग] सहित होकर फूटकार करने लगे [यहाँ फेनों के योग से फलों का ग्रहण है] १० हाथियों के कुंभस्थल कट कर ॥ १०५ ॥ ११ घोड़ों को १२ वीरों के पति [स्वामी] ॥ १०६ ॥ १३ सेना के प्राणों के ग्राहक १४ लड़े हुए १५ युद्ध में महामारी (प्लेग) का नृत्य हुआ अर्थात् मनुष्यों के समूह का नाश करनेवाली महामारी का नृत्य हुआ ॥ १०७ ॥ १६ सूर्य ने १७ देवसिंह के वीरों का आदर करके १८ सूर्य मंडल का भेदन कराकर १९ नरुके २० दश का प्रमाण वाले अर्थात् दश भट था २१ लड़े हुए ॥ १०८ ॥



( दोहा )

सुभट अष्टनिज संटिकें, देवसिंह हुत दाय ॥

नारवके ते दश१०निगलि, नारव लिय निषराय ॥ १०९ ॥

( पट्टपात )

अब उन्नततम अंस उपर दिनकर आरोहत ॥

चित्र जंग द्विप चच्छु मुदित सारथि सह मोहत ॥

देवसिंह सिरदार जय रु राधय मिते जहँ ॥

विरचत दुवर्द्धल वंधि तुमुल थल रंग जंग तहँ ॥

सत्तन खलीनें खंचिय अरुन चुक्कि संकति फनिपति चक्रिय ॥ ११० ॥

दुवर्द्धाम अधिक संजोग सुख तैदिन चक्रक चक्रिकन तक्रिय ॥

जिम दोशाचल लैन उठयो अंजनि सुत लासक ॥

अचवनें जिम अंभोधि विदित आतापि विनासक ॥

चंडी जिग चंडपर खान मुष्टिक संकरखनें ॥

पन्नगपर कि भुपर्णा गरवि तैम हिमकर आसन ॥

इम बैरिसल्ल कुल्ल उदरन लारि समीप नैरव न्तिचउ ॥

मानों कि भीम हड पय सुररि दुस्सासन उप्पर डिचउ १११

भुजंगप्रयातम् ॥

मिन्ने बाँहिके भानुके वंस मज्झी, दुहूँ फोजमें जोरतें मोरें वज्झी

दुहूँ तोरके जोरतें भुम्मि दव्वी, इतें थोभुखा भेरि वज्जे अरव्वी ११२

भयो सेस रंकेसके वेस भिन्नों, किंटी दंतुली टारिकें तुंड दिन्नों ॥

कडयो व्वाल पाताल त्राता नं काऊ, सख्यो वेच्छ वीभेच्छ दोले-

थं सोऊ ॥ ११३ ॥

हठी जूँटतें मेरुके कूँट हल्ले, चहूँ कोदें सप्तोदके थोत चल्ले ॥

भजे लोक स्वर्गादि लोकेसं भों नें, जगें ईमकाँ सीसके लाभा लीने

भये राग सिंधूनके लोग भिन्ने, नची जुग्गिनी ताल वेतात्त दिन्ने ॥

खिरें हडुपें खग्ग बुल्ले अखंडें, मनों फग्गमें चंडरी दंड मंडें ॥ ११५ ॥

उभैर मंडली धाव बाजी उडावै, उभै वारकी मारमें नाहि आवै ॥  
इतै लज्ज बुन्दीसकी ठाकि ठिल्लै, उतै ख्यालह जैसिंहके जोर  
खिल्लै ॥ ११६ ॥

उभै जेठके भानके माने उगगे, परै फोजके अजेके अंसु पुगगे ॥  
वकी डाकिनी डक्क डैरौ बजाये, घने भेदके मेद भैरौ अघाये ११७  
फिरै फेकरी चंड फेरंड फुल्ले, भिरै भूत के रंतमें मत्त भुल्ले ॥  
भ्रमै गिद्धनी चिलहनी मेद भख्लै, रमै पंकमें कंक ना संक रक्खै  
तपै रंगे बाजीनके तंग तुष्टै, छिपै भीरुं बिदाव के चाव छुष्टै ॥  
उलट्टी नटीलौ गिरै को उछुष्टै, फिरै रीस के ईसके सीस फष्टै ११९  
कटी के पंताका उडी अंभ कष्टै, चंमू मेघके जोर ज्यौ मोर चष्टै ॥  
भ्रुकै अंड वेतंडपै बांत अंपै, किधौ सैलके संग खज्जूरि कंपै १२०  
बन्यौ संकुली सत्थ लै बंथ बाही, निभयो पोनपै वहाँ सदागोन नाही ॥

१ दौड़ में २ घोड़ों को उडाते हैं सो दोनों ओर के प्रहारों में नहीं आते इधर तो बुध-  
सिंह की लज्जा के अर्थ (कि हमारे कारण से ही उसकी लज्जा रह जावे) शशुओं  
के ठोक कर ३ हटाते हैं और अधर जयसिंह के जोर से लड़ाई का अंजक खेलेते  
हैं ॥ ११६ ॥ दोनों ही ज्येष्ठ मास के सूर्य के ४ समान उदय हुए जिनकी ५  
ताप की ६ किरणों के पहुंचने से सेना गिरती है उन फौजों के गिरने से डा-  
कनिये डैरव बजाकर घकने लगीं और बहुत प्रकार के ७ मांसों से भैरव ८  
पुष्प हुए ॥ ११७ ॥ स्यालनिये फिरती हैं और भयंकर ९ स्याल फूलते हैं १०  
अधिर में मस्त होकर श्रुते हुए शून परस्पर भिड़ते हैं और उडती हुई श्रीधनि-  
ये और बीलहें भांस खाती हैं उस लोही भांस के कीण्ड में कंक [हीच] पक्षी  
निःशंक होकर क्रीड़ा करते हैं ॥ ११८ ॥ ११ युद्ध में तपे हुए घोड़ों के तंग तूट-  
ते हैं १२ कायर लोग भागकर उत्साह छोड़कर क्षिपते हैं और क्षितने ही उल-  
टी हुई नटी के समान उलट कर गिरते हैं और क्रोध करके शिथ की गुंडमा-  
ला में गणहृण मस्तक भी फटते हैं ॥ ११९ ॥ १५ सेना में कटी हुई १६ दबजा  
जैसी दीखती है जैसे मेघ के जोर से १७ आकाश में मयूर चहते हैं १७ पवन  
लगने से १६ हाथियों पर कड़े ऐंसे दीखते हैं जैसे १८ पर्वत के शिखर पर ख-  
जूर का वृक्ष कांपता है ॥ १२० ॥ २० एक दूसरे को सुजाधों में भरकर यह  
सेना ऐसी १९ सरगई कि जिसमें होकर पवन का २१ सदागोन [निरंतर ग-

गद्दे कोदं कट्टार के पार गोदें, खुरों बाजि के घुम्बिकें भुम्भिखोदें  
 फिरें के गदा मारि गें मत्थ फारें, चिरें कुंभं मुत्तीनको रंगचोरें ॥  
 कटें हाथि होदेनके उर्छ कच्छो, मुरें तारकी वग्ग ज्यों बरमच्छी  
 किते कुप्पि होदेनमें सूर कुदें, मगोरें निंसादीनके कंठ सुदें ॥  
 भिदें त्यों गजाजाविके जीव भुल्लें, बढे मोदमें के पदप्रल्ले बुल्लें १२३  
 नदें<sup>२२</sup> भंभंकी फुट्टि भेगी नगारे, बढें के बिदारें दहा हाय हारे ॥  
 चढी अग्नि जंगी चिनगी चमकी, सिकींकार संसारकी बुद्धिसंकी  
 तपें पकखरी बाजि दज्जकें तरकें, जपें राम के घुम्बिकें भुम्भिजकें  
 खिरें हड्ड के झुंड के खंड खंडी, मनो बुद्धि ओरेनकी भेष मंडी ॥२५॥  
 चलें रोपें त्यों चाप जीवों चट्टें, नचें खेचरी भूचरी प्रान<sup>२२</sup> नट्टें ॥  
 बहें वेगते तेग सैनाह बहैं, किधों सैबुकी पंतिमें तंति कट्टें ॥

मन] नहीं होसका "पवन का नाम ही सदागति है वह मारिक नहीं हुआ"  
 कटार ग्रहण करके उल्ला १ कोना [नोक] सांस में २ पार करते हैं और कि-  
 तने ही घोड़े फिर कर भूमि का छोड़ने हैं ॥ १२१ ॥ कितने ही गदाओं से  
 ३ हाथियों के भस्तक फाड़ते फिरते हैं और चिरेहुए ४ कुंभस्थलों से ५  
 मोतियों का रंग घुराते हैं अर्थात् हवेत रंग के मोतियों को रुधिर से लाल  
 कर देते हैं ७ घोड़ों को हाथियों के हादों से ६ ऊपर निकालते हैं वे घोड़े  
 सूत के तार की वाग से ८ पानी में मच्छी जुड़े तैसे खुड़ते हैं कितने ही धी-  
 र क्रांध करके हादे में कूड़ते हैं ९ हाथी के सवारों के कंठ धरोड़ कर प्रसन्न  
 होते हैं १० कितने ही महावत भिदकर जाय खूलते हैं कितने ही हाथियों के  
 ११ पैरों में दब कर सूछिन होकर बोलते हैं ॥ १२१ ॥ १३ भंभं [फूटे वाजे के शब्द का  
 अनुकरण है] करके कितने ही १४ नोयत और नगारे १२ वजते हैं कितने ही फ-  
 देहुए हाय हाय करते हैं १५ युद्ध संबंधी अग्नि चढ कर उसकी चिनगारियें  
 चमकीं जिन ही ज्वाला से ११ जल कर संसार की बुद्धि संकित हुई ॥ १२४ ॥  
 पालरों वाले घोड़े तप कर १७ जलते हैं तडकाने हैं अथवा हूदते हैं और कि-  
 तने ही राम राम करके घूम कर भूमि पर १८ गिरते हैं कितने ही हाडों के  
 झुंड दुकड़े हुकड़े होकर खिरते हैं सो मानों भेष ने १६ ओळों (गडों) की वृष्टि  
 रची है ॥ १२६ ॥ ज्यों २० वायु चलते हैं त्यों पलुष की २१ प्रलंबचा चटकती  
 है खेचरी भूचरी [देवी की दासी विशेष] नचती है और प्राण २२ नष्ट होते  
 हैं वेग से तरवारें पहकर २३ कायज कटते हैं सो मानों २४ लायन की पंक्ति

करें सुंडि हत्थीनके सुंड कुकै, कटें प्रीथ बाजीनके कंक कुककै  
 भई हंधि त्रैलोक्यको सुंधि भारी, छई स्वर्गकी सीमला भीमछारी  
 तकै वीर कायारस आयास तंद्रा, चढी राति सोपै अर्मा नष्टचंद्रा॥  
 सजी देव त्रैजामके पुब्ब संका, वनै भानकै विष्फुरी चंद्र बंका॥  
 सबै संकुली धंदांत संग्राम सीमा, भँचकी फिरी अर अंगार भीमा  
 दिपै वहाँ कटारी उडो अँभ दीसी, सुही चंद्रको मोहिनी रोहिनीसी  
 जरै गैन गिद्धीनके नैन नँककी, सुही मँगकी तीनइतारा थरककी  
 उडै हीर जो काँलिनी इरक १ उगगै, प्रभा जासँ अंधारपै मारपुगै  
 क्रमै गैन के भउ जँया जोर कहँ, गृहाकारि आदित्य जे च्यारि ४ चहँ  
 छुटयो कट्टि त्रैमूल उडोनि छोहँ, सुही तीनइतारीनतै पुष्य सोहँ॥

में तांत निकलती है ॥ १२६ ॥ सुंडें कटने से हाथियों के समूह झुकते हैं और  
 घोड़ों के १ फुरखे [नासिका] कट कर २ सांसाहारी पत्ती पिछेप कूरते हैं  
 इसप्रकार तीनों लोकों को ३ गोक कर भारी सुंधि हुई और वह ४ भयंकर  
 भस्मी स्वर्ग की सीमा तक छागई ॥ १२७ ॥ ५ शरीर के साथ ६ परिश्रम  
 होने से वीर ७ आलस्य अथवा निद्रा को ताकते हैं उस समय नष्टचंद्रा ८  
 अथावास्या के समान दिन में ही रात्री होगई ९ रात्रि के पहिले ही देव ने  
 यह १० संघ्या कर दी जो ११ सूर्य के बिना और चंद्रमा से १२वांरु (वंध्या)  
 रात्री वही ॥ १२८ ॥ संग्राम की सब सीमा १४ अंधरे से १३ भरगई उस स-  
 मय उवाला और १६ अंगारों की १७ भयंकर १५ नक्षत्र मंडली [तारा मंडल]  
 फिरी. 'अब यहाँ नक्षत्रों का रूकन वर्णन करते हैं' यहाँ १८ आकाश में चढी  
 हुई कटारी दीखती है सो ही चंद्रमा को १९ मोहनेवाली रोहिणी शोभा दे-  
 ती है 'रोहिणी चंद्रमा की छी है इसकारण उसको चंद्रमा को मोहनेवाली  
 कही है' आकाश में भीधनियों के नेत्र और २० नासिका जलते हैं सो ही २१  
 सृगसर नक्षत्र के तीन तारे ठहरे. वहाँ हीरा उडता है सोही २२ आर्द्रा नक्षत्र  
 का एक तारा उदय हुआ २३ जिसकी क्रान्ति की मार अंधरे पर पहुँचती है  
 ॥ १३० ॥ किनने ही तीरों के भाले २४ प्रत्यंचा के जोर से निकल कर आकाश  
 में फिरने हैं सो २५ धा के आकार २६ पुनर्वसु के चार तारे चहँ हैं छूटा हुआ  
 त्रिशूल कट कर २७ नक्षत्र शोभा देता है सोही २८ पुष्य नक्षत्र के तीन तारे  
 दीखते हैं [पुष्य नक्षत्र त्रिशूल के आकार है] १३१ ॥

छुटें चक्र वही बक्र आयास छाजें, भुजंगी भ जो पंचधनारेन जाजें  
गृहाकारवहें पंच अंगार उडें, मघा जो मनों हंकि आई हंडुहें ॥

जरते उडें कालिका पालिकापै, ति पुंबोत्तराफगुनी रिच्छ द्वैरद्वै  
उडें आ जैं हंत्य लग्गी अंगारी, भं पंचील जो हस्त नक्षत्रभारी  
वडें अंभ सुती बनै इकक १ बित्रा, प्रवालीं वडें रंदाति इककें १

पवित्रा ॥

धकंती कंधी अंबतैं अंभ धावैं, बिसाखा सु चोधरिच्छंकाखीव-  
नावैं ॥ १३४ ॥

उडें त्यों तिते मॉनके के अंगारे, ति ज्यों धितैं नच्छत्रके चवारिधतारे  
चली कानतैं कुंडली व्योभं चानों, सुनासीरके रिच्छंके ते भैं तीनां ३  
इली बक्रपैं रुद्र संख्या ११ अंगारे, ति ज्यों सिंहलंशूज त्यों मूचतारे

टेहे चलने के परिभ्रम से चक्र छूटना है सो ही रक्षक के आकार वाले [अश्लेषा] ३  
नक्षत्र के पांच तारे ४ शोभा देते हैं (मनांतर से अश्लेषा के छ तारे भी मानते  
हैं) ५ घर के आकार होकर पांच तारे उडते हैं सो ही मनों मघा नक्षत्र चल  
कर ६ हंडुडा [गोलकुंडला] खल विशेष पर आई है ॥ १३२ ॥ ७ कालिका  
देवी के ८ पलंग पर जलते हुए अंगारे उडते हैं ९ वे पलंग ही १० पूर्वाफा-  
ल्गुनि और उत्तराफाल्गुनि नक्षत्रों के दो दो तारे बनते हैं [ये दोनों नक्षत्र  
दो दो तारों के होते हैं] कटे हुए ११ हाथों के अंगार लग का उडते हैं सो १२  
हस्त नक्षत्र के १३ पांच तारे हाते हैं [हस्त नक्षत्र हाथ के आकार होता  
है ॥ १३३ ॥ १४ आकाश में मानी चढता है सो ही बित्रा नक्षत्र का एक ता-  
रा होता है आकाश में १५ अंगार चढता है सो १६ पवित्र रवाति नक्षत्र का  
एक तारा होता है १७ घोड़े के मुख से जलती हुई १७ लगाम १९ आकाश  
में जाती है सो २० चार तारों के विशाखा नक्षत्र का २१ डोल (आकार) ब-  
नाती है ॥ १३४ ॥ २२ उतने ही प्रमाख के तिलनरु अंगारे उडते हैं २३ वे २४  
अनुराधा नक्षत्र के (चामर दंड के आकार) चार तारे हाते हैं कान से चली  
हुई कुंडली २५ आकाश में दीवती है सो कुंडल के आकार २६ इंद्र के २७  
नक्षत्र (ज्येष्ठा) के तीन २८ तारे हैं "ज्योतिष में ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता रुद्र  
है" ॥ १३५ ॥ २६ टेही तरवार पर ग्यारह संख्या के अंगारे हैं सो ३० सिंहपु-  
च्छ के आकारवाले ३१ मूल नक्षत्र के तारे हैं

जैसे अबम गौदंत दो आरसौ जो, दिपै पुब्वयाखाठ सोऽरिच्छ द्वैरको  
 अंगारी उभैर अबम काहू उछारी, कठे उत्तरा द्वैरभ मंचानुकारी ॥  
 इतमें उडै अबम औरै अंगारे, त्रिकोणाभ जे ते भिजिं तानइतारे ॥  
 भौ गोविंदको ज्यौ कहयो मग्ग त्यौ भो, मृदंगे लखयो चो ४ ध-  
 निर्घठा भ ज्यौ भो ॥

उडै चर्म सो १०० चंद्र माला अरोहयो, सुही वृत्त बारीसको रिच्छे  
 सोहयो ॥ १३८ ॥

महोरारि अकेदुके संग मन्ने, छदतारे रहे कृत्तिका अंत छेत्रे ॥  
 त्रिजामाहि पुंवा भई यो त्रिजामा, परी फैलि ज्यौ अस्त्रउद्देद पामा  
 हठी वीर जोसिंहके घूँक हुक्के, कुँहूँ सालमी सूर फेरुँ कुक्के ॥  
 फिँ गंगली यंगुली गिद्ध फुल्लै, भ्रमै पिंगला सेन भौ लेन भुल्लै ॥ १४० ॥

आकाश में ३ तारी के दंतारा १ आर के दंत जलते हैं सो (गज दंत के आकार) १ दा-  
 तारा का १ पूर्वाषाढा नक्षत्र होता है ॥ १३६ ॥ १ आकाश में दो अंगार किसीन उछा-  
 ले सो २ उत्तराषाढा नक्षत्र के दो तारे ३ मंच के आकार हुए आकाश में और अ-  
 नारे उडते हैं सो ४ त्रिकोण के आकार ५ अभिजित नक्षत्र के तीन तारे दी-  
 खते हैं ॥ १३७ ॥ ७ विष्णु भगवान् का ६ नक्षत्र "ज्योतिष में अवश नक्षत्र  
 के देवता विष्णु हैं" तारा के आकार अश्व नक्षत्र हुआ ८ मृदंग के आकार  
 खार तारा का धनिष्ठा नक्षत्र हुआ ९ हाल के ऊपर के चांद (फूल) १० चंद्र हुए  
 उडते हैं सो ही ११ गोलाकार सो तारा का वरुण का १२ नक्षत्र शतभिषा  
 शोभायमान है "ज्योतिष में शतभिषा नक्षत्र का स्वामी वरुण है" ॥ १३८ ॥  
 १३ उस काल रात्रि में १४ सूर्य चंद्रना के साथ माने हुए इसकारण कृत्तिका  
 नक्षत्र के अंत तक पूर्वाभाद्रपद १ उत्तराभाद्रपद २ रेवती ३ अश्विनी ४ भर-  
 णी ५ कृत्तिका ६ ये छः नक्षत्र १५ छुपे रहे अर्थात् नहीं दीखे "ये नक्षत्र वैशा-  
 ख मास में सूर्य के आस पास रहते हैं और अमावास्या का दिन होने के प्रा-  
 रण सूर्य चंद्रना का साथ होना लिखा है" १६ रात्रि के १० पहिले ही इसप्र-  
 कार की १ दरारि हुई यह ऐसी फैली कि जैसे १९ रुधिर में पाला रंग २० प्रकट हु-  
 या ॥ १३६ ॥ जयसिंह के धीरों रूपा १ उल्लू वाले २२ उस मष्टचंद्रा अमावा-  
 स्या में २३ सालमसिंह सम्बन्धी २४ गीदड़ वाले २५ भागलों (भागनेवाले-  
 कापरों) रूपी २६ रागल (चमगौदट) प्रफुल्लित हुए २७ वह सेना का चर पची  
 फी २८ प्रान्ति को लेना नहीं भूलकर अमती है ॥ १४० ॥

भन्यौ वैरिसल्लोत भूतेसं भायो, जग्यो देवक्रव्याद जो जैत जायो।  
नरुजात सैं गात थौ लीलिलिन्नौ, नही ईस जच्चयो सु पै सीस  
दिन्नौ ॥ १४१ ॥

[ दोहा ]

गिरत गिरत नारव गजब, हुँत मंडिग सिरदार ॥  
देवसिंह किय छकित दै, असि उपवीत उतार ॥ १४२ ॥  
अब सुँ देव हनि नारवहिँ, खाय इक्क तस खग्ग ॥  
धप्यो प्रबल हरबल्ल धुँर, फिरत मचावत फग्ग ॥ १४३ ॥

( षट्पात् )

अग्गै तच्छकै उरग बहुरि पय पुच्छ विदब्बियं ॥  
अग्गै बरँ बारूद छोरि पाँबक सिर छब्बिय ॥  
अग्गै दिनेकर असह सुररि उत्तर मग लिद्धो ॥  
अग्गै छुधिते मयंदे बहुरि विच्छिय अँल विद्धो ॥  
अग्गै सु देव आहव अडर अरु नारव अति उप्फन्प्यो ॥  
जयसिंह मान भंजेक सँजव बेतालन रंजेक बन्यो ॥ १४४ ॥

[ निःशाखी ]

१ वैरीशाल के वंशवाला २ शिव के सन भाया ३ देवसिंह  
“क्रव्याद् सिंह” इति शब्दार्थचिन्तामणिः ॥ ४ जैतसिंह का पुत्र (देव-  
सिंह) जमा ५ नरुका से ६ गात्र (शरीर) ७ लीला (खेल) से =  
शिव ने उसका मस्तक नहीं माँगा ६ परन्तु ॥ १४१ ॥ १० नरुके सरदा-  
रसिंह ने ११ शीघ्रता की १२ तरवार से जनेऊ दी (जनेऊ के आकार शरीर  
को काट देने को जनेऊ उतार कहते हैं) ॥ १४२ ॥ ११ वह देवसिंह १४ नरुके  
को १५ प्रथम ॥ १४३ ॥ पहिले ही १५ तत्काल सर्प था और फिर चरण से उस  
की पूँछ को १७ दवाई १८ पहिले ही श्रेष्ठ बारूद था और फिर १९ अग्नि के ऊपर  
ढाँचा २० पहिले ही नहीं सहने योग्य सूर्य था और फिर झुड़कर उत्तर दिशा  
का मार्ग लिया २१ पहिले ही झुड़ा २२ सिंह था और फिर बीछ के २३ डंक  
से बीधा गया इसप्रकार देवसिंह पहिले ही २४ युद्ध में निर्भय था और फिर  
२५ नरुका सरदारसिंह बहुत बड़ा इसकारण जयसिंह के मान को २६ मिटा-  
नेवाला होकर बेतालों को २७ शीघ्र २८ प्रसन्न करनेवाला हुआ ॥ १४४ ॥



नारवकों देवा निगलि अग्गें उफनाया ॥  
 इत नरउर नृप के सचिव चालुक चंपाया ॥  
 प्रेमसिंहहू वै पल्लट हुत दाव दिखाया ॥  
 झल्लरिलौ झननंक ते तेगा तरकायां ॥ १४५ ॥  
 सूरौं डूरौं सत्यन्है गलबत्थ मिलाया ॥  
 खंडेराय खिलहारहू रन फग्ग रचाया ॥  
 पातं गदा के पुंठली फटकार फनाया ॥  
 घाय हब्बकें रंग के जलजंल चलाया ॥ १४६ ॥  
 खेह गरही मेहलौं अंबीर उढाया ॥  
 फूल कलेजे फिफरे फवि फांक फुलाया ॥  
 गोली गोटे गुलालके बहुओर चढाया ॥  
 डेरौं डिडिम डाकिनी डफ डक बजाया ॥ १४७ ॥  
 गनिका ज्यौं नचि जुग्गिनी थेई थरकाया ॥  
 भैरौं गायक भायकें आलाप उठाया ॥  
 नाथाउत प्रेमहु निडर खग खेल खिलहाया ॥  
 दोऊ फग्ग उदग्गमें इम कोतुक आया ॥ १४८ ॥

नरुके को खाकर देवसिंह आने १ बडा २ सोलंखी का दवाया ३ शीघ्र ४  
 खज्ज विशेष ॥ १४५ ॥ वीरों और ५ अप्तराओं ने साथ होकर ६ उस फाग  
 में कितनी गदाओं का पड़ना ही ७ पोटली का फटकारना ८ शोभायमान  
 हुआ और कितने ही घाय उबरते हैं सो ही रंग के ९ फुहारे चलाये ॥१४६॥  
 मेघ के समान अंधेरा करके धूल उड़ती है सोही १० गुलाल उड़ाई उस युद्ध में  
 कलेजे और फेंकरो की फांके हैं सो ही फूले हुए फूल हैं और गोलियों रुबी  
 ११ गुलाल गोटे चौतरफ चहाए और भैरव के वाच डैरव और डाकिनियों  
 के वाच डिडिमियें चजे सो ही उस फाग में डक बजाये ॥ १४७ ॥ और वैश्या-  
 दों के समान थेई थेई करके जोगिनियें चलीं और वाचन ही डैरवों ने १२  
 कलावंतों की भांति आलाप ली, नाथात्त प्रेमसिंह ने भी निर्भय होकर त-  
 रवार का खेल खिलाया १३ उदग्ग (उधलते हुए शस्त्रों की धधका निरंकुश  
 फाग में इसप्रकार खेल पर आये ॥ १४८ ॥ इसप्रकार तीरों से घालियों को

छेदैं तीरन छत्ति यों बीरन विरमाया ॥

सैल घमाकों संकुले छाकों कि छकाया ॥

दोऊरमारत दाव जे घन घाव छुमाया ॥

नरउर मंत्री प्रेमकाँ बहु वार बचाया ॥ १४९ ॥

खंडे खंडेशयके हुत प्रेम दबाया ॥

चंचल चंड चमकिकैं ग्रीषा गरकाया ॥

सिवकाँ दै सिर प्रेमका गतप्रान गिराया ॥

चालुककाँ नरउर सखिव हनि यों रु हकाया ॥ १५० ॥

देखि निरंकुस देव इहिँ सजिन लसुहाँया ॥

धर दोउन धमचक्रदैं फनमाल फिराया ॥

हहून मंसँ निहारही हहू हठ आया ॥

जिम लगैं तिम लौ चलैं खग पान पचाया ॥ १५१ ॥

कंकट टोपों कटिकैं कठि जात अधाया ॥

ज्यों सबनीमँर सब्हुमें चहि तंत्र चलाया ॥

यों असि उच्छट देवकी रन चित्रै रचाया ॥

खंडेराय खिल्हारकाँ खगों बल खाया ॥ १५२ ॥

( दोहा )

नरउर पतिको सचिव हनि, खंडेराय सु नाम ॥

बहुरि देवसिंहह बढयो, कूरम दल जय काम ॥ १५३ ॥

( षट्पात् )

छेद कर वीरों को १ बिलसाया (आनंद पूर्वक ठहराया) भालों के प्रहार २ मर गये (अवकाश रहित होगये) लो मानों मय के प्याजों से तुम किया हैं ३ प्रेमसिंह का ॥ १४९ ॥ प्रेमसिंह को खांडेराव ने ४ तरवार से शीघ्र दबाया ५ गरदन में छुल गया ६ लम्बुख आया ७ जहाँ तबु हठ पर आते हैं तहाँ क-  
हियों पर मांस नहीं रहता तरवार के पाण से पचाया हुआ मांस जहाँ से तरवारें लगती हैं तहाँ से छे जाती हैं ॥ १५१ ॥ वे खड्गदलय चक्र और टोपों को काट कर १ भूखे ही निकल जाते हैं जैसे कि १० खाजन देखनेवाला खानत में तांत चलावै वह झुकी ही निकल जाती है ११ युद्ध में आरंभ किया ॥ १५२ ॥

महाराम नृप \*माम मूढ पहिलैं जु पलङ्गयो ॥

सुत ताके संग्रामसिंह कूरम दल कट्यो ॥

करनसिंह कछवाह बाहि तिहिं और चलायो ॥

पानी मानहु प्रलय उदधि सत्तन उफनायो ॥

रामकात खग्न आरत रूपटि बाँजि दपटि सम्मुह कट्यो ॥  
त्रयनैर्न निरखि बय रैय तदिनें पय पय प्रति जय जय पढ्यो १५४

इत संग्राम असंक करन कूरम उत उदत ॥

इत बुंदिय जय आस उत सु जैपुर जय इच्छत ॥

दोऊ जुरि जस बाव घाव खग्न घाव छुमाये ॥

बहुरि मान अच्छरिन लुब्धिम आयास लुभाये ॥

वीर रु रउट्ट वीभंछ्छ बलि अति अचिञ्ज रस उप्पज्यो ॥

नञ्जत अनेक सुंडन निरखि भालचंद्र तदिन भज्यो ॥१५५॥

करभन ग्रीवा कटत उनहिं बेताल उठावत ॥

अंत्र तल्ल आरोप बीन लय लीन बजावत ॥

मनुजैन रुंड मृदंग डोल बज्जत हय डँडहर ॥

गोमुख गति गज सुंडि मचत संगीत मनोहर ॥

॥ १५३ ॥ \*राजा बुधसिंह का मामा. मानों सातों ? लसुद्रों से प्रलय का पा-  
नी वहां २ घोड़े दौड़ा कर ५ उम्र दिन ३ शिव ने अवस्था का ४ वेग देख कर  
पग पग प्रति जय जय का शब्द पढा ॥ १५४ ॥ ६ कछवाहा करणसिंह उपत्ति-  
यों की दौड़ से घूमे ८ फिर इन लोभियों (अप्लराधों से विवाह करने के लो-  
भियों) ने ९ अपने युद्ध के परिश्रम पर उनमानवाली अप्लराधों को विवाह  
के लिये लोभ युक्त की वहां वीर रस, गौड़ रस, १० भीमत्स रस और ११ आ-  
श्चर्य (अद्भुत) रस उत्पन्न हुए और शिव की सुंडमाजा में अनेक नस्तकों को  
नाचते हुए देख कर राहु से प्रहस्य होने की मुंका करके १२ शिव के ललाट का  
चन्द्रमा उस दिन भागा १५५ ॥ १३ ऊठों की गरदन कटती हैं जिनको उठा-  
कर उनके आंतों की १४ तांत पका कर पेनाल लय में लीन होकर उस बीया  
को बजाते हैं १५ मनुष्यों के रुंडों की मृदंगों और घोड़ों के १६ अस्थिपंजरों [ह-  
ड्डियों के पीजरों] के डोल बजाते हैं हाथियों की कटी हुई सुंडों को १७ गोमुखों

गायत पिसाच जुगिनि गंहकि लहकि सुसिर आनइ तत ॥  
करि ताँल खंड सीसक किलकि हल्लीसक डाकिनि हलत १५६  
( दोहा )

रन दोऊ या विधि रचत, सजि करन रु संग्राम ॥  
आजि न रुके लै अडर, ताजिन बग्ग तमार्म ॥ १५७ ॥  
कुपि इनिय कूरम करन, सोलंखी उर संगि ॥  
प्रतिभट पर अति भट यहहु, इततैं बढिय उमंगि ॥१५८॥  
भारिय खग चालुक भपटि, चैल ह्य दपटि अचूक ॥  
किय सिर कूरम करनको, टोप सहित द्वै टूक ॥ १५९ ॥  
हनि याहि रु भल्ला हुकम, खिञ्चिय सेर खपाय ॥  
लिय अब गाम रसौर पति, घासीराम निरौय ॥ १६० ॥  
कूरम घासीराम तब, सिर भारिय सैमसेर ॥  
कहत खिनै वह सिर कियउ, सिव निज माल सुमेर १६१  
समर परयो संग्रामको, देवसिंह द्रुत देखि ॥  
कूरम घासीरामको, पूगो सम्भुह पेखि ॥ १६२ ॥  
देवसिंहके उर दुसह, द्रुत कूरम खग दीन ॥  
पैठो कटि नागोद पुनि, तरकि पंसुली तीन ॥ १६३ ॥  
इहि अंतर देवहु अतुल, तस सिर भारिय तेग ॥ १६४ ॥

(बाध विशेष) की भांति लेकर मनोहर संगीत मन्थाते हैं जहाँ १ प्रस-  
जता की धोली से पिशाच और जोगनिये गाती हैं तहाँ २ फूँक से बजने  
वाले (बशी आदि) ३ खाल से बढे हुए (दोल आदि) वाले यज्ञ कर, फटे हुए  
मस्तकों के ४ ताल मजीरे करके ५ घूम के नाच से किलकारी करके डाक-  
निये चलती हैं (स्त्रियों के समूह के नाच का नाम हल्लीसक है) ॥ १५६ ॥ ६  
युद्ध में नहीं रुके ७ घोड़ों की बागें ८ करड़ी, करके (घोड़ों की बागें करड़ी  
करना दौड़ाने का लुचक है) ९ कछवाह करणसिंह ने क्रोध करके १० बरछी  
बाध पर वह अत्यन्त बीर इषर से बठा ॥ १५८ ॥ ११ अंचल घोड़े को दौड़ा  
कर ॥ १५९ ॥ १२ रामीप ॥ १६० ॥ १३ खड्ग १४ समय १५ अपनी मुंडमाला को  
सुमेर ॥ १६१ ॥ ॥ १६२ ॥ १६ बंदर का कथय [पेटी] कंड कर ॥ १६३ ॥ १६४ ॥

हनि रसोर पतिकों हुलासि, बढ्यो बहुरि अति बेग ॥ १६४ ॥  
 हरियसिंह तौवर हठी, पुनि जहव परताप ॥  
 करनसिंह रटोर कुल, ये अरि पिक्खि अमाप ॥ १६५ ॥  
 \*लिखत इन्हें मानहुँ लिखे, खग मंसिचान ऽखरकोन ॥  
 आयो देव सु उप्परहि, प्रलय माँहि जिम पोन ॥ १६६ ॥  
 तवहि देवके खंध तकि, तौवर आरिय तेग ॥  
 तीनन इइन हनिकें तऊ, वीर न भो हत बेग ॥ १६७ ॥  
 जैतसुवन के इस जबर, तीनइल गिप तरवारि ॥  
 अरु खटइभट आमैरके, मरद लये रन मारि ॥ १६८ ॥  
 अब सु देव अति लोह छकि, परयो मूरछित प्रान ॥  
 हूरनकों हौसहि रही, यँह आयुहि बलवान ॥ १६९ ॥  
 सालम दल सागर मथ्यो, अभय देव अति लाग ॥  
 तोउ न लह्यो जय रतन, यँह बुंदीस अभाग ॥ १७० ॥  
 सठ सालम इक खाल बिच, दुरयो रह्यो भय दाव ॥  
 बुंदिय दल सम्मुह बडे, आमैरे उमराव ॥ १७१ ॥

(षट्पात)

परसुराम परिहार जोध चालुक अति जुष्टिय ॥  
 साँवल गोर सजोर रूप चालुक्य अहुष्टिय ॥  
 जोरावर नरु बंस लरिय चालुक्य सुरत सह ॥  
 बलि हड्डा बखतेस उदय चालुक लिय अगर्ह ॥  
 जगभानु हड्ड उदत जुस्यो कूरम पृथ्वीसिंह सन ॥  
 सजि माँहि माँहि दुव दल सुभट लगगे इस लगगन खरन ॥ १७२ ॥  
 ॥ १६५ ॥ \* देख करों देखे; † सिचान (वाज, शिकरा) पच्छि ने ‡ तीतर  
 पच्छियाँ को ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १ जैतसिंह के पुत्र के ॥ १६८ ॥ २ अप्सराओं  
 को इसके बरने की चाहना ही रही अर्थात् मरा नहीं ॥ १६९ ॥ ३ समुद्र को  
 ४ जय रूपी रतन नहीं मिला सो बुधसिंह का अभाग्य था ॥ १७० ॥ ५ नाले में  
 बिपा रटा ६ आमैर के ॥ १७१ ॥ ७ लडे द आने ॥ १७२ ॥

[ त्रिः शास्त्री ]

दोऊ और दुबाह यों असि बाह अछकैं ॥  
 डेरों डाहलें डिंडिमी डक्यों डक डकैं ॥  
 सेल भचकैं संकुले अति घाय उबककैं ॥  
 सीस कपाली संग्रहैं काली सु किलकैं ॥ १७३ ॥  
 खूब बजाई खगनैं धारा धमचककैं ॥  
 कुककैं क्रोड़ करसहिकैं कमठेस मचककैं ॥  
 नीसासा नासानुगी आसांगज तककैं ॥  
 भोगी भोगि न झिलिसकैं भुम्मी अकबककैं ॥ १७४ ॥  
 चौहों दिस रोहों रुके छोहों भट छककैं ॥  
 जँडे जंजीरन जरे बडे गज बककैं ॥  
 ताँजी तंगन तोरिकैं फालों फररकैं ॥  
 मेह अहंवर मंडती रज अंवर ठककैं ॥ १७५ ॥  
 के सूरन थकैं कलह के हरन तककैं ॥  
 गात नमावैं गिद्धनी गिलि गूद गजकैं ॥  
 के घायक पायक कटैं सायक सकसकैं ॥  
 खंधे खेलह खिलहारके भट सेल भचकैं ॥ १७६ ॥  
 खंड चटकैं खुप्परी लागि लुत्थि लटककैं ॥  
 सेलों मार सुमार वडे असवार उबककैं ॥  
 धुकि हथी धीरन धरैं जंजीरन जंककैं ॥  
 लंकलककैं बरछी लगत छलि घाय छककैं ॥ १७७ ॥  
 रीस बटकके अगके के सीस पटककैं ॥

१ वीर २ बाघ विशेष ३ अश्वकाश रहित ४ शिव ॥ १७३ ॥ ५ वराह ६ नासिका के साथ  
 चलनेवाले निश्चाल से ७ दिशाओं के हस्ती ८ शेष नाग ९ व्याकुल होकर  
 -फलों पर भूमि नहीं भेल सका ॥ १७४ ॥ १० चारों दिशा ११ रोक से १२ क्रोध  
 १३ जाड़े [मोटे] १४ घोड़े ॥ १७५ ॥ १५ खारभंजन [द्विग] १६ बाण ॥ १७६ ॥  
 १७ जंजीरों से बांध कर पकड़ लेते हैं १८ कांपते हैं ॥ १७७ ॥

के कंकट संकट कट के तेग तटकें ॥  
 सिर फट्टे धर उल्लटे कठिन नैन फड़ककें ॥  
 हय हट्टे पप उच्छटे रपे भंग रड़ककें ॥ १७८ ॥  
 लोही बूढनि लालकी धारा धकधककें ॥  
 के डाकिनि खप्पर भरे के साकिनि छकें ॥  
 चंड कृपानी चंचला चढि अब्म चमकें ॥  
 यौं अंबर आयुध उडै जिम नाग लटकें ॥ १७९ ॥  
 वीरौ वीर बरबरी तरवारि तरकें ॥  
 दो हथिन आरै दपटि के बथन हकें ॥  
 के प्रबक बंबक बजे के ढोल ढमकें ॥  
 के जंबुक मंडे केवल के कंक किलकें ॥ १८० ॥  
 के बंदी लुल्लै बिरुद रसबीर उबकें ॥  
 मूर ढरकें सम्मुही नम हूर धरककें ॥  
 तीर दुंसारौ निकखसै रनधीर रंटककें ॥  
 के मातर मातर कहै के कातर चककें ॥ १८१ ॥  
 सौर सलककें संकुली तपि घोर तुपककें ॥  
 के कंकट आटोपकें के टोपे चमककें ॥  
 धाये बहल धूमके छाये छिति ढककें ॥  
 भापि बरकें के भुकें पय कपि लारककें ॥ १८२ ॥  
 घाय हबककें के हकें हथिन हलककें ॥

१ कवच से घिर हुए रवेगहत होकर दौड़ते हैं ॥ १७८ ॥ ४ साँवन की डोकरी (वीरपछ्छटी) के समान लाल रक्त की धारा निकलती है ५ भयंकर खड्ग रूपी ६ विद्युत् [बिजुली] ७ आकाश में ८ सर्प ॥ १७९ ॥ ९ वीरों वीरों में पर १० नगारे ११ गीदड़ १२ आस (कुवा, लुकमा) ॥ १८० ॥ १३ भाट १४ वीर रस बढत १५ दोनों ओर फुट कर १६ लड़ते हैं १७ माता माता १८ कायर ॥ १८१ ॥ १९ भरो हुइ कितने ही टोप कटते हैं तब कितनेक २० कबचों को २१ मस्तक पर एक लोहे के सुत के बाहुल दौड़ कर २२ भूमि को टक देते हैं ॥ १८२ ॥ २३ हाथियों के हकें के सौ हाथियों के समूह को हजका कहते हैं

गीत अलापों जुगिनी लौ जात ललकैं ॥  
 ग्राम सुपै गंधारमें तीखे स्वर तकैं ॥  
 ज्यों नर त्यों हैवर उडैं ज्यों गैवर जकैं ॥ १८३ ॥  
 धाताँ अग निम्मानके अभिमान असकैं ॥  
 पानी भुम्मि पताललों जिम थाल थरकैं ॥  
 अग्घे अग्घे होहु यों बेंडे भट बकैं ॥  
 त्यों त्यों पय पछे लगैं छती धक धकैं ॥ १८४ ॥  
 समय घोर संहारको इहिरीति उबकैं ॥  
 कौन पिता को पुत्र यों नाँते सब थकैं ॥  
 उठवैरिबेमें इकसे मन भीतें मुरकैं ॥  
 जिम तिभ प्यारे जीवकों तजनों नन तकैं ॥ १८५ ॥  
 कलबल्ली बानी कडैं भ्रमि भीरु भटकैं ॥  
 पाय अटकैं पैगडों लारि लुँथि लटकैं ॥  
 अंत उलजकैं अंतसाँ जिम फंद जरकैं ॥  
 इक भटकैं इककों पखरैत पटकैं ॥ १८६ ॥  
 केते होदन कंगुराँ खुरताल खनकैं ॥  
 कपि कलेजे के कडैं के डंठर डकैं ॥  
 पिहि सचककैं पंसुली रीठकैं वररककैं ॥

१ गीती है २ लो भी गंधार ग्राम में तीखे स्वर से गीती है 'राग' के समूह को ग्राम कहते हैं वे तीन हैं, यथा

“षड्जग्रामो भवेदाहो मध्यमग्राम एव च ॥

गान्धारग्राम इत्येतत् त्रयमत्रयमुदाहृतम्” ॥

३ घोड़े ४ हाथी गिरते हैं ॥ १८३ ॥ ५ प्रच्छा संसार ६ मनान के अभिमान में ७ अशक्त होता है अर्थात् जितने अनुपय भारे जाते हैं इतने पीछे पनाये नहीं जाते ८ आगे बढ़ो आगे बढ़ो ॥ १८४ ॥ ९ नाश का १० स्वयन्ध ११ बचने में १२ भय से ॥ १८५ ॥ १३ कलराई छुई १४ घोड़ों के पागड़ों (रुकायों) में १५ मृतक शरीर ॥ १८६ ॥ १६ शरीर का पिजर १७ पीठ की लंबी हड्डी



केते हूल कृपानकी बौतूल बबककैं ॥ १८७ ॥  
 फट्टै मुंडन फाँक ज्यौं दारिम दररकैं ॥  
 कंध कफौणी कर कटै करकोचै करकैं ॥  
 कट्टे किरत नितंब के जिम कच्छप जकैं ॥  
 कटि जंघा सत्थी कट्टै हत्थी हनि हककैं ॥ १८८ ॥  
 वंजन प्रेत बनात के गहकांत गटककैं ॥  
 केते टोप कंटाहकैं पय लोहितं पककैं ॥  
 उंभी सिंधी अंगुली बहु सोकि बटककैं ॥  
 खाजे पूंपी खल्लके ताजे करि तककैं ॥ १८९ ॥  
 खुरमाँ खंडी खुप्पी चवखैं धँमचककैं ॥  
 भेजा भात भरायकैं गिला जात गँजककैं ॥  
 फैले घेउर पिप्परन छौंले बनि छककैं ॥  
 बुकका ठोर बनायकैं छुँकका भरि हककैं ॥ १९० ॥  
 भुँजन अैसे भूत गन करि केक किलककैं ॥  
 जिहिं वेलाँ संके जुरत वंके अकबककैं ॥

१तरवार की हूल सेरपाघड़ा (बावला) ॥ १८७ ॥ ३हुनी ४हाथ का कयच (दस्ताना) ५ कटेहुए नितंब (हुंगे) गिरते हैं सो कियों कच्छप पड़े हैं ६ नितंबों के नीचे की जाड़ी जंघा को (जांघ) और उससे नीचे की ओर खुदनों से ऊपर की पतली जंघा को सद्धी (साथल) कहते हैं ॥ १८८ ॥ प्रेत ७ भोजन के पदार्थ घना कर ८ प्रसन्नता की बोली बोल कर खाते हैं सो कितने ही कटेहुए टोपों के ९ कडाह बना कर १० रक्त रंग पानी में पताते हैं, उन में अंगुलियों रखी ११ दांवी (जम्, गेहूँ का फल) और १२ फलियाँ लेकर खाते हैं और खाल (चर्म) के ताजे ताजे खाजे १३ पुडियाँ बना कर देखते हैं ॥ १८९ ॥ १४ उस युद्ध में कटी हुई छोपरियों के खुरमे करके खाते हैं और भेजा रखी भात मिला कर १५ खारभजना (गजक) निगलते हैं फैलेहुए फीफों के घवर बना कर १६ रसिक हाकर तृप्त होते हैं और बुकों (खुदों) के ठोर बना कर उनसे १७ मुख भरकर चलते हैं ॥ १९० ॥ १८ इस प्रकार के भोजन करके कितने ही भूतों के समूह फिलकारिये करते हैं १९ उस समय टंडे पीर भी युद्ध

फाटि वक्रतर विकलरें के टोप चटकैं ॥  
 फील छटकैं फाँदते खग हड्डि खटकैं ॥ १९१ ॥  
 भुल्ले के मग भाँवरी पग पंके खचकैं ॥  
 घुम्भे खेतारपाल लो घन रत्त घुटैकैं ॥  
 चाहे रत्त चटैकैं चउसछिद्विषचकैं ॥  
 काप उभकैं के कटै करि पाय कभकैं ॥ १९२ ॥  
 लगै अंबर लायसी के घाय टपकैं ॥  
 के बटके बटके करै भटकेन भमकैं ॥  
 नाच न चुपै डकिनी लो डौच डचकैं ॥  
 ज्वाल करै के जरी गजडाल ठरकैं ॥ १९३ ॥  
 वीर वक्रतर पारके दै तीर तभकैं ॥  
 दंत दमकैं हीरैलो चिनगी कि चमकैं ॥  
 सत्त लोक उप्पर सिकैं धर सत्त धमकैं ॥  
 परि अठौ दिक्पालके कप्पाल कसकैं ॥ १९४ ॥  
 के भुक्कैं गाफिल कटै लागि नैन पलकैं ॥  
 सेस करकैं संकुली फनंपति फरकैं ॥  
 घायन सत्ये स्वास के भरि फनै भमकैं ॥  
 छोह गहरी छोरि के सिर फोरि ससकैं ॥ १९५ ॥  
 भुल्लि भटकैं के मिरै कालि खान कटकैं ॥  
 सहिलो पय मंजारलो हिंजीर ठमकैं ॥  
 वंभे ठहकैं वीरै मे के वंभे त्रहकैं ॥

कर्म की संकल और घटताते हैं १ हाथों ॥ १९१ ॥ २ अंघल (बल्लर) खाकर ३  
 लीचन में तुमते हैं ४ रक्त की घुंटे ५ पीकर ६ शरीर ॥ १९२ ॥ ७ आकाश में  
 ८ घाव ९ तरवारों से १० सुख में बड़ा आल ११ हाथियों के नीलाग गिरते हैं  
 ॥ १९३ ॥ १२ तीरों को खींच कर १३ हीरों की भाँति १४ जखत हैं १५ नीचे  
 के शानों लोह धुजते हैं १६ कपाल (खोपरी) ॥ १९४ ॥ दोप नाग की रीढ़का  
 (पीठ की हड्डी) हटती है और १७ कर्मों की धंक्ति पुनकती है १८ भाग १९ घमंड  
 ॥ १९५ ॥ २० सुख में २१ स्त्रियों के पगों के नूपुगों के समान २२ साँकलों धज-  
 ती हैं २३ मगारें २४ धार रत्त में २५ तासे बजते हैं

पिष्टि कसकैं\*कच्छपी धर धुजि धसकैं ॥ १९६ ॥  
 वे दंतुलि वाराहकी बहु भार वरकैं ॥  
 लें के घायल लेकलकी सँटि निष्टि सरकैं ॥  
 के रजपूतों बला कडैं धूनों परि धककैं ॥  
 पत्तं खरककैं जुगिनी के रत्त छरककैं ॥  
 तक्कयो जिन तैसो तुँमुजा ते फेरि न तक्कैं ॥  
 तँदिन पंचोलासपैं नर नास न थककैं ॥  
 यों बुंदी आमैरकी अति लाज अटककैं ॥  
 हड्डे कूरम हड्डेसों हरबल्लन हकैं ॥ १९८ ॥

[ दोहा ]

इहि अंतर अवसेस अथ, दुव २ नौड़ी दिवसेमें ॥

बुंदी भट छिजत बहयो, विजय कूरमन वेसैं ॥१९९॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमशाशौ बुन्दी-  
 पतिबुधसिंहचारित्रे बुधसिंहदत्तेलासिंहोभयभूपसेनासमरतद्वयप्रच्छ-  
 त्रासीनबुधसिंहकुत्सारुपापन १ चाहुमानाभयसिंहसारसोपठककूर-  
 फतहसिंहसरदाठककूरकाजूरामगुहाइपतिश्यामलदासकूर्माचलसि-  
 हबुद्धानीपतिबहादुरसिंहमारसानन्तरमरणा २ बुन्दीजयपुरवीरगन्त

\* फक्तव थी ॥ १९१ ॥ १ दाँतों २ कं.प ३ लाजजन होकर ४ धूनों के ऊपर ५  
 पत्र ६ रक्त ॥ १९७ ॥ ७ संकुलित बुद्ध ८ छस दिन ॥ १९८ ॥ ९ बाकी १० हाँ  
 घड़ी ११ तुर्य गते १२ अष्ट ॥ १९६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के कृपति  
 बुधसिंह के परिश्रमे, बुधसिंह और बहेलसिंह बुंदी के दोनों राजाओं की  
 सेना का युद्ध होना और युद्ध के अन्त में छिप कर बैठ हुए बुधसिंह की निदा  
 की स्तब्धता १ नष्टवाण अथयसिंह का सारसोप के ठाकुर फतेसिंह को मारना  
 अथयसिंह का सरदा के ठाकुर कोजूराम को मारना अथयसिंह का  
 सुप्राय के पति श्यामलदास को मारना अथयसिंह का कडवाह अथय-  
 सिंह को मारना अथयसिंह का बुद्धानीपति बहादुरसिंह को मार कर मा-  
 रा जाना २ बुंदी और जयपुर के घोरों का अंत युद्ध करना ३ नष्टवाण के

१ भवन ३ चाहुमानदेवसिंहस्य नरुकासरदारसिंहहनन ४ देवसिंहस्य प्रे-  
मसिंहहन्तृनरउरसचिवखण्डेरावमारणा ५ बुधसिंहमातुलपुत्रसं-  
ग्रामसिंहस्य कूर्मकरणासिंहासुहरणा ६ रसोरपतिघासीरामस्य सं-  
ग्रामसिंहहननदेवसिंहतन्मारणा ७ हतपट्कूर्मदेवसिंहमूर्च्छासादन ८  
दृष्टकुल्याप्रच्छन्नबुन्दीपतिसालमसिंहबुधसिंहसेनोपरिजयपुरसैन्य-  
समाक्रमणा ९ मुहूर्तावशिष्टास्ताचलचुम्बिनि मरीचिमात्तानि हत-  
बुधसिंहसैन्यकूर्मकटकविजयवर्णनं त्रयस्त्रिंशो मयूखः ॥ ३३ ॥

आदित एकसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७१ ॥

[ दोहा ]

नृपके वरजत जे निडर, अभय देव जिम आय ॥  
तिल तिल बुंदिय बीर ते, तुष्टे असिन अघाय ॥ १ ॥  
तिनमें इक १ जैतह तनय, देवा लारन उदार ॥  
मिचंचु न तउ मूरछि मरद, सुत्तो लि ३ असि समारं ॥  
( षट्पात् )

पस्यो अभयहरि प्रथम पारि पंचपहि राजाउत ॥  
पुनि निज संगहि परिगं सुगत पूरन दोऊरसुत ॥  
हहु देव पुनि हनिय नरुव सिरदार स्वतंत्री ॥

वासिंह का नरुके सरदारसिंह को मारना ४ देवसिंह का प्रेमसिंह को मारनेवाले  
नरवर के सचिव खंडेराव को मारना ५ बुधसिंह के मामा के बेटे भाई संग्राम-  
सिंह का कछवाहे करणसिंह को मारना ६ रसोर के पति घासीराम का सं-  
ग्रामसिंह को और देवसिंह का घासीराम को मारना ७ देवसिंह के छे कछ-  
वाहों को मार कर मूर्च्छित होना ८ बुंदीवाले सालमसिंह को एक नाले में  
छिपा हुआ देख कर बुधसिंह की सेना पर जयपुर की सेना का घटना ९ बुध-  
सिंह की सेना के मारे जाने पर दो घड़ी दिन चाकी रहने जयपुर की सेना के  
जय पाने का तैर्नासवा ३३ मयूख हुआ और आदि से दोसौ इकहत्तर २७१  
मयूख हुए ॥

१ तरवारों ने युद्ध छोड़कर ॥ १ ॥ २ नृत्य नहीं की तोभी ३ मूर्च्छित होकर ४  
तीन तरवारों की मार सहित ॥ २ ॥ ५ अभयसिंह ६ पहले ७ स्वतंत्री (अपने  
अधिकार में रहनेवाला, अथवा अपने अधिकार में लेकर) नरुके सरदारसिंह को

खिजि पुनि खंडेराय मारि नरउर पति मंत्री ॥  
हनि पुनि रसोर पति वह हुलसि कूरम घासीराम कलि ॥  
जद्व कबंध तौवर जुरे वहे ते अरि तीनशबलि ॥ ३ ॥

( दोहा )

खगन इम उमराव खटध, मारि देव बैसि मोह ॥  
रिपु रुंडन मंचक रसिक, लरि सुतो छकि लोह ॥ ४ ॥  
करन हुकम अरु सेर इन, तीननशहनि बलि तेग ॥  
नाथउत्त संग्राम नर, जिनु तिर नच्छपो बेग ॥ ५ ॥  
बदलेहू यह वैप्पकै, नामी बदल्यो नाहि ॥  
सीस अरथ बुधसिंहकै, दै पतो दिव माहि ॥ ६ ॥

( पट्टपात्र )

परसुराम परिहार परयो चालुक जोधहि हनि ॥  
चालुक रूपहि चक्रिख परयो साँवल गोरन मनि ॥  
जोरावर नरु जात सुरत चालुक हनि सुतो ॥  
उदयसिंह हनि परिग छह बखतेस विरुतो ॥  
जगभानु हडु जुज्जकत हन्यो कूरम पृथ्वीसिंह कँड ॥  
लागि माहि माहि छिजे लारत तोउ न कोप समात तँड ७

( दोहा )

बुंदीपतिको भट्ट बलि, नाम सु जहाँराय ॥  
अति उद्धत हनि पंचअरि, तुट्यो असिन अघाय ॥ ८ ॥  
वारहसै १२०० इत्यादि बलि, दुवदिस परिग हुँवाह ॥  
भट्ट हजार १००० घायल भये, निडर देव तिन नाह ॥ ९ ॥

१ बुद्ध में २ बलघानों को अभिषेक किया ॥ ३ ॥ ४ भद्रों के ३ पक्षों कोकर ५  
छत्रों के धरों स्त्री मंच (चमारपाई) के ऊपर ॥ ६ ॥ ७ ५ पिता के बद-  
लने पर भी ७ स्वर्ग में गया ॥ ८ ॥ ९ शौह वंश के क्षत्रियों को मणि ६ पिता  
भद्र परसे खाया (जुगल) होकर ॥ १० ॥ १० धीर ११ उन घायलों का निमेष

( षट्प्रात )

कुसथल पंचोलास भयउ इम जंगभयंकर ॥  
 चरम अद्रि ढिग चपल हंकि पहुँचत रवि हँवर ॥  
 विखम रारि हुव बंध बुत्थि पत्थरि बट उब्बट ॥  
 दुँवघाँ साँ लखि दाव खेत खोजन भेजे भट ॥  
 कृष्णपन कृसानुँ चिति होम करि लाये डेरन घायलन ॥  
 जैपुर नरेस जयसिंह जय बुंदीपति अनजघ विमन ॥१०॥

[ दोहा ]

बित्तो इम आहव विकट, जित्तो सालम जोर ॥  
 सोधत अब घायल सुभट, आगम निस दुहुँ और ॥  
 त्रिअसि घाय जैतह तनपं, देखयो घुम्मत देव ॥  
 निज सिविका पठवाय नृप, आन्याँ वह ढिग एवं ॥१२॥  
 सुनत पराजय खगग सजि, खिजि तँहँ भोप खयास ॥  
 पासवान रघु दुहुँन पुनि, त्रिरच्यो लारि दिवँ बास ॥१३॥  
 बरजतहू तिल तिल बढयो, कट्टि अरिन अति कोप ॥  
 स्वामि हारि सहि नहि सक्यो, भलभल नापितँ भोप ॥१४॥  
 कछु अनीकँ बुंदीसको, अभय संग इम लगि ॥  
 यह रन करि अब हारि गिनि, पलटयो द्रोहन पगि ॥१५॥  
 समय घोर परखे सुभट, बदले सब नय बोयँ ॥  
 घायहु सेके घायलन, सालम दल बिच सोय ॥ १६ ॥  
 रहे मँनुज बुंदीस ढिग, इक सहँस अनुकूल ॥

पति देवसिंह था ॥ १ ॥ २ चपल घोड़ों को हाँक कर सूर्य के १ अस्ताचल के समीप पहुँचते ही ४ मार्ग और बिना मार्ग बूझे ३ फैल कर ५ दोनों तरफ से ६ सुरदों को ७ चिता की अग्नि में ८ विजय नहीं होने से उदास हुआ ॥१०॥  
 ६ रात्रि के आने पर ॥११॥ १० जैतसिंह के पुत्र देवसिंह को तरवारों के तीन घावों से ११ इसप्रकार घूमते हुए को ॥१२॥ १२ स्वर्ग में ॥१३॥ १३ नाई ॥ १४ ॥  
 १४ सेना १५ अभयसिंह के साथ ॥१५॥ १६ नीति को डुबो कर ॥१६॥ १७ मनुष्य

सालाम बिच दल नव सहस्र ६०००, मुरपो बहुरि अघ मूल १७  
इहि अंतर अंधार अति, कुहु निस आगम कीन ॥  
बुंदीपति मतिमंद बुध, नाँती बिपति नवीन ॥ १८ ॥

( षट्पात् )

जिहि बुंदिय हित देवसिंह मैनेन रन मारिय ॥  
जिहि बुंदिय हित समरसिंह बर दुर्ग विधारिय ॥  
जिहि हित सूरजमल्ल रतन रानाँ खिजि खदो ॥  
जिहि हित भोज सजोर लरि रु सूरति जय लदो ॥  
जिहि हित जयीस संभर संता साहजिहाँको सीस दिय ॥  
बुध धर्वहि छोरि जारन बिखय तदिन वह बुंदिय तकिय १९

( दोहा )

बुंदी पति बहुविधि बिगारि, असो भयउ असत्त ॥  
अचं बिनु हल जिम अंधकी, बरनी जाय न बत्त ॥ २० ॥  
कूरम दल इत बिजय करि, सालाम सहित सहास ॥  
अमल किन्न आमैरको, कुसथल पंचोलास ॥ २१ ॥  
इम कुसथल अनिरुद्ध सुव, पाय अनादर उच्च ॥  
बिमेना रत्ति बितायकै, कोटाको किय कुच्च ॥ २२ ॥  
संभर देव सु जैतसुव, असि त्रयअघायल अंग ॥  
छुटी जानि स्वकीयँ छिति, सिबिका चढि हुव संग ॥ २३ ॥

॥ १७ ॥ १ नष्टचन्द्रा अधावास्या की रात्रि २ बुलाई ॥ १८ ॥ ३ मैनों  
को ४ श्रेष्ठ गढ़ का विस्तार किया ५ सुरत नामक शहर में जय करनेवाले ७  
चहुवान शत्रुशाल ने = पति बुधसिंह को छोड़ कर. जारों संभोग करने को  
उस बुन्दी ने जारों को उस दिन देखा ॥ १९ ॥ १० अशक्त (नाताकत) ११ जि-  
सप्रकार बिना स्वर की साहयता के हल् अक्षर नहीं बोला जाता तिस प्रकार  
उस अन्ध की बातों नहीं कही जाती ॥ २० ॥ १२ हास्य सहित ॥ २१ ॥ १३  
इसकारण १४ बुधसिंह १५ उदास होकर रात्रि बिता कर ॥ २२ ॥ १६ अपनी  
१७ भूमि छुटी जानकर

( पटपात )

चढि चलिष चहुवान छोरि बुंदिय छत्रार्थम ॥

कोटा निबसथ मंगरोल किय तँहँ मुकाम क्रम ॥

हो दुबशरानिय संग पुर सु कोटा पठवाई ॥

पठयो सालिक पास कुमर निज रु यह कहाई ॥

तुम देवसिंह जिहिँ तिहिँ तरह याहि जिवावहु छत्र अब ॥

जयसिंह जोर पिकखहु जवर गुमर तोर मंडत गजब ॥२४॥

[ दोहा ]

सेवा सु हरी ग्रामको, गुज्जर गेंदा गीत ॥

जिहिँ निज धावर धाइ जुत, पलनाँ लिय धरि पोत ॥२५॥

चुडाउत सीसोद भट, भारतनाम सुभाय ॥

कढन छत्र नृप कुमरकैँ, सो दिय संग सहाय ॥ २६ ॥

[ पादाकुलकम् ]

धावर भारतसिंह पिंथाये, चम्मलि उत्तरि सजव चलाये ॥

डब्भिय नाम बिंदुमति ग्रामह, आय उहाँ बिरचिय विश्रामह ॥२७॥

जहँ दलसिंह हड्ड भोजाउत, जतनन रक्खे गेह बिनंय जुत ॥

कुमर उमेद रति यँहँ कट्टी, प्रात लगिय बेघम मग पँट्टी ॥ २८ ॥

गिरिबँर घंटिय लंघि बेग गति, पहुँच्यो बाल नैर बेघम प्रति ॥

देवसिंह सातुलँ बेघम द्रुत, जाय बधाय लयो उच्छव जुत ॥२९॥

इत सालम लागि पिठि उडायउ, मंगरोल बुद्धिँ पहुँचायउ ॥

पच्छो मुरि आयउ बुंदिय प्रति, अमल रँवकाय कियउ जय उन्नति ३०

॥२१॥ १ अधम (नीच) लप्रिय २ ग्राम ३ अपने साले बेघम के रावत देवसिंह

के पास ४ घमंड और प्रताप से ॥ २४ ॥ ५ धाऊ ६ पालक [उम्मेदसिंह] का

पलने में धर लिया ॥ २५ ॥ २१ ॥ ७ छिपेहुए अथवा दौड़े ८ बुन्दी का ग्राम

॥ २७ ॥ ६ यतनों से १० नन्नता सहित ११ शीघ्रता की दौड़ से ॥२८॥ १२ अष्ट

पर्वत (आडावला) की घाटी लांघ कर १३ मांमां ॥ २९ ॥ अपना अधिकार

॥ ३० ॥



दिन्नी मुलक दलेल दुहाई, सैठकों नृपता अधिक सुहाई ॥  
 छत्रमहल विच रहि छत्राधम, कियउ राजधानी भुग्गन क्रम ॥३१॥  
 भुल्लि गुनहँ इम अँस भुलायो, मनहु राज पीठिनतँ पायो ॥  
 भुल्लत कर दासिन भुक भोरन, कनक पउत्त कनक हिंडोरना ॥३२॥  
 मंगरोलतँ इत मति मुद्धह, बिनु सुधि चलयो करभँ जिम बुँद्धह ॥  
 स्पंदनेँ सत १०० वोरन बत्तीसह, बहलदँल डेरा इकबीसह २१ ॥३३॥  
 पुनि सतसत्तरि १०० सँकट प्रमानह, रुचिरँ पालकी तखतरवानहँ ॥  
 इत्यादिक बहु रँखत सुहाये, खरचहीन तत्थहि रखवाये ॥ ३४ ॥  
 अप्प चलयो जित मुँह तित अँसै, "पै न बिचार कोन गृह पैसै ॥  
 गहन लंघि तँरज गिरि घंटिय, भूखन भंजि बैलहिँ जर बंटिय ३५  
 राजा इम पहुँच्यो प्रमाद रँह, ग्राम प्रेमपुर व्है मधुकरगढ ॥  
 कछुदिन तत्थ रहयो केउलेसँह, देखन चहयो रानको देसह ॥३६॥

(दोहा)

आसित जेठ तेरसि १३ दिवस, सिद्धियोग रविवार ॥ ३७ ॥

मधुकर गढतँ बुद्ध नृप, मुरि चलयो मेवार ॥ ३७ ॥

कुसलसिंह भट रानको, भँसरोर गढ धाम ॥

तत्थ बँभनी सरित तट, किन्ने जायँ मुकाम ॥ ३८ ॥

पादाकुलकम् ॥

सगनाउत भट भँसरोर पति, बहु भँज कुसलसिंह रचि विन्नति ॥

१ दुष्ट का २ राजा पन ३ अधम (नीच) लत्रिय ॥ ३१ ॥ ४ अपराध भूल कर  
 दासियों के हाथों के शोलों से ६ कनकसिंह का पोता ७ स्थली के द्विगलाद  
 पर ॥ ३२ ॥ ८ मतिमूढ ९ ऊट के समान १० बुधसिंह ११ राध १२ हाथी १३ दल  
 पादल यह पडे डरे का विशेषण है ॥ ३३ ॥ १४ लकड़े (गाडियों) १५ सुन्दर  
 १६ तखतरवाँ (खासा) नरवान विशेष १७ सामग्री (सामान) ॥ ३४ ॥ १८  
 जिधर मुख हुआ उधर १९ परन्तु २० पर्वत का नाम है २१ सेना को ॥ ३५ ॥  
 २२ बावलापन के हठ से २३ वाममार्गियों का पति ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ २४  
 चम्हरणी नामक नदी के किनारे ॥ ३८ ॥ २५ बहुत सन्तान वाला

सम्मुह आय नजरि हय किन्नाँ, अरु तिहिँ नृपहु बाजि इक १दिनाँ ३९  
रति इक १पिच्छैँ बेघम रहि, चाहुवान गो उदयनैर चहि ॥

आय रान संग्राम मन्नि सुहँ, मोहिछा मगरी लग सम्मुह ॥ ४० ॥  
मिलतहि मुद बुंदीस बढायो, चरन रान प्रति हत्थ चलायो ॥

रान सु हत्थ पकरि अनुरत्तो, मुसकिंलाय छत्तिय मय मत्तो ॥ ४१ ॥  
इहिँ विधि प्रकट कियो अति अहर, अरु बिर्मना क्रूरम हित अंतर  
प्रनिस्पो पुनि बुद्धहिँ लौ पत्तन, महिमानी पठई संकोचन ॥ ४२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप-  
तिबुधसिंहचरित्रे संग्रामहतक्षतप्राप्तगखानया सह समराङ्गान्वेषणा  
त्पक्तबुधसिंहबुन्दीसुभटसालमसिंहमिलन १ सालमसिंहकुसथला-  
धिकारानन्तरप्रद्रुतबुधसिंहकोटादिगगन २ कोटामुक्तपत्नीद्वयबु-  
धसिंहस्वकुमारोम्मेदसिंहबेघमप्रेषणा ३ मंगरोलमुक्तगजरथादिप-  
रिकरबुधसिंहोदयपुरगमनं चतुस्त्रिंशो मयूखः ॥ ३४ ॥

आदितो द्विसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७२ ॥

(दोहा)

१ घोड़ा ॥ ३९ ॥ २ सुख मान कर ॥ ४० ॥ ३ मोदशराना के चरणों में हाथ बढाया  
४ प्रीति युक्त हुआ देह कर छाती के लगा कर ७ हृदय में मदमत्त हुआ ॥ ४१ ॥  
८ जयसिंह के कारण भीतर से उदास था ९ नगर में गया १० अपने घर  
पर आने के संकोच से महिमानी भेजी ॥ ४२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के राजा बुध-  
सिंह के चरित्र में युद्ध में मरनेवाले और घायलों की गणना के साथ युद्धक्षेत्र  
को हेरने का वर्णन और बुन्दी के उमरावों का बुधसिंह को छोड़ कर सालम-  
सिंह से मिलना १ कुसथल में सालमसिंह के अमल करने पर बुधसिंह का  
कोटा की ओर जाना २ बुधसिंह का अपनी दोनों राणियों को कोटे और कु-  
सर उम्मेदसिंह को बेघम भेजना ३ बुधसिंह के हाथी रथ आदि सामान को  
मंगरोल में छोड़ कर उदयपुर जाने का चोतीसवाँ ३४ मयूख समाप्त हुआ  
और आदि से दोसौ बहत्तर २७२ मयूख हुए ॥

इत कूरम सालव अवनि, सुनि कुसथल संग्राम ॥

कंदन मन्नि निज भटनको, कुप्पि फिरयो जयकाम ॥१॥

पादाकुलकम् ॥

मनहुँ बैग्घ बिचिछ्य चटकायो, जानि प्रलय भूतस जगायो ॥

कुच्च कलह जयसिंह मानि किय, कोटा सीम मुकाम आनि किय २

हो दलेल संगहि सालम सुत, चहयो राज जिहिं स्वामि धरम च्युत

वा जुत नृप कूरम उफनायो, इम द्रुत सरित कुसक तट आयो ॥३॥

कुसकहि गयो मिलन कोटापति, विरचिय समय जानि अति विन्नति

हय गज बसन नजरि करि हड्डा, तजि नृप धरम खुच्यो अघ हड्डा ॥४॥

पञ्भटिका ॥

उज्जैन अनुग नृप करि इकत्त, तनि मंत्र जाल जयसिंह तत्त ॥

लिय बुद्ध हितुं जो दल लिखाय, दिय प्रकट बंघि सबहिन दिखाय ५

कहि रानहु छप्प्यो लिखित एह, लिखवाय सक्खि निज भटन लेह

अब निजनिज छापन तुमहु अंकि, स्वी करहु हुकम दिल्लीस संकि ६

कोटस छाप तब प्रथम कीन, द्रुत ओर नृपन पुनि छापदीन ॥

सूबानुंग भूपन सबन सक्खि, राजा लिखाय लियटेक रक्खि ७

पुनि तिहिं मुकाम कूरम प्रवीन, क्रमजुतादलेल अभिसेक कीन ॥

कोटस हत्थ पहिलै कराय, बलि तिलक हत्थ अवरन बिधाय ८

करि बहुरि अप्प कर तिलक कुम्म, सिर धरिय छत्र नग ललि

त लुम्म

पुनि डोरिय चामर अप्प पानि, बुन्दीस रावराजा बखानि ॥ ९ ॥

१ नाश ॥ १ ॥ २ बाघ (सिंह) को ३ बिच्छू ने काटा ४ शिव को ५ युद्ध होना

मान कर जयसिंह ने कूच किया ॥ २ ॥ ६ स्वामि धर्म से गिर कर ७ नदी

॥ ३ ॥ = राजाओं का धर्म छोड़ कर ९ पाप के खड्गे से फसा गया ॥ ४ ॥ १०

सेवक ११ धुधसिंह से १२ पत्र लिखवाया था वह ॥ ५ ॥ १३ लात्ति १४ लेख

॥ ६ ॥ १५ सहा के साथ चलने वाले (सेवक) अर्थात् उज्जैन के सभे के राजाओं

ने ॥ ७ ॥ १६ दलेलसिंह के १७ कराके ॥ ८ ॥ भगों की १८ सुन्दर लड़की बाला ॥ ९ ॥

जयसिंहका अपने उमरावोंको पटादेना]सप्तमराशि-पंचत्रिंशमयुद्ध(३१६३)

अरु कोटापतिसौ कहि अठेल, बुन्दीस गिनहु अब यह दलेल ॥  
जो आवहि बुंदिय सुभट छुट्टि, तो ताहि न रक्खहु लेहु छुट्टि ॥१०॥  
हय अट्ट सप्त इक १७८७ अब्द मान, बनि बिसद जेठ तेरसि १३  
विधान ॥

इम करि दलेल अभिसेक अंक, समयानुकूल्य कूरम निसंक ११  
निज कृष्ण कुमरि तनया सु नाम, लांगलि फिलाय ताके ललाम  
मन्नि सु दलेल जामात स्वीय, गज इक १ अरोहि दोऊ रंगरीय १२  
कोटेस पटालयं किय प्रयान, थिर हुव त्रय ३ इक १ हि तखत थान ॥  
सिरुपाव बाजि दुव २ दुव २ नवीन, कोटेस दुहुनकी नजर कीन १३  
तदनंतर कूरम तोरें तिकख, कोटेसहि कोटा दियउ सिकख ॥  
उज्जैन अनुग अवरहु असेस, दै सिकख रु पठये स्वरुव देस १४  
कूरम दलेल जुत थिरचि कुच्य, आयउ भुव कुसथल गुंमर उच्च ॥  
संग्राम भुम्नि तँहँ लखि समस्त, आत्मीय भटन बंटिय अत्रस्त १५

[दोहा]

इहु अभय पहिले हरियं, सारसोप पति स्वास ॥  
वाके सुत रतनहि दियउ, पत्तन पंचोलास ॥ १६ ॥  
अजितसिंह कोजुव तनय, ईसरदापुर ईस ॥  
कुसथल पुर ताकाँ दयो, हठि जयसिंह मँहीस ॥ १७ ॥  
साँवलदास सुहाड़पति, सुत सोभाग सनास ॥  
वाहि पलोधी पुर दियउ, कूरम नृप जय काम ॥ १८ ॥  
नाह नगर नानेडिको, आहव मृत अचलेस ॥

१ नहीं डिगे जैसा (यह दललसिंह का विशेषण है) २ बुन्दी के उमराव ॥ १० ॥  
३ प्रमाण वाके लम्बत् में ४ शुक्ल पक्ष ५ विधि पूर्वक ॥ ११ ॥ ६ पुत्री ७  
नारिकेल-अपना जमाई ॥ १२ ॥ बडे हाथी पर दोनो राजा सवार होकर १०६-  
रों में ॥ १३ ॥ १४ जिस पीछे १२ प्रताप की तीख से ॥ १४ ॥ १५ बडे घमंड से १६  
अपने उमरावों को १७ निर्मय होकर बांटी ॥ १७ ॥ १८ अभयसिंह ने १९ लिखा  
१० पुर ॥ १९ ॥ कोजूराम का १० पुत्र २० सृपति ने ॥ १७ ॥ १८ ॥ २१ युद्ध

सुवन तास हरिसिंहको, \*बसुग्रामक दिय बेस ॥ १९ ॥

सुवन बहादुरसिंहको, पुर बुधानी पाल ॥

दस १० ग्रामक तिहि हित दये, दुंढाहर गिनि ढाल ॥ २० ॥

घासीराम रसोर पति, पुतहि ग्रामक पंच ॥

दिय भूपति जयसिंह दुत, पहु रचि नीति प्रपंच ॥ २१ ॥

कपंच १ प्रपंच २ अन्त्यानुपासः ॥ १ ॥

अभयसिंह आत्मज अधम, नाथूरामह नाम ॥

पलटयो सठ रनके प्रथम, सालमसौ करि साम ॥ २२ ॥

यातै नहि बलवन लियउ, मिलयो जानि इन माहि ॥

नाथूरामहि मनि निज, विस्वास्यो गहि माहि ॥ २३ ॥

देवसिंहकी मेदिनी, इस बंटी कछवाह ॥

देवहु गिनि बुद्धहि अधम, कोटा गयउ सचाह ॥ २४ ॥

पुनि तजि पंचोलासको, किय जयसिंह प्रयान ॥

प्रविश्यो जैपुर निज नयर, उद्धत विजय अमान ॥ २५ ॥

सोरठा ॥

स्वीय जननिके सत्य, उदयनैर ही जो अबहि ॥

तनयां बुल्लिय तत्य, कारन व्याह दलेलके ॥ २६ ॥

दोहा ॥

सुत समेत जयसिंहसौ, रानाउति सु रिसाय ॥

वरख छियासी नद साघ बिच, पत्नी पीहर जाय ॥ २७ ॥

ही तवत तत्यहि सुन्या, अब तनया आव्हान ॥

सालम सुतके व्याहको, यातै पठई सा न ॥ २८ ॥

में मरा \* आठ खतम आम दिये ॥ १९ ॥ † पालन करनेपाला ॥ २० ॥  
 १ प्रभु (राजा) ने ॥ २१ ॥ २ पुत्र ॥ २२ ॥ ३ ॥ ३ भूमि ४ बुधसिंह को निर्ध-  
 न जान कर ॥ २४ ॥ २५ ॥ ५ पुत्री को जयपुर बुलाई ॥ २६ ॥ ६ गई ॥ २७ ॥  
 ७ पुत्री का बुलाना य इसको नहीं भोजी ॥ २८ ॥

कूरम पुनि काहि सुकलिय, नहिं यह सालम नंद ॥

हे अत्र यह बुंदीस \*सुब, अधिप दलेल अमंद ॥ २९ ॥

हुकम साह लिखवाय हम, दिय इहिं राज्य दिवाय ॥

जिहिं रक्खन हम रान जुत, सब कछवाह सहाय ॥ ३० ॥

यातै कछु न विचार अब, इहिं ललाट नृप अंक ॥

तनया देहु पठाय तुम, सोक विहाय निसंक ॥ ३१ ॥

निज रानी प्रति पत्र इम, पठयो कूरम पात ॥

पै कुमरी कछु रोग पगि, आय संकी नहिं हाल ॥ ३२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-  
पतिबुधसिंहचरित्रे जयपुराधीशजयसिंहस्योज्जयनीतो बुन्दीदिग्ग-  
मन १ बुंदीराज्याभिषिक्तदलेलसिंहेन सह जयसिंहस्वसुतासन्बध-  
करणा २ दृष्टकुशस्थलयुद्धक्षेत्रमृतस्वभटतत्सूनुबुंदीग्रामवितरणा ३  
दत्तभूमिजयसिंहजयपुरगमनदर्शन पञ्चत्रिंशो मयूखः ॥ ३५ ॥

आदितस्त्रिसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७३ ॥

(दीर्घा)

इत नृप प्रविश्यो उदयपुर, स्वसुरं हवेली पास ॥

आंधे छज्जनके महल, उतरयो तत्थ उदास ॥ १ ॥

मोदक फल भोजन अमित, पुनि रूपय सत पंच ५०० ॥

\* बुन्दी के पति का पुत्र है ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के राजा बुधसिंह के चरित्र में, जयपुर के राजा जयसिंह का उज्जयिणी से बुन्दी की ओर आना १ दलेलसिंह के बुन्दी का राज्याभिषेक करके अपनी पुत्री का दलेलसिंह से संबंध करना २ राजा जयसिंह का कुशस्थल के सुनाम युद्ध क्षेत्र को देख कर आने पर हुए उमरावों के पुत्रों को बुन्दी के ग्राम जागीर में देना ३ जागीरें दिये पीछे जयसिंह के जयपुर जाने का पत्नीसवों ३५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ तिहत्तर २७३ मयूख हुए ॥

१ जयसिंह २ घेयम की हवेली [जहां पर अब रेवीडेंसी है] के पास ३ आंधे राजा के महल (अब भी इसी नाम से प्रसिद्ध है) ॥ १ ॥ ४ दृष्ट (दिखाई) ५ पात्र

महिमानी इम मुकलिय, रान विरचि हित रचं ॥ २ ॥

बिपति अतीव बिचारिकै, इकत करि उमराव ॥

कहिय रान बुधसिंहकै, द्रुत धर आवन दाव ॥ ३ ॥

पंचन कहि तब रान प्रति, बिधि कोटैस बुलाय ॥

मंत्र रचहु नृप तीनैशमिलि, पहुमी लैन उपाय ॥ ४ ॥

पादाकुलकम् ॥

पहु बिचारि इम रान मंत्र पन, कोटा पति बुल्लिय इहिं कारन ॥

पुनि गिनि बुद्धहिं जनक जामि पति, अंतहपुर बुल्लिय मंडिय मतिप

रीति सु सुनि कूरमपति रानी, रान सहोदर जामि रिसानी ॥

जनक जामि मम भुषा जियत नन, अंतहपुर बुल्लहु जिहिं कारन ६

बिनु कारन बुल्लहु नन बुद्धहिं, कछु मन्नहु कूरमपति कुद्धहिं ॥

जामि बचन सुनि रान सोचि जिय, बुद्धहिं निज अवरोध न बुल्लिय ७

इहिं अवरोध गमन अवरोधहु, सुनि रु गमन चित्यो बिनु सोधहु ॥

विष्णुसिंह पुर बंसवहाला, भगिनी तस गुन रूप सुंभाला ॥ ८ ॥

नाम गुमान कुमरि सुभ लच्छन, बहुरि सील गुन विनय बिचच्छन

वच्छर दुवरके पुब्व बिधौई, संभरपति साँ तास सगाई ॥ ९ ॥

संपति बिनु पुनि व्याह सुहायो, पत्र दूत द्रुत अगग पठायो ॥

संगिय सिकख रान प्रति सुद्धह, बरजिय तदपि रान नृप बुद्धह ॥ १० ॥

पहुमी निज हित मंत्र प्रचारन, कोटापति बुल्लियतुम कारन ॥

अरु मम भटहु धरन तजि आये, अप्पन हित हम मंत्र उपाये ॥ ११ ॥

१ थोडा सा स्नेह करके ॥ २ ॥ २ एकत्र ॥ ३ ॥ ४ उदयपुर, कोटा और  
बुन्दी के तीनों राजा मिल कर ॥ ४ ॥ ४ पिता की बहिन (भुषा) का पति ६  
रायल (जनाने) में बुलाने की ॥ ५ ॥ ५ राजा की सगी बहिन ७ पिता की  
बहिन ॥ ६ ॥ ८ बहिन के ९ अपने जनाने में नहीं बुलाया ॥ ७ ॥ १० जना-  
ने में जाने का रोकना खन कर उदयपुर से जाना बिचारा ११ अष्ट भाग्य  
वाली ॥ ८ ॥ १२ बिचक्षण १३ दो वर्ष पहिले १४ की थी ॥ ९ ॥ १५ मूढ ने ॥ १० ॥  
॥ ११ ॥

तुमको इत अनवसर उपनयं, मन्हु तो इक बचन नीति मय ॥  
 मम सालिय पानिग्रह मंडहु, बंधुनके ओरहु तनया बहु ॥ १२ ॥  
 जो हिय रुचहिं व्याहितिहिं अत्थहि, सजहु भुमि उद्यम हम सत्थहि  
 संभरकहि यह पुब्ब सगाई, बलि छोरेँ नन होत बडाई ॥ १३ ॥  
 हठि हठि रान बराजि पुनि हारयो, बुद्ध पुब्ब नयं तउ न बिचारयो।  
 पुनि कहि रान आत कोटा पति, आये तुम घर हमहिं लज्जअति १४  
 यातें कछु बिरचत उपाय अब, तुम इत जात कोन करिहें तब ॥  
 यह जो दृढ व्याहि रु द्रुत आवहु, जो बरं सचिव रक्षिख तिहिं  
 जावहु ॥ १५ ॥

मयाराम तब अप्प पुरोहित, अंननि उपाय काज रक्षिखय इत ॥  
 अप्प बिबाह हरख उफनायो, यहि दिस दक्षिखन द्रुतहि चलायो १६  
 करहिं न व्याह बिपति बिच कोऊ, संभर पति अच्छोगिनि सोऊ  
 मही सरित उत्तरि प्रमत्त मन, पहुँचिय बंसबहाला पत्तनं ॥ १७ ॥  
 सावन असितें सत्त बसु ८७ संवत, सद्धि लगन एकादसि ११ संगत ॥  
 व्याहिय विष्णुसिंह भगिनी बत, राउल अजब सुता रमनी रंत १८  
 बहु विधि राउल हरख बधाये, स्वागत सवन आपुब्ब सभाये ॥  
 रेंचि बरात आश्विन लग रक्षिखय, अरु पुनिहू जावहु नन अरिखय  
 धरिय वरैनि तत्थहि आधीनह, यातें तहँ रक्षिखय चहुवानह ॥

अभयसिंह मरुधर नरेश इत, यहि बिछीस निदेशेँ करन चित २०  
 सूबापति गुज्जरंधर स्वामी, ग्राम सहँस सत्तरि ७०००० अनुगामी ॥  
 प्रबल अहमदाबाद नगर पति, सरबिलंद जितन करि सम्मति २१  
 सक मुनि बसु अत्यष्टि १७८७ मास ईस, द्रुत हंक्रिय गुजरात पहु-

१ बिजा समय २ बिबाह ३ बिबाह ४ हमारे भाइयो के ॥ १२ ॥  
 ॥ १३ ॥ बुद्ध बुधसिंह ने लोकी ५ नीति नहीं बिचारी ॥ १४ ॥ ६ अष्ट ॥ १५ ॥  
 ७ भूमि के ॥ १६ ॥ ८ मही नामक नदी ९ पुर में ॥ १७ ॥ १० यदि पक्ष ११ सन्तो-  
 ष युक्त ॥ १८ ॥ १२ हुल्ला वा रुचि पूर्वक ॥ १९ ॥ १३ हुल्लहिन ने १४ मर्ने १५ वादशाह  
 की आज्ञा ॥ २० ॥ १६ गुजरात के १७ सुबाकेसाथ ॥ २१ ॥ १८ आश्विन मास १९ शीघ्र



मि दिस ॥

द्विदित बिजय कसमी सनि बासर, बिटि अहमदाबाद लयो बर २३  
अंग कछुक तोपन रचि जाहिर, बुल्लयो बहुरि डाक दे बाहिर ॥  
लाखि आवत रहोर लरन हित, बहिरन सब हंकिप मसन्नचित २३  
ऊदाउत चंपाउत उदत, मेरतिया कृपाउत हठ मत ॥

जैताउत मुनि जैतवालाउत, बल्लहाउत करनोत जोरजुत ॥ २४ ॥

पाताउतरु कलाउत प्रतिभट, बढि धूहड रानाउत रन बट ॥

महाउत रु महेषे विनु भय, रूपाउत रु सताउत अतिरय ॥ २५ ॥

गोगाउत रु करमसीउत जहँ, देवराज रनधीर बसि तहँ ॥

बाहडदेवउत रु पोकरनाँ, बंहाउत हुमंडि हठ मरनाँ ॥ २६ ॥

जोधे रतन केसरी कुल भव, पंधल अरु सिंधल अरि बन हव ॥

भूपतिउत रतनोत बडे भर, मंडनउत खुंडाउत असिकर ॥ २७ ॥

बरसिहोत नराउत अति बल, सोहड रायपालउत अतिभल ॥

रनमल्लोत मंडलो रनरत, सुदित आरमल्लोत लरन मत ॥ २८ ॥

बहुरि चंद्रसेनोत महाबल, इत्यादिक संजुरि चित उज्जल ॥

नृप अभमल्लहि हतथ दिखावत, लगे लरन मुच्छन कर लावत २९

सरहुलंद सूरज कर सखिखप, निडर मिच्छ उततौ हय नाखिखप

१ दिन २ अष्ट अहमदाबाद को घेर लिया ॥ २२ ॥ ३ जोधे दिलाकर  
॥ २३ ॥ (अब यहाँ राठोडों की आखा गिनाते हैं) ॥ २४ ॥ ४ पात्रु से युद्ध करने  
वाले ५ उदयपुर के महाराणा प्रतापसिंह दिखा के दिनों में मारवाड में 'लोया-  
खा' के पर्वतों में रहे थे तब प्रसन्न होकर लोयाणा के ठाकुर को 'राखा' की  
पदवी दी थी जो अब भी राणा कहलाता है जिसके वंशवाले राणा बत कहलाते  
हैं और राव सिद्धमल के वंश में राणा नामक एक प्रसिद्ध पुरुष हुआ था उसके वं-  
श वाले राखा बत कहलाते हैं सो अब भी विद्यमान हैं और इसी जाति से  
प्रसिद्ध है परन्तु इस समय इनके अधिकार में कोई ठिकाना नहीं है ६ बड  
धेग घाले ॥ २५ ॥ ७ २३ ॥ ८ पात्रु रूपी घनों की अग्नि ९ हाथ में तरवार रखने  
वाले ॥ २७ ॥ १ युद्ध में मीति करने वाले ॥ २८ ॥ १० साधी करके ११ मल्लो ने

आकुल भोगे सहस्र अकुलाने, डग मंगि पव्यप कूट हुंलाने ३०  
घने घुमंड वगग इमि घोरन, रारि मधिग मिच्छन रहोरन ॥

किलक प्रत डाकिनि गन किन्नी, लोस्स्य व्यैक्ति चउसहि ६४ न  
लिन्नी ॥ ३१ ॥

डिगि बीचिन सिंधुन जल डोहयो, अरुन अब्ब सप्तक अयरोहयो ॥  
कटि कंकट निकसत वपु कैसै, जिंहाग गन कंचुक तजि जैसा ३३  
कटि कटि कुंभ तिरत सोनित किम, जल अगार्ध घट उडुपै पुं-  
थुल जिम ॥

अली-इमाम होत उत और्य, इत हरि अच्युत भूतनार्थ भव ॥ ३३ ॥  
भूत किलकि कहूँ हय भरकावत, गो कि चोर लखि ग्वाल चलावत  
कहुँ भट चरन रकांवन अटकत, मूढचित्त भोगन जिम दुर्मत ॥ ३४ ॥  
फटित केतु इभन फहरावत, रंभा तरु कि अद्रि लहरावत ॥

गुटिका भ्रमत सीति यह रक्खिय, मनहु कुद संरघाभिध मक्खिय ३५

निर्मय होकर घोड़े बटाये १ कर्तव्यता ये मूढ (अब क्या करना चाहिए) हो-  
कर शेष नाग के हजार फण धरारथे और पर्वत हिलकर उनके र निखर  
के ॥ ३० ॥ बहुत घमंड से घोड़ों की बागें ३ खिच कर (घोड़े दौड़ा कर) बटायों  
और राठोड़ों के युद्ध हुआ वहाँ प्रेतों ने और डाकिनियों ने विजय करी ५  
सौसठ शरीरों के घोषणियों ने ४ वृत्त क्रिया ॥ ३१ ॥ ४ तरंगों ने पल कर  
समुद्र के जल को तथा और सूर्य के सारथि अक्षय ने दर्श को ७ लाग घोड़ों  
के खरह दो = रोक ९ कजब कट कर बीरों के अंग ऐसे निकलते हैं जैसे १०  
सर्पों का स्रष्ट्र कांठला छोड़ कर निकलता है ॥ ३२ ॥ जैसे १२ नहरे जल में  
घड़ा (कलश) तिरै अथवा १४ पत्ती १३ मान तिरै जैसे ११ द्वाधियों के कुंभ-  
रथक लटक कर रुधिर में तिरते हैं उधर (स्नेहकों की ओर) तो अली और इ-  
माम आदि पैगम्बरों के १५ शब्द करते (नाम लेते) हैं और इधर (राठोड़ों) में  
धिपक धिपकु और १६ शिव शिव करते हैं ॥ ३३ ॥ कहीं पर भूत मिल कर  
१७ घोड़ों को समकाने हैं सो मानों चारों को देख कर १८ गडकों को ग्वा-  
ल भनाते हैं जैसे सुर्त निरावाला दुर्मति भागों में पड़ा रहे जैसे १९ पागड़ों  
में पण ललभ कर वीर लटकते हैं ॥ ३४ ॥ पत्तीबुद्ध ध्वजा २० द्वाधियों पर  
उत्तम है सो मानों २२ पर्वतों के ऊपर २१ कल का पृथ फोका खाता है औ-  
र कोमित घृष्ट २३ मधुनचित्तियों के समान विनभिनाती हुई गोत्रियां-अमनी

निकसत\*गोद कपाल हितु इम, मंजुमदन मञ्जुजाल हितु जिम  
 बहु आयुध आयुध पर बज्जत, लखि कल्लरिऽदेवालय लज्जत ३६  
 इम रन करि रक्षोर बडे अति, मिच्छन इनत धन्वर्पाति सम्मति ॥  
 सरबुलंद लखि प्रबल भज्यो सठ, हारयो तजि गुजरात सहित  
 हठ ॥ ३७ ॥

बंलि दिल्लीपति अमल बढायो, इम मरुभूप जिति रन आयो ॥  
 सुदित भयो सुनि साह सुहुम्मद, सरबुलंद दक्खिन गय दुम्मद ३८  
 हुम्मद १ दुम्मद २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

बुंदिय पति इत स्वसुर गेह रहि, दुलहनि तत्थहि रद्विख गमन चहि  
 कतिय भास कुच्च अप्पुन किय, दायज वंसु बहुविधि राउलदिय ३९  
 दंतिय गह्वेराव सु दंतह, मास रहत बारह १२ मर्यमतह २ ॥

नृपके इभर्पालन वह नांयो, अचत निर्गड जोर उफनायो ॥ ४० ॥  
 यह सुनि रान लयो वह हत्थी, सहस्र १००० भेजि रूपय चर सत्थी ॥  
 इत कोटेस उदैपुर आयउ, अधिप रान सह मंत्र उपायउ ॥ ४१ ॥

मयाराम दिप्राधर्म तत्थहि, बुल्लयो कुंबच कुंनय अघ सत्थहि ॥  
 कहा रान पुच्छत कोटेसहि, दब्बयो इन पहिले नृप देसहि ॥ ४२ ॥  
 इनकी लखि अवरन मन चल्लयो, तबहू इत न सुच्छ कर घल्लयो  
 कर्गोर लिखि जयसिंह कथित किय, इनहि पुच्छि लहिहो किम  
 बुंदिय ॥ ४३ ॥

ह ॥ ३५ ॥ † मधु मखिलियों के छातों (सुषाल के छातों) से सुंदर । मैं  
 निकलने के समान मस्तकों से \* भेजे (अस्तिष्क) निकलते हैं कितने ही श-  
 स्त्र शस्त्रों पर बजते हैं जिनको देख कर § मंदिरों में भजती हुई आकर  
 लज्जित होती हैं ॥ ३५ ॥ १ मारवाड़ के राजा की सलाह से ॥ ३७ ॥ २ पुनि  
 १ मारवाड़ का राजा ४ दुर्मद (मान हीन होकर) ॥ ३८ ॥ ५ घन ॥ ९ ॥ १  
 गाह्वेराव नामक हाथी ७ दिया ८ मदमस्त ९ बुधसिंह के मद्राधतों से १० न-  
 हीं आया ११ सांफलों को खैयती हुआ ॥ ४० ॥ १२ हलकारे के साथ ॥ ४१ ॥  
 १३ नीप ज्ञासा १४ अनीति और पाप के साथ १५ छोटे बचन बोला १६ बुधसि-  
 ह के देश का ॥ २२ ॥ १७ पत्र १८ लहना

यह सुनि महाराव धंकि उठ्यो, रानहु विप्र अधमपर रुठ्यो ॥  
 इम नृपकाज बिगार विप्र यँहँ, पहुँच्यो मगहि मद्दय संभर पँहँ ४४  
 इम पुनि बुद्ध उदैपुर आयो, विपति जोर सब गुंमग बिहायो ॥  
 सम्मुह आय रान हित सजिय, लै प्रविश्यो पत्तन चहि लाजिय ४५

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-  
 पतिबुधसिंहचरित्रे बुंदीहरणमन्त्रहेतुमहाराणासंग्रामसिंहस्य को-  
 टामहारावदुर्जनशल्योदयपुराकारणा १ पाण्ड्याहणहेतुबुधसिंहवां  
 सबहालागमनबुधसिंहपुरोहितकटुवचनश्रवणादुर्जनशल्यक्रोधकर  
 णा २ योधपुरार्धाशाभयसिंहाहमदाबादविजयन ३ बुधसिंहोदयपुर  
 प्रत्यागमनवर्णनं षट्त्रिंशो मयूखः ॥ ३६ ॥

आदितश्चतुःसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७४ ॥

( षट्पात् )

रान नगर बिच रहिय हड्ड भूपति इक १ हाँयन ॥

सर सत ५०० रूपपय नित्य रान पहुँचात मान मन ॥

सभा समय संभरहु जात पहुँ रान निकट जब ॥

अदब रक्खि अति अग्य तखत तजिदेत रान तब ॥

लौजात आय सम्मुह सरल डकासन बैठत उभय २ ॥

संभरहिँ मन्नि पाहुन संमुद बिनु बुंदिय धारत बिनय ॥१॥

१ क्रोध करके(भीतर से) जल कर) २ बुधसिंह के पास ॥४४॥ ३ घमंड छोडा ॥४५॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के भूपति  
 बुधसिंह के चरित्र में बुंदी लेने की सलाह करने के अर्थ महाराणा संग्रामसिं-  
 ह को कोटा के महाराव दुर्जनशल्य का उदयपुर बुलाना १ बुधसिंह का विवाह  
 करने के अर्थ वांखवाले जाना और बुधसिंह के पुरोहित के कटुवे वचनों  
 से दुर्जनशल्य का क्रोधित होना २ जोधपुर के राजा अभयसिंह का अहमदा-  
 बाद को विजय करना ३ बुधसिंह के पीछा उदयपुर आने के वर्णन का छत्ती-  
 सवाँ ३१ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ चौत्तर २७४ मयूख हुए ॥  
 ४ एक वर्ष ५ प्रभु ६ एक गद्दी पर ७ हर्ष सहित ॥ १ ॥

## पादाकुलकम् ॥

बुद्ध पुरोहित मंत्र विगारघो, नृपति रान हित तदपि न टारघो ॥  
 अक्खिय पुनि बुंदिय जब अँ हैं, तुमहिँ भूप जावन तब दँ हैं ॥ २ ॥  
 अवंनि दैन कूरम प्रति अक्खहिँ, रानापनको गँव्व न रक्खहिँ ॥  
 जब स्वाधीन राजनिज जोवहिँ, सुख सह निंद ह महु तब सोवहिँ ॥ ३ ॥  
 तोलों खरच स्वकीय मानँ तत, दिन प्रति दम्म पंचसत ५०० प-  
 हुँचत ॥

कहि नृप कुम्मँ खुसामदि कौहो, लागि हमरे हित बुंदिय लौहो ॥ ४ ॥  
 प्रनयँ रावरेतँ कूरम पति, मम भुव जो दँ हैं न टेक मति ॥  
 तो रन करि लौहो किँ तँतक्खिन, प्रीति तथा कग्गिहँ परपक्खिन ॥ ५ ॥  
 सुनियह रान सुजान नीति सँम, कहिय आज दिल्ली कर कूरम ॥  
 अकबरपु अजमेर अवंतिरँ, सूवा तीन अधीन साह किय ॥ ६ ॥  
 मित्र खानदोरँ जिहिँ मन्नत, सेनानी जु जवन पति सम्मत ॥  
 साहहु जास कथितँ सिर धारत, बलि अवरन जिहिँ सँम न वि-  
 चारत ॥ ७ ॥

पुनि निज वनिबनि स्वसुर साल प्रिय, अकबरतँ अबलों धन संचिय ॥  
 अरु बहु मुलक अप्पन न असो, जास सचिव राजामल जैसो ॥ ८ ॥  
 राय कृपारामहु वकील रतँ, जास कथितँ जवनेस न लुप्पत ॥  
 गृह जाके दिल्ली उमीर गन, पहुँचत कर जोरत किँ करपन ॥ ९ ॥  
 जिनकी अरजसाहप्रति जंपत, बसुँ अधिकार मिलत तिनकाँ बत ॥

१ तो भी ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

द्वै २ द्वै २ सत १००\*सिविकांजिहिं द्वारह, वढि पंतिन ढकिजात  
वजारह ॥ १० ॥

वैठक जाहि खास खिलबत्तिय, रमत साह सतरंज हुलसि हिय ॥  
जिनके घर अैसे वकील जन, थिरन उथपि स्वामिजय थप्पन ॥ ११ ॥  
जंग विरचि तिनतैं को जितहिं, बिनुहित काहि बिगारहि ॥ बित्तहिं  
इहिं कारन तिनतैं इन उचित न, अवर उपाय रचहिं बहु अप्पन ॥ १२ ॥  
§भेद उपाय कोहु नहिं संभव, लगौं नहिं बिनु समय जास लव ॥  
यातैं साम दान अनुसरिहैं, कूरमसौं तुमसौं हित करिहैं ॥ १३ ॥  
बिनु नैय समय होत नहि चाही, सैमर टेक नाहक तुम साही ॥  
निज हठ तो मम गज्य नसहौ, प्रज्ञ तुमहु को फल तब पेहो ॥ १४ ॥  
सञ्च कहत नृप मुद्ध रिसायो, चलन हुकम सत्थहि पहुँचायो ॥  
हे सब अनुंग मूढ हथजोरे, न चलहु इम काहू न निहोरे ॥ १५ ॥  
सक बिक्रम अड्ड रु बसु सत्रह १७८८, बाहुँल मास वृथा करि  
बिग्रह ॥

अनखिं चलयो संभरं अज्ञानी, बरजत रहयो रान हित बानी ॥ १६ ॥  
जदपि सुरयो न रान तउ सज्जन, गज भूखन सिरुपाव बाजिगन ॥  
पठये मितैं दसतूर बुद्ध प्रति, इनअखिखय हम करजदार अति १७  
इनके दम्भ पठावहु यातैं, वनिकैन दै हम करज बिघातैं ॥  
तिनकी तीस सहँस ३०००० मुँद्रा तब, जानि बिपत्ति रान पठई  
जब ॥ १८ ॥

करज भारि तिनकरि कउलेसँह, बुद्ध चलिय पँसुमति नरवेसह ॥

\* पालकियें † जिसके द्वार पर ॥ १० ॥ ११ ॥ ‡ धन ॥ १२ ॥ § परस्पर  
द्वेष कराना (फोड़ तोड़) १ लेशमात्र ॥ १३ ॥ २ बिना नीति ३ मुद्ध की ४ तु-  
म बुद्धिमान हो ॥ १४ ॥ ५ मूढ ६ सेवक ७ हाथ जोड़नेवाले ॥ १५ ॥ ८ कार्ति-  
क मास में ९ क्रोध करके १० सुधसिंह ॥ १६ ॥ ११ तो भा १२ दस्तूर के मा-  
फिक ॥ १७ ॥ १३ वनियों को देकर १४ रूपये ॥ १८ ॥ १५ घातमार्गियों का  
पति, १६ पशु की बुद्धि और मनुष्य के वेष से.

द्रुत\*बाहुल मेचक चउत्थि४दिन, आयउ चलि । श्रीद्वार । इहइन१९  
 इकसत१००दम्म भेट हरि अप्पिय, थौवल गाम मुकाम सु थप्पिय  
 वसि तत्थ रु दुव२मास विताये, लंघन एनि चालीस लगाये ॥२०॥  
 अधिका अफीम वढयो नृप अग्गै, पैसे त्रिश्मित नित्य हित पग्गै ॥  
 पुनि अंतम मद्य अवद्यहु पीवहिँ, जड बिनु भूख आयुवल जीवहिँ२१  
 अमन लेत सत्तम७अहुम८दिन, तुच्छ बहुत सोपै न पचै तिन ॥  
 इहिँ विधि अन्न अरुचि पर आये, लंघन तव चालीस४०लगाये२२  
 तवहिँ अफीम मद्य दुव त्पागे, लै पुनि पथ्य लाभ भुव लागे ॥  
 विगचि कुच्च वह ग्राम विहायो, लुट्टन रानाँ सुलक लगायो ॥२३॥  
 सठ नृप नहि पग करै समुक्कायो, बहु बहु लूट प्रपंच बनायो ॥  
 रानहु सुनि गिनि धुद्ध गिसानाँ, बुद्ध सु कँउलन हत्थ विकानाँ २४  
 दुव२मित्तानं कुंपासणि किन्नेँ, दुव२त्रय३पुर गंधेगहु दिन्नेँ ॥  
 पथ इहिँ रुक्कन चलन प्रमत्तो, पुर वेधम स्वसुरालय पत्तो ॥ २५ ॥  
 वसु वसु राज इक्क १७८८ मित संबत, गँउर चउत्थि ४ सँहरुप  
 भास गत ॥

मंजुँ गिन्योँ न जुद्ध करिभरनाँ, स्वसुर अन्नजीवन लिय सरनाँ२६  
 पग्गुव सँदय हृदय देवहु पुनि, सालक निज बुद्धहिँ आवत सुनि  
 अभिभुख जाय निजालय आनँ, बिनय प्रीति कर जोरि बखानँ २७  
 बुद्ध मुखग महलन बरावायो, अप्प लालवारिय कढि आयो ॥  
 रख्यतँ सुराजवाग खिल्लं रक्खिय, अब कँसैँ निभिहोहु न अविखय २८

\*काता वदि चौथ के दिना नाथद्वारे में । हाडों का राजा आया ॥ १॥ १ विष्णुध-  
 गवाज के भेट क्रिये २ थौवला नामक ग्राम में ॥ २० ॥ ३ तीन पैसों भर ४ वह अभम  
 बुधमिद मद्य भी पीता था ॥ २१ ॥ २२ ॥ ३ परगहनं उल्ल लुट्ट राजा को नहीं  
 समझता; अथवा उस लुट्ट ने परगहनं को नहीं समझाई ५ सर्व जानकर ७ पा-  
 भियों के हाथ विक गया ॥ २४ ॥ ८ मुकाम ९ मसुरे के घर में गया ॥ २५ ॥ १०  
 सुकला ११ पौष मास १२ सुन्दर ॥ २६ ॥ १३ दयावान् हृदयवाले देवसिंह ने १४  
 सामने १५ अपने घर ॥ २७ ॥ १६ सामग्री (सामान) १७ याकी का ॥ २८ ॥

देवासिंहका बुधसिंहको रचना] सप्तमराशि-सप्तत्रिंशमयूख (३२०५)

बुंदिय लोक विचार बिहीनों, क्रम लुट्टन तथहि अति कीनों ॥  
राउत देव तिनहि बरजाये, पै न रहे तब ग्रहन पठाये ॥२९॥  
सठ बुद्धहु सुनि रोकि न रक्खिय, उपाळंभ देवहिँ प्रति अक्खिय॥  
धरनि विपत्ति लोक मम धारत, बलिँ अत्थहि आधार विचारत३०  
लुट्टन खान देहु तुम सालक, क्यौँ मारँन पकरात कृपालक ॥  
जो सुनि देव तबहु कर जोरे, माफकरहु अोगन कहि मोरे॥३१॥  
अति सहनत्व देव अब लीनों, बुद्ध हिँतुँ बनि अधिक अधीनों ॥  
पंचहजारि ५००० ग्राम दिय पंचक ५, रुपय अठ ८ नित्य सु न  
रंचक ॥ ३२ ॥

निबहनकोँ यह देव निवेदिय, जड़ संभर तोउ न धप्पत जिय ॥  
करजहु करि रक्खैँ नहिँ कोऊ, समुझी तुच्छ मूढनृप सोऊ॥३३॥  
अगग त्रिलकख हजार अठारह ३१८०००, भुगते दम्म करज  
सह भारह ॥

वसु सत ८०० नित्य दये इक १ वैच्छर, तीस सहँस ३००००  
हँय हित उदारतर ॥ ३४ ॥

त्रिभव देव जिहिँ करज बिलायो, तोऊ अब गृह नजरि बतायो॥  
हो सब हेँय अघम नृप हडा, विरचिय तदपि देव हित वैँडा॥३५॥

[ मनोहरम् ]

बुंदीके बिनामति विडारि देवेके जे,  
तिन्हैँ राखि बहु बेरन विपत्ति विकलायो नाँ ॥  
याहीतँ रिसाय राँन छीनि लीनी बेघम,  
कहायो नाँहि रक्खहु तथापि लास तायो नाँ ॥

१ परंतु॥२९॥२ (उरहना) ओलंभा ३ फिर ॥ ३० ॥ ४ हे सालं ५ मेरे लोकों को  
॥ ३१ ॥ ६ सहनशीलता ७ बुधसिंह से ८ पांच ग्राम पांच हजार रुपय  
सालाना आमद के ९ वह कमती नहीं थे ॥ ३२ ॥ १० बुधसिंह का ॥ ३३ ॥  
११ एक वर्ष पर्यन्त १२ घोड़े सोलह लिये जिनके ॥ ३४ ॥ १३ सब प्रकार से स्वाज्य  
धा १४ पण्य ॥ ३५ ॥ १५ निर्वृत्ति १६ निज्ञान देने योग्य १७ महाराणा ने



पाघ पावलीनकी रु पैसेनकी पनई,  
मिली पै मजबूती मानि मन मुग्धायो नाँ ॥  
चौँडासौँ सपूत बैप्प राउलके बंस कोऊ,  
धर्म धुर धोरी धीर देवासो दिखायो नाँ ॥३६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुंदीपतिबुध-  
सिंहचरित्रेमहागणासत्थोपदेशक्रुद्धत्पक्तोदयपुरमार्गप्राप्तनाथद्वारथाँ  
वलाग्रामगतबुधसिंहचत्वारिंशल्लङ्घनोपायमद्याहिकेनन्हसन १ मेद-  
पाटग्रामलुण्टाकबुधसिंहस्वसुरदेवसिंहगेहबेघमगमन २ सोढापरि-  
तव्ययस्त्रगृहरक्षितबुधसिंहराउतदेवसिंहप्रशंसनं सप्तत्रिंशो मयूखः  
॥ ३७ ॥

आदितः पञ्चसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७५ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

याहि वरस दुरभिच्छँ भयो अति, नहिँ तून अन्न धनीहु धरैँ नति  
इक १ रूपपय उपधान्य जतन इत, मूल्य विक्रयो द्वैसत२००टकेन  
मित्त ॥ १ ॥

अब नृप तजि जन जान लगे इम, तरु अपत्र अफलहिँ पच्छिर्षं तिम  
मनहुँ ताँल सुक्केँ जल मच्छे, इम नहिँ गयेँ छुदमातक७अच्छे ॥२॥

१पगरखियाँ (जूतियाँ) २ चूड़ा के विना ३ वापा रावल के वंग में ॥ ३६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुधसिंह के चरित्रमें  
महाराणा के सत्य उपदेश करने पर क्रोधित होकर बुधसिंह का उदयपुर छोड़  
कर नाथद्वारैँ होकर थाँवला नामक ग्राम में चालीस लंघन करके अमल और  
मद्य को कम करना १ मेवाड़ के ग्रामों को लूटने हुए बुधसिंह का अपने ससुर  
देवसिंह के घर वेधम में जाना २ असह खरच भुगत कर बुधसिंह को अपने  
घर में रखने की राउत देवसिंह की प्रशंसा का सँनीसवाँ ३७ मयूख समाप्त  
हूआ और आदि से दोसौँ पद्यहत्त २७५ मयूख हुए ॥

४ दुर्भिक्ष (कहत) ५ धनवान भी नखना धारण करते थे ६ अटक धान्य (साँ-  
वाँ, मळाँचा आदि) ७ एक रूपये का दोसौँ टकों भर ॥ १ ॥ ८ मनुष्य ९ वि-  
ना पत्ते और बिना कलों के वृक्ष को पत्ती छाँडे जैसे १० सूखे तलाव में ॥ २ ॥

\*यादि गजादिंरखत अब आयो, मंगरोल रक्खयो सु मँगायो ॥  
 नृप कोटेस सोहु पठयो नन, खान खरच दै जाहु कहयो घन ॥३॥  
 इम ठाँठाँ बहु विभव रहयो अब, संभरकोँ निंदत जिहान सब ॥  
 पै अफीम आसव तजि पक्के, छुधा बढाय असन बहु छक्के ॥ ४ ॥  
 अगहि तजि कोटापति आहुति, आई निज पीहर खुंडाउति ॥

हुति १ उति २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

कोटापुरहि रही कछवाहिय, अबसु नृपहु बेघम अवगाँहिय ॥५॥  
 जैतसुवन उत देव जंग जय, गिनि बुद्धहिँ अधन रु कोटा गय ॥  
 तत्थहि घाय अच्छ हुव तत्तौ, पुनि कोटेस सभा वह पैतौ ॥ ६ ॥  
 महाराव तब कहिय वैर्ष मत, सारधलकख १५०००० पटा तुमरो  
 गंत ॥

हम दुवलकख २००००० पटा अबदैहँ, अरु अच्छर्व तुमरे घर अँहँ ७  
 अब बुंदीस नामहु न अकखहु, रीति अदब दुगुनों यह रक्खहु ॥  
 यहै सुनत देवा रिस आयो, दरबीकर जिम पुच्छ दबायो ॥ ८ ॥  
 उठयो भट भुज ठोकि अचानक, इत उत परिग सभा विच ओर्दक  
 नक १ दक २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

अरु उत्तर बुल्लयो असंक उग, पति कूरम अग्गँ दिह्लिय पुर ॥ ९ ॥  
 बुद्ध रु भीम उभय करि इकत, त्रय ३ नृप इक्क १ थाल जिम्मिय  
 तंत ॥

हे सम जनक जैत तँहँ हाजरि, कहयो तिनहिँ कूरमपतिहितकरि  
 सुभट जैत तुम मिलहु भीम सन, अब न बिरोध सोम हुव अप्पन

\* स्मरण १ हाथी आदि सामान ॥ ३ ॥ १ टाम ठाम (जमह जमह) ॥ ४ ॥  
 १ बुधसिंह ने निर्धन बेघम का धाह लिया ॥२॥ २ ताता (चंखल) ३ गया ॥३॥  
 ४ घमंड की बुद्धि से ५ गया ६ निर्मलता से; अथवा घायल हुआ उससे अच्छे  
 होने के उदमव से; अथवा तुमारे घर तक सन्मुख आयेगे 'अच्छम् अभिसुवे'  
 इति शब्दार्थचिन्तासणिः ॥ ७ ॥ ७ सर्व ॥ ८ भय ॥ ९ ॥ १ बुधसिंह और  
 २ भीमसिंह को १० तहां ११ जयसिंह ने ॥ १० ॥ १२ मिलाप

सु सुनि भीम\*अग्घो कर किन्नों, द्रुतहिं जैत उत्तर तव दिन्नों ११  
हड्डनकी जननी रे अघहिय, भामिनि गिनि बुंदिय तैं भुग्गिय ॥  
यातैं स्वामिहराम अधम अति, मिलहिं तोहि किम धरम स्वच्छ  
मति ॥ १२ ॥

काहि इम दिय उठेलि ताको कर, वाके सुतहिं कहत इम अकखर  
अप्पन स्वामि तोहिन सुहावहिं, तोनहमहिं तव आश्रय भावहिं ॥ १३ ॥  
देव न इम परिखद बिच दइयो, फिरि धकि उठत घाय इक फट्यो  
सहाराव कर जोरि मनायो, यह मन्नों न मुररि तउ आयो ॥ १४ ॥  
फटत घाय अंतक गद फैलिय, कतिक मास बिच त्रिदिववासकिय  
इम भट देव धरम अवधारयो, बिपति सहि रू धन अनय बिहारयो १५  
कलियुग काल भयो यह भीखम, है इक जीह कहैं कोलों हम  
होवत कुल मुहुकम्म हरामी, निकस्यो वैरिसल्ल कुल नामी १६  
बुध इत गरभ जानि नव बाला, व्याहि जु रक्खिय बंसवहाला ॥  
ताके उदर कुमर उद्दम हुब, धरिय नाम जिहिं चंद्रसिंह ध्रुव ॥ १७ ॥  
मधुगंत अमा सत्त बसु ८७ संवत, मातुलं घरहि बाल यह भो बतैं  
इहिं असु धारिय मास अहारहि १८, वेधम नौयसक्यो इक १ बारहि  
चुंडाउति रानिय इत वेधम, गर्भ धर्यो सु भयो पुनि उद्दम ॥  
संवत मान अंक बसु सत्तह १७८९, अरु सित बाहुल्ल भाल्लचंद्र  
अह १४ ॥ १९ ॥

\*हाथ आग किया (हाथ आग बढ़ाया) जैतसिंह ने ज्ञीघ्र हीं ॥ ११ ॥ ११ स्त्री जान  
कर ॥ १२ ॥ २ उस जैत्रसिंह के पुत्र को इसप्रकार कहते हो ॥ १३ ॥ ३ इसप्रकार  
सभा में देवसिंह नहीं दवा ॥ १४ ॥ ४ काल रोग ५ स्वर्ग में ६ धारण किया  
॥ १५ ॥ ७ कलियुग के समय में यह देवसिंह भीष्म के स्वभान हुआ ॥ १६ ॥  
८ बुधसिंह ने ९ नवीन स्त्री को १० जन्म ॥ १७ ॥ ११ चैत्र मास की अमावा-  
स्या को १२ मामा के घर में १३ संतोष दायक, अधवा बालक के होने की वा-  
ता हुई १४ प्राण १५ नहीं आ सका ॥ १६ ॥ १६ जन्म [उत्पन्न] १७ कार्तिक सुदि-  
१८ शिव का दिन (ज्योतिष में चौदस तिथि के स्वामी शिव हैं) ॥ १९ ॥

भृगुं बासर इम हुव कुमार भव, दीपसिंह नामक अरि बनदव ॥  
इत जैपुर साहस अधिकाई, बलि जयसिंह जु सुता बुलाई ॥ २० ॥  
कृष्णकुमारि नाम अति अग्गहँ, अभयसिंह मरुपति साली यह ॥

गह१ यह२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

माधव बहिनि बडी लहि मेलहिँ, दई सविधि परिनाय दलेलहिँ २१  
तब कूरम घर व्याह अनंतर, बसि जामात सुता इक १ बच्छर ॥  
अंक अठ सत्रह १७८९सक आगम, सिक्ख पाय जयसिंह जनक सम  
आई अब बुंदिय कछवाही, बाहिर रहि यह टेक निवाही ॥  
स्वसुर स्वकीयँ पापमति सालम, छत्रमहल रहत जु छत्राधम ॥ २३ ॥

लम१धम२अन्त्यानुप्रासः १ ॥

जो यह राज्य हत्थ निज जानै, काहूको न कथित उर आनै ॥  
सुत तिय जानि रुमानि स्वसुर सुँह, सो तिहिँ बेर गोहु नहि सम्मुह २४  
कछवाही इहिँ अनख रिसाई, कूर स्वसुर प्रति यहै कहाई ॥  
मै बुधसिंह तनयकी नारी, किंकर तुम मम भाखितकारी ॥ २५ ॥  
स्वसुर मन्नि सम्मुह सठ नौयउ, कर जोरि न पुनि बिनय कहायउ  
नृप महलन रहिकै अति उन्नति, भुग्गत राज्य अंध बनि भूपति २६  
बसहु छोरि महलन पुर बाहिर, जो सुख चहत होहु कहि जाहिर  
चँवि इम ताहि निकारन चाही, बहु सिपाह पठये कछवाही ॥ २७ ॥  
पुनि सालम निकस्यो अति सोचत, निर्जन सहित करजोरि  
अधिक नत ॥

चत १ नत २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

जान्योँ अबहि प्रतिष्ठा जैहँ, कछवाही इच्छित अब कैहँ ॥ २८ ॥

१ शुक्रवार २ हठ की अधिकाई से ३ फिर ॥ २० ॥ ४ आग्रह (आदर) से ५ माधो-  
सिंह की ॥ २१ ॥ ६ व्याह के पीछे ७ जमाई और बेटी ८ वर्ष ९ पिता से  
॥ २२ ॥ १० अपना ॥ २३ ॥ ११ कहना १२ छुख ॥ २४ ॥ १३ मेरा कथन (कहा)  
करनेवाला ॥ २५ ॥ १४ नहीं आया ॥ २६ ॥ १५ इस प्रकार कह कर ॥ २७ ॥ १६ अपने  
लोकोँ सहित १७ नम्र होकर १८ करि हैं (अपना चाहा हुआ करेगी) ॥ २८ ॥

इम बिचारि पुर बाहिर आयो, बलि तत्थहि निज निलय बनायो  
स्वबैसि राज्य इम करि हठ साहिय, अब महलन प्रविसी कछ-  
वाहिय ॥ २९ ॥

प्रथमहि फल सालम यह पायो, अब नव नव पैहैं अकुलायो ॥  
इत मरुपति गुजरात विजय करि, धर मारव पुनि आय गरव  
धरि ॥ ३० ॥

बुद्ध उदंत सुनि रु लिखि कग्गरं, पुर बेघम पठये चर सत्वर ॥  
बेघम रहे मरुप चर मासन, तउ न जबाब लिखयो जड़तासन ३१  
इम दस १०बे मरुप देल आयउ, पै इक १दल न बुद्ध सन पायउ ॥  
यह सुनि भो मरुभूप उदासह, रहि इत बेघम नृपहु निरासह ३२  
बुद्धि बिगारि उदबेग बढयो अति, रहन लग्यो एकांत मंद मति ॥  
स्वीयं जनहु नहिं निकट सुहावहिं, काम परहिं तब टेरि बुलावहिं ३३

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी  
पतिबुधसिंहचरित्रे कोटामहारावोपरिपरिषत्क्रुद्धविदीर्णत्तबुन्दी  
सुभटदेवसिंहमरणे १ बुधसिंहपुत्रद्वयप्रसवे २ परिणीतजयसिंह-  
कन्यबुन्दीनवनृपदल्लेखसिंहबुन्द्यागमने ३ बुधसिंहोन्मादगदवर्णने  
मष्टत्रिंशो मयूखः ॥ ३८ ॥

आदितः षट्सप्तत्यधिकद्विशततमः ॥ २७६ ॥

१मकान २अपने आधीन ॥ २९ ॥ ३ मारवाड़ में ॥ ३० ॥ ४ बुधसिंह का वृत्ता-  
न्त सुन कर ५ पत्र ६ हलकारा ७ शीघ्र भेजा ८ मूर्खता से ॥ ३१ ॥ ९  
मारवाड़ के राजा के पत्र ॥ ३२ ॥ १० चित्तभ्रम ११ अपने लोक भी ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुन्दीके राजाबुधसिंह  
के चरित्र में बुन्दी के उमराव देवसिंह का सभामें कोटा के महाराव पर क्रोध  
करने के कारण घाव फटकर मरना १ बुधसिंह के दो पुत्रोंका उत्पन्न होना २ बुन्दी  
के नवीन राजा दल्लेखसिंह का राजा जयसिंह की पुत्री से विवाह करके बुन्दी  
आना ३ बुधसिंह को चित्तभ्रम होने की बीमारी के वर्णन का अदृतीसवां ३८  
मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से दो सौ छहत्तर २७६ मयूख हुए ॥

पादाकुलकम् ॥

इत जयसिंह प्रताप बढयो अति, \*प्रथित कहँ सु करँ दिछिय पति॥  
अदबहु लिखँ बिसेस साह अब, कग्गरमाँहिँ लिखयोहु जो न कब१  
जँहँ राजाधिराज उपपदं जुत, लिखत राजराजेंद्र लग्यो हुँत ॥

तिम तिम बढयो सबन सिर कूरम, तहाँ अवर कोउन हुव तासम२  
किय रूपय कोसन कोटिन धन, सहँसन गज हय चतुर मँदुरना

घन१ रन२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

जो नहि साह वजीर सके करि, सो जयसिंह करँ बल संभरि ३  
स्मृतिनँ सुधाय न्याय बिसतारँ, बिप्रन अग्घ बिसेस बढारँ ॥

बाहिर इम धरमानुग दीसँ, पै सु रच्यो न पिष्ट कँहँ पीसँ ॥ ४ ॥

जो निज धरम रच्यो कँरुमहिय, क्योँ तब कर्म अधर्म इते किय ॥

हन्योँ प्रथम सिवसिंह स्वीयसुत, जोहु तास जँननी निज तिय जुत५

पुनि जननी निजँ स्वर्ग पठाई, भट बरँ बिजयसिंह बैलि भाई ॥

पुनि भानेजँ सत्य जो होतो, अरु असत्य सिंसुँ हो तउ सोतो॥६॥

पुनि संग्रामँ रामपुर स्वामी, हन्योँ दग्ग रचि होय हँरामी ॥

\*प्रसिद्ध (एकान्त में कहना करना स्नेह का, और प्रसिद्ध में कहना करना दवाव का सूचक है) ॥ १ ॥ १पदवी (खिताब) थी २शीघ्र ॥ ३ ॥ ३गजशाला और हयशालाओं में हजारों हाथी घोड़े करदिये ४बल से भरकर; अथवा अपने बल को संभाल कर ॥ ५ ॥ ५ धर्मशास्त्रों को दिखा कर ६ आघ (आदर) ७ ऊपर से इस प्रकार धर्म के साथ चलने वाला दीखता था, परन्तु ८ उस धर्म में रचा (रंगा) नहीं था ९ पिसे हुए को पीसता रहा ॥ ४ ॥ यदि १० जयसिंह का हृदय धर्म में रचाहुआ था तो इतने अधर्म के काम क्योँ किये ११ अपने पुत्र शिवसिंह को मारा १२ उस शिवसिंह की माता और जयसिंह की स्त्री सहित ॥ ५ ॥ १३ जयसिंह की माता को मारी १४ श्रेष्ठ वीर १५ फिर अपने भाई बिजयसिंह को मारा १६ अपने भानजे और बुंदी के कुमर भवानीसिंह को मारा १७ यदि वह कृत्रिम था तो भी बालक था ॥ ६ ॥ १८संग्रामसिंह चंद्रावत को १९ अधर्मी होकर दगा से मारा

सत्त अठ सत्रह १७८८ \* मित संवत, तेरह लकख १३०००००  
साह रूपय तत ॥ ७ ॥

लौ अरु मकितव मिलपो मरहठन, सो मुखो न अबलग अधर्म सन  
ठन १ रन२ अंत्यानुप्रासः ॥१॥

साह तोस बिस्वासहि रकखै, यह तउ मंल दक्खिनिन अकखै ॥८॥  
अैसी लखि अक्खिय निंदा हम, अरु अच्छीहु करी बहु कूरम ॥  
अब नव वसु सत्रह १७८९ मित संवत, आयो पुनि मालवधर  
उद्धत ॥ ९ ॥

षट्पात् ॥

अब हायन नव अठ ८९ विसद बाहुल दर्पक १३ दिन ॥  
आयउ पुर उज्जेन अवनि दब्बत कूरम इन ॥

सत्तलकख ७००००० साह सन व्पार्जरूपय मंगाय बलि ॥  
मरहठन किय मेल किय न हित साह मंडि कालि ॥

दल्ल लिखिय रान संग्राम प्रति तुमहु सेन भजहु अंतुल ॥  
यह आय भुम्मि दब्बन समय मिलि मरहठन बल बिपुल १०

दोहा ॥

सुनत रान संग्राम यह, दल्ल पठयो सु देराज ॥

सबन सिरोमनि निज सचिव, धाइधौत नगराज ॥ ११ ॥

दराज १ गराज २ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

बिनु सादडि अरु बेदला, सर्व सुभट दिय संग ॥

ते दसउर आये त्वरित, अबनी लोभ उमंग ॥ १२ ॥

\* प्रमाणवाले १ तहां ॥ ७ ॥ १ छली १ से १ उस जयसिंह का २ सलाह  
॥ ८ ॥ ९ ॥ ३ संवत् ४ कार्तिक सुदि ५ कामदेव की तिथि (ज्योतिष में  
तेरस तिथि का स्वामी कामदेव है) ६ भूमि को ७ कड़वाहों का पति ८ छल  
से ९ बादशाह का हित रच कर युद्ध नहीं किया १० पत्र ११ तुलना रहित  
१२ बहुत ॥ १० ॥ १३ सेना १४ बड़ी १५ धाय भाई ॥ ११-॥ १६ सादड़ी के  
राजशाया और बेदला के राव बिना १७ शीघ्र ॥ १२ ॥

दसउरतैं पुनि कुंच करि, आयउ पुर उज्जैन ॥  
कूरमसों दित मिलन करि, संग रहिय बस सैन ॥ १३ ॥

षट्पात् ॥

\*बुल्लयो तव नगराज देवसिंहहु बेघम पति ॥  
तवहि देव करि कुंच चलयो सहसत्थ बेग गति ॥  
तवहु मंदे बुंदीस चलयो निज सालक संगहि ॥  
सोधी यह कुम्म सन मिलि रु लौहैं स्वकीय भहि ॥  
जयसिंह व्याहि तनयां जु पै पट्ट दलेलहिं थप्पिदिय ॥  
पिक्खहु तथापि जड़बुद्ध मति लौन जातनिज वसुमतिर्य ॥ १४ ॥

दोहा ॥

देवसिंह निज जामिंपहिं, आत देखि अकुलाय ॥  
नगर सलूमरि नाह प्रति, लिखि दल अग्ग पठाय ॥ १५ ॥  
जामिप आवत संग मम, निज हठ मन्नै नाहिं ॥  
कूरमको आसय लिखहु, यातैं हम थित आहिं ॥ १६ ॥  
जु सुनि केसरीसिंह जत्र, नगर सलूमरि नाह ॥  
पुच्छिय यह जयसिंह प्रति, कहिय कुप्पि कछवाह ॥ १७ ॥  
तुम सु रान घर मुखप भटैं, अरु छत्रै नहि येहु ॥  
चिति सु वत्त रु रहहु चुप, श्रैवनन मुंदन देहु ॥ १८ ॥  
सुं सुनि सलूमरि पति लिखिय, देवसिंह प्रति पत्त ॥  
आवन देहु न बुद्ध यैंहैं, रस नहिं कुम्म बिरत्तैं ॥ १९ ॥

षट्पात् ॥

॥ १३ ॥ नगराज न बेघम के पति देवसिंह को \* बुलाया  
१ मूर्ख २ सोची (विचारी) ३ जयसिंह से ४ मेरी भूमि लेदेगा ५ पुरी व्याह  
कर ६ अपनी भूमि लेने को जाता है (यह कवि की वक्रोक्ति का बचन है)  
॥ १४ ॥ ७ बहिनोई को ८ पत्र लिखकर ॥ १५ ॥ ९ यहाँ ठहरे हुए हैं ॥ १६ ॥  
॥ १७ ॥ १० उमराव ११ कानों को बंद करलो ॥ १८ ॥ १२ सो १३ जयसिंह  
प्रतिकूल है ॥ १९ ॥



देवसिंह तब यह \*उदंत बुधहिंतु निवेदिय ॥  
 तबहु अंध बुन्दीस नाहिं पछो प्रयान किय ॥  
 यह लिखि देव उदार कुंच विरचिय बेघम प्रति ॥  
 ताहि बिगारन तबहि मुरघो बुधसिंह हीन मति ॥  
 यह सुनत राम संग्राम धकि देवहिंतु बेघम लई ॥  
 सद्धत बिमूढ जामीस सुख सालक बिच यह गति भई ॥२०॥  
 दोहा ॥

नगर फुरक्काबाद पति, नाम मुहुम्मद मिच्छ ॥  
 कूरमपति वासौं कियउ, अगग बइर रन ईच्छ ॥ २१ ॥  
 अब बुंदिय आमैरकै, जवन वहै लखि जुद्ध ॥  
 भल कग्गर भेजत भयो, बेघम पुर प्रति बुद्ध ॥ २२ ॥  
 सहजराम खत्रिय सचिव, ताको लौ दल तत्त ॥  
 बेघम आय रु बुद्धसौं, मिल्यो लख्यो सु प्रमत्त ॥ २३ ॥  
 वह तँथापि बहुदिन रह्यो, मंग्यो दल सु मिल्यो न ॥  
 व्है उदास निज गेह तब, गो खत्रिय करिं गोन ॥ २४ ॥  
 सक नभ नव सत्रह १७९० समय, द्वादसि १२माघ वलच्छ ॥  
 तजिय रान संग्राम तँनु, दान समय नय दँच्छ ॥ २५ ॥  
 तबहि उदैपुर पट्ट लहि, हुव रानाँ जंगतेस ॥  
 बुद्ध सु इत देवहिं विपति, अँदय दई जड़ एस ॥ २६ ॥  
 सक नभ नव सत्रह १७९०समय, अब फग्गुन अँवदात ॥  
 मंगलवार चउत्थि ४ मिलि, प्रकटत समय प्रभात ॥२७॥  
 चुंडाउति रानी जठैर, रहि नव ९ मास प्रमान ॥

\*वृत्तांत १ वहिन के पति का ॥ २० ॥ २ युद्ध चाह कर ॥ २१ ॥ ३ कागद (पत्र) ॥ २२ ॥  
 ४ तहाँ पत्र लेकर ॥ २३ ॥ ५ तोभी ॥ २४ ॥ ६ शुक्लपक्ष. दान में, समय में  
 और नीति में ८ चतुर संग्रामसिंह ने ७ शरीर छोडा ॥ २५ ॥ ९ जगत्सिंह १०  
 निर्देय ने ॥ २६ ॥ ११ शुक्लपक्ष ॥ २७ ॥ १२ उदर से

✽दुहिता हुव बुंदीसकै, दीपकुमरि अभिधान ॥ २८ ॥

इतिथ्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-  
पतिबुधसिंहचरित्रे जयपुरनृपजयसिंहस्तुतितदनुचितकर्मगणान् १  
सज्जसैन्यजयसिंहावन्तिगमनबुधसिंहप्रमदन २ उदयपुरमहारा-  
णासंग्रामसिंहमरणानन्तरजगत्सिंहतत्पट्टाधिवेशनवर्णनमेकोनच-  
त्वारिंशो मयूखः ॥ ३९ ॥

आदितः सप्तसप्तत्यधिकद्विशततमः ॥ २७७ ॥

पट्पात् ॥

इत यह हड्ड प्रतापसिंह सालम जिहो सुव ॥

अनुजहिं गिनि अवनसै भूप सम्मलि कुसथल भुव ॥

आयो तव नृप याहि नाहि अहरि सुह लायो ॥

अव तिहिं कोटा आय रानि प्रति मंत्र रचायो ॥

विसवासि ताहि तिय बुद्धकी कछवाही यह मंत्र किय ॥

हम देत खरच तुम जाय दृठि बल दकिखन आनहु बलिप ११

तव प्रताप दृठ तिख मिल्पो दकिखन मरहडन ॥

लखि श्रीमन्त अनीक अतुल आरंभ मुदित मन ॥

वावा पंडित रामचंद्र १ संध्या राणजिय १ ॥

७पुत्री १ नाम ॥ २८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के राजा  
बुधसिंह के चरित्र में, जयपुर के राजा जयसिंह की स्तुति और उनके अनुचि-  
न कार्यों की गणना १ जयसिंह का सेना सज कर उजीन जाना और बुधसिं-  
ह का प्रमाद २ उदयपुर में महाराणा संग्रामसिंह का देहांत होकर महाराणा  
जयसिंह के पाठ बैठने के वर्णन का उनचालीसवा ३९ मयूख समाप्त हुआ  
और आदि से दोसरी भिनहन २७७ मयूख ३९ ॥

२ जयपट (पटा) पुर १ छोटेभाई को बुन्दी का राजा जानकर कुसथल की  
गुह ४ भूमि में २ बुधसिंह ने ३ बुधसिंह को स्त्री कछवाही ने ॥ १ ॥ ७  
पुत्रा के पति कीरतुलना रचित आरंभवाली सेना को देनकर मन प्रसन्न हुआ,

पुण्यापतिके पासवान बलमें पति ए वियर ॥  
 इनतैहु अधिक श्रीमंतके दल मालिक उमराव हुवर ॥  
 आनंदराव परमार१ अरु हुलकरराव मलार२ हुव ॥ २ ॥  
 दोहा ॥

इन च्यारि४न दल मुख्य लिखि, मिलि प्रताप अति मोदा॥  
 दम्म लकख खट६०००००देन क्रिय, बुंदियपर स विनोदा॥३॥  
 इत कूरम कछु कज्ज बसि, मालव अवनि बिहार्य ॥  
 सालम सुवन दलेल सह, जैपुर पतो जाय ॥ ४ ॥  
 मरहठ्ठन परताप मिलि, दै खट लकख६०००००सु दम्म ॥  
 दल दुस्सह लायो लसन, कंत्रल बुंदिय कम्म ॥ ५ ॥  
 सक इक नव सत्रह१७६१ समय, अमा रू माधव मास॥  
 बुंदी विंटिय आनिकै, गहत अरक तमै ग्रास ॥ ६ ॥  
 भुजङ्गप्रयातम् ॥

बढे दक्खिनी त्यों लगे नैर बुंदी, खुराँपकखराँधुम्मि है भुम्मि खुंदी  
 भगी ज्वालिका दीपकी मालिकासी, दगी नालिका कालिका  
 बालिकासी ॥ ७ ॥

ढटथो पोन भंडेनमें गोन हंकयो, बढथो धोर अंधार संसार ढंकयो ॥

१ पृना के पति के पास रहनेवाले २ सेना में ये दोनों पति थ ३ सेना-  
 पति ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ कछवाहा जयसिंह कुछ कार्य वश होकर ५ मालवे की  
 भूमि को छोडकर ६ सालमसिंह के पुत्र दलेलसिंह सहित ॥ ४ ॥ ७ रूपये  
 ८ बुन्दी के बुद्ध के ९ कार्य पर अर्थात् बुंदी में युद्ध करने को लाया ॥ ५ ॥  
 ११ वैशाख मास की १० अमायास्या के दिन १२ सूर्य को १३ राहु ने ग्रसा (ग्रहण  
 हुआ) उन समय बुंदी के घेरा लगाया ॥ ६ ॥ दक्षिणी बढकर बुंदी नगर क  
 लगे सो १४ बाँडे घूमकर खुराँ से और पाखराँ से भूमि को बुंदी (कुचली)  
 और दीपमाला के समान १६ ज्वाला १९ प्रज्वलित हुई और कालिका की  
 पुत्रियों के समान १७ ताँपे दगी ॥ ७ ॥ भंडों में नहीं चल सकने के कारण  
 पवन रुकगया और भयंकर अंधेरा बढकर संसार ढकगया.

चलै \*लोल गोला भ्रमै अग्नि िभारै, दुबाजू छिके कोट दैद दरारै  
परै गोख अट्टाल तुटै पताका, उडै छद्दक भद्रमै ज्याँ बलाका ॥  
छिके त्याँ गिरै थंभ प्रसाद छत्री, पताका उडै अब्भ व्हैव्है पतत्री ९  
उडै गैन गिद्धी लगै पच्छ अग्नी, लखै चंगके पुच्छ ज्याँ राललग्गी  
डिगै कोलै त्याँ व्याल पाताल डोलै, अकूपारकी भारसाँ पिडि  
बोलै ॥ १० ॥

चलै तोप प्रीकारको लोप मंडै, शिरै खोमके तोम के खंड खंडै ॥  
जरै हट्ट बाजार योँ हेति जग्गी, मनाँ राल को तुलमै अग्नि लग्गी ११  
कहाँ दैद पाँटीर कारी कँवारी, बुभावै कहाँ डारिके नीर नारी ॥  
चिनंगी उडै चित्रसारीन चंडै, मनाँ बाग खद्योतं प्रद्योतं मंडै ॥ १२ ॥  
बडे पट्ट अट्टालिका पौत बजै, घनी बालिका पालिका छोरि भजै  
कहाँ भारसाँ धेनु हंभारै कहै, वरै द्वार आंगारपै छार बहै ॥ १३ ॥

\*चपल गोले चलकर अग्नि की ज्वालाजगती है जिससे कोट दरारें देकर दोनों  
ओर फूटता है ॥ ८ ॥ उन गोलों से १ भरोखे २ छतें वुरजें गिरकर ध्वजायें गिरती  
हैं और जैसे भाद्रपद मास में १ वक्र (बगुले) उडें तैसे छादित होकर उडती  
हैं, थंभे ४ महल और छतरियें छिककर गिरती हैं और ५ आकाश में ध्वजा ६  
पत्ती होकर उडती है ॥ ९ ॥ पांखों में ७ अग्नि लगकर अधिनियां आकाश  
में उडती हैं सो मानों ८ पतंग (कनकउवा) के पूछ में राल लगी होवे  
वैसे दीखती हैं ९ वराह डिगता है १० पाताल में शेषनाग हिलता है और  
भार से ११ कमठ की पीठ बोलती है "अकूपारः कूर्मराजः" इति शब्दार्थचि-  
न्तामणौ ॥ १० ॥ तोपें चलकर १२ कोट का नाश करती हैं और कितनी ही  
१३ वुरजों के १४ समूह के टुकड़े टुकड़े करती हैं, बाजार में दुकानें जलकर  
ऐसी १५ ज्वाला (झाल) उठी कि मानों राल में १६ किना १७ रुई में अग्नि  
लगी है ॥ ११ ॥ कहीं पर १९ चन्दन की की हुई कँवाडियें (रुपाट विशेष) १८  
जलती हैं, सो मानों वाग में २० जुगनू २१ प्रकाश करते हैं ॥ १२ ॥ छतों के बडे  
पाटों के २२ पड़ने का शब्द होता है जिससे बहुत स्त्रियें २३ पलंग लेले कर  
भागती हैं, कहीं पर ज्वाला से गडवें २४ करुणामई शब्द करके निकलती हैं  
२५ घरों के जलने से दरवाजों पर २६ भस्मि (राख) बढती है; अधवा जलने  
से घरों के द्वार पर भस्मि बढती है ॥ १३ ॥

फरकें कहां गोख प्रासाद फुट्टें, तरकें ध्वजादंडके खंड तुट्टें ॥  
 गिरें दोहरे तेहरे गेह गोलैं, घने\*पीठापल्लयंक बीथीन डोलैं १४  
 धुनैं धप्पिगोपानसीखप्परात्ती, उडैं मेदपैं ॥इद्व ज्यों गिद्व आत्ती  
 हुते ज्यों रहे त्यों सबै लोक हारे, भिली ओट बुंदी परे कोटवारे १५  
 इतैं \*दुग्गपैं बीर दैदैं निसैनी, बढे बंदरी सेन ज्यों लंक लैनी ॥  
 भज्यो सालमाँ सौ गह्यो खूब ठाक्यो, जनानाँ लुटयो रारि थानाँ  
 न रोक्यो ॥ १६ ॥

किते बीर जैसिंह जे अँत्थ रक्खे, तके सम्भुहे रागपैं जानि तँक्खे ॥  
 हरामिन हड्डेनकी हारि होतैं, जनी अप्पनी बिप्फुरे जंग जोतैं १७  
 मची मार बाजारमैं बाढ बज्ज्यो, लग्यो कंप भीरूनकोँ नीर लज्ज्यो  
 मिले दक्खिनी कूरमी बीर मत्ते, कराकैं वजे हाडकी आड कँत्ते १८  
 बढयो धँत्त अँरत्त बीथी वजारैं, उडैं सुंड त्यों सुंड नच्चैं अखारैं ॥  
 कढे नैन नच्चैं गिरैं भौह काला, मनाँ कँजके भाँरके भाँर माला १९  
 बडैं हत्थ केते बनैं लुत्थि बत्थी, बनैं अच्चररितैं घने लुँत्थि बत्थी ॥  
 बजी चाप टंकार भंकार भेरी, घने दक्खिनी कूरमी सेन घेरी २०

\*बहुत चोकियें (बाजोट) पँर्घङ्ग (पलंग) गलियों में डोलते हैं ॥ १४ ॥ मिथ्यालें "गो-  
 पानसी तु बलभी ल्लादने वक्रदारुणि" इत्यमरः ॥ जलकर उनकें ऊपर से १ छपारों  
 की पंक्ति उडती है सो मानों मांस के ऊपर अधों की ॥ बड़ी पंक्ति उडती है ॥ १५ ॥  
 \*दुर्ग (गढ़) पर लंका को लेने के लिये १ बंदरों की सेना लड़ी जैसे २ सालम-  
 सिंह भगा जिसको पकड़ कर खूब ठोका ॥ १६ ॥ ३ यहाँ रक्खे थे वे ४ राग  
 के ऊपर तत्क सर्प के समान सम्भुख हुए ५ अधमी हाडाओं की हार होते ही  
 उस युद्ध को देखकर अपनी ६ उत्पत्ति को "जनिरुत्पत्तिरुद्धवः" इत्यमरः ॥  
 ७ भूल गये अर्थात् हाडा क्षत्रियों में जन्म लेकर भागना नहीं चाहिये था सो  
 भूलकर भाग गये ॥ १७ ॥ ८ कछवाहे वीर मस्त होकर मिले, हड्डियों की आड पर  
 ९ तलवारों के कड़ाके वजे ॥ १८ ॥ १२ गलियों और बाजारों में १० घावों से  
 ११ रुधिर का समूह बढ़ा (यहाँ अरत्त का आकार लघुच्चय अर्थ में है) १३  
 आनों कमल के गुच्छे पर भ्रमरों की माला है ॥ १९ ॥ १४ अप्सराओं से गाढ  
 अलिंगन करके (अंग भिड़ाकर) मिलते हैं १५ नोषत भयंकर शब्द से बजी ॥ २० ॥

भुकैँ सत्थ डेरहत्थतैँ मत्थ भाँरैँ, कुलात्ती किधौँ चक्क भंडा उतारैँ॥  
 कडैँ पार लैँ लार अंतैँ कटारी, मनौँ गौररू नागिनी हत्थ भारी२१  
 बहैँ नारि अच्छी कि अच्छी वरच्छी, मिलैँ कोचकोँ फारि ज्यौँ  
 वारि मच्छी ॥

वजी रीठ बुंदी सु वैसाख अडे, सजे दक्खिनी ताँवके घाव सडे २२  
 घनौँ चक्ककोँ देखनौँ अक्क चाहयो, सुपैँ पर्वमैँ गाहकी राँह साह्यो ॥  
 सकयो देखि यौँ नाँहि स्वभाँनु सारैँ, नतो तद्विनाँ जाम अह्यौँ ८  
 निहारैँ ॥ २३ ॥

कहाँ मोहँ आरोप कुकैँ कँथासी, वकैँ वौरुनी मत्त ज्यौँ ग्राम बासी।  
 किते उल्लटैँ फाटि छत्ता कँवारे, मनौँ द्वार भंडार हीँके उघारे ॥२४॥  
 भगकैँ कडैँ खुर्परी फुट्टि भेजे, फरकैँ कहाँ पिप्फरे के कलेजे ॥  
 भिरे दक्खिनी बुद्धके काज भारी, मिलीजिति ओकरुँमी सेन मारी२५  
 षट्पदी ॥

मिलि प्रताप मरहट्ट जिति बुंदिय जस लिन्नौँ ॥

दोनों सेना झुककर दोनों हाथों से घस्तक उतारती हैं सो मानों २ चाक के ऊपर १ से कुम्हारी भांडा (कलश) उतारती है और आंतों को साथ ले कर कटारी पार निकलती है सो मानों ३ गारडू (कालवेलिये) के हाथ में बडी सर्पिणी है ॥२१॥ ४ नादियें (नलें) बहती हैं और कवचों को फाड़कर वरच्छियें बहती हैं सो मानों पानी में मच्छियें बहती हैं. (यहां वरच्छी के कवच को फोड़ने की उपमा के संबंध से मच्छी के जाल को तोड़कर निकलना समझना चाहिये; अथवा जैसे जल में मच्छी निकले तैसे कवचों को फोड़कर शरीर में वरच्छियें निकलती हैं) प्रताप देनेवाले ॥२२॥ ७ सूर्यने इस सेना को बहुत देखना चाहा परन्तु उपराग में उस (सूर्य) के ८ ग्राहकी ९ राहु ने पकड़ लिया; अथवा युद्ध के ग्राहकी सूर्य को ग्रहण में राहु ने पकड़ लिया इसकारण ० राहु के वश में होकर नहीं देखसका नहीं तो उस दिन १ आठ पहर देखता ॥२३॥ कहीं पर १२ मूर्छा में १३ कथा करने के समान कूकता है जैसे १४ मय में मत्त होकर गाँवों में रहनेवाला (ग्रामीण) कूकता है १५ हृदय रुपी भंडार के कपाट खोले हैं ॥२४॥ १६ खोपरी १७ और कहीं कहीं कई केफरे और कलेज कड़कते हैं, १= बुधसिंह के अर्थ १९, कछवाहों की सेना को ॥२५॥

गहि सालम निज \*जनक वंदि हुलकर वसि किन्नों ॥  
 सालमको सरबस्व सज्ज निज करन सुहाई ॥  
 नगर नैनवा जाय दई निज नाम दुहाई ॥

बुंदिय छुराय मरहठ इत रस ६ मुकाम तथहि रहिय ॥  
 दिस दिसन वत्त फुटिय द्रुतहि कविन वाह दक्खिन कहियर६  
 ॥ दोहा ॥

सहर लुटिय सालम गहिय, फिरिय बुद्ध नृप आन ॥  
 अरु चउसत ४०० दुहुँ ओरके, परे सुभट गत प्रान ॥ २७ ॥  
 कछवाही कोटा नगर, यह सुनि बुंदिय आय ॥  
 दिय महिमानी दक्खिननि, दुवरदिन सेन रखाय ॥ २८ ॥  
 कछवाही मल्लार कर, ररखी बंधिय रानि ॥  
 अरु ताकी तियकी अंतुल, किय भावैज समकौनि ॥ २९ ॥  
 तँहँ हुलकर मल्लार तव, संधा लिय हित प्रग्गि ॥  
 बुंदिय जो जैहँ बँहुरि, लैहँ तो दठ लग्गि ॥ ३० ॥  
 अवरहु त्रय३ दैलके अधिप, तिनहूँकाँ हित धारि ॥  
 दिन्ने हय सिरूपाव द्रुत, रानी सुँनय विचारि ॥ ३१ ॥  
 कछवाहीप्रति सिक्खकरि, तदनंतर जय तोर ॥  
 प्रबल बीर पच्छे पलाटि, उमडिय दक्खिन ओर ॥ ३२ ॥  
 कटक सु डब्भिम ग्राम कढि, रहि विंओलिय रैन ॥  
 वेघम कँगगर बुद्ध प्रति, लिखे मिलन जस लैन ॥ ३३ ॥

॥ षट्पात् ॥

मिलन न आयउ तवहु बंधि कँगगर बुंदिय पति ॥  
 तब उप्परि मरहठ गये दक्खिन स्वगे गति ॥

\*प्रतापसिंह के पिता सालमसिंह की शीघ्रा॥२६॥२७॥२८॥ १ राखी (रक्षा) बांधी  
 ? वहुत २ भोजाई के सखान ३ अदब ॥३१॥४प्रतिज्ञा ५ फिर जावेगी तो ॥३०॥  
 ६ सेनापति ७ श्रेष्ठ नीति विचार कर ॥३१॥८जिसपीछे ९ चढे ॥३२॥१०घत्रा ॥३३॥

इत बेघम तजि महल बुद्ध आराम बास किय ॥  
 रान कटैक तिन दिनन आनि तत्थहि मिलान दिय ॥  
 हति जानि रान संग्रामकी नृपहु सोक अक्खन गयउ ॥  
 मिलि धाइभ्रात नगराज नमि करन जोरि हाजरि भयउ ॥३४॥  
 दुवहुदुवहु हय सिरूपाव नृपहि नगराज निवेदिय ॥  
 आय रान मृत जानि नृपति यह अक्खि नहि लिय ॥  
 तदनु साहिपुर ईस नाम उम्मेद जंग जय ॥  
 तास जनक तिन दिनन मरिय यातै तत्थहु गय ॥  
 केसरीसिंह डेरन तदनु गिनि सलूमरि पं ताहि गय ॥  
 इम रान भटन सनमानि अब नृपनिज उपबनै आहि गय ॥३५॥

॥ दोहा ॥

धाइभ्रात जिम नजरि किय, इनहु दुहुँन तिन किन्न ॥  
 नाहि सु लिय बुंदिय नृपति, दुवहुतिन हित हय दिन्न ॥३६॥  
 इत बुंदिय लिन्नी सुनत, कुप्पि नृपति कछवहा ॥  
 बाससहँस२००००चतुरंगबलि, पठये सज्जि सिपाह ॥३७॥  
 सालम सुवन प्रताप तब, चतुरंगह सुनि चास ॥  
 नैननगरै तजि भज्जिगो, पुनि मरहहन पास ॥ ३८ ॥  
 अरु कछवाही सुनत यह, आवत भ्रात अनीक ॥  
 बुंदिय तजि बेघम गई, रही न टैक रतीक ॥ ३९ ॥

नीक १ तीक २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

॥ सौरडा ॥

कछवाही निज किन्न, इकमास बुंदिय अमल ॥

१ बाग में २ महाराणा की सेना ने ३ मुकाम किये ४ राणा संग्रामसिंह का देहांत जानकर ५ बुधसिंह ॥ ३४ ॥ ६ जिस पीछे ७ उम्मेदसिंह का पिता (भारतसिंह) ८ जिस पीछे ९ पति १० अपना बाग है वहां गया ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ११ सेना १२ फिर ॥ ३७ ॥ १३ सेना आने की खबर सुनकर १४ नैणवा नगर को छोड़ कर ॥ ३८ ॥ १५ भाई जयसिंह की सेना ॥ ३९ ॥



लरैं बिनुहि पुनि लिन्न, द्रुतहि आय जयसिंह दल ॥ ४० ॥  
 कूरम कोट कराय, याहि वरस पुर टाँक इत ॥  
 \*दोसा दुग्ग बनाय, † प्रथित निवाई दुग्ग पुनि ॥ ४१ ॥  
 ॥ हरिगीतम् ॥

इतको उदैपुर रान नृप जगतेस ‡ कालहि जानिकैं ॥  
 ब्रजकुमारि नामकऽजामि निज तिहिं व्याहजोग्य प्रमानिकैं ॥  
 कोटेस दुरजनसल्लकाँ बरि ताहि व्याहन बुल्लयो ॥  
 इन लिखिय कूरम उग्रहै अवकास उद्देहको गयो ॥ ४२ ॥  
 यह जानि रान पठाय प्रतिबच कुम्म जो अत्र कुप्पिकैं ॥  
 हम गेह व्याहन आत तुम भुव लौहिं लज्जहिं लुप्पिकैं ॥  
 इकलिंग आन हमैहु तो तुममाँहिं व्है रन रोरिहै ॥  
 जोपै भुवापति जैपुरेस तथापि तेगन तोरिहै ॥ ४३ ॥  
 कोटेस यह सुनि कुंच करि पहुँच्यो उदैपुर प्रीतिसौं ॥  
 जगतेस तिहिं निज जाँमि दिय परिनाय हित रस रीतिसौं ॥  
 यह व्याह चंद्र रु अंक सत्त रु इक्क१७९१संवतमें भयो ॥  
 आपाढ भैरवक पक्ख नवमियऽलग्न उच्छव उन्नयो ॥ ४४ ॥  
 कोटेस नृप इम व्याहि दुलहनि स्वीय पत्तन संचरयो ॥  
 इक जानि रानहिं याहि इत जयसिंह जालम व्है जरयो ॥  
 इत रान भँट जयसिंह सगताउत्त बग्घँह पुत्तहो ॥  
 जिहिं ग्राम पिप्पलिया जु स्वामिय काम स्पंदेन जुत्तहो ४५  
 दुवरपुस्त हिंतुं वकील उत्तम हो उदैपुरको वहै ॥

॥ ४० ॥ \* नगरका नाम है प्रासिद्ध ॥ ४१ ॥ ‡ समयऽअपनी बहिन १ जयसिंह २  
 विवाह का समय ॥ ४२ ॥ १ उत्तर ४ उदयपुर के इष्टदेव एकलिंग नाम के शि-  
 व हैं ॥ ४३ ॥ ५ बहिन ६ कृष्णपत्त ७ उठा (झाया) ॥ ४४ ॥ ८ अपने घर को च-  
 ला ९ उमराव १० याघसिंह पुत्र था जो स्वामिके कार्य में ११ शीघ्रता करनेवा-  
 ला था (स्पन्दनं जवने" इति शब्दार्थचिन्तामणिः ॥ १२ दो पीढ़ी से

साहू सिताराधीसपै जु\*अनीस † अब्दनतैं रहै ॥  
 तिहि तथ † साहुव छत्रपति आदाव अति करि अहरैं ॥  
 वइठारि गदिय कोनपै काका कहैं रु कही करैं ॥ ४६ ॥  
 संग्राम रान † निपात सुनि तिहि सिक्ख साहू साँ चही ॥  
 जयसिंहसाँ यह जानि बाजेराय मंत्रियहू कही ॥  
 मम मात पूरब जात जात जु न्हान तित्थ बिधान साँ ॥  
 तिहिं लौ उदैपुर जाहु एह उदंत अक्खहु रान साँ ॥ ४७ ॥  
 तुम रान कूरम साँ कहाय यहै कहावहु साहसाँ ॥  
 मम मात कासिय जात जो दैहै न कर रहि राहसाँ ॥  
 स्वच्छंद मग्गहुँमैं कहों रुकिहै न दैल जुत जायहै ॥  
 पुनि फल्गुगय सिर पारि पिंडन अध्व इच्छित आयहै ॥ ४८ ॥  
 जयसिंह बग्घहनंद यों सुनि तास मातहिं संगलौ ॥  
 आयो उदैपुर ओ मिल्यो वह रान हिंतु उमंगलौ ॥  
 करजोरि अक्खिय पेसवा नृप साहु मंत्रिय आहि जो ॥  
 तसमांत आवत रावरे घर पुंढव तीरथ चाहि जो ॥ ४९ ॥  
 सुनि एह सम्मुह जाय रान अतीव अहरैं अहरी ॥  
 महिमानि मंडि दिवाय डेरन कानि मांतहिलों करी ॥  
 अँवरोधमाँहिं बुलाय प्रीति बढाय विन्नति अक्खई ॥  
 सुनि रान विन्नति बात मंत्रिय मात मोदमई भई ॥ ५० ॥  
 गज बाजि बस्त्र बिसेस रान निवेदि ताहि घनौ नयो ॥

\* निरन्तर † वर्षों से ‡ छत्रपति पदवी वाला राजा साहू ॥ ४५ ॥ § पतन (देहान्त) १ पूर्व दिशा की जात्रा को जाती है २ विधि पूर्वक तीर्थ स्नान करने को ३ वृत्तान्त ॥ ४७ ॥ ४ मार्ग में स्वतन्त्र ५ सेना सहित, फल्गु गया में पिंड करके चाहे हुए ६ मार्ग से आबंगी ॥ ४८ ॥ ७ से ८ है ९ इसकारण से अर्थात् साहू आप के वंश में है और यह उसके मंत्री की माता है इसकारण आपके घर आती है १० पूर्व दिशा के तीर्थ ॥ ४९ ॥ ११ बहुत आदर से १२ माता के समान १३ जनान में ॥ ५० ॥ १४ भेट करके

पुनि जाय डेरन सिकखदै सँग स्वीय सेनहुको दयो ॥  
 नगरी सलूमरि नाह केसरिसिंह मुखप सु संगभो ॥  
 जयसिंह पुनि वह बग्घ नंदन संग उच्च उमंग भो ॥ ५१ ॥  
 खुरतार मारन भुम्मि देत दरार दारिम पक्कज्यो ॥  
 नवलकख ९००००० दलपति मंत्रि जननी चंड संगहि चक्कज्यो ॥  
 बेहरक दंति बडेनपेँ फहरकि फैलतसी फिरँ ॥  
 भिल्लि फेट भंड भूपेटपेँ पवमान चंचलहू चिँ रेँ ॥ ५२ ॥  
 श्रियमंत मात सुखेन योँ सह सेन जेपुर संघी ॥  
 कछवाह राँघहु आय सम्मुह कानि राँनहि लोँ करी ॥  
 जयसिंह प्रीति बढाय तास दिवाय डेरन मोदसोँ ॥  
 बेतंडं बाजि उदंड दुवशकिय भेट बं'दि विनोदसोँ ॥ ५३ ॥  
 माहिमानि दै अति अग्घसोँ अवरोधेँ मध्य बुलायकेँ ॥  
 सकुटुंब सम्मुह जाय मंदिरेँ लाय मत्थहिँ नायकेँ ॥  
 बइठारि गहिय ताहि अप्पुन अल्प आसनपेँ गहयो ॥  
 नग बस्त्र नेँय निवेदिकेँ हम दास कूरम योँ कहयो ॥ ५४ ॥  
 तनया सु कृष्णकुमारि अप्पन जो दलेलहिँ अप्पई ॥  
 गहि ताहि हत्थन कुम्म योँ थिर तास अंकेँहि थप्पई ॥  
 कहि मोर पुत्रिय बुंदि भूप दलेल रानिय है यहै ॥  
 तस लज्ज भुम्मि सुहागकी तुमको सु अज्ज अभै यहै ॥ ५५ ॥  
 हैयहै १ भैयहै २ अन्त्यानुपासः १ ॥

तिहि लाय हिय श्रियमंत मातहु अक्खि प्रीति परा पगै ॥

॥ ५१ ॥ १ पकी हुई दाड़िम के समान २ भयंकर सेना ३ भंडे बड़े  
 हाथियों पर ४ पवन चंचल है तो भी प्रदेगी करता है अर्थात् उन भंडों में हों  
 कर शीघ्रता से निकल नहीं सकता ॥ ५२ ॥ ६ सुख से ७ गई ८ राजा ९ राना ने  
 को जैसी १० हाथी ११ नमस्कार करके ॥ ५३ ॥ १२ जनाने में १३ घर (महल) में  
 १४ मस्तक नमाकर १५ आप छोटे आसन पर बैठा १६ नवीन ॥ ५४ ॥ १७ पु-  
 त्री १८ दलेल सिंह को विवाही १९ उस की गोदी में बिठाई ॥ ५५ ॥ २० परम

रूपये पचीस हजार २५००० छोरिय जे न बुंदियकों लगै ॥  
जव कुम्म मालव पैत तत सु साह छन्नहिं मेलकै ॥  
निठ्ठैहजार ९०००० लिखायलियठहराय दम्म दलेलकै ॥ ५६ ॥  
तव दक्खिनैन नृप साहुसों अरजी कराय निदेसलै ॥  
यह अंक थपिय बुंदिय कहि कोउ नाहिं बिसेस लै ॥  
तिनमाँहिंसों श्रियमंत मात बै छोरि दम्म इते दये ॥  
पुनि अक्खि पुत्तिप लाय च्छर्तिय नेह बीज वये नये ॥ ५७ ॥  
श्रियमंत मातहि रक्खि यों जयसिंह जैपुर मासलौ ॥  
पुनि साह हितु लिखाय मग कर भाफ तास प्रवासलौ ॥  
बलि तास डेरन जाय क्रूरम राय बंदनकै बली ॥  
सजि स्वीय सेनहु संग दै वह पंथ पूरव मुक्कली ॥ ५८ ॥  
भट रानं केसरिसिंह ओ जयसिंह तत्थहि ए रहे ॥  
दल ओर संगहि तास दै पुनि मास जैपुर जे रहे ॥

एरहे १ जेरहे २ अं यानुमासः १ ॥

नगगे सलूमरि नाह केसरिसिंह धुंत अधीर ज्यौ ॥  
जयसिंह बग्घहनंड हो यह वेदपाँठक बीर त्यों ॥ ५९ ॥  
सनमान दोउनको कियो कछवाह डेरन जायकै ॥  
हय हत्थि क्रूरमसों तिलै पहुँचे उदैपुर आयकै ॥  
मल्लार अरु परमार ए करिं कैद सालमकों इतै ॥  
तजि नैर बुंदिय कुंच कै पहुँचे ति मालवमें तितै ॥ ६० ॥  
परमार दौलतसिंह इक १ सु सेन दक्खिन संगही ॥

१ जयसिंह मालवे में गया २ तहां बादशाह ने छाने ३ दलेलसिंह से रूपये  
ठहरा लिये ॥ ५६ ॥ ४ आज्ञा लेकर ५ इसको बुंदी पर गाँद रखवा है; अथवा  
रूपयों का यह अंक बुंदी पर स्थापन किया ६ अब ७ पुत्री कहकर ८ छाती से  
लगा कर ॥ ५७ ॥ ९ विदेश में रहने तक का १० नमस्कार करके ॥ ५८ ॥  
११ धूर्त १२ वेद का पाठ करने वाला अर्थात् वेद के मतानुसार चलनेवाला  
॥ ५९ ॥ १३ ते (व) ॥ ६० ॥

यह रान हो उभरावहो अरु नीति जग अभंगहो ॥  
 तिहिं अक्खि सालमसिंह मो कँह लेहु जामिन उहे अवेँ ॥  
 हुवलकख २००००० रूपय लेहु सो इन्ह देहु जावहुँ मैं तवेँ ६१  
 जितनेँ उदैपुरमें रहौ अरु रानको जस बवत्थरँ ॥  
 मम पत्र लेहु लिखाय ओ लिखिदेहु तुम इनके करैँ ॥  
 इनको अमार्यहु इक १ रूपय लैन संगहि लीजिये ॥  
 तिहिं ग्राम पंचहजार ५०००को हम देहिं सत्य पतीजिये ६२  
 तुमकोहु बुंदिपको पटा मिलिहै हजारपचीस २५०००को ॥  
 सुनि एह दोलतसिंह पत्र लिखाय सालम हीसको ॥  
 अरु अप्प राव मलारसौँ परमारसौँ इम अक्खई ॥  
 हुवलकख २००००० रूपय देहिं पै गृह लैहिं तो लिखि सो दई ६३  
 हम रान जाभिन बीच जो नहिं देहिं तो हम देहिंगे ॥  
 बाँलि रान भूप बलिष्ठ जे इनतैँ निवरिहु लैहिंगे ॥  
 परमार यौँ लिखि पत्र जो परमार हुलकरकोँ दयोँ ॥  
 निज संग हुलकर दास भट्ट महादिदेव सु पै लयो ॥ ६४ ॥  
 पुनि जे उदैपुर आय दक्खिन सेन सौँ इम सिक्खकैँ ॥  
 सुनि रान चाहि सिराहि दोलतसिंहकोँ तब तिक्खकैँ ॥  
 लिखि पंत बुंदि दलेलकोँ दैम दम्म सालम मंगये ॥  
 बदल्यो दलेलहु बँप्प हितु कैँपर्द दोयश्हु नाँ दये ॥ ६५ ॥  
 तब सुभट दोलतसिंह जुत करि सिक्ख सालम रानसौँ ॥

१ सालमसिंह ने दोलतसिंह से कहा १ मरहठों को ॥ ६१ ॥ ३ तुम तो मुझसे लिखवा लो और मरहठों को तुम लिखदो ४ कामदार ५ विश्वास करो ॥ ६२ ॥ ६ उस दुःख वाले सालमसिंह को "ही विषादे" इति शब्दार्थ-चिन्तामणौ ॥ और स सहित अर्थात् विषाद सहित जो सालमसिंह था उस का पत्र लिखा गया ॥ ६३ ॥ ७ फिर ८ बलवान् है सो ९ महादेव ॥ ६४ ॥ १० पत्र ११ दंड के रुपये १२ बाप से दो १३ कोई भी नहीं ॥ ६५ ॥

राजाओंका एका करनका विचार] सप्तमराशि-चत्वारिंशत्तमयुग ( १२२७ )

चलि नैनवा निज नैर आयउ भीरु उब्बरि प्रानसों ॥

निज कोसतैं दुव लक्ष्म्व२०००००रूप्य देस दक्खिन मुक्कले ॥

पुनि कुम्म आयस पाय दोउनकोहि दिन्न पटा भले ॥६६॥

ससि अंक सत्त रु इक्क१७९१संवत्त मास कत्तिय गोरमैं ॥

कछवाह किंय सब भूप इक्कत जानि दक्खिन जोरमैं ॥

मेवारमैं आगोंच नामक ग्राम सर्व मिले तहाँ ॥

अरजी लिखाय पठाय दिल्लिय सेन भेजहुगे यहाँ ॥ ६७ ॥

सुनि साह सेन समस्त संजुत खानदोरह मुक्कलयो ॥

यह मास अगहन कृष्ण पंचमि५ चंडे चंक्रहिं लौ चलयो ॥

हुत आय मालव देसमैं बुलवाय कूरमहू लयो ॥

विनु रान तब सब भूप संजुत सोहु मालवमैं गयो ॥ ६८ ॥

तिहिं साल बिच इत नैर बेघम पोस मास अमा जहाँ ॥

कछवाह रानिय देह हानिय दान कै रु करी तहाँ ॥

इत को नबाव रु कुम्म मालवमैं मिले अति प्रीति सों ॥

सब हिंदु भूपन सत्थ लौ रन मंत्र मंडिय रीतिसों ॥ ६९ ॥

अभमल्ल नृप मरुईस बीकानैर भूपति सत्थही ॥

कोटिस दुरजनसल्ल सोपुर भूप गोर समत्थही ॥

रतलाम भव्बुवके रु ईडरके कबंधहु संजुरे ॥

बुंदेल नृप द्वतियादि भूप भदोर भंड पै बिप्फुरे ॥ ७० ॥

रवि मेल बीर बघेल बंधुव भूप सम्मलि सज्जयो ॥

नगरी करोल्लिय भूप जहव सेन संजुत सों ठायो ॥

पुनि रूपनैर कबंध भूप जु पाय लग्गिय आनिकैं ॥

१ जयसिंह की आज्ञा पाकर ॥६५॥ शुक्ल पक्ष में आगोंचा के पास ही हुरडा नामक पुर में इकट्ठे हुए थे ॥६७॥ अथर्वकर ५ सेना ६ साथ ॥ ६८ ॥ ७ बेघमपुर ८ अमावास्या ९ जयसिंह मालवा देश में मिले ॥ ६६ ॥ १० एकत्र हुए ११ पति ॥ ७० ॥ १२ खड़ा हुआ १३ रूपनगर का ॥ ७१ ॥

पुनि आय नैर बनाय भूपति जोर मिच्छन जानिकैं ॥ ७१ ॥  
 बजरंग राघव दुग्गको महिपाल खिच्चिपहू मिल्यो ॥  
 नगरी सिगोहिय देवग नृप आनि आयसकाँ शिल्यो ॥  
 रचि चक्क टट्टिय आय भट्टिय नैर जैसलमेरको ॥  
 बलि नैर पट्टिनि भूप उम्मट आय आतहि बेरँको ॥ ७२ ॥  
 कछवाह नरउर नाह मिच्छ नवाबहू कितने कहौं ॥  
 मिलि खानदोरह सौं सबै परि तत्थ रुंधि दिसा चहौं ४ ॥  
 सबकाँ सिराहि रु खानदोरह सेन दकिखनपैं सज्यो ॥  
 मरहट्ट सेनहु पिकिखकैं चहि रँठ सम्मुह व्हें गज्यो ॥ ७३ ॥  
 रचि मंत्र मंडित रामचंद्र मलार.ओ परमार त्यौं ॥  
 रासांजि सम्मलि संधिया बढि जंग जीत विचार त्यौं ॥  
 दलमाँहिँसौं पखरैत अट्ट हजार८०००कहि रु यौं कही ॥  
 तुम जाय जैपुर देस लुट्टहु त्यौंहि मिच्छनकी मही ॥ ७४ ॥  
 असवार अट्ट हजार८०००वे तब सीम जैपुर जायकैं ॥  
 टोडा रु टौंक विगारि लुट्टिय कुम्भ आन उठाय कैं ॥  
 नगरी निवाइय लुट्टिकैं पुनि लुट्टि मालपुरा लयो ॥  
 लंवा रु डगिय लुट्टि पड्डलि दाव दुँहवपैं दयो ॥ ७५ ॥  
 तिहिँ माहि जारि नराननैर रु जाय सौलिय लुट्टई ॥  
 मौजाद पत्तन लुट्टिकैं हलसूरि धँतन दै लई ॥  
 इम रारि खगगन आरि मारि विगारि जैपुर देसमें ॥  
 पुनि नैर संभर आदि लुट्टिय साहके अवससैंमें ॥ ७६ ॥

१ बजरंगगढ और रावोगढका २ हकम को भेला ३ सेना की टाटी (थोड़ी सी आड) रच कर ४ आते समय ॥ ७१ ॥ ५ म्लेच्छ (यवन) ६ चारों दिशा रोक कर ७ राष्ट्र (राज्य) की चाहना करके ॥ ७३ ॥ ८ पाखरों वाले ९ म्लेच्छों की भूमि को ॥ ७४ ॥ १० पुरका नाम है ॥ ७५ ॥ नराना नामक नगर को जलाकर ११ साली पुर को लूटा १२ घातें १३ वाकी में ॥ ७६ ॥

दक्षिणियोंसे खानदाराका भागना]सप्तमराशि-चत्वारिंशमयुख (३२२९)

जिम कुम्म भो यँहँ साहको मरहठु नाँहिँ गिँने मिले ॥  
तिम तेहु दक्खिन बीर मन्नि रु ग्राम जैपुरके गिले ॥  
असवार मान हजार अठ्ठन लूट यौँ इत मंडई ॥  
उत रामचंद्र मलार ओ परमार बँगनकोँ लई ॥ ७७ ॥  
निज सुत्त साह अनीकपैँ पबिपात पब्वय ज्यौँ परँ ॥  
बजि बंब आनक त्यौँ अचानक कूटि बिबभल ए करँ ।  
तव ज्यौँ हुते तिम साहके उमराव भीरुक भग्गये ॥  
लचि कुम्ममोरँहँ खानदोरह लज्जि मँगहि लग्गये ॥ ७८ ॥  
तब सेन भज्जत साहको दखिँनीन खग्गन खंडयो ॥  
उडि खेह अंबरँ यौँ छई जिम मेह संबेर मंडयो ॥  
अँचलाहु लक्खनँ फोजकी धमचक्र धक्कनतँ धुकी ॥  
बढि व्यँधि दिग्गज दंत तुट्टि समाधि संकरकी चुकी ॥ ७९ ॥  
फररक्कि फीलँन केतु त्यौँ थररक्कि अंबर अँच्छरी ॥  
बररक्कि दह बराह भूँ दररक्कि कच्छप भो देरी ॥  
तरवारि दक्खिन सेनकी दल मारि दिल्लियको दयो ॥  
हँग मीचि भज्जत साहके दल राह बुंदियको लयो ॥ ८० ॥  
लगि पिट्टि दक्खिनके अनीकँन लाग चम्मलिँलौँ करी ॥  
इत अग्ग आय रु साहकी पुँतना धुँनी वह उत्तरी ॥

१ जिसप्रकार जयसिंहको बादशाह का ही हुआ समझें २ मरहठों से (मिला हुआ नहीं समझें इशप्रकार दक्षिणियों ने जयपुर के देश को लूटा ३ प्रमाण ४ घोड़ों की बागें उठाई ॥ ७७ ॥ ५ बादशाह की सोती हुई सेना पर ६ पर्वत पर वज्र पड़े जैसे ७ नगारे और ढोल ८ ठोक कर ९ कायर १० कछवाहों का मुकुट जयसिंह (यहां स्वार्थ में 'ह' प्रत्यय किया है सो सब जगह ऐसा ही जानो) ११ लज्जित होकर मार्ग ही लगे ॥ ७८ ॥ १२ मरहठों ने १३ आकाश में १४ जलधारा १५ भूमि भी १६ लाखों सेना की १७ पीड़ा ॥ ७९ ॥ १८ हस्तियों पर १९ अक्षर २० भूमि २१ भय युक्त हुआ; अथवा गुफा रूप होकर अपने अंगों को भीतर समेट लिये २२ नेत्र बन्द करके ॥ ८० ॥ २३ सेना ने २४ चामल नदी तक पीछा किया २५ सेना २६ वह नदी (चामल)



दुव अंक सत्रह १७९२ मान संबत पक्ख \*उज्जल पोसमें ॥  
 निज बंधु भूप अमान मन्नि रु रान उप्फानि रोसमें ॥  
 देल पंति दुद्धर बंधिकेँ जगतेस साहिपुरा लग्यो ॥  
 चहुँ आर सोर सजोर वहाँ घनघोर तोपनमें दग्यो ॥ ९२ ॥  
 तब रान सम्मलि होनकोँ जयसिंह जैपुरसौँ चढ्यो ॥  
 सुनि एह साहिपुरेसकोँ अति सोक कूरमकोँ बढ्यो ॥  
 तब दंड रूपय लक्ख १००००० साहिपुरेस अप्पिय रानकोँ ॥  
 करि कुंच रानहु गो उदैपुर रक्खि बंधुव मानकोँ ॥ ९३ ॥  
 इहिँ साल मेचक माघमें दबि रोग दुस्सहतें गरयो ॥  
 निज नैनवापुर माँहिँ अंध सु मंद सालमहू मरयो ॥  
 मरुभूप दिल्लिय आय इत गुजरात जिति उछाहसौँ ॥  
 अरजी करी कर जोरि बुद्धहिँ दैन बुंदिय साहसौँ ॥ ९४ ॥  
 तँहँ खानदोरह जो नबाब जबाब पेस न होनदै ॥  
 जयसिंहको मंति मित्र यौँ अरजी सु लग्गन जो न दै ॥  
 नवमास बुंदिय काज यौँ मरुभूप दिल्लियमें रहयो ॥  
 बखसीस किन्न बिसेस पै यहतो न साह करयो कहौ ॥ ९५ ॥  
 तब कुप्पिकेँ विनु साह आयसँ सेन धन्वप सज्जयो ॥  
 सब देस लुट्टत साहको मरुदेस गर्बित व्है गयो ॥  
 दुव अंक सत्रह १७९२ साक यौँ सितपक्ख फँगुनमें भई ॥  
 इत साह दक्खिनमें मिल्यो यह जानि कूरमकी लाई ॥ ९६ ॥

\*पौष सुदि पक्ष में नहीं मानने वाला (निरंकुश) ? सेना की पंक्ति, दुर्धर्ष (दुःख से धर्षण करने में आवै ऐसी) बांधकर ॥ ९२ ॥ २ जयसिंह के आने का ॥ ९३ ॥  
 ३ माघ बादि पक्ष में ४ बुधसिंह को बुन्दी देने की ॥ ९४ ॥ ५ इच्छा मित्र (अपनी इच्छा से मित्र था जयसिंह का किया हुआ मित्र नहीं था) अथवा बुद्धि से मित्र था ॥ ९५ ॥ ६ बादशाह की बिना आज्ञा ७ मारवाड़ का पति ८ फाल्गुन शुक्ल पक्ष में ॥ ९६ ॥

तबही नवाव उमीरखाँ चुगली सु दोउनकी करी ॥  
 प्रभु खानदोरह कुम्ममोरह यों हरामिय अदरी ॥  
 मिलि सत्रु सेननसों गये अरु लाभ दक्खिनतैं लयो ॥  
 दुब कोटि २००००००० रूपय देस मालव मंडि साहुवकों दयो ९७  
 चुगली सु जानि रू कुम्महू पुनि पत्र दक्खिन मुक्कल्यो ॥  
 श्रियमंत आवहु बेग ह्याँ हम दोरै दिल्लियको दल्यो ॥  
 श्रियमंतहू नृप साह मंत्रिय बंचि पत्र सु बेगलौ ॥  
 दलौ दर्प दुँदर बंधिकैं गति काल कीलिय तेगलौ ॥ ९८ ॥  
 दोहा ॥

नृप साहुव नवलकख ९०००००० दल, नगर सितारा नाह ॥  
 सज्जित भो ताको सचिव, बाजेराय दुबाह ॥ ९९ ॥

॥ षट्पात् ॥

बाबा पंडित रामचंद्र हुलकर मल्लारह ॥  
 गणांजिय संधपा रू प्रथित अमंद पमारह ॥  
 अबहु मुख्य करि इनहिं चढि रू श्रियमंत चलायउ ॥  
 सालम सुवन प्रताप सोहु संगहि भट आयउ ॥  
 कूरमहिं जानि आवाहनकरे इम दक्खिन सन उप्परिय ॥  
 तद्विन अपार दल भार तकि फैनपति फेनन फुंकरिय १००  
 परिय १ करिय २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥  
 गरद गौन बित्थरिय जरदें जैम जैनक रंग किय ॥

१ हे प्रभु २ जयसिंह ॥ ६७ ॥ ३ फैलाव ४ बाद्शाह के मंत्री राजा (जयसिंह)  
 का ५ सेना, घमंड से, अथवा सेना के घमंड से ६ दुःख से धर्यणा की जावे  
 ऐसी ७ समय की गति को खड्ग से कीली ॥ ९८ ॥ ८ वीर ॥ ९९ ॥ ९ पुत्र १०  
 जयसिंह को बुलाने वाला जानकर ११ उस दिन १२ सेना का अपार भार  
 देखकर १३ शेषनाग भागों से फूटकार करने लगा ॥ १०० ॥ १४ आकाश में  
 गरद फैलकर १५ शनैश्चर के १७ पिता (सूर्य) का रंग १६ पीला करदिया

मरद मंत्रि उम्मादिय दरद भूदार दह दिय ॥

पंच अयुत ५०००० पकखरिय सहँस १०००० दंतावलीं सज्जिय ॥

दल पदाति दक्खिनिय गरवि दुवलकख २००००० गरज्जिय ॥

बहुबिधि निसान भेरिय वजिय वल्ल नकीव हंकत बढिय ॥

पेसवा प्रुथितं विप्र सु बलिय चामर वैर वित्तैर चढिया १०१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दी-  
पतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहपत्नीकूर्मीसंमतिमहाराष्ट्रपत्तपठ्ययुतमु-  
द्रकीलितसालमसिंहतदात्मजप्रतापसिंहबुन्दीहरणा १ कूर्मीमल्लार-  
रक्षाबन्धन २ प्रेपितायुतद्वयसैन्यजयसिंहस्य युद्धमन्तरापिपुनर्दलेल-  
सिंहबुन्ध्यधिकारप्रापणा ३ कोटामहारावदुर्जनशल्यस्य राणाजग-  
त्सिंहजामिपाणिग्रहणा ४ तीर्थयात्रापस्थितसिताराधीशसाहूमन्त्रि-  
बाजेरायजनन्या मार्गागतोदयपुरजयपुरसत्कारस्वीकरणा ५ महारा-  
णासुभटदौलतसिंहस्य माहाराष्ट्रकीलितहड्डसालमसिंहलोचन ६  
जयपुरगधीशजयसिंहस्य स्वप्नदीसमीपराजस्थानान्तर्वर्तिराजपुत्रै-

१ धीर साहू का मंत्री उत्साहित हुआ २ बाह की दाढ़ में पीड़ा की ३ पाखरों वाले सवार ४ हाथी ५ पैदल सेना ६ गर्व करते ७ नगारे ८ नावत ९ सेना को १० पेसवा पदवी वाला प्रसिद्ध ब्राह्मण ११ श्रेष्ठ चमरों को १२ विस्तर (कैला) कर चढा ॥ १०१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के राजा बुधसिंह के चरित्र में, सालमसिंह के बड़े पुत्र प्रतापसिंह का बुधसिंह की राणी कछवाही से मिल कर मरहटों को छलाख रुपये देकर सालमसिंह को कैद करवा कर बुन्दी छोड़ाना १ राणी कछवाही का मल्लार के राखी बांधना २ जयसिंह का बीस हजार सेना भेज कर बिना ही युद्ध किये बुन्दी पर दलेल सिंह का पीछा अधिकार कराना ३ राणा जगत्सिंह का कोटा के महाराव दुर्जनशाल के साथ अपनी बहिन का विवाह करना ४ सितारा के अधीश साहू के मंत्री बाजेराय पेसवा की मत्ता का तीर्थ यात्रा जाते समय उदयपुर और जयपुर में अत्यन्त आदर सत्कार हाँसा ५ महाराणा के उभयदौलतसिंह का हाडा सालमसिंह को मरहटों की कैद से छोड़ाना ६ राजा जयसिंह का राजपूताना के राजाओं को मेवाड़ में खारी नदी के समीप एकत्र करना ७

श्रीमंत पैसेवाका उदैपुर आना] सप्तमराशि-एकचत्वारिंशमयूत(३२३५)

कत्तीकरणा ७ उदपपुराधीशमृतेराजस्थानाशेषक्षमापालसहितदिल्लीसे  
नापतिखानदोराख्यस्य महाराष्ट्रोपरिदक्षिणादिग्गमन ८ महाराष्ट्रगात्रि  
रणापराजितससैन्यखानदोरापलायन ९ खानदोराजयसिंहयोर्दिल्ली  
न्द्रान्महाराष्ट्रमालवदेशदापन १० महाराणाजगत्सिंहस्य शाहपुरेशवेष्ट  
नलक्षमुद्रादशडादान ११ आहूतजयसिंहसहाराष्ट्रसैन्यदिल्लीप्रस्थान  
वर्णनं चत्वारिंशो मयूखः ॥ ४० ॥

आदितोऽष्टसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७८ ॥

॥ दोहा ॥

कटकविप्रदरकुंचकरि, आयउ लौनावाड ॥

सु सब रान जगतेस सुनि, लगिग बधावन लाड ॥ १ ॥

जब काका निज जनकको, बुल्लि तखत अभिधान ॥

बहुरि सलूमरि नाह बियर, पठये प्रेम प्रमान ॥ २ ॥

मिलन गये श्रीमंतसौं, तव भवह सम्मुह आय ॥

मुखप रान भट मन्त्रिकें, बियैरलिय अगग बढाय ॥ ३ ॥

प्रथम लिखिय श्रीमंत प्रति, जैपुर नृप बरजोर ॥

सजि मिलाप तुम रान सन, आवहु पुनि हम और ॥ ४ ॥

यातें उप्परि पैसेवा, प्रथम उदैपुर पत्त ॥

उदपपुर के महाराणा के बिना राजपूताना के सब राजाओं को साथ लेकर  
दिल्ली के सेनापति खानदोरों का भरहठों पर दक्षिण में जाना ८ भरहठों के  
रतिवाह से पराजय पाकर सेना सहित खानदोरों का भागना ९ खानदोरों  
और राजा जयसिंह का बादशाह से भरहठों को मालवा देश दिलाना १०  
महाराणा जगत्सिंह का शाहपुरे को घेरकर एक लाख रुपयों का दंड लेना  
११ जयसिंह के बुलाने से भरहठों की सेना का दिल्ली पर जाने के वर्णन का  
पचासीसवां ४० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दांसौ अठहत्तर २७८  
मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ अपने पिता (संग्रामसिंह) का २ तखतसिंह नामक ॥ २ ॥ ३ दोनों  
को ॥ ३ ॥ ४ जयपुर के बलवान् राजा (जयसिंह) ने ॥ ४ ॥ ५ ॥

सम्मुह आयउ कोस दस१०, रानहु हित अनुरत्त ॥ ५ ॥  
 आसिरवादहि अगग यह, लिखतो गुंमर लसंत ॥  
 पै नमिकैँ यँहँ रान प्रति, क्रिय सलामँ श्रियमंत ॥ ६ ॥

॥ प्लवङ्गमम् ॥

रानहु बिरैचि प्रनाम मिल्यो अति मोदसौं,  
 वाजेरायहिँ लाय बधाय बिनोदसौं ॥  
 आहड ग्राम समीप सिविरँ दलको करच्यो,  
 हो जँहँ चंपकबागँ अप्प तँहँ उत्तरच्यो ॥ ७ ॥  
 पुनि पठई महिमानि रान बहु रीतिसौं,  
 रूप्यय पंचहजार५०००बँसन गज बीति सौं ॥  
 दूजे दिन श्रियमंत सभा रचि बुल्लयो,  
 बिपहु गो तब बेग नेह बिँथरच्यो नयो ॥ ८ ॥

॥ देहा ॥

तबहु द्वार प्रँछन्नतक, आयउ सम्मुह रान ॥  
 दूजी गह्विप बिप्र हित, बिछुवाई सु बिधान ॥ ९ ॥  
 तिहिँ उठवाय रु पेसवा, बिनु गह्विय गय बैठि ॥  
 रच्यो अदब यह रानको, प्रीति अतुल हिय पैठि ॥ १० ॥  
 गह्विय पर रानाँ रहयो, सिर दुवर चमर ढराय ॥  
 चमर इक्कशुव बिप्र सिर, बलि हित वत्त बढाय ॥ ११ ॥  
 रान कहिय नमनीय तुम, तब द्विज कहिय सचाँव ॥  
 मोहि गिनहु नृप रावरो, जिम सोलह१६ उमराव ॥ १२ ॥  
 रान तबहि जर जीन जुत हय चउ४हत्थिय एक ॥

श्वमंड से शोभित होकर खड़ा होवे सो आशीर्वाद देता है और छोटा होवे सो सलाम करता है तथा लिखता है ॥६॥ ३करके ४डेर (पड़ाव) ५ चंपाबाग ॥ ७ ॥  
 ६ वल्ल ७ घोड़ा ॥ ८ ॥ ८ भीतर के द्वार (डोदी) तक ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ ९  
 नमस्कार करने योग्य (पूज्य) १० उत्साह सहित ॥ १२ ॥

श्रीमंत पैसेवाका उदैपुर आना] सप्तमराशि-एकचत्वारिंशमयूख(३२३५)

कवीकरणा ७ उदयपुराधीशमृतेराजस्थानाशेषक्षमापालसाहितदिल्लीसे  
नापतिखानदोराख्यस्य महाराष्ट्रोपरिदक्षिणादिगमन ८ महाराष्ट्रगात्रि  
रणापराजितससैन्यखानदोरापलायन ९ खानदोराजयसिंहयोर्दिल्ली  
न्द्रान्महाराष्ट्रमालवदेशदापन १० महाराष्ट्राजगत्सिंहस्य शाहपुरेशवेष्ट  
नलक्ष्ममुद्रादण्डादान ११ आहूतजयसिंहमहाराष्ट्रसैन्यदिल्लीप्रस्थान  
वर्णनं चत्वारिंशो मयूखः ॥ ४० ॥

आदितोऽष्टसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७८ ॥

॥ दोहा ॥

कटकविप्रदरकुंचकरि, आयउ लौनावाड ॥

सु सब रान जगतेस सुनि, लगि बधावन लाड ॥ १ ॥

जब काका निज जनकको, बुल्लि तखत अभिधान ॥

बहुरि सलूमरि नाह बियरू, पठये प्रेम प्रमान ॥ २ ॥

मिलन गये श्रीमंतसौं, तब बह सम्मुह आय ॥

मुख्य रान भट मन्निकै, बिपरलिय अगग बढाय ॥ ३ ॥

प्रथम लिखिय श्रीमंत प्रति, जैपुर नृप बरजोर ॥

सजि मिलाप तुम रान सन, आवहु पुनि हम ओर ॥ ४ ॥

यातैं उप्परि पैसेवा, प्रथम उदैपुर पत्त ॥

उदयपुर के महाराणा के बिना राजपूताना के सब राजाओं को साथ लेकर  
दिल्ली के सेनापति खानदोरां का भरहटों पर दक्षिण में जाना ८ भरहटों के  
रतिवाह से पराजय पाकर सेना सहित खानदोरां का भागना ९ खानदोरां  
और राजा जयसिंह का चादशाह से भरहटों को मालवा देश दिलाना १०  
महाराणा जगत्सिंह का शाहपुरे को घेरकर एक लाख रुपयों का दंड लेना  
११ जयसिंह के बुलाने से भरहटों की सेना का दिल्ली पर जाने के वर्णन का  
षाहीसर्वां ४० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अठहत्तर २७८  
मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ अपने पिता (संग्रामसिंह) का २ तख्तसिंह नामक ॥ २ ॥ ३ दोनों  
को ॥ ३ ॥ ४ जयपुर के बलवान राजा (जयसिंह) ने ॥ ४ ॥ ५ ॥

सम्मुह आयउ कोस दस१०, रानहु हित अनुरत्त ॥ ५ ॥  
 आसिरबादहि अग्ग यह, लिखतो गुंमर लसंत ॥  
 पै नमिकैँ यँहँ रान प्रति, क्रिय सलामं श्रियमंत ॥ ६ ॥

॥ प्लवङ्गमम् ॥

रानहु विरैचि प्रनाम मिल्यो अति मोदसौं,  
 बाजेरायहिँ लाय बधाय विनोदसौं ॥  
 आहड़ ग्राम समीप सिविरँ दलको करयो,  
 हो जँहँ चंपकबागँ अप्प तँहँ उत्तखो ॥ ७ ॥  
 पुनि पठई महिमानि रान बहु रीतिसौं,  
 रूप्यय पंचहजार५०००बँसन गज बीति सौं ॥  
 दूजे दिन श्रियमंत सभा रचि बुल्लयो,  
 विप्रहु गो तव बेग नेह बिथरयो नयो ॥ ८ ॥

॥ देहा ॥

तवहु द्वार प्रँछन्नतक, आयउ सम्मुह रान ॥  
 दूजी गहिय विप्र हित, बिछवाई सु बिधान ॥ ९ ॥  
 तिहिँ उठवाय रु पेसवा, बिनु गहिय गय बैठि ॥  
 रचयो अद्व यह रानको, प्रीति अतुल हिय पैठि ॥ १० ॥  
 गहिय पर रानाँ रहयो, सिर दुवर चमर ढराय ॥  
 चमर इक्कशुव बिप्र सिर, बलि हित वत्त बढाय ॥ ११ ॥  
 रान कहिय नमनीय तुम, तव द्विज कहिय सर्चाँव ॥  
 मोहि गिनहु नृप रावरो, जिम सोलह१६ उमराव ॥ १२ ॥  
 रान तवहिँ जर जीन जुत हय चउ४हत्थिय एक१ ॥

१ घमंड से शोभित होकर खड़ा होवै सो आशीर्वाद देता है और छोटा होवै सो सलाम करता है तथा लिखता है ॥ ६ ॥ ३ करके छेरा (पड़ाव) ५ चंपाबाग ॥ ७ ॥  
 ६ बस्त्र ७ घोड़ा ॥ ८ ॥ ८ भीतर के द्वार (ढोढी) तक ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ ९ नमस्कार करने योग्य (पूज्य) १० उत्साह सहित ॥ १२ ॥

नग जराय भूखन नवल, बिप्रहिँ दिय सबिवेक ॥ १३ ॥

सह लख १५०००० इक १ साल प्रति, स्वीकरि दक्खिन दम्म ॥

दियउ परगन बनहड़ा, तिनमँ लिखि हित कम्म ॥ १४ ॥

ताँल मध्य इक रानकै, जगमंदिर प्रासाद ॥

ताहि दिखावनकी कही, बाँसर दूजे बाँद ॥ १५ ॥

रान पिंसुन बनि कोउ तब, बाजेरावहिँ अक्खि ॥

लै जावत मारन तुमहिँ, रान कपट हिय रक्खि ॥ १६ ॥

दक्खिन मंत्रियँ एह द्विज, हो तर्थापि सुनि एह ॥

मूरख सञ्जी मत्रिकैँ, किय रोखारुन देह ॥ १७ ॥

पठई यौ कहि रान प्रति, मँ छलघात मरौ न ॥

कलिहि मंड सज्जहु कटक, करहिँ साम अब क्रोन ॥ १८ ॥

॥ पद्धतिका ॥

यह सुनत रान हुव सोक लीन, पठये पुनि दुवर भट १<sup>०</sup> वे प्रवीन ॥

तखतेस रु केसरिसिंह तत्थ, जाय रु द्विज बंदियँ जोरि हत्थ ॥ १९ ॥

कहि रान अधिक सनमान कीन, अप्पन न होहु अमरख अधीन ॥

किहिँ मूढ कहिय यह दोह कत्थ, सोकहहु अप्प सब बिधि समर्थ २०

जो कहहु नाहिँ तजि देहु रोस, नाहक न देहु अभिसाप दोस ॥

श्रियमंत तदपि भो नहिँ प्रसन्न, तव सत्त लख ७००००० दिय दम्म

छन्न ॥ २१ ॥

संग्रामरानकी मात अगैँ, चहुवानि मरी निज भुगि भैंग ॥

१ नवीन २ ब्राह्मण बाजेराव पेसवा को विचार पूर्वक दियो ॥ ३ ॥ ३ डेढ लाख रुपये

४ हित के कार्य के लिये ॥ १४ ॥ ५ पीछोला नामक तालाब में ६ महल ७ दूसरे दिन

८ वचन ॥ १५ ॥ ९ पहले ९ राणा का चुगली करने वाला बनकर ॥ १६ ॥ १०

यह ब्राह्मण दक्षिण का सलाहकार था ११ तोभी १२ क्रोध में खाल शरीर कि-

या ॥ १७ ॥ १३ युद्ध रच कर ॥ १८ ॥ १४ ऊपर के कहे हुए १५ ब्राह्मण को नमस्कार

किया ॥ १६ ॥ १६ क्रोध के १७ वचन १८ स्वार्थ ॥ २० ॥ १९ मिथ्या दोष २०

रुपये ॥ २१ ॥ २१ आगे २२ भाग (घंट)



तब हुव बिलकख ३००००० मित \* कनक दान, सो रानदयो विप्रहि  
सयान ॥ २२ ॥

दल कुंच कियउ लै विप्र दाम, श्रियद्वार आय किय प्रभु प्रनाम ॥  
सतपंच ५०० दम्भ किय भेट तत्थ, बल्लभ कुल बंदिय पुनि समत्थ २३  
गोस्वामि नाम गोवर्द्धनेस, विरचिय तिन अग्गहु णति बिसेस ॥  
तिनकोहुं दम्भ सतपंच ५०० अप्पि, मरहट्ट चलयि दलकुंच मप्पि २४  
पुनि होय जाजपुर नगरपास, बल कियउ केकडिय दंगं वास ॥  
उततै सुनि कूरम भूप आय, चतुरंग चक दुदर चलाय ॥ २५ ॥  
धमि नैर कृष्णागढ निकट धाम, भिटिय दुव २ भंभोलाव ग्राम ॥  
पठई तब कूरम राह अक्खि, हम मिलहि रानघर रीति रक्खि ॥ २६ ॥  
पठई कहि विप्रहु नहि प्रमान, है रान सुपहु साहु समान ॥  
जे कबहु मिच्छ अनुचर बनैन, अनुचर सदाहि तुम लोभ अनै ॥ २७ ॥  
जिहि हेतु मोहुको अधिक जानि, पै मिलहि अज्ज समंता प्रमानि ॥  
तुम जानत गाहिय दै उठाय, पै बैठहि दुवर इक १ पीठपाय ॥ २८ ॥  
हम तत्थेहु दक्खिन ओर होय, दै बाम तुमहिं इम मिलहिं दोय ॥  
जयसिंहहु यह सुनि प्रबलजानि, इक आसन स्वीकारि मिलिय आनि  
चढि उभयर चक हुव सज्ज आय, तिन बीच इक पटंगुह तनाय ॥  
तामाहिं मिले दुवर गर्जन छोरि, बैठे इक १ आसन जाँनु जोरि ३०  
द्विज किय तहँ हुक्काजंत्र पान, लागि धुम्म कुम्म मनविच रिसान ॥

\* सुवर्ण दान ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ † नम्रता ‡ रूपये ॥ २४ ॥ १ सेना का २  
नगर दुःख से धरणा की जावे ऐसी ३ चार प्रकार (हाथी, घोड़े, रथ, पैदल)  
की सेना ॥ २५ ॥ २६ ॥ ४ यह तुम्हारा कहना प्रमाण नहीं है ५ अष्ट राजा ६  
सितारा के पति साहू के समान है ७ यवनों के ८ लोभ के घर ॥ २७ ॥ २८ इस का  
रण मुझ को बड़ा मानो परंतु आज १० बराबर के मान कर मिलेंगे ११ एक  
आसन (गद्दी) पर ॥ २८ ॥ १२ तहां हम दहिनी ओर रहकर १३ एक गद्दी पर  
बैठना स्वीकार करके ॥ २९ ॥ १४ मिलान के स्थान पर दोनों सेना सज्ज हो  
कर रही १५ डेरा १६ हाथियों से उतर कर १७ धुम्मे मिला कर ॥ ३० ॥ १८ धूम

जयसिंहका बाजेरावसे मिलना] सप्तमराशि-एकचत्वारिंशमयुख (१२३६)

पुनि सुभट मुख्य निज निज बुलाय, बैठारि मिसल\*आयत बनाय ३१  
दक्खिन भट हाजरि सबहि तत्थ, इक्क १ न मत्तार आयउ समत्थे ॥  
संधा जिहिं बुंदिय लैन लिन्न, द्विज बाजेरावहु बचन दिन्न ॥३२॥  
श्रियमंत यहाँ मिलि पलटि पौन, कछवाह बुंदि छोरहु कह्यो न ॥

पौन १ ह्योन २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

सालम सुत संजुत आसु उट्टि, इहिं कारन हुलकर चलिय रुट्टि ३३  
श्रियमंत कुम्म इम मिलि सुभाय, अब निज निज डेरन उभय २ आय  
यँहँ सुनिय बिप्र रुट्टिय मत्तार, गय तबहि निहोरन प्रकटि प्यार ३४  
अक्खिय तब हुलकर अत्थ आय, तुम बुंदिय लैन न किय उपाय  
करि सपथ लैन पुनि देहु बैन, तुम संग न तो अब हम चलो ना ३५  
नृप साहु सपथ तब बिप्र बुल्लि, लौहाँ अब बुंदिय तेग तुल्लि ॥

बिचमै कछु बांसर जान देहु, दोउन २ मनाय लिय अक्खि एहु ३६  
कूरम रु बिप्र पुनि मिलैन कीन, लाहि कूर्म हौंद रचि मंत्र लीन ॥  
उततँ दत्त लक्खन तुम बनाय, आवहु इत जैपुर हे सहाय ॥३७॥  
अब ही न लारन अवकास अँच्छ, दक्खिन अमार्थे तुम नीति दँच्छ  
मिलि बहुरि दैहिं मिच्छन मिटाय, जँव करि दत्त सज्जहु गह जाय  
कूरम गय जैपुर अक्खि एह, श्रियमंत सुरयो दक्खिन सनेह ॥  
दुव अंक सत्त इक १७९२ सक दुरंतँ, यह भयउ मास फग्गुन  
उँदंत ॥ ३९ ॥

दरकुंच तँदनु कगि द्विज प्रयान, बेधम ठिग आय रु दिय मिलैन

(धुंआं) लगने से जयसिंह मन में रिसाया रु बडा ॥ ३१ ॥ १ तहाँ २ स-  
मर्थ ३ प्रतिज्ञा ॥ ३२ ॥ ४ शीघ्र उठकर ५ रोष (क्रोध) करके ॥ ३३ ॥ ६ ब्राह्मण  
(बाजेराव) ने ॥ ३४ ॥ ७ यहाँ आकर फिर बुंदी लेने का ८ सौजन्य ॥ ३५ ॥  
राजा साहु का (सौजन्य) १० दिन ॥ ३६ ॥ ११ मिलाप १२ जयसिंह का अमि-  
प्राय ॥ ३७ ॥ १३ अच्छा १४ छे दक्षिण के मंत्री १५ दत्त (चतुर) १६ शीघ्रता  
करके सेना सजो ॥ ३८ ॥ १७ दूर है अन्त जिसका; अथवा बुरा है अन्त जिस  
का १८ तन्नांत ॥ ३९ ॥ १९ जिस पीछे २० सुकान

यँहँ भट प्रताप हड्ड सु अभंग, श्रियमंत चरहु लौ इक्क१ संग १४०।  
 बुन्दीस निकट गय नमिय वीर, सब यह उदंत जंपिय सधीर ॥  
 कथ पेसवाहु यह तव कहाय, तुमतेँ न जुदे हम बुंदिराय ॥ ४१ ॥  
 अबतो हम आये लोभ ठानि, लँहँ पुनि बुंदिय लेहु मानि ॥  
 बुंदीस मिलन हित कछु कहाय, टारी सु बिप्रइम दलँ लिखाय ४२  
 तदनंतर दक्खिन द्विज प्रपत्तँ, गो हड्ड प्रतापहु संग तँत ॥  
 इत दिल्लिय कूरम कुजस उड्डि, श्रियमंत मिलन सुनि साहरुड्डि ४३  
 तव साँह निजामनमुलक बुल्लि, आयउ नबाब सुनि तेग तुल्लि ॥  
 हो यह कलीजखाँ नाँम वीर, गाजुद्वीखाँ सुत रन र्गभीर ॥ ४४ ॥  
 वह भट द्रुतँ दिल्लियनैर आय, बलि साह हितु सिजँदा विधाय ॥  
 जवनेसहिँ कूरम कुपित जानि, पुनिलिखिय पत्र दक्खिनप्रमानि ४५  
 अवसर अब आयउ भुम्मि लैन, श्रियमंत बेग आवहु ससैनँ ॥  
 यह सुनत बज्जिजिततित निसँान, उमडिय अनीकँ सागर उफान ४६  
 फहराय भंड हस्थिन फगकि, भहराय भज्जि भीरुँक भरकि ॥  
 सज्जत भट बाहुँल कवच टोप, अतिकाय चरक्खन चढत तोप ॥ ४७ ॥  
 खुरसान धार आयुध खनंकि, पाँवक प्रचंड भारत भनंकि ॥  
 दक्खिन अनीकँ गज्जिय दुरंतँ, इहिँ रीति वीर सज्जिय अनंत ४८  
 संबत त्रि अंक हय इक्क१ ७९३ मान, इसमौंस विजयदसमी १० उफान  
 संक्रमियँ सिताराधीस सैन, श्रियमंत मुख्य लागि भुम्मि लैना ४९।  
 अतिकाय वाजि फाँदत अकास, मिटिजात हुँग पद्धर मँवास ॥

१ श्रीमंत के हलकारे को ॥ ४० ॥ २ वृत्तान्त कहा ॥ ४१ ॥ ३ पत्र ॥ ४२ ॥ ४  
 जिस पीछे ५ गया ६ तहाँ ॥ ४३ ॥ ७ बादशाह ने निजामुलमुल्क को (यह  
 खिताब है, जिसका मतलब है मुल्क का इन्तजाम करने वाला) बुलाया ८  
 युद्ध में गंभीर ॥ ४४ ॥ ९ शीघ्र १० सलाम ११ करके ॥ ४५ ॥ १२ मंता सहित  
 १३ नगारे १४ सेना ॥ ४६ ॥ १५ कायर १६ इस्माने १७ घड़ी तोपें चरखों पर  
 चढ़ी ॥ ४७ ॥ १८ अग्नि १९ सेना २० दूर है अन्न जिसका ऐसी ॥ ४८ ॥ २१  
 आम्बिन सासुर चली ॥ ४९ ॥ २३ दुर्ग २४ लुटेरों के रहने के स्थान सीधे होगये

वि लियउ ढंकि खुरतार खेह, मंडिय कि भद्व आसार मेह ।५०।  
 किलकिलत संग कालिय कराल, खिलखिलत मलंगत खेत्रपाल॥  
 जुगिगनि जमाति जय जयति जंपि, झपटत झुकंत बेताल झंपि।५१।  
 बकबकत संग बावन ५२ प्रमत्त, सँकसकत गिद्ध सिर होत छत्त।५  
 डमरूक डक डँहल डमंकि, ठहनाय हूर नूपुर ठमंकि ॥ ५२ ॥  
 सजि चलिय संग भैरव त्रिसूल, फरकिय सिचान हिय असनं फूल॥  
 आतापि ओघ ढंकत अकास, फेरंडे फलंगत गिलन ग्रास॥ ५३ ॥  
 इम चलिय संग पलचरै अनेक, कटकट बिरौव प्रेतन कितेक ॥  
 लागि अतल बितल सुतलन लचक, मुरकत बराह दंतुलि मचक ५४  
 प्रावनं खुरतालन भरत अगि, जिहि रँव समाधि प्रमथेसँ जगि ॥  
 अकबकत सेतुँ सागर उमंगि, भुल्लत दिसान नर मद कि १५५।  
 तररकि भुम्भि छेकत तुँखार, दररकि देत पैँबय दरार ॥  
 रननंकि रौव कंकट करीन, छननंकि होत जल नँदन छीन ।५६।  
 उडिजात उँपल चूरन अनंत, गडिजात तिमिर पूरन दिगंत ॥

०

१ जलधारा ॥ ५० ॥ २ कोलाहल करके ३ हंसताहुआ ४ 'जय हो, जय हो,  
 यह कहकर ॥ ५१ ॥ ५ बहुत बोलते हुए (बकवाद करते हुए) बावन वीर  
 (जहाँ जहाँ बावन की संख्या आवै तहाँ तहाँ बावन वीर जानना चाहिये) ६  
 पंखों के शब्द का अनुकरण (नकल) है ७ बाघ विशेष ८ अप्सराओं के ९  
 पायजेब (पदभूषण) बजे ॥ ५२ ॥ १० भोजन के कारण हृदय फूलकर सिचाण  
 पक्षी उडे ११ चील्हों के समूह से आकाश ढकगया और निचाले गिटने को १२  
 गीदड़ कूदने लगे ॥ ५३ ॥ इसप्रकार १३ मांस खानेवाले अनेक पशु पक्षी साथ  
 चले और कितने ही प्रेतों के दंतों का कटकट १४ शब्द हुआ ॥ ५४ ॥ १५ पत्थरों  
 से और घोड़ों की खुरतालों से अग्नि झड़ने लगी जिसके १६ शब्द से  
 १७ विष की समाधि छूट गई. घबरा कर समुद्र १८ सर्पादा झूलकर ऐसा  
 बहा जैसे १९ भाग के नशे में मनुष्य दिशा भूलजाता है ॥ ५५ ॥ तरारें ले कर  
 २० घोड़े भूमि को फाँदते हैं और २१ पर्वत फटकर दरारें (तेड़ें) देते हैं, रण-  
 कार करके २३ कवच की कड़ियों का २२ शब्द होता है २४ बड़े जलाशयों  
 का पानी क्षीण होता है ॥ ५६ ॥ २५ अनेक पत्थर चूर्ण होकर उड़जाते हैं

इभरांज अंडुं अचत अभंग, रज्जू कि खेत्रफल अपन रंग ॥ ५७ ॥  
 वहिचलिय धातु अद्रिन अनेक, सलसलिय पंथ गज दान सेक ॥  
 इम हलिय सेन दक्खिन अनंत, दिल्लीस मुलक दव्यत दुरंत ॥ ५८ ॥  
 सुनि साह सेन सज्जिय सिताव, बल मुखप उभय रक्खिय नगाव  
 इक खानकमरदी निजवजीर, बलि संगनिजामनमुलक वार ॥ ५९ ॥  
 दुवर चलिय सेन हरवल्ल हंकि, घनघोर घंट पक्खर घमंकि ॥  
 कुलटा कानीनि विधि तरल वाजि, उडुतमलंगि आगामि अजि ६०  
 मनके रु पवनके जे सुमित्र, चलत रंस धाव मंडन विचित्र ॥  
 खंधन बिर्नम्भ चट्टत खलीन, मखतूल वग्ग जैर जिलह लीन ॥ ६१ ॥  
 विरचत निकम्मं नमि जेरबंध, खैह जात कंपि तउ संदस खंध ॥  
 दल मध्य उलट पलटन दिखात, तिभि मच्छ मनहु अर्नव तिरात ६२  
 भुवकां ति प्रबल बत्थन भरंत, कामिनि गैर लगगत जानि कंत ॥  
 सादिन सुख साधित सहज संधय, फिरिजात छत्रकी छांह मध्य ६३  
 असवार चहत जिहि रूप दव्यं, नञ्जि रु दिखात सुहि रूप नव्यं ॥

और अधरे से पूरा हाकर दिशा दिगा गडजाती (अद्वय हाजाती) है  
 १ बड हाथी नहीं लूटनेवाले २ जंजीरों को खैचते हैं सो मानो ४ खेतों  
 को मापने को ३ डोरी (जरीघ) खैचते हैं ॥ ५७ ॥ १ अनेक पर्वतों से ७ हा-  
 थियों के मद के ट खींचने से मार्ग ६ गीले होगये ॥ ५८ ॥ १ सेना में १०  
 कमरदीखी ११ फिर ॥ ५९ ॥ कुलटा के १२ नेत्रों की पुनली के समान चपल  
 घोड़े १३ आगे आनवाले शुद्ध के अर्थ उडते हैं ॥ ६० ॥ १४ चलने में रस (स्वाद)  
 उत्पन्न करते हैं और १५ दौड़ने में आइवर्ष करते हैं १६ विशेष भुके कंधों वाले  
 १७ लगामों को चाटते हैं वे घोड़े १८ रसम की बागें और १९ जरी की शांभा में  
 लीन हैं ॥ ६१ ॥ स्वाभाविक भुके हुए कंधों से २० जेरबंद को निकम्मा करते  
 हैं २१ आकाश में उडकर जाते हैं ता भी कंधा २२ वैसा का वैसा ही भुका  
 हुआ रहता है वे घोड़े २३ सेना में उलट पलट दिखाते हैं सो मानो २४ सहज में  
 २४ बडे मच्छ तिरते हैं ॥ ६२ ॥ २५ वे घोड़े भूमि को अपनी २६ बाधों (शुजा  
 ओं) में भरते हैं सो मानो २९ पति २८ स्त्री के गले लगता है ३१ सहज साध-  
 न से ३० सवारों के सुख को साधते हैं और छत्र की छाया में फिर जाते हैं ३३  
 सवार जिस ३१ भव्य; अथवा विशेष नञ्ज रूप को देखना चाह वसी ३३ नहीं

रन अजिरे वजू जिनके रकाव, हरखात चैलाकन मन हिसाव ६४  
 इम चलिय अर्व्वे थेइन थरक, हंकिग अनेक दक्षिन दैलक ॥  
 चंचल लखि पच्छिन करत चोट, जिन अग अंजु इदखत अगोर्ट ६५  
 अति बीत पाय गेपत अडौल, लगि बहुगि डोक बढिजात लोलै ॥  
 जंजीर लंब अंचत सजोग, सिर रचत भोर गुंजार सार ॥ ६६ ॥  
 आधोरन रकखत बहु विमासि, हंकत तथापि उद्धत हुलामि ॥  
 इम हलिय साह पुरना अभंग, दक्षिन दल सम्मुह रचनदंश ॥ ६७ ॥  
 सुनि इनहि आत दक्षिन दलेसे, हुन बढिय विगागत साह देस ॥  
 खटमास बट्ट आवत विताय, चकै सु अब दिलिय मिर चलाय ॥ ६८ ॥  
 ग्वालर लुट्टि बहु अरिन गंजि, अब चलिय अग रसवीर रंजि ॥  
 मग चुकि अग कढिगपउ मिच्छ, इनआनिलई दिलियगवईच्छ ॥ ६९ ॥  
 सक वेद अंक सत्रह १७४ सुभायै, अष्टमिट वलच्छ मधुमौस आय  
 दिल्लीपुर बाहिर पृथुल दोर, अति रुचिरै सिल्पविधि ओरओर ७०

थित इक कालिया देवि धान, मेला तँहँ तद्दिन हो महान ॥  
 बढि रहिय तत्थ लखन बनज्ज, जिन्ह लखत होत धनदहिँ अचिज्ज  
 दखिन दल आय रु खगन खंडि, मेला वह लुट्टिय जुलम मंडि ॥  
 कढि कढि तव विबल बनजकार, तजिद्रव्य भजिग कालिदि पार  
 कोटिन धन दिल्लिय कहर कुप्पि, लुट्टिय मरहठन कानि लुप्पि ॥  
 बहु जलज हीर मानिक बिधार, प्रतिमुल्ल लाल मरकत अपार ७३  
 इम महर हून रूपय अनंत, भूखन जराय कुंडल सुभंत ॥  
 कौटीर तिलक आपीडँ केक, अरु तौडपत्र नूपुर अनेक ॥ ७४ ॥  
 सिरपेच हार केपूर स्वच्छ, ऊर्मिकँ अँवाप कँटिसूत्र अच्छ ॥  
 बहु मारि हँड लुट्टिय बिजाज, सन सूत्रमय रु रांकव समाज ७५  
 कौसेयँ पग्घ साटिन कलौप, नीसौर नँयँ थुरमा अमाप ॥  
 अत्तार बिपनि लुट्टिय अनेक, कँरटी रु बीति पुनि भक्षँकेक ७६  
 हारँव हुव दिल्लिय हंत हंत, दँल कढिय तत्थ पुरतँ दुरंत ॥  
 इत रचत लूट दखिन अनीकँ, श्रियमंत सज्ज चाहत समीक ७७

१ उस दिन बडामेला था रत्नाखों व्यापारी, अथवा लाखों का व्यापार चढ रहा था ॥ जिनको देखने से ४ कुबेर को भी ५ आश्चर्य होता था ॥ ७१ ॥ ६ व्यापारी ७ यमुना नदी के परले किनारे भाग गये ॥ ७२ ॥ ८ जुलम करनेवाला क्रोध करके ९ बहुत मोती हीरे और माणिकों का विस्तार, अत्यन्त मूल्य वाले लाल १० पन्ना ॥ ७३ ॥ ११ सुवर्ण की मोहरें और अनंत रुपये, जहाय के भूषण १२ श्रेष्ठ रीति के कर्ण भूषण १३ किरीट (मुकुट) कितने ही शिवतिलक और १४ बूडामणि (मस्तक भूषण विशेष) १५ कर्णफूल (स्त्रियों के कानों का भूषण) अनेक नूपुर (चरणभूषणविशेष) ॥ ७४ ॥ १६ भुजबंध १७ अंगुठियां १८ काटिमेखला अर्थात् करधनी (कणगति) १९ प्राप्त की (लूटी) फिर बजाजों की २० दुकानें लूटीं जिनमें सण के, सूत के और २१ ऊन वस्त्रों के समूह थे ॥ ७५ ॥ २२ रेसमी पगड़ियों और साड़ियों के २३ समूह २४ ठंड को मिटानेवाले २५ नवीन अपार थुरमे (दुशाले) अनेक अत्तारों के २६ बजार लूटे फिर २७ हाथी २८ घोड़े और कितने ही २९ खाने के पदार्थ लूटे ॥ ७६ ॥ दिल्ली में खेदकारक ३० हाहाकार शब्द हुआ तहाँ पुरसे ३१ दूर है अन्त जिसका ऐसी ३१ सेना निकली, इधर दक्षिण की ३३ सेना तो लूट कर रही थी और श्रीमन्त (दक्षिण का बजीर) सज्जित होकर ३४ युद्ध चाहता था ॥ ७७ ॥

यहँ सुनिय कमरदीखाँ वजीर, बलि कहिय निजामनमुलकबीर॥  
 अप्पन मग चुक्कि रु अग्ग आय, दिल्ली खल पँते लैन दाय ७८  
 यह अक्खि सुरे लै दल अभंग, पहुँचे अंधारहिँ जिम पतंग ॥  
 उततँ दल पत्तनँसाँहु आय, इततँ नबाब दुव२हय उडाय ॥ ७९ ॥  
 मरहड्ड लये लुहृत प्रमत्त, प्रतिमल्ल मिच्छ दुहुँ२ओर पत्त ॥  
 मचि समर घोर समसेरँ मार, बजि निनँद बंब बंबक बिथार।८०।  
 धर धुकत धुजिज धावन धसकि, कुंडँलि कपाल दरकिय कसकि ॥  
 कटि परत भाँह रद अधर कंध, किलकिलत मुंड नच्चत कंबंध८१  
 डमरुक मँडु डाहल डमंकि, घहरात डोल पक्खर घमंकि ॥  
 बबकारि करत बावन५२बिलास, रच्चत जँहँ जुगिगनिकेलिँ रास८२  
 जिततितहि मत्थ उडि परत जत्थ, तुंबा कि तरल अवधूत हत्थ ॥  
 चढि गगन टोप चमकहिँ अनेक, तुटिँ जँगर जात तननँकि तेर्का।८३।  
 सर्प गिरत भिन्न बाहुलँ समेत, अहि पंच५फन कि कंचुक उँपेत ॥  
 जिँरहनविच कटि हग फदकि जाँहिँ, मानहुँ भखदासनँ जालि माँहिँ  
 कटि कहिगिरंत कहँ सुच्छ कंदँ, रंगे मृगनाभि कि दोज२चंद ॥

१ पुनि २ दिल्ली में प्राप्त हुए (गये) ३ दिल्ली को लेने की रीति से ॥ ७८ ॥ जैसे अंधरे पर  
 ४ सूर्य पहुँचे तैसे पहुँचे १ उधर दिल्ली शहर से भी सेना आई ॥ ७९ ॥ मर-  
 हठों को लूट में ६ असावधान (गाफिल) पाये और दोनों ओर से यवन  
 ७ शत्रु ८ प्राप्त हुए ९ तरवारों की मार से घोर युद्ध हुआ और नगरे व  
 तासे बजकर १० शब्द का विस्तार हुआ ॥ ८० ॥ ११ घोड़ों आदि की दौड़  
 से नीची बैठकर भूमि धुजी १२ शोपनाग का मस्तक हठकर फटा १३ विना  
 मस्तक के क्रियावान धड़ नाचते हैं ॥ ८१ ॥ १४ कापालिकों का वाद्य विशेष  
 १५ योगिनियें रासक्रीड़ा करती हैं ॥ ८२ ॥ १६ चपल अवधूत के हाथ से तूँचा  
 गिरै तैसे १७ कवचों के ऊपर तरणकार शब्द करके १८ तरवारें लूटती हैं ॥ ८३ ॥  
 २० बाहुत्राय (दस्ताना) सहित १६ हाथ कटकर गिरते हैं सो मानों कांचली  
 २१ सहित पांच फण के सर्प हैं २२ लोहे की जालीवाले टोपों में नेत्र निकस  
 कर फदकने हैं सो मानों २३ धीमरों की जाल में से मच्छी जाती है ॥ ८४ ॥  
 कहीं पर टेढ़ी मूछों के २४ समूह कट कर गिरते हैं सो मानों २५ कस्तूरी में  
 रंगे हुए द्वितीया के चन्द्रमा हैं



नागोद कट्टि कहूँ कढत गत्त, मोचातरुतें जिम गर्भ पत्त ॥ ८५ ॥  
 कंकट विदारि प्रविसत कटार. विल बीच पन्नग कि मच्छ वार ॥  
 खंजर कट्टि पंजर पार जात, सोनित संन्यो सुअति छवि सुहात ८६  
 मानहुँ गवात्त रंजदिन दिखान, कर पंटु क्रिया कि जावक चुवान  
 दिपि गुरज मत्थ पारत दरार, कीर कि तरबूजन सुद्धि मार ॥ ८७ ॥  
 चलें असिन होत गज कुंभ चीर, जगदीस भैत जुत्त कि कैरीर ॥  
 सोनित तिरात धमनिनें समूह, जल अरुन जानि अलंगई जूह ८८  
 सरधा सम छुटत बिसिख ब्रांत, मधु जाल छत मंथन बनात ॥  
 खिचिजात सरसैन करन कानि, जमराज लपनें जमुहाँत जानि ८९  
 मिलिजात कोटि लस्तकें मचकि, सुकुमार नारि लंक कि लचकि ॥  
 तुरंगीर तुट्टि उडुत अमाप, केकीनेंके कि चंद्रक कलाप ॥ ९० ॥

१ पेट का कवच (पेटी) कटकर शरीर निकला है सो मानों  
 २ केब के घृत् से भीतर का पत्ता निकलता है ॥ ८२ ॥ ३ कवच  
 फाड़ कर कटार प्रवेश करते हैं सो मानों विल में सर्प घुमता है किना ४  
 पानी में मच्छ घुसता है ५ रुधिर से ७ भीगाहुआ खंजर (छुरीविशेष) ४  
 अस्थिपंजर (धड़) के पार जाता है सो ऐसी अस्यन्त शोभा देता है ॥ ८६ ॥  
 जैसे कि १० क्रियाचतुर नायिका अपना ९ रजस्वला होना दिखाने के लिये  
 जावक (लाल रंग विशेष) से ११ टपकता हुआ हाथ ८ भरोखे से दिखाती  
 है अर्थात् अपने जार को जावक का टपकता हुआ हाथ दिखाकर व्यंग्य से  
 अपना रजस्वला होने का संकेत करके उस जार के आने का निषेध करती  
 (रोकती) है ॥ ८७ ॥ १२ चपल तरवारों से हाथियों के कुभस्थलों की चीरं हो-  
 ती हैं सो मानों जगदीश के १३ भात सहित १४ कलश की चीरं होती हैं  
 १५ नाड़ियों (नसों) का समूह रक्त में तिरता है सो मानों १६ लाल पानी में  
 १७ पानी के सर्पों का समूह तिरता है ॥ ८८ ॥ १८ मधुमक्खियों के समान  
 तीरों के १९ समूह छूटते हैं सो मानों २० मस्तकों को सुवाल के छाते बनाते हैं  
 २१ धनुष कानों पर्यन्त खिचता है सो मानों घमराज २२ मुख से २३ जंभाई  
 (उभासी) लेता है ॥ ८९ ॥ धनुष की २४ मूठ मचक कर दोनों गोशे (नोकें)  
 मिलजाती हैं सो मानों सुकुमार स्त्री की कमर लचकती है २५ भाथा तूटकर  
 अमाप बाण उड़ते हैं सो मानों कितने ही २६ मयूरों के चंद्रों (चंद्रवों) के समूह

संधत सर धनु बिच यौं सुहात, दह्वा कि काल आनन दिखात ॥  
 खग भरत फूल धारन खनंकि, तुटिपरत चाप चिँल्लन तनंकि ९१  
 ढालनपर पय कटि ठहरि जात, कच्छप पर मंदर सम सुहात ॥  
 छलिजात रुहिर घायन छच्छकि, छुटिजात प्रान कहूँ लोह छकि ९२  
 जिन बदन इकनारिन उच्छिष्ट, चुंबत शृगाल तिन उदित इष्ट ॥  
 मनि कनक मंच निंदक अमान, ते सूर धूर सर्जां सयान ॥ ९३ ॥  
 बहु बीर बैठि अछरि बिमान, तांडव उपेत सुनि गान तान ॥  
 चित मुँदित डारि गलबाँह चाहि, स्व कबंध लरत पिकखत सिराहि ९४  
 हिय तिरत अंत्र जुत निकसि हाल, मानहुँ सनाल लोहित मूँनाल  
 उर गिद्ध बैपा हित धसत आय, बैठे गृही कि बलभी बनाय ॥ ९५ ॥  
 भट गिरत पाय अटकत रँकाव, घुम्मत घने कि उदत सराव ॥  
 तुटिजात तंग प्रँजरत पलान, कटि परत बाँजि गँल प्रोथँ कान ॥ ९६ ॥  
 कडिजात कुंते पखर बिदारि, बडिजात रुहिर जिँमंजंत्र वारि ॥

उदते हैं ॥ ९० ॥ धनुष के बीच में संधान किया हुआ १ वाण ऐसी शोभा देता है मानों यमराज के २ मुख में दाढ़ दीखती है, तरवारों की धारों पर धारें खणक कर अग्नि कण उडते हैं ३ प्रत्यंचा तथंक कर धनुष तूटते हैं ॥ ९१ ॥ कितने ही चरण कट कर ढालों के ऊपर ठहर जाते हैं सो कमठपर ४ मंदराचल के समान शोभा देते हैं ५ रुधिर ॥ ६२ ॥ जिनके ६ मुख ७ एक स्त्री के ८ उच्छिष्ट थे उनके मुख ९ भाग्य उदय होने से गीदड़ चाटते हैं "यह इष्ट उदय होना शृगाल का विशेषण है" मणियों से जड़े हुए सुवर्ण के मंथों (पलंगों) की निन्दा करनेवाले थे वे वीर मान रहित १० धूल की शय्या पर सोते हैं ॥ ९३ ॥ ११ नृत्य सहित १२ प्रसन्नचित्त से १३ अपने धड़ को लड़ता हुआ देख कर प्रशंसा करते हैं ॥ ६४ ॥ तुरत का निकला हुआ हृदय अंत सहित गिरता है सो मानों नाल सहित १४ लाल कमल तिरता है १५ चरवी के लिये ग्रीध पेट में घुसते हैं सो मानों गृहस्थी १६ सबसे ऊपर का मकान बनाकर बैठा है "बलभीकूटागारे" इति शब्दार्थचिंतामणिः ॥ ९५ ॥ तिरते हुए धारों के चरण १७ पागडों में अटक जाते हैं सो मानों मंदिरों में धंभों के ऊपर १८ आवकों (सरावणियों) के देवता ऊंचे झुकते हैं १९ जलते हैं २० घोड़ों के २१ गले २२ फुरणें और कान गिरते हैं ॥ ६९ ॥ पाखों को फोड़कर २३ भाले निकल जाते हैं और २४ जैसे फुहारे से पानी

कटि असिन केतु उद्धत अकास, मानहुँ मयूर गन भद्र मास १९७।  
इम परत खग्ग बहु भटन अंग, भ्रमत कि पटारै तरु पर भुजंग ॥  
इम मचिय घोर आहव अनूप, बहु कटि दक्षिखन भट हुव विरूप ९८  
उडि चलिय अंगि बडि ओर ओर, जमुना जल सुक्किष ताप जोर ॥  
संकुलि प मच्छ खल भलिसु मार, पन्नग कि आँहि तुंडिक टिपार ९९  
यँह भयउ देव दिल्लीस ओर, घन कटिय जंग मरदृष्ट घोर ॥

लूटहु समस्त लिन्नी छुराय, दक्षिखन बिहाल किय प्रबल दाय १००  
श्रियमंत भीत गति मति विसारि, भज्यो सु क्योंनै बंभन भिखारि  
इहिँ भजत भज्यो दक्षिखन अनीकै, घन विकल कदा कहिये घनाक १०१  
मूरखन मिच्छु सोधयो न भँथ, बनि काँदिसाँकै भरि जिधन बत्थ ।  
उदाव ताँव विबल अनेक, खुचि मरिय भानुजाँ गलनि केक १०२

॥ दोहा ॥

मनतँ मूढ जुदे नहे, जियन मरन कृत जानि ॥

सँघन पंक गडि मरिय सब, अँककसुता विच आनि ॥१०३॥

निकलै तैसे रुधिर निकलता है ? तरवारों से उद्धकर ध्वजा आकाश में उडती है सो मानों भाद्रपद मास में मयूर उडते हैं ॥ ६७ ॥ वीरों के शरीरों पर तरवारें ऐसी पड़ती हैं जैसे २ चन्दन के वृक्ष पर सर्प पड़े ३ उपमा रहित युद्ध ॥ ९८ ॥ ४ अग्नि ५ भ्रमण ७ मानों टिपारों में सर्पों के फण ६ हैं ॥ ९९ ॥ ८ प्रबल रीति से ॥ १०० ॥ ९ भय से युद्ध की गति और बुद्धि को १० भूलकर भागा सो ११ क्यों नहीं भागे १२ भिच्चा माँगने वाला ब्राह्मण था अर्थात् उसका भगना यथार्थ था १३ सेना ॥ १०१ ॥ उन मूर्खों ने यह नहीं सोचा कि मृत्यु तो १४ मस्तक पर है जिससे भगकर कहां जावेंगे परन्तु १५ भयद्रुत होकर भागे (भयभीत होकर; अथवा ध्या करुं, कहां जाऊं इसप्रकार घबराकर भागे) और १६ जीने को बाध (भुजों) में भरा १७ उस भागने में अनेक विबल होकर कितने ही १८ जमुना नदी की अलक्ष में (दक्ष दक्ष में) १९ गडकर मरगये ॥ १०२ ॥ वे मूर्ख मन से जुदे नहीं थे अर्थात् मन साथ चलने वाले थे और मन का धर्म डरने का है २० मरने जीने को मृत्यु जानकर (वेदान्त के मत से मरना जीना स्वप्नवत् है) सब २२ जमुना नदी के २१ गहरे कीचड़ में आकर गड मरे ॥ १०३ ॥ हे बुद्धिमानों! सुनो, यह

मनोहरम् ॥

सुनारे सघाने त्रिशुनको तमासो जाहि,  
वस्तुते विचारें ज्ञान ज्वलन प्रचारें हैं ॥  
सिद्धको न साधन कहाँ मैं कोन सीति वहै,  
कारनन काज ओ दुहूर्मे धुर धारें हैं ॥  
वाहि जे नजानें याहि सत्य करि मानें यातें,  
भूठे सुख दुःख मानि वेद्यकों विसारें हैं ॥  
जानें अनजानें की परिच्छा पारबेकी जानि,  
डारिवेकी ठोर धीर बीर देह डारें हैं ॥ १०४ ॥

॥ षट्पात् ॥

इम सेनहिं मरवाय भेरकि भजिजग द्विज कैतर ॥  
अवसेसन सजि संथ सुरिग प्रतिमुख भय माछर ॥

तर १ बर २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

पिषिख सिंहकों स्पार पटकि उच्चार पलायउ ॥

किखिसौं गव्वन काज अनखि कोटापर आयउ ॥

चात्तीस४०दिवस तोपन तरकि लरिरुप्पय दसलकरव१००००००लिप

संसार सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण का तमाशा है जिसको वेदान्त से विचारें तो ज्ञान की अग्नि इस को जलाता है, और सिद्ध जो परमेश्वर है उसका कोई साधन नहीं है अर्थात् जैसे इस जगत् का साधन तीनों गुण है जिस को मैं कैसे कहूँ. इस में गीता का भी प्रमाण है कि "यो बुद्धेः परतस्तु सः" वह किसी का नतो कारण है और न कार्य है और इन दोनों की धुर वो ही धारण करता है उस परमात्मा को जो नहीं जानते हैं वे इस संसार को सत्य मानते हैं इस कारण भूठे सुख और दुःख को मानकर जानने योग्य (परमात्मा) को भूलते हैं उस परमात्मा को जानने और नहीं जानने की परीक्षा करने की पहिचान यही है कि जहाँ शरीर डालने का स्थान होता है वहीं भीर और वीर डालते हैं ॥ १०४ ॥ १ चमक कर २ कायर ब्राह्मण भागा ३ पाकी के लोगों का साथ ४ पीछा मुहा ५ विष्टा डालकर भागा ("लीछ पटक कर भागा" यह राजपूताना की लोकोक्ति है) और ६ लोमड़ी (लुगती) से ७ गर्व करने के काम पर क्रोध करके

डरपात अल्प सत्वर दुमति द्विज वह दक्खिन संचरिया १०५।  
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप-  
तिबुधसिंहचरित्रे उदयपुरागतसिताराधीशच्छत्रपतिसाहूमन्त्रिबाजे-  
रावपेसवारूपस्य महाराणासनाधस्तादुपवेशनश्वाजेरायस्य महा-  
राणादण्डादान २ भंभोलावग्रामान्तिकबाजेरायजयसिंहमिलनो-  
भयैकासनाधिवेशन ३ ज्ञातदिल्लीयुद्धसमयाभावजयसिंहमन्त्रबाजे-  
रायपुनर्दक्षिणदेशगमन ४ श्रीमन्तपेसवामिलनहेतुपरिज्ञातयवनेन्द्रा  
प्रसादजयसिंहस्य दिल्ली प्रति ससैन्यवाजेरायपुनराकारणादिल्लीव-  
हिःप्रदेशसम्वराङ्गणयवनजयमहाराष्ट्रपराजयकथन ६ अबशिष्टसै-  
न्यसहितप्रत्यावृत्तदण्डितकोटामहाराजबाजेरावस्यदक्षिणगमनवर्ण-  
नमेकचत्वारिंशो मयूखः ॥ ४१ ॥

आदित एकोनाशीत्यधिकद्विशततमः ॥ २७९ ॥

॥ षट्पात् ॥

इत दिल्लीस वजीर जित्ति संगरै मरहठ्ठन ॥

१ छोड़ों को शीघ्र डराता हुआ वह दुर्मति २ गया ॥ १०५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में, सितारा के राजा छत्रपति साहू के मन्त्रि बाजेराव पेसवा का उदयपुर आकर महाराणा की गद्दी नीचे बैठना १ महाराणा से बाजेराव का दंड लेना २ भंभोलाव नामक ग्राम के समीप महाराणा जयसिंह से मिलना और दोनों का एक गद्दी पर बैठना ३ दिल्ली से युद्ध करने का समय नहीं जान कर जयसिंह की सलाह से बाजेराव का पीछा दक्षिण में जाना ४ श्रीमन्त बाजेराव पेसवा से मिलन के कारण बादशाह को अपने पर अप्रसन्न जानकर राजा जयसिंह का बाजेराव पेसवा को सना सहित फिर दिल्ली पर बुलाना ५ दिल्ली शहर से बाहिर युद्ध हाकर यवनों का जय और मरहठों का पराजय होना ६ बची हुई सना से पीछे आने बाजेराव का कोटा के महाराज से दंड लेकर दक्षिण में जान के वर्णन का इकतालीसवाँ ४१ मयूख हुआ और आदि से दो सौ उनासी २७९ मयूख हुए ॥  
३ युद्ध में

हरखित गयउ हजूर साह बहु दियउ रीझ रन ॥  
 इक इक प्रति आदोब उचित सब लिय सलाम करि ॥  
 दूजे दिवस कलोजखान हुव त्यों तँहँ हाजरि ॥  
 याकोहु दैत बैभव अतुल लिय सब पृथक सलाम नैत ॥  
 हसि ताहि खानदोराँ कहिय बुद्धा बंदर बैर नचत ॥ १ ॥  
 ॥ दोहा ॥

सुनि साह रु परिखद संकल, मुसकिँय आसँव मत्त ॥  
 अँट्टाट्टहु कतिकन करिय, त्रँपा न रक्खिय तैत ॥ २ ॥  
 खानकलोज नबाब यह, जथा यौवनी जीमै ॥  
 जिहिँ अगँ गजसिंह जुत, भखे दँलावर भीमै ॥ ३ ॥  
 जिहिँ अँक्खिय यह बुद्धि जो, रहिहै साह तिहँर ॥  
 बेगहि बंदर नच्चिहै, पुर दिह्लिय प्राकारै ॥ ४ ॥  
 यह सुनि साह सिराहि कछु, पच्छो पारिय रोस ॥  
 पै पापिनै बिगरघो समय, सो न लखैँ अपसोसँ ॥  
 मोजदीनसौँ इकसे, भये पंच५ दिह्लोस ॥  
 मत्त कापिसायनैँ मुदित, हिय इच्छित रँतही सँ ॥ ६ ॥

१ अदब के साथ (सलाम) २ दिया. तुलना रहित (बहुत) बैभव ३ जुदा जुदा ४ झुककर सलाम करके ५ श्रेष्ठ (अच्छा) नाचता है ॥ १ ॥ ६ सब सभा ७ मुसकराये (मंद हास्य से हसे) ८ मद्य में मस्त ९ कितनों ने उच्च स्वर से भी हास्य किया १० लज्जा ११ तहाँ ॥ २ ॥ १२ जिस प्रकार यावनी (फारसी) भाषा में १३ जीम अक्षर होवे तिस प्रकार अर्थात् घडे पेटवाला (फारसी में जीम अक्षर ऐसा होता है) जिसने पहिले नरवर के राजा और कोटा के महा राव गजसिंह सहित १४ दिलावरखाँ और १५ कोटा के महाराव भीमसिंह को मारें थे ॥ ३ ॥ १६ जिसने कहा कि १७ तेरा बादशाह इस बुद्धि से रहैगा तो दिल्ली नगर के १८ कोट पर शीघ्र ही बंदर नचेंगे ॥ ४ ॥ १९ उन पापियों का २० भिना है ॥ ५ ॥ २१ मद्य में मस्त होकर प्रसन्न रहते थे २२ वे (बादशाह) हृदय में मैथुन ही चाहते थे. अथवा 'हीम' शब्द यावनी भाषा के 'हिर्म' का अपभ्रंश है तो इसका अर्थ चाहना है सो मैथुन की अधिकता यताने के अर्थ भीपसार्थ में एकार्थवाची दो शब्द दिये हैं ॥ ६ ॥

मनोहरम् ॥

गानमें गडे जे बालकानमें बडे जे बाँरु-  
नीके बहकार्यें तें घुमंडन घनैँ लगे ॥  
रघ्यतकी रमनि रजीली जो निहारैँ ताहि,  
बलन बुलाय ख्यात व्हैँ व्हैँ चाखनैँ लगे ॥  
कथित कुरानको बिसारि बैठे बालिसँ,  
भनैँ जो रीतिकी तो चुप झूठ भाखनैँ लगे ॥  
दिल्लीके घरानैँ उलटी करि इलाहसौँ बँ,  
बुलिके ठिकानैँ पंडेँ पायु राखनैँ लगे ॥ ७ ॥

दोहा-जुमों महज्जत जात नन, सुरा मत्त सठ साह ॥

रहैँ सुधि न दिन रीति की, लहैँ सुरत रस लाह ॥ ८ ॥

इक दिन काजिय दिय अरज, उचित महज्जत आन ॥

कोऊ बिधि बैठी सु चित, जैँथ बिचारिय जान ॥ ९ ॥

षट्पात् ॥

तहिनैँ रचि आपानैँ अधिक आसव बनि उद्धत ॥

संगहि लैँ संडैँ गन मत्त सब पतैँ महज्जत ॥

बिरचि बिरचि गलबाँह साँह जुत रँबाहिँ नमैँ सब ॥

यह को रीति अंपुब्ब तरकि जंपिय काजी तब ॥

सुनि हसि रु एह अक्खिय सबन रे नहिँ तू जानत रुचितैँ ॥

१ बालकों (मूखों)में २ मद्य के बहकाये हुए ३ कुंगन का कहना (उपदेश भूलगये) ४ मूखों  
५ पूर्व कहने लगे कि चुप रहो ६ अब आप परमेश्वर की आज्ञा से विरुद्ध करके ७  
वे योनि के स्थान में ८ नपुंसकों की ९ गुदा को रखने लगे अर्थात् स्त्रियों के  
स्थान में नाजरो से गुदा मैथुन करने लगे ॥ ७ ॥ १० शुक वार के दिन; अथवा  
बड़ी महज्जत में ११ मद्य में मत्त १२ दिन रात्रि की ॥ ८ ॥ १३ जहाँ (मसजिद  
में) जाना बिचारा ॥ ९ ॥ १४ उस दिन १५ पानगोष्ठी (मत्तघाल) रचकर १६  
नाजरो अथवा हीजडों के समूह को साथ लेकर मस्त होकर मसजिद में १७  
गये १८ बादशाह सहित सय १९ खुदा को शुक वहाँ २० क्रोध करके काजिय  
ने कहा कि यह कौनसी २० अपूर्व रीति है २२ सुन्दर

सामूके जनन आसिक भिलन आदि रीति सुनियत उचित ॥ १० ॥  
दोहा ॥

कार्जा तबहि कुरानकी, अपनैँ सिर दिय उट्टि ॥

आयउ आलैँय सबन सह, रंचक साहहु रँडि ॥ ११ ॥

नीति रहित दिल्लीय नैँयर, इम मञ्जिग अंधेर ॥

कोऊ सुनत न काहुकी, घर घर हा रँव घेर ॥ १२ ॥

कटुर्क खानदोरौँ कहिय, साह धुनिय हसि सीस ॥

यातैँ खानकलीज अब, रचत दुहुँनपर रीस ॥ १३ ॥

तिहिँ वजीर पलटाय लिय, खानकमरदी तत्त ॥

बहुरि सहादतखान प्रति, पठयो पूरव पैँत्त ॥ १४ ॥

खानसहादत हो यहैँ, दुद्धर पूरव देस ॥

हाजरि सूबा च्यारि४हैँ, पूरवके जिहिँ पेसैँ ॥ १५ ॥

ता प्रति खानकलीजके, पत्ते सैँत्वर पत्त ॥

इहाँ समय कछु ओरभो, आवहु कोउ न अँत्त ॥ १६ ॥

॥ सोरठा ॥

लिपउ वजीर मिलाय, अप्पन तीन३हिँ इक्कहैँ ॥

सेन सम्हारहु आय, हनहिँ खानदोरहिँ सहज ॥ १७ ॥

रहैँ निरंकुस होय, पटकि जोर कछु साह पर ॥

सेनापति तुम सोय, हम वजीर अब इक्क हुव ॥ १८ ॥

॥ पट्पातू ॥

हम तुम सम्मलि हँनहिँ खानदोरौँ कपटी खल ॥

तब सेनापति तुमहिँ साह करिहैँ गिनि सबबल ॥

?मासूक लोगों से आशिकों का मिलना (प्रीति करनेवाले को आशक और जिस पर प्रीति की जावे उसको फारसी में मासूक कहते हैं) २योग्या ॥ १० ॥ ३घर में ४क्रोध करके ॥ ११ ॥ ५नगर ६मचा (हुआ) ७ हाहाकार शब्द ॥ १२ ॥ ८ कटुए बचन ९ कलीजखां ॥ ११ ॥ १० कमरदीखां को ११ पत्र ॥ १४ ॥ १२ जिसके आधीन ॥ १५ ॥ १६शीघ्र पत्र गये १४यहाँ ॥ १९ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ सामिल होकर मारेंगे



सु सुनि सहादतखान सेन सज्जित पूरब सन ॥  
 लागि सेनापति लोभ आय दिखिय चहि अप्पन ॥  
 अह सत ८०० तोप जिहि बसि अतुल दगतवेर कांसन दहत ॥  
 लहि एह हेतु ताकैँ खलक कैहर भाड़भुंजक कहत ॥ १९ ॥  
 ॥ दोहा ॥

आय सहादतखान बह, मिलि कलीज सह मोद ॥  
 इक वजीर रु अप्प व्है, विरच्यो कपट विनोद ॥ २० ॥

॥ षट्पात् ॥

नादरसाह सु नाम तपत ईरान जवन इत ॥  
 प्रबल सबहि प्रत्यंत जाहि मन्नत जित ही तित ॥  
 गाजुद्दीज कलीज भाड़भुंजक जुत भाये ॥  
 बुल्लन नादरसाह पत ईरान पठाये ॥  
 आवहु निसंक सुरतान इत तिय दिखिय तुमकाँ चहत ॥  
 सम्मुह चलाक कोउन सुभट मचत दंद दिन दिन महत २१  
 ॥ पद्धतिका ॥

यह सुनिय बत पुर इस्पहान, अति बढिय सोर जनपद इरान ॥  
 प्रत्यंत मुख्य बुलवाय पंच, पहुँ रचिय साह नादर प्रपंच ॥ २२ ॥  
 तामाचकुली नामक वजीर, बलि मिलिय अलीनिसुरुत प्रवीर ॥  
 सम्मन पुनि कम्मन कुतब सूर, गाजी हुसैन हाजी गरूर ॥ २३ ॥  
 रुस्तम सलोम सेरन रहीम, कालन कमाल रोसन करीम ॥  
 मारूफ मलिकमहमूद मीर, आतमतअली सटपद सधीर ॥ २४ ॥

१ इस कारण से उसको २ संसार १ जुलम करनेवाला भड़भुंजका कहता है ॥ १९ ॥ २० ॥ ४ म्लेच्छ देशों में (इस ग्रन्थ में आर्यावर्त के सिवाय सब देशों को म्लेच्छ देश माने हैं और अन्य आर्य ग्रंथों का भी यही मत है) ५ नादिरशाह को बुलाने के लिये ६ पत्र ७ हे सुलतान (बादशाह) ८ उपद्रव वा युद्ध ॥ २१ ॥ ९ ईरान देश में १० म्लेच्छ देश के ११ उस प्रभु नादिरशाह ने ॥ २२ ॥ १३ पुनि १३ निसुरुतअली ॥ २३ ॥ २४ ॥

नादिरशाह को दिल्ली पर लाना] सप्तमराशि-द्राघत्वार्शिमयूख (३२५५)

दाऊद सेख इसहाकदीन, मँहँदी रू मुहुम्मद मौनदीन ॥

कदीन १ नदीन २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

अहमद नियाज मसुऊद आय, सादी कुरेस मीरन सुभाय ॥२५॥

गालिव इबीब लानन गुमान, पीरोज फतैनसियब पठान ॥

आरास हसन यूसफअलीहु, दरियावखान सुनि मोजदीहु ॥ २६ ॥

याकुबअली रू अम्मन इमाम, नाँसेर असद पुनि नूर नाम ॥

इत्यादि साह भट बर अत्रस्त, सँह सचिव किन्न इकत समस्त २७

सब भटन साह नादर सुभाय, दिय तब कलीज कैगगर दिखाय ॥

कहि अब न जोर मुगलन निकेत, दिल्ली कटाच्छ मँम और देत २८

अवरंगजेब मिरजा मरंत, धर हिंदु धँव न धारक धरंत ॥

सचिवन नबाब भट सानुकूल, मिटि गय रँसूल मजहब समूल २९

गायक हन्पाँहि आलम अजान, पुनि मोजदीन अति मद्य पान ॥

मिलि बहुरि हिंदु सय्यद बिमँद, फँरुक गहि मारयो पासि फंद ३०

मुगलेस दोष २ पुनि साल मध्य, जाहलन इने जे इन अबदय ॥

सय्यद अंधीन पुनि तप नसाय, मिरजा समुहुम्मद पष्ट पाय ॥३१॥

सय्यदहिँ मारि पुनि लोभ सीर, तूरानि मुहुम्मद भो वजीर ॥

जासौँ इक बँभँन पटकि जोर, हिंदुन कर बोस्यो नद हिलोर ३२

जिततित गिनीम दब्बत जमीन, कटकनँ बढि रेवाँ अमल कीन ॥

॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ १ निर्भय १ वजीर सहित ॥ २७ ॥ ३ कलीजखाँ का पत्र ४

मुगलों के घर में ५ मेरी तरफ नजारे मारती है ॥ २८ ॥ ६ हिंदुस्थान की भूमि

वहीं धारक करने योग्य पति को धारती है; अथवा वह धरा किसी हिंदु को

पति बनाना चाहती है ७ पैगंबर का नाम है ॥ २९ ॥ ८ कलावंत ने ९ बहुत

मूर्ख १० फुरुकशियर बादशाह को, पासी का फंद डाल कर ॥ ३० ॥ ११

मूर्खों ने मार डाले १२ इनसे नहीं मारे जाने योग्य थे; अथवा वे बादशाह को

मारने वाले इन पिछलों से नहीं मारे गये ॥ ३१ ॥ १३ हुसन अली नामक

सय्यद को मारकर १४ दया महादुर नामक ब्राह्मण ने ॥ ३२ ॥ १५ फौजों

ने १६ नर्मदा नदी तक

अब तत्थ कमरदी हुब वजीर, सम्मलि कलीज नय विन सर्गिर ३३  
 रक्खै न खबरि सठ रति दीह, लुपियि सम्हारि नय लज्ज लाह  
 चाकर चहंत मालिक मिटान, हठि इच्छत मालिक अनुगं हान ३४  
 मिरजा सु मुहुम्मद तिन समेत, जा कहत जाहिकी मन्नि लेत ॥  
 नहिं लखत अंध किम बंद रु नेक, कहिये प्रमाद ऐसे कितेक ३५  
 गनिकान गुंमर आसिक अनंत, हीसन जिनां सु रत हंत हत ॥  
 अधिकार गायकन दिय अनीति, पेटु नरनसौं बं नहिं नेक प्रीति ३६  
 यावनीभाषा ॥

मस्तदिलाँ अज्जामै शराव दिल्ली च्यकुनद वस् बे रुवाब ॥  
 सुहवतु बदाँ वदाना दिलाँन ताजीम तहम्मुल् मुक्दिलाँन ३७  
 गहदरुन गुजारदु शहर बाब शैताँश नबीनदु रह सबाब ॥  
 अफवाजि दखनु आमदु बजोर बुजराय कलाँ गरदाद कोर ३८  
 किशु मुल्ककसाँरापासबाँन मरदसु बजमानेदु अमान ॥  
 इनसाफ अदलरफ्तह बज्योर अजखासु आम आमदु बशोर ३९  
 प्रायोदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

१ विना नीति का बदमाश ॥ ३३ ॥ २ चाकर का मारना ॥ ३४ ॥ ३ बुरा  
 ॥ ३५ ॥ ४ घमंड ५ हृदय (दिल) से ६ मैथुन में ७ प्रीति युक्त है सो खेद का  
 बात है ८ कलावंतों को ९ चतुर मनुष्यों से १० अब ॥ ३६ ॥

शराव (मद्य) के प्यालों से दिल मस्त हैं, दिल्ली क्या करै बहुत वेरोव है, बुरे  
 लोगों की सोबत (संगति) अकलमंदों (बुद्धिमानों) के साथ है, भले मनुष्य  
 भी उस बुरी सोबत का आदर करते हैं और उस सोबत को सहन करते हैं  
 ॥ ३७ ॥ शैतान जो नकी का रस्ता नहीं देखता है वह शहर के दरवाजे को  
 नहीं छोड़ता है दक्षिण (मरहठों) की सेना (फौजें) जोर में आ गई हैं और बड़े  
 बड़े वजीर अंधे होगये हैं ॥ ३८ ॥ मुल्क का और मनुष्यों का कोई रखवाला  
 (रक्षा करनेवाला) नहीं है और जमाने में कोई अमन (चैन) में नहीं है न्याय  
 जुल्म से जाता रहा है "यहां अदल और इनसाफ, दोनों एकार्थवाची शब्द  
 न्याय चलेजाने की अधिकता दिखाने के अर्थ लिखे हैं" और बड़े बड़े  
 सब पुकार (आहि आहि) कर रहे हैं ॥ ३९ ॥

गोजा निझाज कलमान रत, मैहरीन संग जड़ सतत मत्त ॥  
 रेवा रुअटक बिच पृथुल राज, सब नय बिहीन विगतर समाज ॥४०॥  
 मालव लिय दक्खिन दलन आय, दिल्लीलग लुट्टिय दुसह दाय ॥  
 विनुचेत मुगल वासर वितात, दल सजहु वहाँ न रोधक दिखात ४१  
 तामाचकुली यह सुनि वजीर, बुलिय सिराहि भुज ठोकि बीर ॥  
 जुलिकरनसिकंदर अग्य जाय, जित्तिय जमीन हिंदुनहराय ॥४२॥  
 तंमूर बहुरि गोरी पठान, हँथन सब जित्तिय हिंदवान ॥  
 बहु पुस्त पठानन रहिय राज, सो लिय बहोरि मुगलन समाज ४३  
 अग्य गुमाय दिल्लीय अनीति, भज्ज्यो जु हमायो मुगल भीति ॥  
 आयो सु इहाँ पुग इस्पहान, सुरतान मदति दिन्ना भीमान ॥ ४४ ॥  
 ईरान कटका तब जाय संग, लौ दियउ राज जुरि जाति जंग ॥  
 सुरतान हितुँ इम करन जोगि, दिल्ली सु हमायो लिय बहोरि ४५  
 पुनि ता सुत अकबर पट्ट पाय, सो गिनत रहयो सिरपर सहाय ॥  
 ताके सुत सुतके सुत बहोरि, अवरंग पट्ट लिय जंग जोरि ॥ ४६ ॥  
 ताकेहु तैनय अकबर सनाम, आयो सु सरन अत्यहि अधार्म ॥  
 पुनि मरिय अत्य कछु रोग पाय, दिल्लीहि न तो देते मिलाय ॥४७॥  
 यो मुगल चाहि घरके गुलाम, दिन्ना सु रक्खि नहि सकत धाम  
 तो अब जमीन अप्पन सम्हारि, बंधहि प्रपंच आयस विथारि ४८।  
 गोरोन सकै न जो ग्वाल रक्खि, अवरहि तब अप्पत स्वामि अक्खि  
 क्खि गन सेकादिक जो करै न, तो मूक्रिया पेटुन उचित देना ४९।

१ प्रीति नहीं है २ चंद्रमुखी नायिकाओं के साथ (फारसी में चन्द्रभाका नाम महर है)  
 ३ निरंतर ४ नर्मदा ५ बडा देनीति बिना ॥४०॥ ७ दिन ८ रोकनेवाला वहाँ नहीं दीखता  
 ॥४१॥ ९ आगे ॥ ४२ ॥ १० अपने हाथों से ११ पादियों तक १२ समूह ने ॥४३॥ १३  
 मान सहित ॥ ४४ ॥ १४ सेना ईरान के बादशाह १५ से १६ हाथ जोड़ कर ॥४५॥  
 ॥ ४६ ॥ उस आरंगजेब का १७ पुत्र १८ बिना स्थान होकर १९ यहाँ ॥ ४७ ॥ २०  
 दिया हुआ घर नहीं रख सकते हैं तो २१ हुकम फैलाकर ॥४८॥ २२ गजओं के समूह को  
 २३ किसी अन्य को सौंपता है २४ कर्षक लोग सींचने आदि खेती का कार्य नहीं  
 करे तो २५ भूमि की क्रिया में चतुर होवे उन कास्तकारों को देना उचित है

जो रक्खि सकहिँ तुम हुकम जोरि, औ हैं तो दिखिय दे बहोरि ॥  
तामाचकुली यह कहियँ\*तत्थ, सुनि सजिय साहनादर ॥ समत्थ ५०

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणौ सप्तमगणौ बुन्दीप-  
तिबुधसिंहचरित्रे खानदोरां कटुवचनहेतुयवनेन्द्रविरुद्धकलीजखाँखा-  
नदोरांमरणोपायकरणौ १ मद्यपयवनेन्द्रमुहुम्मदशाहनपुंसकासक्त्या  
दिनिमित्तनिन्दनदिल्लीप्रतीरानाधीशनादरशाहाब्दानार्थकलीजखाँ-  
पत्रप्रेषणौ ३ उक्तपत्रपठननादरशाहदिल्लीसमाक्रमणसैन्यसज्जनव-  
र्णनं द्वाचत्वारिंशो मयूखः ॥ ४२ ॥

आदितोऽर्शात्यधिकद्विशततमः ॥ २८० ॥

॥ निःशाणी ॥

नादरसाह इरानके अब सेन सजाया ॥

लग्गा घाय निसानपैँ घन जानि घुगया ॥

उर अष्टौँ दिकपालकैँ नैटसाल खुभाया ॥

हाक नकीबौँ हल्लकौँ दरकुंच सुनाया ॥ १ ॥

जंगी डैरु डमंकिया ब्रंबक ब्रहकाया ॥

ईरानी भट उप्फने वैपु सज्ज बनाया ॥

टोप बकत्तर जालिकैँ रन ओप रचाया ॥

वेवे तुंगस बंधिकैँ कटि खगग कसाया ॥ २ ॥

॥४९॥ \* तहां ॥ समर्थ ॥ ५० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुन्दी के भूषति  
बुधसिंह के चरित्र में खानदोरां के कटुवचन के कारण कलीजखाँ का बादशा-  
ह के विरुद्ध होकर खानदोरां को मरवाने का उपाय करना १ मद्यपी बादशा-  
ह मुहुम्मद शाह की नपुंसकों से आशक्त होने आदि की निन्दा ईरान के बाद-  
शाह नादरशाह को दिल्ली पर जुलाने का कलीजखाँ का पत्र भेजना ३ उक्त  
पत्र को पढ़कर नादरशाह के दिल्ली पर सेना सजने के बर्खन का बियालीसवाँ  
४२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अस्सी २८० मयूख हुए ॥  
१ नगाहों पर २ नहीं निकलै ऐसा साल जुमा ॥ १ ॥ तासे ३ बजे ४ शरीर  
को ५ जाली (पालंग) ६ दो दो भाषे ७ फर पर खगग बांधे ॥ २ ॥

वे बे चाप बहादुरों फटकारि बजाया ॥  
 तहिंन देस इरानमें नग बाजि नमाया ॥  
 के अफगान पठानके मुगलान मिलाया ॥  
 बलखी कज्जलबास के छां हैं छक छाया ॥ ३ ॥  
 अरबी रूसी उजबकी हरखाय हकाया ॥  
 खवसी खूमी खूवही रन सज्ज सुहाया ॥  
 आतसबाजी अफससी क्रम बाहं कहाया ॥  
 आरमनी सीधी इतैं आदेन उम्हाया ॥ ४ ॥  
 फ्रांस इतालिहु उप्फने समसेर सजाया ॥  
 खंधारी जारी खरे बहलीम बुलाया ॥  
 ओलंदेजी उज्जले कर मुच्छ मिलाया ॥  
 रन तिब्बत तातारके दातार दिखाया ॥ ५ ॥  
 बीर बुखारी काबिसी रसवीर रचाया ॥  
 कायेनी अरु कासिदी लरने ति लुभाया ॥  
 यूनानी रु यहूदिया सब संग सिधाया ॥  
 गालीली अरु गिंगिनी धर लैन धकाया ॥ ६ ॥  
 जहाके अरबी जिते मक्का मन लाया ॥  
 काजिदके अरु काबली सह सेन सजाया ॥  
 तुरान रु हीरातके मीरात मिलाया ॥  
 तिगरीके रु तिमोरके छक जोर छलाया ॥ ७ ॥  
 ततै तुरक त्रिपोलिके कैंते कसिआया ॥  
 हल्ले इम लखौं जवन दिल्ली करि जाया ॥

१ उस दिन २ मुगल ३ बलख देश के (यहां से लेकर सात के बन्द तक कहीं देशों  
 और कहीं शहरों के नामों से वहां बसनेवालों के नाम हैं) ॥ ३ ॥ ४ प्रशांसा के  
 बचन ॥ ४ ॥ ५ इदलीवाले ॥ ५ ॥ ६ ते (वे) ॥ ६ ॥ ७ यवनों के तीर्थ स्थान का  
 नाम है मीर सय्यद का खिनाब है ॥ ७ ॥ १० खल्ल ११ स्त्री बनाकर

पंच निमाजी पूत जे बल धर्म बढाया ॥  
 केन मुहुम्मद निजनबी रब केन रटाया ॥ ८ ॥  
 के बुल्ले इसहाक ओ दायूद दिपाया ॥  
 के याक़ुब हि सरोनको अक़खै बल आया ॥  
 अम्मीनादबके अरम मतमें बतलाया ॥  
 के योथम आहस कहैं सलमान सुहाया ॥ ९ ॥  
 के बोपस ओवेदको चितै चित लाया ॥  
 सुलेमान मतके किते हिंदवान हकाया ॥  
 इत्यादिक अति गँवके चढि मिच्छ चलाया ॥  
 नादरसाह सनाहके विनु देह दिपाया ॥ १० ॥  
 चोला काल वनातका सुहि टोप सुहाया ॥  
 कर दोऊन २ कुगानलै मन नैन लगाया ॥  
 बेसरेके स्पंदन बडे चढि बेग चलाया ॥  
 हाक नकीचौ हल्लकै दल डंकडगाया ॥ ११ ॥  
 उग्र विडौली अखिके बहु मिच्छ बढाया ॥  
 केके अरबी फारसी बुल्लै बिकसाया ॥  
 पंचक ५ टंकी चाप जे रकखै भुज भाया,  
 चकखै बकर एक १ जे मगरूर न माया ॥ १२ ॥  
 ताँजी पकखर सज्जके बाँजी बल छाया ॥  
 ईरानी अरबी किते जर जीन सजाया ॥

? दिन में पाँच बार निमाज पहने से २ पवित्र ३ कितने ही ४ खुदा को  
 ॥८॥ ५ कितने ही (यहाँ से दस के छन्द तक यवनों के पैगंबरों के अधवा कहीं  
 कहीं तीर्थ स्थानों के नाम हैं जिनके मजहब पा वे घबन चलते) थे ॥९॥ ६ गर्भ  
 वाले ७ बिना कवच ॥ १० ॥ ८ खच्चों के ९ बडे रथ पर १० नेना को मोक्ष दिला-  
 कर चलाया ॥ ११ ॥ ११ बिल्ली जैसा आँख लेत्र) वाले १२ कितने ही १३ प्रसन्न  
 होकर (फूलद्वारा) १४ यह कमान का ताकत देखने का एक प्रकार का तोल है, औ  
 धनुष का बल पराबधि अठारह टंक का माना जाता है ॥१२॥ १५ नवीन १६ घोड़ों

नादिरशाह का पानीपथ आना] सप्तसराशि-त्रिचत्वारिंशत्सूक्त (३२६१)

बैडे हथिन झुंडकै धुजदंड झुकाया ॥

नादरसाह उछाह कैं सहसेन चलाया ॥ १३ ॥

सत्यलोक लग यों रु यों पाताल पचाया ॥

फट्टा रीठक सेसका फनमाल फिराया ॥

हल्ली जुग्गिने संगही थेई थरकाया ॥

फाल फलंगी डाकिनी कर ताल बजाया ॥ १४ ॥

काबल सीमा व्हे कंटक अत्र अटक निर्राया ॥

हाक परी हिंदवानमें सब सोक अघाया ॥

लंघि अटक पंजाबका थांनां घन घाया ॥

सूबा नायक साहका सब फोरि मिलाया ॥ १५ ॥

आन चलाया अप्पनां मुगलान निटाया ॥

सूर इरानी संचरे मगरूर मचाया ॥

यों नादर अति बेगमाँ दिल्ली सिर आया ॥

पानीपथ किरनालपैं झंडालां झुकाया ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

सोरें सचिगं दिल्ली सहर, जोर इरानिन जानि ॥

साह मुहुम्मद अब सुनी, मद्यप सच्ची मानि ॥ १७ ॥

॥ सोरठा ॥

ईरानपैं सुनि आत, सठ प्रसन्न सबही सचिव ॥

सोक न तदपि समात, इक खानदोराँ उदर ॥ १८ ॥

॥ पट्टपात् ॥

कूरम प्रति जैयनेर खानदोराँ पठये देल ॥

१ मेना सहित ॥ १३ ॥ २ हथर ३ पीठ की हल्ली ४ छलांगें भर कर कूरी  
॥ १४ ॥ ५ सेना ६ अटक नदी को समीप थी ७ तुम हुए (अरगवे) ॥ १५ ॥ ८  
झंडे खड़े किये "हिंजल भाषा में अत्यन्त ऊँचा करने को झुकाया कहते हैं"  
॥ १६ ॥ ९ हाक १० सही ॥ १७ ॥ ११ ईरान के पति को ॥ १८ ॥ १२ जयपुर १३ पत्र



तू दुद्धर कछवाह साह तोहीसौं सबदल ॥  
 आवत देल ईरान रचहु दिखिय सहाय रन ॥  
 हम तुम इकत होय भुम्मि करिहैं वास भुगगन ॥  
 मम सीस भार आयउ अमित सो तोभन अब उत्तरहिं ॥  
 सिर धरि कुरान करियत संपथ जां उपकृत यह बीसरहिं ॥१९॥

॥ दोहा ॥

तेगीही यह बेरहै, आवहु सैदल उछाह ॥  
 तोहि दुरग रनथंभ अत्र, रीक्ति समप्पहिं साह ॥ २० ॥  
 इम अनेक कंगगर लिखे, गाह चमूर्पति सूर ॥  
 सच्चे करिकैं संपथ सो, कुम्म गिनै नहिं कूर ॥ २१ ॥  
 मैं आवत तुम साह जुत, बाहिर कग्हु मुकाम ॥  
 याँ लिखि लिखि देल मुकल, कूरम कँलुख दुकाम ॥ २२ ॥

॥ पट्टात ॥

इम जवनन विस्वासदै रू कूरम छज किन्नाँ ॥  
 अंतैहपुर निज अखिल उदयपुर मुकलि दिन्नाँ ॥  
 सावधान सह सत्थ गह्यो जैपुग कूरम पति ॥  
 यह अचिजेज लिखि आँत हों रू मरन न किन्नाँ मति ॥  
 अत्रग्हु नगेस हिंदुव अखिल यह जयसिंह उदँतँ लखि ॥  
 कौऊ न गयउ दिखिय कँलह प्रवल कँल भाविय परखि ॥२३॥

॥ दोहा ॥

टारो इम कूरम कितव, इत दिल्लीस अनाकँ ॥  
 सबल खानदोगँ सजिय, सम्मुह चहत मर्माकँ ॥ २४ ॥

१ सेना २ प्रम या रहित (अमाप) ३ तुझसे हो ४ सौजन्य ५ उपकार ॥ १९ ॥ ६ सेना सहित ॥ २० ॥ ७ पत्र ८ बादशाह के सेनापति के ९ अपथ (भोगन) ॥ २१ ॥ ११ पाप के बुरे कार्य से १० पत्र भेज ॥ २२ ॥ अपने १३ सब १२ जनाने को १४ आश्रय १५ लिखे हुए पत्र आते थे सो श्री १६ वृत्तान्त देख कर १७ युद्ध में १८ समय ॥ २१ ॥ १९ छली २० सेना २१ युद्ध में चाहता

इहिं अंतर परतापे वह, जेठो सालाम नंद ॥

दिल्ली आय रु दासभो, छली जवनपति छंदे ॥ २५ ॥

पानीपथ आयो समुक्ति, संडेन तजि अब साह ॥

सेनापतिके कथित सैम, रचिय कुंच रन राह ॥ २६ ॥

तोटकम् ॥

कटकेस चमू सब सज्ज करी, प्रांतहार नकीवन हाक परी ॥

बल पाप निंसानन घाय बजे, लखि जे घन भद्व नद लजे ॥२७॥

खुरसानन फूल कुंपान खिगे, चमकात चिनंगिन बाढ चिरे ॥

फननंकि हुतामने धारकरा, घननंकि बजी गज घंट घेरी ॥ २८ ॥

पखरैत पटैते घने उमहे, कमनैते कटैते न जात कहे ॥

बहु बाजिय ताजिय सज्ज बने, जैव जान मनो पवमाने जने ॥२९॥

ककचैछद कन्न मनो कलिका, कच याल लखे भुजगावलिका ॥

सहनाईमुखे जिन प्रोथे सदा, पैप लाले मनो गनिका प्रेमदा ॥३०॥

कैलि जितिन कंधे बंक कसे, कुलटा कि क्रियापट्टे लंक कसे

हुआ ॥ २४ ॥ १ इमा समय के भीतर २ प्रतापनिह ३ अधिकार

में ॥ २५ ॥ ४ नपुंसकों को छोड़कर ५ कहने से ॥ २६ ॥ इधर १ सेनापति

(खानदोरा) ने ७ सेना मजित करी जहां ८ द्वारपालों की और छड़ीदारों

की हाक पड़ी, सेना को प्राप्त होकर; अथवा बत पूर्वक ९ नगरों पर घाई

बजी जिनको देखकर मादव के सेव का शब्द लजित हुआ ॥ २७ ॥ खुशनाथों

पर १० लखारों के अग्निरुग्ण उड़े और उन चिनगारियों के चमकते हुए बाढ

चिरे और झणकार करती हुई धागाओं से ११ अग्नि झड़ी और हाथियों की

घंटा रुग्ण १२ घड़ियां बजी ॥ २८ ॥ बहुत से पाखोंवाले और १३ पटा फेंकनेवाले

वत्साह युक्त हुए १४ अनुप धारण करनेवाले और १५ तरवारों से काट करने

वाले कहे नहीं जा सकते १६ ताजिक देश के बहुत घाड़े सजित हुए जा १७ वेग

में मानों १८ पवन के पुत्र (इन्द्रमान) हैं ॥ २९ ॥ जिनके कान मानों १९ केवड़ा

की या कंतकी की कली है और केसवाली के कमर २० मयों की पंक्ति के समान

न गोभायमान हैं २१ जिनके फुल्ले सदैव २१ सहनाई के मुख के समान फुल्ले

रहते हैं २२ जिनके पगों की २४ चपलता मानों गच्छिका २५ स्त्री के समान

है ॥ ३० ॥ २६ युद्ध जीतने को २७ कंधों का टेढ़ कसते हैं सो मानों २८ क्रिया

टरिजात उडात करी टकरी, सकरी बिसिखाने बने चकरी ॥३१॥  
 विधुरे गजगाहन बीजित जे, जवके बल राहन बीजित जे ॥  
 पखर जर जीन सजे सखरे, नचि मंडत चेरिनके नखरे ॥ ३२ ॥  
 धरि धोरित बलित धाव धपे, मनकी गति जे छिन माहि मपे ॥  
 छलि गात चलात धुनात छिती, किंल कोट पटी बिचवत्त किती ॥३३॥  
 भटके मन भाय फिरे लटके, धंटेके निपजे कि बंटा नटके ॥  
 हुलसै करि विज्जुलिकी हसैना, रयमें मनु तकिधकी रसना ॥३४॥  
 खुर राजत रजित पत्त खरे, जिन पक्क भंहायस नाल जरे ॥  
 लागि यो खुरसो खुरताल लसै, गहिके खंवरभानु कि चंद घसै ३५  
 चलै बोधितेरुच्छदसे चमके, भपटात कनीनिधे ज्यो भमके ॥  
 असवार चहै सु करै अनुठी, मलपे बनि फाल गुलाल मुठी ॥३६॥

श्वेदग्धा कुलटा नायिका कसर कसती है जिनके छडान की टकर में १  
 हाथी दलजाते हैं और सकड़ी २ गलियों में चकरी के समान पलटते हैं ॥ ३१ ॥  
 फैले हुए गजगावों से जिनको ३ पवन (पंखा) होता है और वेग के फल से  
 मार्गों में ४ पक्षियों को जीतते हैं ५ पाखरों और जरी के जीनों से १  
 सुंदर सजे हुए; यथवा फैले हुए जरी के जीनों से सुंदर सजे हुए जो नृत्य करके  
 ७ लोंढियों के समान नखरे करते हैं ॥ ३२ ॥ ८ धौरित और बलित आदि  
 घोड़े की पांशों गतियों में ९ दौड़ते हैं जो चण मात्र में १० मन के चलने  
 की गति को माप लेते हैं, शरीर को फुला कर ११ जूमि को धुजा कर चलते  
 हैं जिनकी पट्टी (शीघ्र दौड़) में १२ निश्चय ही कोट क्या बात है अर्थात्  
 जिसके आगे कोट कुछ चंज नहीं है ॥ ३३ ॥ १३ धाट देश के निपजे हुए घोड़े  
 जीरों के मन भाकिके शुक कर फिरते हैं सो मानों नट का १४ छांकरा (पट्टा)  
 फिरता है, विजुली की १५ हली करके प्रसन्न होते हैं और १६ वेग में मानों  
 १७ नाकिके (न्याय शास्त्र पढ़े हुए) की जिच्छा है ॥ ३४ ॥ जिनके खुर १८  
 चांदी के पत्रों से शोभायमान हैं जिनमें १९ पड़े पक्के लोहे (गजबेल तथा  
 कोलाद्) के नाल जड़े हैं धं खुरताल खुरों से षग कर ऐसी शोभा पाते हैं  
 जैसे शंभरा को पकड़कर २० राहु खाता है ॥ ३५ ॥ २१ अचलना में २२ पीप-  
 क हृत् के पत्ते के समान चलते हैं और दौड़ाने में २३ नेत्र की पुतली के  
 समान साधकते हैं २४ अनूठी (अर्ध) ॥ ३६ ॥

नादिरशाहें का हिंद में आना] सप्तमराशि-त्रिचत्वारिंशमयूख (३३६६)

परि संग कुरंगन जे पकरै, छिति चौ४करमें पलटा छु६करै ॥

बपुं जोर उभक्त प्रोथ बजै, सफरी पलटान उडान सजै ॥ ३७ ॥

रस लेह खलीन अधीन रहै, गतिमें भरि बत्थन भुम्मि गहै ॥

कारि भूप बडै नटकी न कला, चलिजात दिखात मनो चंपला ३८

प्रतिमैल्ल बनै नभ पच्छिनपै, बहुरै उडि दोय २ बरच्छिनपै ॥

कुल जाति बनायुज आदि किते, जैवमें पवमान उडान जिते ३९

कुलटै उलटै उछटात करी, पलटै मनु पातुरिकी पुंती ॥

इक लक्ष १००००० तुरंगन या गतिके, कैरटी सु हजार १०००

भली भंतिके ॥ ४० ॥

भरना तल डानन दान भरै, कुपितासन पच्छिन चोट करै ॥

अप लंगर अचत अडै भरे, खिजि खून भरे रुकिजात खरे ॥ ४१ ॥

डगै देत डरावत डंकनतै, पलटै खिजि छाहै पताकनतै ॥

त्रिपदी पथ बद्ध तऊ तरकै, बमथून लगावत बहरकै ॥ ४२ ॥

साथ होकर जो १ हरियों की पकड़ते हैं ३ चार हाथ के विस्तार वाली २ भूमि में छः प-

लट्टे करते हैं ४ शरीर के जोर से ५ चमकने में ६ कुरणें बजते हैं ७ मच्छी के पलटने के स-

मान उडान संजते हैं ॥ ३७ ॥ ८ लगाम के चाटने के रस में आधीन हां कर रहने हैं और

चलने में भूमि को बाधों में पकड़ते हैं ९ जिनके भूप लेने में नट की भी कला

नहीं बढती; अथवा हाथियों को फांदने में नट की कला भी नहीं बढती (नट

के फांदने की पूर्ण अवधि हाथी को फांदने की समझी जाती है) चले जाने में

मानों १० विजुली दीखते हैं ॥ ३८ ॥ आकाश में पक्षियों के ११ शत्रु (सुकाप-

ला करनेवाले) घनते हैं और दो बरछियों पर उड़ कर पीछे फिरते हैं, कुल में

कितने ही १२ बनायुज आदि देशों के उत्पन्न १३ वेग में १४ पवन के समान

उड़नेवाले ॥ ३९ ॥ १५ हाथियों को उडा कर १६ कुलांड लेकर उलटते हैं अ-

थवा कु (पृथ्वी) को लाटते हैं और हाथियों को उडा कर उलटते हैं और पलट-

ने में मानों बह्या के १७ नेत्र की पुनजी पलटती है; अथवा नृत्य करते समय

धरया की पुत्री (लड़की) पलटती है १८ हाथी १९ भली भंतिके ॥ ४० ॥ २०

क्रोध में लाल होकर पक्षियों पर चोट करते हैं २१ लाहे के जंजीर २२ घमंड

से भर कर ॥ ४१ ॥ २४ सांठमारों के क्रोध दिलानेवाले छोटे धावों से डराने

वाले २५ पंड देते हैं २६ ध्वजा की छाया से खिजकर पलटते हैं २६ डगबंदी

(पग बंधन) से पग धंधे हैं तो भी तड़कते हैं २७ सुंड के जलकणों को पादलों

घन \*बीत घुमावत मत्थ मुरै, फहरात निसानन जेब फुरै ॥  
फटकारत सुंड़िनतै नभकाँ, सिर भौर भनंकत सोरभकाँ ॥ ४३ ॥  
बहु खावन रावतभ्रात बनै, जल अँचन काज अगस्ति जनै ॥  
मखतूल कलापक कंध कसे, लागि गत बरत्तन नद लसे ॥ ४४ ॥  
मल जंगिय होदन सज्ज भये, बलमै चर पौनहिँ पै पठये ॥  
कट सुंड़ि कलापक रंगि रचे, बहु चित्र चितेरनके बिरचे ॥ ४५ ॥

गिरचे१ बिरचे२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १

बहु अँद्रिन निंदत उच्चपनाँ, मजबूत रूपै जमदूत मनौ ॥  
बलके सिरताज महाबलजे, सनि राहु तमोगुन सौमलजे ॥ ४६ ॥  
मदछाकन घुम्मत पैड मने, बल बाद हिमाचलसौ बदते ॥

मते१ दते२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

तून मौन बडे तरु तोरत जे, मनतै रवि केतु मरोरत जे ॥ ४७ ॥  
कनकाँचल लडुव गोठ गिनै, रवि चंद मलीदेन रोठ गिनै ॥

के लगाते हैं ॥ ४२ ॥ \* बहुत अंकुश लगाने और हलने से मस्तक घुमा कर मुड़ते हैं जिन पर ध्वजा उड़ती शोभा देती है वे (हाथी) सुंड़ों से आकाश को फटकारते हैं जिनके मस्तक पर १ सुगंध के लिये अमर उड़ते हैं ॥ ४३ ॥ बहुत खाने में रावण के भाई (कुम्भकर्ण) २ जल पीने में अगस्ति के पुत्र (अगस्त्य) बनते हैं, कंधे में ३ रेसम के ४ कलावे कसे हुए शरीर में लगे हुए ५ रस्सों से बंधे हुए शोभायमान ॥ ४४ ॥ बल में मानों पवन पर ७ हलकारे भजे हैं जिनके ८ कपोल और सुंड़ रंग के समूह से रचे हुए ॥ ४५ ॥ कितने ही हाथी ऊँचेपन में ९ पर्वतों की निंदा करते हैं और दृढ़ता में मानों जमदूत रूपते हैं वे हाथी १० सेना के शिरताज और बड़े बलवान जो सनैश्चर, राहु और तमोगुण के समान ११ काले हैं "तमोगुण का रंग काला है" ॥ ४६ ॥ घमंड के अरे हुए पैड पैड पर मद की छाकों से घूमते हैं और बलवान पन का बाद हिमाचल से करते हैं, बड़े वृद्धों को तृण के १२ समान तोड़ते हैं और मन से सूर्य की ध्वजा को मरोड़ते हैं ॥ ४७ ॥ १ सुमेरु पर्वत को लड्डुओं के गोलें गिनते हैं और सूर्य चन्द्रमा को १४ अपने भोजन के रोठ गिनते हैं "हाथी के भोजन का नाम डिंगल भाषा में मजीदा है" तारों पर कठिन किलकारी करके

किलकारत तारनपै कररे, चल सुंडि चलात घने चरेरे ॥ ४८ ॥  
 कटपै कुरुबिंद प्रकासकरे, मनि भौमं भिरे जनु लगि गरै ॥  
 करंत्यो हरिताल सुढाल करयो, गुरु जानि बिधुंतुद पासि परयो४९  
 चरखीने चिकै न चटाहटपै, उडिजात अचानक आहटपै ॥  
 कति बीरन कुंते लगै कटसौं, बलि निहि बहोत उब्वटसौं ॥५०॥  
 जनको निरैराय रचै जबरी, बढि अचन बंगघन की बवरी ॥  
 जिन लंगर पाय धरै जितने, जमकी इक रज्जुव बद्धवने ॥ ५१ ॥  
 सिरपै मनि हाटक जात असरी, भरमाचलसौं भं तती कि भिरी ॥  
 इम इक्क हजार१०००बडे इभजे, निकसे सजि बद्धल के निभं जे ५२  
 तुरकान तयार भयो रनपै, फरके भुव खंड फनी फनपै ॥  
 खग उद्धत सद्यद सेख खिले, मिग्जा मुगलान पठान मिले ॥५३॥  
 भुजदंड कमानन केक धरै, स लुलापै पखालन बेध करै ॥  
 बहु बीर बँदूकन दाव रचै, वर सिस्त जुरै अशा नाहि बचै ॥ ५४ ॥

जनको पकड़ने के लिये १ चपल सुंड को चला कर बहुत २ धिरते हैं ॥ ४८ ॥  
 १ कपोलों पर ४ हींगलू प्रकाश करता है सो १ मानों गल से लग कर  
 शनैश्चर और ५ मंगल भिदे हैं "शनैश्चर का रंग काला और मंगल का रंग  
 काला है" इसीप्रकार ७ सुंडको हरताल से अंष्ट किया (रंगा) है सो मानों  
 ८ बृहस्पति ९ राहु की पासि में पड़ा है "बृहस्पति का रंग पीला और  
 राहु का रंग काला है" ॥ ४९ ॥ १० चरखियों (अग्नि क्रीड़ा विशेष) की चटा  
 हट पर डिगते हा नहीं हैं और कभी आहट (घरण आदि लगने का सूक्ष्म  
 शब्द) पर उडजाते हैं, कितने ही वीरों के ११ भाले १२ कपोलों पर लगते हैं  
 और १३ बिना मार्ग जाते हुआँ को फिर कठिनाई से फेरते हैं ॥ ५० ॥ मनुष्यों  
 को १४ समीप लेकर जबरी करते हैं और आगे बढ़कर खँच लेते हैं सो मानों  
 बकरी को १५ सिंह खँचता है इन हाथियों के लंगरों (जंजीरों) पर चरण  
 बरते हैं उतने ही यमराज की एक १६ रस्सी में बंधते हैं ॥ ५१ ॥ मस्तक  
 के ऊपर मणियों की जड़ी हुई १७ सुवर्ण की सिरी (मस्तक शूषण) है सो  
 मानों १८ सुमेरु पर्वत से १९ नक्षत्रों की पंक्ति भिदी है २० सदृश ॥ ५२ ॥  
 २१ शेषनाग के फणों पर ॥ ५३ ॥ २२ महिद (मैस) सहित २३ अष्ट सीष

करि केक त्रिभागनतँ खुरली, बढि धावन दाव बचातबली ॥  
 तरवारिन वार करै कितने, घमकावत संगिन लच्छय घन ॥ ५५ ॥  
 सब दिल्लिय मीर उमीरसजे, रनमें भट भीम रहीम रजे ॥  
 प्रतिबासर पंच ५ निमाज पढै, कलमाँ बिच गुप्त बयान कढै ॥ ५६ ॥  
 बिरचै बहनेक तजै बदकाँ, मन चिंति रसूल मुहुम्मदकाँ ॥  
 राँसि कंठ कुरानसिरीफ रहै, बल उच्च रु डहिर्य कुच्च बहै ॥ ५७ ॥  
 लाखि मुच्छ न लंब सिखी जिनकी, बिधिछिन्निय रीति प्रतीपनकी ॥  
 छबिके बंपु मुन्नर दंड छटे, प्रतिमैल्ल घुमावत कैंकि पटे ॥ ५८ ॥  
 बदे केक कितेक तजै कपटै, रब पीर वलीन अलीन रटै ॥  
 असि ढल्लन मल्ल अपुब्ब अरै, कति वान बिहंगन बेध करै ॥ ५९ ॥  
 खटद टंक कमानन खैचतजे, अतुली पय लंगर अचत जे ॥  
 बदे खानकलीज सहादतसे, बलि मूढ वजीर मुहब्बतसे ॥ ६० ॥

जुड़ने पर ॥ ५४ ॥ १ कितने ही भालों से शस्त्राभ्यास करते हैं २ बराहियों से ३ निसानों को ॥ ५५ ॥ ४ प्रतिदिन कलमा में " लाइलाह इल्लिलाह मुहुम्मद रसूलु लिल्लाह" यह यवनों का कलमा है जिसके ५ छिपे हुए आशय निकालते हैं ॥ ५६ ॥ ५ यवनों के पैगंबर का नाम है ७ डोरी में लटकी हुई कुरान शरीफ जिनके कंठों में रहती है वे बड़े बल और ८ डाढ़ी के बड़े केशों को धारण करते हैं अर्थात् डाढ़ी के बाल नहीं कटवाते ॥ ५७ ॥ जिनके चोटी नहीं है और मूँछें लंबी नहीं हैं ९ मानों आर्यों से विरुद्धता की रीति को विधि पूर्वक छीन ली है अर्थात् जिन रीतियों को आर्य लोग प्रतिकूल मानते हैं उनको यवन अपने अनुकूल मानते हैं, मुद्गर फेरने और दंड करने से शोभायमान जिनके १० शरीर ११ सन्मुख होकर युद्ध करने वाले मल्ल को ॥ १८ ॥ उन यवनों में कितने ही १२ दुष्ट और कितने ही कपट को छोड़ने वाले १३ खुदा को गुरु (उपदेशक) को १४ खुदा (ईश्वर) के भक्त और १५ अली " यह यवनों के पैगंबर का भाई और जमाई था जिसको खलीफा (उत्तराधिकारी) भी कहते हैं" को रटते हैं, कितने ही तरवार और ढाल से अपूर्व मल्ल युद्ध करते हैं और कितने ही बाणों से १६ पक्षियों का बंधन करते हैं ॥ १९ ॥ १७ अपने समान दूसरे को नहीं समझनेवाला पैर में प्रतिज्ञा का लंगर पहनता है सो जब उसको विजय करनेवाला मिलता है तब खोलता है १८ दुष्ट १९ पुनि, वजीर

भट सरतुमखान चंमूप भले, सजिकें दल दिल्लियतें निकले ॥  
 यहि फीलें मुहुम्मदसाह चढयो, बजि हक निरसानन ध्वान बढयो ॥६१॥  
 बल के हरवल्लनके बढतें, कंरटी पुरतोरनके कढतें ॥

गजढाल प्रलंब सु तुट्टिपरी, क्रमि मंडल मंडल कूक करी ॥६२॥  
 दिन मुंक उलूकन हूक दई, छिति व्योम भयानक खेह छई ॥  
 अपसान उंपश्रुति पिट्टि पढी, कंचमुवत रजोवति दिट्टि कढी ॥६३॥  
 उनमत्त क्रमेलक आत लखयो, इ दिगंबर दंत दिखात लखयो ॥  
 चिरंमेहि लुंलाय मिले समुहे, छुटि व्याल कंराल बिढाल छुहे ॥६४॥  
 इम गौन कुसान अनेक बनें, मन उदत बीरन जे न मनें ॥  
 जिम बेद बिरंचनके सुखतें, गन ज्यौं गिरिजेसैं जटा रुखतें ॥६५॥

जिम जान्हवि अंडकटाहकतें, बरखा कि उंदीचि बलाहकतें ॥

टाहकतें १ लाहकतें २ अन्त्यानुपासः १ ॥

रचना कि गुनें त्रयउतें बिकसी, टैतना इम दिल्लियतें निकसी ॥६६॥  
 हुव हाक नकीब हजारनकी, हलकार बढी प्रतिहारनकी ॥  
 मग डोरिनें मप्पत फोज चली, उरंमी जिम सागरतें उकली ॥६७॥

कमरदीखां जैसे मूर्ख ॥ ६० ॥ १ सेनापति (खानदोरों) २ हाथी पर ३  
 नगरों का ४ शब्द ॥ ६१ ॥ ५ हाथियों के ६ शहर के द्वार से निकलते  
 ही ७ हाथी का लंबा निसान तूट पड़ा ८ चक्राकार (गोखंडुंडा) फिर कर  
 ९ कुत्ते ने ॥ ६२ ॥ १० दिन में मूक (शुंगे) रहने वाले ११ भूमि और  
 १२ आकाश में १३ पीठ पर आकाश वाणी हुई कि शत्रुन बुरे होते हैं १४ खुलेंहुए  
 कस्तों वाली १५ रजस्वला स्त्री को देखी ॥ ६३ ॥ १६ मस्त ऊंट को सन्मुख  
 आता देखा १७ नग्न पुरुष को ईसता हुआ देखा १८ गधा और १९ महिष (भैंसा)  
 सामने आते मिले २० भयंकर सर्प छूटा और बस पर बिछी कोषित हुई ॥६४॥  
 २० ब्रह्मा के मुख से वेद कहे जैसे २१ शिव की जटा से गण निकले जैसे ॥६५॥  
 २२ ब्रह्मांड से गंगा निकली जैसे २३ उत्तर दिशा के २४ मेघ से वर्षा निकले जैसे  
 २५ सत-रज-तम- इन तीनों गुणों से संसार की रचना निकली जैसे २६ तैसे  
 दिखी से सेना निकसी ॥ ६६ ॥ २७ द्वारवालों का २८ बड़े राजाओं की सवारी  
 निकलती है तब मार्ग के दोनों किनारों पर डोरियें लगाई जाती हैं २९ लहरें



उमड़ात डगात बली बलकों, धमकात धुजात रसातलकों ॥  
 इक अकखहिं नादरकों गहिहैं, इक अकखहिं हूरनमें रहि हैं ॥६८॥  
 इक अकखहिं जित्ति इरान लई, इक अकखहिं मंत्रिं न साहसई ।  
 इक अकखहिं खानकलीज फँटयो, रु वजीर सँहादत पै पलटयो ६  
 इक अकखहिं अप्पन सेनपती, सब जित्तहिं तोरि इरान तती ॥  
 इक अकखहिं जित्तहिं नादरही, पति दिल्लिय बुद्धि प्रमादरही ॥७०॥  
 इम चंड चलयो दल दिल्लियको, हठ जानि हरामिनके हियको ॥  
 क्रॉमि मारग सत्त७ मुकाम करे, पँथपानियसौं बँ समीप परे ॥७१॥  
 खट६ कोस इरान अनीकँ रहयो, क्रम तत्थ चैमूप मुकाम क६  
 असवार हजार असी ८०००० उतरे, अरु बीस २०००० छबीनँ  
 सज्ज अरे ॥ ७२ ॥

॥ दोहा ॥

दिल्लियपति अब उत्तरिय, परिय अनीक प्रैसाप्त ॥

रँहसि खानदोराँ रचिय, बँदन इरानिन बात ॥ ७३ ॥

॥ निःशाशी ॥

दलईसँ खानदोराँ लिखि पत्र पठाया,

ईरान ईस अगँ मुनसीन सुनाया ॥

तुमँ तोरके तरारे चतुरंगँ चलाया,

लाहोर आदि सूबा बदफैल फटाया ॥७४॥

पंजाब पेसँ थाँनाँ निज आन नमाया,

- ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ १ वजीर बादशाह के अलुक्कल नहीं है २ जुदा (भिन्म) होगया है ३ सहादतखाँ भी "वै" का अर्थ कहीं 'परंतु' और कहीं 'भी' होता है, ॥ ६९ ॥ ४ पंक्ति. दिल्ली के पति की बुद्धि ५ पागलपन (झुल) में रही ॥ ७० ॥ ६ भयंकर ७ चलकर ८ पानीपथ से ९ अब ॥ ७१ ॥ १० सेना ११ सेनापति (खानदोराँ) ने १२ सेना की रात्रि समय की चौकी पर ॥ ७२ ॥ १३ सेना का पड़ाव पड़ा १४ एकान्त में (गुप्त) १५ दुष्ट ईरानियों से घाती रची ॥ ७३ ॥ १६ सेनापति खानदोराँ ने १७ प्रताप के ताप के उफान से १८ चलाई ॥ ७४ ॥ १९ आधीन

हिंदू सबे हरामी साने सुलगाया ॥  
 दिल दोरँ और औरँ बरजोर बनाया ॥  
 गिनि इस्पहान बुद्धी पैर लोभ लुभाया ॥ ७५ ॥  
 औरत अनूप दिल्ली लखि दाव चलाया,  
 जानी यह न कोऊ बर तौस बनाया ॥  
 सैतानके मिखायँ मंगरूर मचाया,  
 दिल्लीससौं न संके दिल भरत दिखाया ॥ ७६ ॥  
 सुलतानकी जमोपैँ समसेर सजाया ॥  
 कसमीरकी फते कैँ सुलतान लुटाया ॥  
 दरियावको दगासौं लहि नाव लँघाया ॥  
 पाया एकार सो "पै सुलतान पचाया ॥ ७७ ॥  
 चाहो सुलाह जो तो करिजाहु पैयानों ॥  
 जो जंगकी जरूरी तो दर नजानों ॥  
 दिल्लीसकी गुलामी प्रतिरोज प्रमानों ॥  
 सुलतान दरजमानेँ बर नायब मानों ॥ ७८ ॥  
 इम पत्र खानदोराँ पठये ति<sup>१</sup> पँठाये ॥  
 ईरान साह मंत्री उमराव बुलाये ॥  
 एकांत लै ईजाँके अहवाल सुनाये ॥  
 भेजे ति खानदोराँ दँल खालि दिखाये ॥ ७९ ॥

१ छाती से २ दिल चढाकर ३ पराई ॥ ७५ ॥ ४ उपमा रहित ५ उम (दिल्ली) ने नादिरशाह को पति बनाया है ६ घमंड ॥ ७६ ॥ ७ वादशाह को ८ तरवार ९ करके १० नदी (अटक) को ११ परन्तु ॥ ७७ ॥ १२ प्रयाण (गमन) १३ जमाने (समय) में १४ श्रेष्ठ अथवा ऊपर हाकिम समझा नायब लवन सामान्य रीतिसे तो मातहत का है परन्तु विशेष रीति से वह अन्य लोगों का हाकिम होने के कारण हाकिम के अर्थ में लिखा गया है ॥ ७८ ॥ १५ न (वे) १६ पहायें १७ उस जगह के, अथवा इनके; और यदि 'ज' पर अनुस्वार नहीं होये तो तकलीफ (दुःख) का अर्थ होता है अर्थात् दुःख के हाल सुनाए १८ वृत्तान्त (हाल) १९ खानदोराँ ने भेजा वह पत्र ॥ ७९ ॥

ईरान साह अकखी तामच कुलीसों ॥  
 तैहां वजारं आनै अफवाजि खुलीसों ॥  
 एतो नहीं निहारे ततवीरं डुलीसों ॥  
 आला बजोरं आये समसेर तुलीसों ॥ ८० ॥  
 हिंदू न एक आया सब सोरं डरानें ॥  
 तोहू बं लाख १००००० ताजी पखरैत पलानें ॥  
 हाथी हजार १००० मत्ते घनरूप घुमानें ॥  
 लकखों सवार अरुं बर हूर लुभानें ॥ ८१ ॥  
 तोपें हजार दो २००० पै नीसान फिरानें ॥  
 छो हैं लगे छवीनां भट भीर भिरानें ॥  
 लकखों पपाद जंगी समसेर सजानें ॥  
 खुदमोजें खानदोरों बर फोज खजानें ॥ ८२ ॥  
 एतो कलीजखों का नाहक फरेबैहै ॥  
 गाफिल जरा न दिल्ली जेर जोर जेबैहै ॥  
 सबही सुलाह मंडे करनां कि जंग नां ॥  
 उनतो यहै कहाई हमकों दिरंगों नां ॥ ८३ ॥  
 ईरानसाह अकखी सबकों सुनायकें ॥  
 उमराव बीर बोले मन मंत्र लायकें ॥  
 निसुरत अली रू हाजी काजी करीमसे ॥  
 गाजीहुसैन रुस्तुम रोसन रहीमसे ॥ ८४ ॥  
 बुल्ले कलीजखों पै अहवाल पठावें ॥  
 पांजी सु कपों बुलाये बैरजोर सुनावें ॥

१ हे वजीर! २ प्रसिद्ध फौज (सेना) से ३ देने ४ उपाय ५ बड़े ६ जोर के  
 (पक्ष के) साथ ॥ ८० ॥ ७ कोलाहल सुन कर ८ अब ९ घोड़े, पाखरांवाले  
 १० अंडे अथवाओं पर लोभित हुए ॥ ८१ ॥ १ ध्वजा २ स्वच्छाचारी  
 (स्वमंत्र) ॥ ८२ ॥ ३ झूठ ४ धन और बल से ५ शोभायमान है ६ सुलाह (मंत्र) रखी  
 ७ बेर (बिलंब) नहीं है ॥ ८३ ॥ ८ ५ ॥ १ ८ ५ ॥ १ ८ ५ ॥ १ ८ ५ ॥ १ ८ ५ ॥ १ ८ ५ ॥ १ ८ ५ ॥

आहिल्लू दैगाजना यो नाँकिस् न नाँकहै ॥

हमहू हँराम तोपै कातिल्लू कँजाकहै ॥ ८५ ॥

ईरानसाँह औसँ लिखि पत्र पठाया ॥

आया कलीजखाँपै इन मंत्र उपाया ॥

जुरि मेल खाँकमदीं दिल्ली वजीर जो ॥

दूजो सु भाइभुंजा जालसू संरीर जो ॥ ८६ ॥

मिलि तीन३ मंत्र कीनाँ अपनी जमीनहै ॥

अरु साह पै मुहुम्मद अपने अधीनहै ॥

ईनसाँ व खानदोराँ दुससनू मरायकै ॥

कछु दंडदैं रूपैये दैंहै पठायकै ॥ ८७ ॥

इम मंत्र मंडि पच्छो तँहँ पत्र पठायो ॥

डरिये हजूर नाँही हम काम बनायो ॥

सब रावरे रँजूहँ तुमसाँ न रारिहँ ॥

इक नाँ जु खानदोराँ फँदाँहि मारिहँ ॥ ८८ ॥

तुम जंगकी कहावो न कबूल भामलै ॥

तब सज्ज खानदोराँ अहँ तँमामलै ॥

लमामलै१ तमामलै२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

हम रावरे भटाँसँ मिलि ताहि मारिहँ ॥

ईरानकी दुहाई बजँमाँ बिथारिहँ ॥ ८९ ॥

सुनि एह साह नादर बरजोर कहाई ॥

१ हे सृष्ट-दगा करनेवाला ३ निकम्पजा ४ तरे नाक है कि नहीं है ५ हे अधर्मी  
 ६ कतल करनेवाले ७ लुंठरे हैं अथवा 'कजा' शब्द के साथ स्वार्थ में 'क' प्रत्य-  
 य क्रिया है तो मृत्यु का नाम है ॥ ८५ ॥ ८ नादिरशाह ने ९ कसरदीन्वां १० हुष्ट  
 ॥ ८६ ॥ ११ अब ईरानियों से ॥ ८७ ॥ १२ अधीन है ३ एक खानदोराँ आर्धान  
 नहीं है सो उमहो कल ही मार डालेंगे (फारसी में आगामि दिन को फरदा  
 और दीरोज कहते हैं) ॥ ८८ ॥ १४ मामला (इंड) अर्थात् फौज खरच लेना  
 मंजूर मत करो १५ सब को लेकर आवेगा १६ जमाने के साथ (जमाने में) ॥ ८९ ॥

\*फर्दाहि खानदोराँ तुमसौ ब लगई ॥  
 सुनि एह खानदोराँ सब सेन सजाई ॥  
 दुहुँआर होत औसैं वह रति बिताई ॥ ९० ॥  
 जाई१ ताई२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥  
 अब प्रातकाल आया कृकवाकु कुकानैं ॥  
 अरविंदतैं उडे के अलि रति रुकानैं ॥  
 परदार छोरि छाती नर जार पलाया ॥  
 गिरिराजकी गुफामैं तम तोम चलाया ॥ ९१ ॥  
 दैर घंट देहरो मैं बर नाद बजाया ॥  
 चहि भोग चक्र चक्री सुख मेल सजाया ॥  
 तारेन मंद्र तेजी दबिबिब दुगया ॥  
 मंथान ग्वाल गेहों घनघोर घुगया ॥ ९२ ॥  
 तजि पंथ चोर तक्के छिपनौं दरिन मैं ॥  
 गहि मौन घूक बैठे तरु कोटरिनैंमें ॥  
 उदयाद्विपैं अनठी इक रोचि लखाई ॥  
 चल चाँटकेर चाँके चहकानि मचाई ॥ ९३ ॥

॥ दोहा ॥

सेन खानदोराँ सजिय, स्वामिधरम धरि सीस ॥  
 अनय सहादत मंडि इत, रचिग साहपर सीस ॥ ९४ ॥

॥ षट्पात् ॥

कहिय सहादत कजलैबास बेभत्र मम लुट्टत ॥  
 देहु माह आदेसैं नरन नाहक सिर लुट्टत ॥

† हे खानदोराँ अब \* कल ही तुम म लड़ाई है ॥ ९० ॥ ‡ मुरंग बाजे  
 § हमकों से २ अरि के रुके हुए ? अमर २ पर अरिगों की खानी को छाँट कर  
 जार पुरुष ४ भगा ५ परबतों के राजा [सुमेरु] की गुफा में अंधरे का समूह गया  
 ॥ ९१ ॥ ७ शत्रु ८ बिलोना (दधिमंधना) ॥ ६२ ॥ ९ गुफाओं में १० वृक्षां के  
 कोषों में ११ क्रान्ति १२ अपल विद्विगं बाली ॥ १३ ॥ ६४ ॥ १३ कजल के  
 रहनेवाले; अथवा काल कपड़ों वाले (ईरानी) १४ हुकम

बादशाहका नादिरशाहसे युद्ध] सप्तमराशि-त्रिचरथारिंशमयूख (३२७५)

तब नय अक्खिय साह पृथक लरनाँ न उचित अब ॥  
इक होय अंकुगहि सजहिं तुम हम कलीज सब ॥  
कहि तदपि भाड़भुंजक कुटिल सब कातर दिह्लास दल ॥  
पिक्खयो न जात हमतै प्रबल बिरचत लूट इरान बल ॥१५॥  
यह सुनि अक्खिय साह पृथक लरि मग्हु सहादत ॥  
अधम सुनत दुत उट्टि भाड़भुंजक अति उद्धत ॥  
चढि निज दल लै चलिय खानदोरों प्रति यों कहि ॥  
दीजै हमहि सहाय चमूअधिगज विजय चहि ॥  
इम अक्खिं जाय ईगन दल मिल्यो मूढ लवहुँन लग्यो ॥  
सब भेद साह नादर सभुक्ति अधम सहादत उँचरयो ॥१६॥

॥ दोहा ॥

मूढ सहादत जो मिल्यो, चहि ईरान अधीस ॥  
पच्छी यों कहि मुकली, अंतुल भार मम सीस ॥ १७ ॥

॥ निःशानी ॥

सुनि एह खानदोरों चढि बेग चलाया ॥  
बाँकों सहाय दैवे छक छोहँ छकाया ॥  
दिल्लासकी चमूको अधिरोज बीर जो ॥  
हरवल्ल व्है रु हंकयो धमचक धीर जो ॥ १८ ॥  
अच्छे सिपाहलैकें अब अब उढाये ॥  
मानों घटा उँदीची आसार्ह मचाये ॥  
धरनाँ धमकि धूजी सिग फूटि सेसका ॥

१ नीति के बचन कहे २ जुदा खड़े हाँवेंगे ३ कलीज सर्वाँतोभी १ कायर ॥ १५ ॥  
७ शीघ्र उठ कर ८ अपनी सेना ९ हे सेनापति १० यह कहकर ११ क्षण भर  
भी नहीं रुड़ा १२ महादत सर्वाँ को नीच कहा ॥ १६ ॥ १३ यहून १४ महादत सर्वाँ  
को १५ क्रोध के छक [मद] में १६ सेना का पति युद्ध में धैर्य रखनेवाला ॥ १८ ॥  
१० बत्तार की घटा ने १८ जलधारा

दिने चंद्रमा दिखानाँ दिपनाँ दिनेभंका ॥ ९९ ॥

दल भार माग दह्या वरकी वगहकी ॥

कमठस पिछि फई वंत आह आह की ॥

काली तथा कंपाली आये उछाहसों ॥

वेनाल प्रेत नञ्च चतुरंगं चाहसों ॥ १०० ॥

गन भेन कंक गिही गोसायु गँहके ॥

जंजार तोप जाली गज घंट ठहके ॥

बँडे हजार हथी बढि लैन विथारे ॥

तोजी तुंग तत्ते नभ लेन तगरे ॥ १०१ ॥

चढि वीर खानदोगाँ इम सेन चलाई ॥

ईगनकी अर्नापै अब धंग उठाई ॥

उततैं हु सेन आयो सुनि याहि आतही ॥

पाताललो पुकारैं पहुँची प्रभातही ॥ १०२ ॥

सक वान अक मत्रह १७६५ बदि फगुन मास ॥

रवि देखने रुकानों तरवारि तमासे ॥

नमासे १ तमासे २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १

दुहुँआंग तोप दग्गा धपि धम धोरनी ॥

कानि विमान कारे अति गाँज उफनी ॥ १०३ ॥

डगमगि मेदिनीके गिरि कूटें गिरावैं ॥

सरिनी तैड़ाग छिजे पसु पच्छि पिगैं ॥

आकाम अच्छरीके मन गान मचायो ॥

डंके सु डाकिनीके गम गम गचायो ॥ १०४ ॥

१ १२८ के चन्द्रमा के समान २ मूर्ध् दीपनं लमा ॥ ९९ ॥ ३ जाना ४ शिव  
५ भेना में ॥ १०० ॥ ६ गोदह ७ प्रमत्त होकर घोलें ८ पंक्ति फैलाई ९  
साजिद देश के घोड़े ॥ १०१ ॥ १० सेना पर ११ घोड़ों की पामें उठाई १२  
मजना यही ॥ १०२ ॥ १३ भू में भूज कर फितने ही १४ पर्यनों को शखर गिर  
१५ नदी १६ तालाब १७ पंक्ति

गोले गेरु गंजें हत्थी न हलकैं ॥  
 बारुद भार भ्रुगैं संपां कि सलकैं ॥  
 आवाज तोप उहूँ जिम संव सानुमाँ ॥  
 ज्वाला कराल जग्गैं बढि चंद्र भानुसाँ ॥ १०५ ॥  
 आकास तूटि भंडे उडिजात ओरसे ॥  
 समसेर मेहँ नचै नभ मत्त ओरसे ॥  
 कर्ट कूट काटि डारैं गोले अंरातिकी ॥  
 मानों पिछानि पारैं गज भद्रजातिकी ॥ १०६ ॥  
 हुसियार खानदोराँ समसेर चलाई ॥  
 पहुमी सु रंगं पिक्खी लागि रत्त ललाई ॥  
 फूटै कपाल भजे तरवारि तरकैं ॥  
 के कुतैं कंकटोंमें गत सौल गरकैं ॥ १०७ ॥  
 केते तुखारैं कट्टै असवार उलट्टै ॥  
 कहूँ कटार भूखे हिय कालिके चट्टै ॥  
 नाँगोद वान फुट्टै नर कातर नट्टै ॥  
 टंकार चाप वज्रैं चिल्लौ सु चट्टै ॥ १०८ ॥  
 घायल अचेत घुम्मै लटके रकावसाँ ॥  
 मानों गमार मत्त सरसे सरावसाँ ॥  
 कटि पिप्फरे कलेजे फंवि फाँक फुलावैं ॥  
 बैसाख माँहिं केसूँ जिम जेवै वनावैं ॥ १०९ ॥

१ घमंड मिटाते हैं २ हाथियों के हलकों के ३ बिना विजली चमकती है. ४ पर्श-  
 तों के शिखरों से ५ वज्र की आवाज होवे ऐसे ॥ १०५ ॥ ६ तरवार से भंडे  
 लूट कर आकाश में उड़ते हैं सो मानों ७ वर्षों में मत्त मयूर आकाश में ना-  
 चते हैं ८ हाथियों के गडस्थल और कुंभस्थल ९ शत्रु की तोपें ॥ १०६ ॥ १०  
 उन्नत युद्ध की हृमि ११ कधिर लग कर लालरंग की दीवी १२ भालें १३ कव-  
 चों में जाकर १४ साल सज्जित घुसते हैं ॥ १०७ ॥ १५ घोड़े १६ कलेजा १७ पेट  
 के कवचों (पाटियों) में तीर फूटते हैं १८ कायर मनष्य भागते हैं १९ प्रत्यंचा ख-  
 चते हैं ॥ १०८ ॥ २० शोभित २१ डाकू घृच के फूज (केसले) २२ शोभा ॥ १०९ ॥



सुंडा करीन कट्टे जिम पन्नग कारे ॥  
 भंभं भयान बज्जे भट भिन्न नगारे ॥  
 आकास अग्नि पत्ते सुरलोक उजारे ॥  
 महारादि लोक वारे जनलोक सिधारे ॥ ११० ॥  
 विनु चेत वीर बकै बहु दंत बजावै ॥  
 घोरे अनेक घुम्मे मुख भग्ग हलावै ॥  
 धाराल बाढ बज्जे अति वीर वकारै ॥  
 समपेरको सिगहै मुख मार उचारै ॥ १११ ॥  
 पंचासगोय ५२ भैरूँ ललकार लगावै ॥  
 लैलै ललाम लोही चउसद्विद्वि चढावै ॥  
 के सीस ईस लैकै गल भेट भिगवै ॥  
 के अच्छरी अनूठी बरमाल गिगवै ॥ ११२ ॥

पट्पात ॥

तीन३ पहर तरवारि खानदोरै बर बज्जिय ॥  
 अनिय मोहि ईरान सबल दिल्लिय जय सज्जिय ॥  
 रवि अत्यंत रन रुकिय घाय लग्गिय अहारह १८ ॥  
 खेत सहादेत खान लखन हेरिय बहु बाग्ह ॥  
 पापिय कहौन पायो तैदपि देखयो सब ईरान दल ॥  
 यह जानि भाड़भुंजक अभ्रम दून पठायउ छुँद छल ॥ ११३ ॥

॥ दोहा ॥

खानमहादन दून दल, पठयो चमुपनि पास ॥  
 मोहि इरानिन जित्तिकै, गाह दिय काराबास ॥ ११४ ॥  
 अब प्रथम आगम आधिक, अरु तुम घायल अंग ॥

१ भयंकर २ वीरों के फोंदहूए नगारे ३ अग्नि ४ पूग कर ५ जन लोक में  
 गये ॥ ११० ॥ ६ तरवारों के ॥ १११ ॥ ७ सुन्दर ८ शिव ॥ ११२ ॥ ९ अष्ट  
 १० सूर्य अरु होने ११ सहःदलवां को देखने के लिये १२ तोभी १३ इस नीच  
 ने छल से दूत भेजा ॥ ११३ ॥ १४ कैदखाने में ॥ ११४ ॥ १५ सन्ध्या समय का

कलिह कुरावहु मदति करि, जानहु दुर्गम जंग ॥ ११५ ॥

बदलि मूढ ईरान विच, खल सु सहादतखान ॥

यह फरब कहि मुकलयो, बनि मठ बंदीवान ॥ ११६ ॥

सेनापति यह सुनि फिग्या, जय जस कछुक उबारि ॥

सोधि समर घायल भटन, चलयो नृजानन डारि ॥ ११७ ॥

षट्पात ॥

इत दिल्लीस वजीर खानदोरहिँ सुनि आवत ॥

मारन ताकहँ मूढ ईष्ट बहु व्याज उपावत ॥

कहिय साहसों जाय भजिग कातर सेनापति ॥

कजलबास लागि पिठि आत डारन इत आपति ॥

मैं अबहि दैन दैलपति मदति तांपन बल गोकत तिनहिँ ॥

यह अनृत अखिख गोलन गजब गजर विथारिय को गिनहिँ ॥ ११८ ॥

॥ दोहा ॥

यह वजीर अति घोर क्रिय, खंता कमरदी खान ॥

सेनसहित सेनेसकों, पित्रों तोपन प्रान ॥ ११९ ॥

दुव २ हि खानदोरह चरन, गोलन उडिग गैन ॥

अति घायल हुव तदपि हुन आयउ डेगन अँन ॥ १२० ॥

॥ निःशार्णी ॥

अति घाय खानदोगँ डम डेगन आया ॥

खँनी कलीजखाँकों सँवजार बुलाया ॥

मन मंत्रै नीति मंडी सबकोहि सुनाया ॥

हौनाँ सु तो हुवा ज्यौँ हम ज्यौँन गुमाया ॥ १२१ ॥

१ दुर्गम ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ २ अनकून ३ पिस (कूल) ४ भागा ५ इगानी

६ सेनापति (खानदोगँ) काँ ७ झूठ बोल कर-द निगंनर प्रहार ॥ ११८ ॥

८ अपराध (कहर) ॥ ११९ ॥ १० गोलों में आकाश में उडगयें? स्थान में ॥ १२० ॥

१२ खून करने वाल (घातक) १३ वजीर सहित १४ नीति की सलाह ॥ १२१ ॥

अब तीन ३ मंत्र अकखैं हम सो तुम कीजै ॥  
 ईरानसों लगराई इक १ होन न दीजै ॥  
 दिल्लीस हिंतु दूजैं २ नादर न मिलावो ॥  
 तीजै ३ न ताहि दिल्ली तुम जाय दिखावो ॥ १२२ ॥  
 मंगैं सु दै रूपैये प्रतिगोन कगवो ॥  
 कीनी तुम्हैं जु गोसों क्यौं सो वैं कहावो ॥  
 यौं अक्खि खानदोरौं बपु सद्यं बिहायो ॥  
 सुनि साह पै मुहुम्मद अति सोक अघायो ॥ १२३ ॥  
 अब खाँकलीजकोही सेनापति कीनौं ॥  
 अर्थ भाड़भुंजकके अर्थ न दीनौं ॥  
 इतकोहु साह नादर अकुलीय बिचारी ॥  
 उमराव इक किनी मम सेन दुखारी ॥ १२४ ॥  
 तबही कलीजखाँपै लिखि पत्र पठाया ॥  
 लै दंडके रूपैये हम गोन उपाया ॥  
 सुनि सो कलीजखाँहू अति मोद बढाया ॥  
 एकांत साह अगैं अब मंत्र बनाया ॥ १२५ ॥

॥ दोहा ॥

कहैं कलीज रु कमरदी साह अगंग कर जोरि ॥  
 सेनापति माण्यो समुक्ति, देहु लगन अब छोरि ॥ १२६ ॥  
 इक कोटि १००००००० दम दम्भैलै, नादर पच्छो जात ॥  
 सोहे बत्त अब स्वीकारहु, लरैं न पुग्गहिं तांत ॥ १२७ ॥  
 मन्नि साह यह मंत्र तब, नादर प्रति लिखवाय ॥  
 दम्भ कोटि लजाहु घर, अरु नन मिलन उपाय ॥ १२८ ॥

१तीन मलाह कहना हूँ २ मे ॥१२२ ॥ ३ उलटा गमन ४ अब ५ शाघ शरीर  
 छोडा. बादशाह मुहुम्मदभी ७ भर गया ॥ १२३ ॥ = यहाँ ९ सहादतवा  
 के अर्थ सेनापति पुन नहीं दिया १० घबरा कर ॥ १२४ ॥ ११ जाना बिचारा  
 है ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२दंड के रूपये लेकर १३स्वीकार करो १४हे स्वामी! ॥१२७॥

इक १ भाग अबही लहहु, इक १ जाय लाहोर ॥

इक १ गिनहु लंघत अटक, इम लीजे दम मोर ॥ १२९ ॥

यह सुनि नादरसाह अब, करन विचारिय कुच्च ॥

खानसहादत जानि यह, अधम जन्पो अघ उच्च ॥ १३० ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

खानसहादत एह विचारी, नाहिं अवर कोऊ भटभारी ॥

प्राण खानदोराँ जब देंहैं, सेनापति तत्र मांहि बनै हैं ॥ १३१ ॥

यहै विचारि वजीर मिलायो, मूढ सु ब्रथा चमूप मरायो ॥

साह कलीज क्रियउ सेनापति, याँतें जन्पो सहादत अबअनि ॥ १३२ ॥

नादरप्रति इम बैन सुनाये, ब्रथा कलीज तुमहिं बहकाये ॥

दिखिय राज दयो तुमको रवै, क्यों नहिं लेत रु जान कहत अब १३३

खान कलीज मिलन मिस बुल्लहुँ, पुनि करि कैद खीज सिरखुल्लहु

तव तुमरे बसि साह मुहुम्मद, वहेहैं दुर्तहि तजहिं साहम हद १३४

तव इन खानकलीज बुलायउ, करन मंत्रं वह सठ दुर्त आयउ ॥

तवहि पकरि कारीविच डान्पो, अब नादर अति गैब्य मम्हान्पो १३५

अकिखय सुनहु कलीज कहावहु, दिल्लीमहिं यँहें मिलन बुलावहु ॥

सिर कुरान धरि सपथै उचारत, एकासन बैठहिं हित सम्मत १३६

रत १ मत २ अन्त्यानुपासः १ ॥

तवहि कलीज पत्र लिखि प्रेरिय, आवहु मिलन इनहु हित हेगिय ॥

यह सुनि तखत खान अरोहिय, चलत साह बहु बीगन गोहिपै १३७

अरोहिय १ नरोहिय २ अन्त्यानुपासः १ ॥

कोऊ कहत जाहु नन हजरत, कोऊ कहत अबहु दल बलवैत ॥

॥ १२८ ॥ १ अटक नदी उत्तरा तव २ इस प्रकार मुझसे दृष्ट हो ॥ १२९ ॥ ३० ॥

॥ १३१ ॥ १३२ ॥ ३ खुदा ने ॥ १३३ ॥ ४ बुलाओ ५ कोष ६ शीघ्र ही ७ हट

की सीमा छोड़ देंगा ॥ १३४ ॥ ८ कलीजवां का ९ सलाह करने का १०

शीघ्र १ कैद में २ गर्व ॥ १३५ ॥ १३ सौजन्य १४ एक गर्दा पर ॥ १३६ ॥ तखतवा

पर १५ चढ़ कर १६ रोकता ॥ १३७ ॥ १७ सेना चलवान् है

हे हाजरि भट लकंख १००००० कंटारे, पैहो मिलि न भली फलप्यारे  
 काहूकी न साह श्रुति कीनी, चलयो मिलन सेनहु नहिं लीनी॥  
 संग सु लये पंचसत ५०० सादी, पानीपथ इम गयउ प्रमादी॥१३९॥  
 पावकोस लग नादर पुँतह, गय सम्मुह बेसरँ रथ जुतह ॥  
 इम ईरान अनीकँ गयो यह, डोढी लग आयउ सम्मुह वँह १४०  
 जाय सभा बैठे इकअँसन, भाई कहि हुव दुव ३ संभासन ॥  
 तव नादर दिल्लीसहिँ अँखहिँ, सचिवहु सचिव मिले हित रक्खहिँ १४१  
 तुम वजीर बुँल्लहु यँहँ यातँ, हँम वजीर रक्खहिँ हित तातँ ॥  
 तव दिल्लीस पत्र लिखि निजँ कर, बुल्लयो स्वीरँ वजीर पापपर १४२  
 यह कँगर नादर कर अप्पिय, नादर ताहि बुलावन अप्पिय ॥  
 तव पचीसर २५ असवार पाठाये, चंड ति कँगर लै रु चलाये १४३  
 ते उद्धत आये दिल्लीय दल, बदत वजीर वजीर कुँजे बल ॥  
 यह सुनि खानकमरदी कपिगँ, तिन सह चलयो नाँहि कछु जंपिगँ १४४  
 तवहि मंत्र अक्खिय उमरावन, जंग वजीर रचहु जावहु नन ॥

वन १ नन २ अन्त्यानुप्रासः ॥

पापी जन न सुलाँहँ पिछानैँ, निपँरीतहिँ अनुकूल बखानैँ ॥१४५॥  
 कहिय वजीर लरहु जिन कोऊ, करिहँ साम साह हम दोऊ ॥  
 इम कहि लै द्वै सत २०० असवारन, गो वजीर चित मंत्र विचारन १४६  
 सोहु नजरिकैदी किय नादर, दिल्लीय दल सुनि भजिग महा दरँ ॥  
 नादर १ हादर २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

१ कटा (कतल) करनेवाले मिल कर भला फल नहीं २ पाओंगी ॥ १३८ ॥ ३ सवार ॥ १३९ ॥  
 ४ पुत्र (यहाँ स्वार्थ में 'ह' प्रत्यय किया है) ५ खचरों के रथ जुताकर ६ सेना  
 में ७ नादिरशाह ॥ १४० ॥ ८ एक गद्दी पर ९ वार्तालाप १० कहा,  
 वजीर से वजीर मिलकर ॥ १४१ ॥ ११ तुम्हारे वजीर को बुलाओ १२ हमारा  
 वजीर उससे स्नेह रखेगा १३ अपने हाथ से १४ अपने पापी वजीर को बुलाया  
 ॥ १४२ ॥ १५ पत्र ॥ १४३ ॥ १६ सेना में तुसे १७ धूजा १८ कुछ नहीं कह कर ॥ १४४ ॥  
 १९ सलाह को नहीं पहचानते २० प्रतिकूल को अनुकूल कहते हैं ॥ १४५ ॥  
 ॥ १४६ ॥ २१ बड़े भय से

अब प्रयान ईरान साह करि, आयउ पुर दिल्ली उद्धत अरि १४७  
सक सर अंक सत्त इक १७९५ \*हायन, परि फग्गुन असित दस-  
मि १० पलायन ॥

इम नादर दिल्ली पुर आयउ, होय निरंकुस तोर चलायउ ॥१४८॥  
साह मुहुम्मद खानसहादेत, बहुरि बजीर रु खाँकलीज वैत ॥

ए च्पारि४हि कैदी करिआनै, ईरानी दिल्लीय प्रविँसानै ॥ १४९ ॥

अप्प मुख्य महलन निवास किय, दल मिलान नगरी अंतर दिय ॥

तत्थँ रहत निस दोय२ बिताई, पै सेना अनसन अकुलाई ॥ १५० ॥

कोउ न बनिक हट्ट पट खोलै, बैठे दुरि गेहन नन बोलै ॥

दलँ नादर प्रति अरज दई तब, अत्थ बनिक बैचैन अन्न अब १५१

तँहँ किय अरज भट्ट बंदीजन, राजा जुगलकिसोर प्रीति पन ॥

दल इरान देहसति मन डोलत, याँतँ बनिक बजार न खोलत १५२

तब नादर पठई कहि जाहिर, बसहु जाइ मम दल पुग बाहिर ॥

तब आदेसँ अधीन कटक चढि, बाहिर पुरके जान लगयो बढि१५३

तिहिँ खिन पुर उद्घोसँ बिथारयो, महलनमँ नादर हनि डारयो ॥

वाको कटक भजत अब याँतँ, पथ रुक्कहु इन सबन निपाँतँ १५४

यह सुनि जनन जरे दरवाजे, बहु बंदूक रु पत्थर बाजे ॥

पहर दोय२ तँस सेन पचाई, अब नादर प्रति अरज रचाई ॥१५५॥

हुकम अधीन जात बाहिर हम, पुरजन जान न देत कुटिल क्रम ॥

बंदूकन आँवन पुनि मारत, हम सु राँवरो कथित निहारत ॥१५६॥

॥ १४७ ॥ \* संवत में शुक्ल पक्ष ३ भगे १ प्रताप ॥ १४८ ॥ २ सहादतखाँ

३ इन आरों को सन्तोषदायक कैदी करके ४ प्रवेश हुए (घुसे) ॥ १४९ ॥ ५ सेना

का मुकाम ६ शहर के भीतर ७ तहाँ ८ भूख से ॥ १५० ॥ ९ सेना ने ॥ १५१ ॥

१० भय से ॥ १५२ ॥ ११ हुकम के अधीन ॥ १५३ ॥ १२ हाका फैलाया

१३ नादरशाह को मारडाला १४ मारें ॥ १५४ ॥ १५ उम (नादर) की सेना ने

॥ १५५ ॥ १६ पत्थरों से १७ आपका हुकम देखते हैं ॥ १५६ ॥

निज दैल अरज न मन्नी नादर, अप्पहि लखन चलयो अन आदर  
 संके तदपि नाहिँ जन सारे, याहू पर पत्थर बहु मारे ॥ १५७ ॥  
 नादर काँहु सत्य तब भासी, कष्ट मुष्टि निज किरचि निकासी ॥  
 व्यजन ताह उच्ची करि बुल्लयो, ईरानिन यह सुनिखग तुल्लयो १५८  
 भयो कतल दिह्लियपुर भारी, लकखन कटे बाल नर नारी ॥  
 स्वार्न बिडाल धेलु हय कुंजर, एंडक अंज रू महिख खर बेसर १५९  
 कटे कँहर काँ गिनँ अनंतन, प्रलय मच्यो त्रय जौम घोर पन ॥  
 यह सुनि खानकलीज अरज किय, तब नादर यह रुकि अभय  
 दिय ॥ १६० ॥

फगुन मास विसँद द्वादसि १२ दिन, इम पुरकतल कियउ ईरानिन  
 नादर दैत अभय अब जानिय, तब तस भटन कोस अँसि ठानिय १६१  
 रहि नादर दुव २ मास बितायउ, दिल्लीय पति सँन लिखित  
 लिखायउ ॥

हो मैँ साह जु हिंदवान पति, सो जित्यो नादर इगन पति ॥ १६२ ॥  
 वानपति १ रानपति २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

ज्यान माल बखसीस कियउ सब, सो मैँ लियउ अधीन उभय अब  
 इम लिखाय नादर दैल लिन्नोँ, कछु न सुहुम्मद आदर किन्नोँ ॥ १६३ ॥  
 छिन्नि बिभूति लई सब बैर बग, सत्रह १७ मन अनमोल जवाहर ॥  
 हीरा इक आयैत चतुरंगुल, जो बुंदीम भोज किय बाहुलैँ ॥ १६४ ॥

१ अपर्ना रसेना की ४ वादशाही लवाजमा लिये विना देखने को ५ तो भी नहीं डरे  
 ॥ १५ ॥ ६ काष्ठ (लकड़ी) की सूँठ की तरवार का निकाल कर, उसको ऊँची करके  
 ७ कतल वाला ॥ १६ ॥ ८ कुत्ते ९ बिल्ली, गाय, घोड़े १० हाथी ११ मेंढे १२ बकरे,  
 भैंसे, गधे १३ ग्वच्चर ॥ १४ ॥ १४ उस जुलम में १५ तीन पहर तक १६ इम  
 (कतल) को रोक कर ॥ १६ ॥ १७ सार्द १८ नादर का दिया हुआ १९  
 तरवारों को म्यानोँ में कीं ॥ १९ ॥ २० दिल्ली के बादशाह से ॥ २० ॥  
 २१ पत्र ॥ २२ ॥ २२ अष्ट अष्ट श्रेष्ठ कीन लिया २३ चार अंगुल मोटा बुंदी  
 के पति भोज ने २४ भुजवंश किया था ॥ २४ ॥





रानी रचन विचार क्रिय, जैपुर उपमिति जास ॥ १७४ ॥  
 हे गनेस घंटी विहित, ताके बाहिर् तत्थ ॥  
 दिस उत्तर १७ के दारतें, लग्यो बमन अति अंत्य ॥ १७५ ॥  
 बिच चत्वर तँहें बाँन रुक्यो, पहु पहु आलय पीठ ॥  
 बिनु बुंदिय रुकिगो बहुमि, तुंग न भो नभ लाँठ ॥ १७६ ॥  
 निलय जोधं १९७२ इति नृप अनुज, व्यय विस्तरि बँसु वार ॥  
 पुगँतें परिच्छम ३५ कोस १ पर, कर्मन रच्यो कौसार ॥ १७७ ॥  
 नाम जोधसागर १२ अर १६, निवसथें २ रचित नवीन ॥  
 बाग ३ महल ४ सर सेतुँबिच, प्रँभु मंदिर ५ ढिग पीन ॥ १७८ ॥  
 भूपति धावर गंग शो, जिहिँ पुर पूरब जत्थ ॥  
 बिरचे उँपवन १ बापिकाँ २, अप्पि हजारन अंत्य ॥ १७९ ॥  
 कोटवाल नृपका कथित, रामचंद अभिधान ॥  
 बिरचे बापी १ बाग २ जिहिँ, पुरबिच पच्छिम ३ ५थान ॥ १८० ॥  
 गजमुख भूप पुगोहितहु, पच्छिम ३ ५दिस पुर पास ॥  
 दधिमति देवीको सदन १, बिरच्यो विभव विलास ॥ १८१ ॥  
 तत्थहिँ बेल्ल १६ बापिका ३, छत्री ४ किय तिहिँ छीवें ॥  
 पुरके दक्षिण २ ३ प्रांत पुनि, ऊँचे महल ५ अतीव ॥ १८२ ॥  
 नृपदामी राधा तनेँव, गंग नाम इक दास ॥  
 नाल तौल नैवलकखके, सविध महल १ तिम तास ॥ १८३ ॥  
 मध्य भूप बुधसिंह १९७१ के, परिकर जनन जितेक ॥

जिस को जयपुर का उपमान बनाने का विचार किया ॥ १७४ ॥ राजनिज गणेश  
 घाटी है ३ घन ॥ १७५ ॥ ४ वीच का चौक है प्रभु रामसिंह, प्रभु (विष्णु) के मंदिर  
 का विधाता ही बन सका ऊँचा नहीं हुआ = आकाश का घाटने वाला ॥ १७६ ॥  
 १. बुधसिंह के छोटे भाई जोधसिंह ने घर (बुन्दी) में रह कर १० घन के समूह  
 का अरच फैला कर १ सुन्दर २ तालाव रचा ॥ १७७ ॥ ३ आय १४ पाल के ऊपर  
 १५ विष्णु भगवान का १६ बडामंदिर ॥ १७८ ॥ १ बाग १८ बावडी १९ घन देकर ॥ १७९ ॥  
 २० नाम ॥ १८० ॥ २१ बाग २२ जीव (मत्त, पागल) ने ॥ १८२ ॥ २३ पुत्र २४ नले  
 में तलाक २५ तौलन के नाप से बनाया ॥ १८३ ॥ २६ पास के मनुष्यों ने

बिरचे आउठान बहु, न बनें कबहु तितेक ॥ १८४ ॥

पिक्खहु नियंति उदरुं पहु, अैसे विभव अपेतं ॥

सो बेघम तजि सहेनन, गो इम निस्सव निकेत ॥ १८५ ॥

अंतहपुंगके जननमे, हित पति संगति होन ॥

काहूनें कुलरीति करि, सद्धयो नहिं सद्गोनं ॥ १८६ ॥

इतिथ्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तगायणो सप्तमराशौ बुन्दीप-  
तिबुधसिंहचरित्रे ससैन्यनादरशाहार्थावर्तपानीपथकरनालागमन १  
खानदोरांम्वसहायजयपुरराजजयसिंहाकारणाव्याजदर्शनतदनागम-  
न २ जयसिंहागमननिराशखानदोरांनादरशाहसंमुखसैन्यसज्जन ३ य-  
वनन्द्रमुहुम्मदमद्वितसंमुखप्रस्थितखानदोरांनादरशाहान्तिकपत्रप्रेष-  
णाद्वारासंधिविग्रहाभिप्रायचोदन ४ भयभीतनादरशाहान्तिककली-  
जखांप्रभृतिप्रेषणाद्वारायुद्धसन्नद्धीकरण ५ समरसमयमुहुम्मदवि-  
रुद्धशहादतखांनादरशाहसंमिश्रणा ६ विजितेरानसैन्यागच्छतूखान-  
दोरांवेरोधदिल्लीमहामात्यकमरदीखांतन्मारणा ७ गृहीतदण्डरूप्य-

१ आइटाण स्थान) ॥ १८५ ॥ २ भाग्येश्वर राजा के आगे आनेवाले कर्मों का फल ४ ऐसे-  
बैभव को छोड़ कर ५ बैभव नामकपुर में शरीर छोड़कर ६ दरिद्री होकर घर से गया  
॥ १८५ ॥ ७ जनानि के लोकां में ८ पति के साथ स्नेह नहीं था ९ सती नहीं हुई ॥ १८६ ॥

अत्रिंशभास्कर महाचम्पूके उत्तगायणके सप्तमराशिमें बुन्दीके षुपति बुध  
सिंहके चरित्रमें, नादरशाहका सेना लेकर हिन्दुस्थानमें पानीपथ, करना-  
लमें आना १ खानदोरांका अपनी सहायतापर जयपुरके राजा जयसिंह  
को बुलाना और जयसिंहका बहाना करके नहीं जाना २ जयसिंहके आने  
की आशा छोड़ कर खानदोरांका नादरके संमुख सेना सजना ३ बादशाह  
मुहुम्मदको लेकर गये हुए सेनापति खानदोरांका नादरशाहके समीप पत्र-  
भेजका युद्ध करने अथवा सुलह (सन्धि) करने का अभिप्राय पूछना ४ डरे हुए  
नादरशाहके समीप कलीजखां आदि का पत्र भेज कर उसको युद्ध पर सन्नद्ध  
करना ५ युद्धके समय शहादतखांका मुहुम्मदसे विरुद्ध होकर नादरशाह  
से मिलना ६ ईरानती लेना को विजय करके आनेहुए खानदोरांको दिल्ली  
के बजीर कमरदीखांका परस्परके विरोधके कारण मारना ७ दंडके रूपमें  
लेकर जाने की इच्छावाले नादरशाहको समझा कर शहादतखांका सलाह

कजिगमिषुनादरशाहप्रबोधपूर्वकशहादतखांमन्त्रव्याजाहूतकलीज-  
खांकीलन ८ संधिव्याजाहूतयवनेन्द्रमुहुम्मदमहामात्यकमरदीखां  
कीलनानन्तरनादरदिल्ल्यागमन ९ विहितदिल्लीहत्याकोषितमास-  
द्वयकारितमुहुम्मदविजयपत्रगृहीतदिल्लीसर्ववैभवनादरशाहेरानप्रति-  
गमन १० दिल्लीशहादतखांविषभक्षणमरणदिल्लीराज्यनिर्वलीभवन  
११ बुन्दीपतिबुधसिंहपरासुतावर्णनं त्रिचत्वारिंशो मयूखः ॥ ४३ ॥

आदित एकाशीत्यधिकद्विशततमः ॥ २८१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे श्रीमत्परमधार्मिक-सकलशुभगुणान्वित-शोदा  
वारहठशाखाक-चारणकुलावंतसशाहपुराप्रतोलीपात्राऽनम्रसिंहपुत्रे  
णा, उदयपुरमहाराणासज्जनसिंह-तदुत्तराधिकारिमहाराणाफतह-  
सिंह-योधपुगर्धाशमहाराजयशवंतसिंह-ईडरमहाराजप्रतापसिंहकृपा  
पात्रशाहपुरानिवासि-योधपुगमहाराजाश्रितसुकविद्वारहठकृष्णसिंहे  
नविरचितायामुदधिमन्थनीनामटीकायां सप्तमराश्यन्तर्गतबुधसिंह-  
चरित्रस्य टीका समाप्तिमिता ॥

के मिस से बुलाकर कलीजखां को नादर की कैद में कराना ८ सन्धि के मि-  
स से बादशाह मुहुम्मदशाह और वजीर कमरदीखां को बुलाकर कैद किये  
पीछे नादरशाह का दिल्ली आना ९ दिल्ली में कतल किये पीछे दो मास पर्यन्त  
रहकर मुहुम्मदशाह से विजय पत्र लिखा कर दिल्ली का सब वैभव लेकर  
नादरशाह का पीछा ईरान में जाना १० दिल्ली में शहादतखां का विष खाकर  
मरना और दिल्ली की बादशाहत का निर्धूल होना ११ बुन्दी के राजा बुधसिंह  
के मरने के वर्णन का तिपालीसवां ४३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो  
सौ इक्यासी २८१ मयूख हुए ॥

इतिश्री श्रीमान् परमधार्मिक, सकलशुभगुणान्वित, शोदा वारहठ शाखाके  
चारणकुलावंतस शाहपुरा के पोळपात एसे अबनाहसिंहके पुत्र उदयपुरके महा-  
राणा सज्जनसिंह और उनके उत्तराधिकारी महाराणा फतहसिंह, तथा जोध-  
पुर के महाराजा यशवंतसिंह और ईडर के महाराजा प्रतापसिंह के कृपापात्र  
शाहपुरा निवासी और जोधपुर के महाराज के आश्रित सुकवि वारहठ  
कृष्णसिंह की कीहुई उदधिमन्थिनी नामक टीका में वंशभास्कर के सप्तम  
राशि के अन्तर्गत बुधसिंह चरित्र की टीका समाप्त हुई ॥